लोकोपकार

(मानव जाति के कल्याण के लिए)

अंग्रेजी अनुवादक

वाल्मिकी श्रीनिवास अयंगार्य

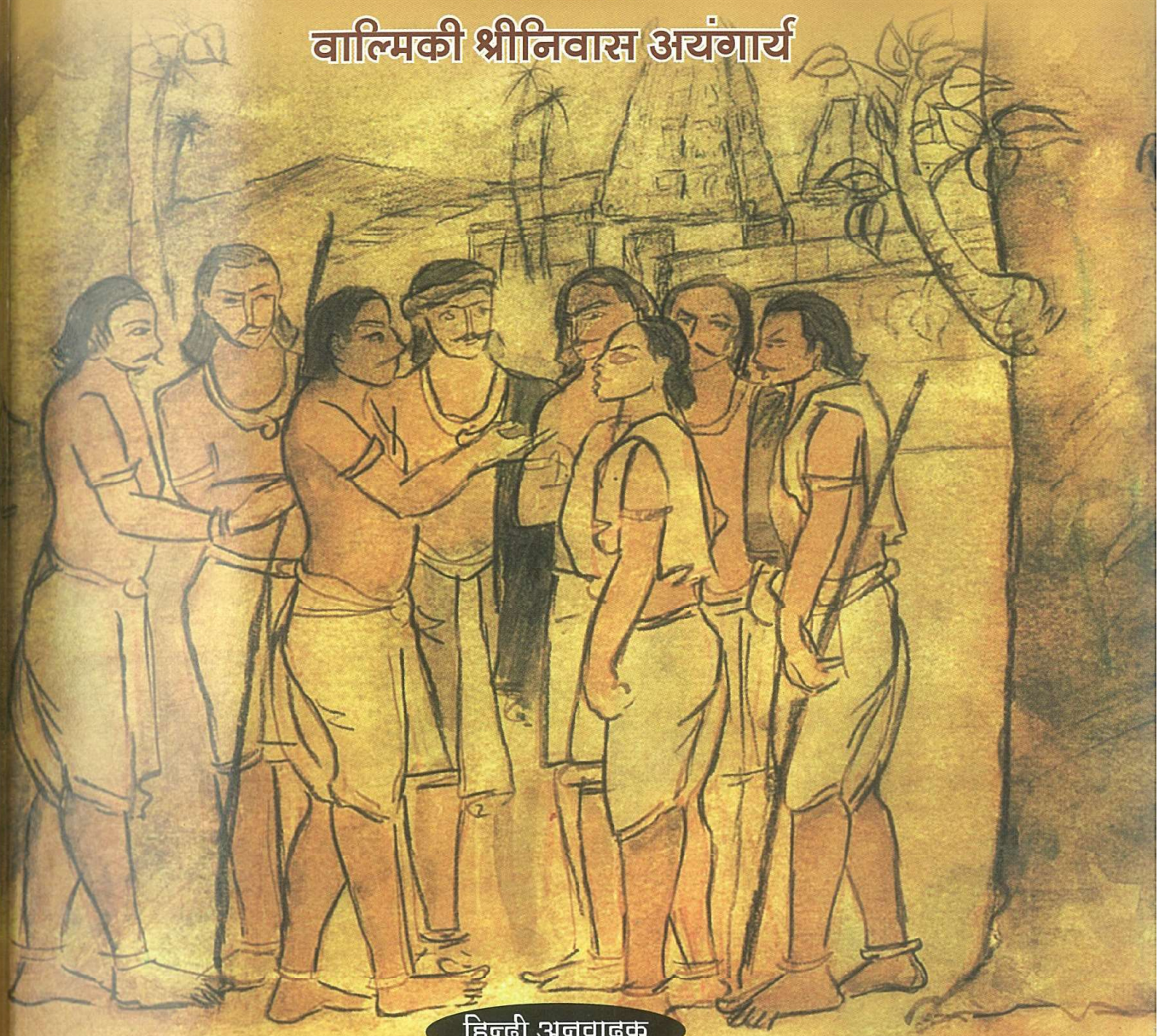

हिन्दी अनुवादक

डॉ. सुनील कुमार खाण्डेलवाल

एवं

डॉ. शिवचरण लाल चौधरी

एग्री-हिस्ट्री बुलेटिन संख्या- ६ (हिन्दी)

एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउण्डेशन राजस्थान चेप्टर, उदयपुर

समर्पित

स्वर्गीय डॉ. नलिनी साधले

(3 नवम्बर 1934 – 1 दिसम्बर 2010)

लोकोपकार

(मानव जाति के कल्याण के लिए)

अंग्रेजी अनुवादक

वाल्मिकी श्रीनिवास अयंगार्य

हिन्दी अनुवादक

डॉ. सुनील कुमार खण्डेलवाल

आणविक जीव विज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी विभाग

राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

एवं

डॉ. शिवचरण लाल चौधरी

सचिव

एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउन्डेशन राजस्थान चेप्टर

उदयपुर (राजस्थान)

टिप्पणीकर्ता

डॉ. वाई. एल. नेने

डॉ. नलिनी साधले एवं डॉ. शकुन्तला दवे

प्रोफेसर उमाशशि भालेराव

एग्री-हिस्ट्री बुलेटिन संख्या - 6 (हिन्दी)

ASIAN AGRI-HISTORY FOUNDATION

1994

कृषिमित् कृषस्व

एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउन्डेशन राजस्थान चेप्टर

105, विद्यानगर, हिरण मगरी सेक्टर-4

उदयपुर (राजस्थान) 313002

© Asian Agri-History Foundation 2011. All rights reserved. No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, electronically, mechanically, by photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owners.

ISSN 0971-7722

विषय सूची

भूमिका	v
प्राक्कथन	vii
प्राक्कथन (अंग्रेजी संस्करण)	ix
चावुन्द्राय द्वारा 1025 ईसवी सन् में लिखित लोकोपकार	1
परिचय	3
लोकोपकार (हिन्दी अनुवाद) : मानव जाति के कल्याण के लिए	
अध्याय 4 : चमत्कार	11
अध्याय 5 : जल की भविष्यवाणियां करना	23
अध्याय 6 : वृक्षायुर्वेद	28
अध्याय 7 : सुगंधित द्रव्य	35
अध्याय 8 : सूप-शास्त्र	44
अध्याय 9 : जानवरों का उपचार	51
अध्याय 10 : सर्पदंश जहर का उपचार	59
अध्याय 11 : जानवरों के लक्षण	62
टिप्पणियां	67
✦ चमत्कार, जल की भविष्यवाणियां करना, वृक्षायुर्वेद एवं सुगंधित द्रव्य : डॉ. वाई. एल. नेने	69
✦ जानवरों का उपचार, सर्पदंश ज़हर का उपचार एवं जानवरों के लक्षण: डॉ. नलिनी साधले और डॉ. शकुन्तला दवे	74
✦ सूपशास्त्र: प्रोफेसर उमा शशि भालेराव	111
पादप सारणी	117
पादप नामों की सारणी - प्रथम	119
पादप नामों की सारणी - द्वितीय	128
परिशिष्ट	139

भूमिका

चावुन्द्राय द्वारा कन्नड़ भाषा में संकलित लगभग 1025 वर्ष पुराना लोकोपकार मानव जीवन के लिये एक अत्यन्त अपयोगी ग्रन्थ है। एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन सिकन्दराबाद (आंध्र प्रदेश) ने इस ग्रन्थ का अंग्रेजी में अनुवाद श्री वाल्मिकी श्रीनिवास अयंगार्य से करवाकर वर्ष 2006 में प्रकाशित किया था। लोकोपकार से तात्पर्य है मानव जाति के कल्याण के लिये जो कि आम नागरिकों के दैनिक जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण रचना है।

इस ग्रन्थ के मौलिक मूल–पाठ में 12 अध्याय है लेकिन एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन द्वारा आठ अध्यायों जो कि आम नागरिक व ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किसान भाईयों के लिये अत्यन्त उपयोगी एवं लाभदायक है को ही श्री अयंगार्य से अनुवाद कर अंग्रेजी में प्रकाशित किया था।

अंग्रेजी में प्रकाशित लोकोपकार के मुद्रित संस्करण को पढ़ने के पश्चात् हमने यह महसूस किया कि इसका अनुवाद हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया जाना चाहिये, जिससे कि सभी देशवासी इसका अध्ययन कर लाभांवित हो सके। पूर्व में भी एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित वृक्षायुर्वेद व विश्ववल्लभ भी फाउण्डेशन के राजस्थान चेप्टर ने ही प्रकाशित किये थे।

लोकोपकार में इस ग्रन्थ के अध्याय चमत्कार, जल की भविष्यवाणी करना, वृक्षायुर्वेद, सुगन्धित द्रव्य, सूप–शास्त्र, जानवरों का उपचार, सर्पदंश जहर का उपचार एवं जानवरों के लक्षण अत्यन्त ज्ञान भरे है। इन अध्यायों में प्रस्तुत की हुयी जानकारियों का अध्ययन कर डा. वाई. एल. नेने, प्रसिद्ध विदुशी स्व. डॉ. नलिनी साधले, डॉ. शकुन्तला दवे एवं प्रोफेसर उमाशशि भालेराव ने विभिन्न अध्यायों पर टिप्पणियां लिखी है। डॉ. नलिनी साधले ने जानवरों के उपचार, सर्पदंश का उपचार व जानवरों के लक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी दी है तथा उन्हें आधुनिक समय में उनकी उपयोगिता पर अत्यन्त महत्व दिया है। साथ ही कई शब्द जो संस्कृत के है उन्हें हिन्दी व सरल भाषा में रूपान्तरित किया है। स्व. डॉ. साधले ने कई अन्य संस्कृत में लिखे गये ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है जिसे फाउण्डेशन ने प्रकाशित किया है। चेप्टर द्वारा प्रकाशित वृक्षायुर्वेद व विश्ववल्लभ के हिन्दी अनुवाद में भी डॉ. साधले का अत्यन्त सहयोग रहा था।

आशा है देश का हर नागरिक, कृषक वैज्ञानिक आदि जो हमारी विरासत से कुछ सीखना, स्वस्थ रहना तथा उज्जवल भविष्य निर्माण करना चाहते है, इस ग्रन्थ में बतायी गई विभिन्न विधियों को अपनायेगें व उनके आधार पर शोध कार्य करेगें।

हम डॉ. गणेश राजामणि, डॉ. पुष्पा सेठ, डॉ. दीपक सुरोलिया एवं डॉ. अरविन्द वर्मा के बहुत–बहुत आभारी है, जिन्होंने इस पुस्तक के हिन्दी अनुवाद करने में हमें समय–समय पर पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

हम एशियन एग्री–हिस्ट्री फांउडेशन के अध्यक्ष डॉ. वाई. एल. नेने के अत्यन्त आभारी है, जिन्होंने हमे अंग्रेजी में मुद्रित लोकोपकार संस्करण के कार्य को हिन्दी में अनुवाद करने के लिए प्रोत्साहित ही नहीं किया बल्कि हमें समय–समय पर सुझाव और मार्गदर्शन भी प्रदान किये, जिसकी वजह से हम इस महत्वपूर्ण ग्रंथ का हिन्दी भाषा में अनुवाद कर पाये।

सुनील कुमार खण्डेलवाल
शिवचरण लाल चौधरी

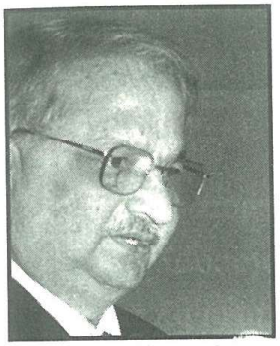

प्राक्कथन

एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन (AAHF), सिकन्दराबाद, आंध्रप्रदेश, भारत ने कृषि पर उपलब्ध प्राचीन संस्कृत, पुरातन कन्नड़ और मलयालम पांडुलिपियों को अंग्रेजी में अनुवाद कर इन बुलेटिनों (पत्रिकाओं) को श्रृंखला में प्रकाशित किया है। लोकोपकार एक पुरातन कन्नड़ बुलेटिन था जिसको एक विद्वान् कवि चावुन्द्राय ने संकलित किया था। चावुन्द्राय एक चालुक्य राजा (1015–1042 ईसवी सन्) जयसिम्हा II की कचहरी में कार्य करते थे। एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन ने लोकोपकार के अंग्रेजी अनुवाद को बुलेटिन संख्या 6 के रुप में वर्ष 2006 में प्रकाशित किया था।

लोकोपकार में आम आदमी के कल्याण से जुड़ी हुयी जानकारियों को अंतर्विष्ट किया गया था। बुलेटिन संख्या 6 में चुनिन्दा (श्रेष्ठ या उत्कृष्ट) अध्यायों को प्रकाशित किया गया था। हिन्दी भाषी प्रदेशों में निवास करने वाले लोगों के लिए उन्हीं सभी अध्यायों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है।

यह एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन के राजस्थान चेप्टर का प्रशंसनीय प्रयास है। मेरे साथ एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन के न्यासियों ने भी लोकोपकार के हिन्दी अनुवाद के कठिन कार्य को पूर्ण करने के लिए डॉ. सुनील कुमार खण्डेलवाल एवं डॉ. शिवचरण लाल चौधरी की सराहना की है। हम सभी आशा करते हैं कि लोकोपकार के हिन्दी अनुवाद को छात्रों, कृषकों और अन्यों द्वारा रुचि के साथ पढ़ा जायेगा। साथ ही कृषीय और सामाजिक संस्थाओं की पुस्तकालयों द्वारा इस बुलेटिन को अर्जित कर अपने संचयन को समृद्ध करेगें।

वाई. एल. नेने
अध्यक्ष,
एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन,
सिकन्दराबाद, आंध्रप्रदेश (भारत)

सिकन्दराबाद
5 मई 2011

प्राक्कथन

(अंग्रेजी संस्करण)

एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन (AAHF), एक लाभनिरपेक्ष संस्था है, जिसकी स्थापना और पंजीकरण वर्ष 1994 में सिकन्दराबाद, भारत में हुयी थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य कृषि विरासत की सरल जानकारियों के प्रसार के लिए तथा इन जानकारियों को जीवन धारण करने योग्य कृषि के अनुसंधान के लिए दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशियन क्षेत्रों में बढ़ावा देना है। ये क्षेत्र आम नागरिकों को हजारों वर्षों से खाद्य सुरक्षा प्रदान कर रहे थे, सिवाय कुछ निश्चित जगहों को छोड़कर जहां पर अकाल पड़ता था, प्राथमिक रूप से अकाल सूखे के कारण पड़ता था। यहां के किसान विभिन्न शस्यपारिस्थितिकीक्षेत्र के लिए मुख्य रूप से उपयोगी जीवन धारण करने योग्य कृषि प्रबंधन तकनीक को विकसित करते थे। यहां वे अपनी चतुराई से परंपरागत और स्वदेशीय तकनीक को सीखने की कोशिश करते थे तथा उन दिनों में दक्षिण और दक्षिणपूर्वी एशिया के किसानों के लिए उस समय पर जांच की गयी प्रौद्योगिकियों को प्रमाणित किया जाता था। एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन का एक मुख्य उद्देश्य यह भी था कि प्राचीन और मध्यकाल कृषि की जानकारियों का प्रसार करना, जो कि यह संस्था पुराने मूल–पाठों और पाण्डुलिपियों को अंग्रेजी में अनुवाद कर, मूल–पाठों के वैज्ञानिक विषयों को टिप्पणियों के साथ प्रकाशित करना। विषय विशेषज्ञों द्वारा दी गयी टिप्पणियों का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करना था जिससे की पुराने प्रयोगों को प्रमाणित किया जा सके ।

एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन ने अब तक पांच पत्रिका (बुलेटिन) प्रकाशित की है : सुरपाल (लगभग 1000 ईसवी सन्) द्वारा लिखित वृक्षायुर्वेद (पादप जीवन का विज्ञान), कृषि –पाराशर (पाराशर द्वारा कृषि) (लगभग 400 ईसा मसीह से पूर्व), नुस्खा दर फन्नी–फलाहत (कृषि की कला), दारा शिकोह (लगभग 1650 ईसवी सन्) द्वारा रचित एक परसियन पाण्डुलिपि, कश्यप (लगभग 800 ईसवी सन्) द्वारा लिखित, कश्यपियकृषिसूक्ति (कृषि पर एक शोध प्रबन्ध) और विश्ववल्लभ (विश्व का प्यारा : पादप जीवन का विज्ञान)। यह बुलेटिन हलगन्नद (पुरानी कन्नड़) पाण्डुलिपि का अनुवाद है जो कवि चावुन्द्राय ने 1025 ईसवी सन् में संकलित की थी।

पश्चिमी चालुक्य राजाओं, जिनकी राजधानी कल्याणी (बिदर के पास, कर्नाटक, भारत) थी के समय में अपने दरबार में विद्वानों को आधार देने की प्रथा थी और चावुन्द्राय जयसिम्हा II कचहरी 1015–1042 ईसवी सन् में एक कवि–विद्यार्थी थे।

लोकोपकार से तात्पर्य है **मानव जाति के कल्याण के लिए** जो कि साधारण नागरिकों के प्रतिदिन जीवन के लिए एक सहचर है। इसमें खगोलविज्ञान, चमत्कार, वास्तु (आर्किटेक्चर), पानी की भविष्यवाणियां करना, वृक्षायुर्वेद (पादप जीवन का विज्ञान), सुगंधित द्रव्यों, पाक–विधि और पशु–चिकित्सा औषधि आदि की व्याख्या की गयी है। इस पत्रिका (बुलेटिन) में हमनें उन विषयों को चुना है जिनमें की ग्रामीण क्षेत्रों मे रहने वाले किसानों की दिलचस्पी (अभिरूचि) है।

लोकोपकार के लेखक को चावुन्द्राय II के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि यह दूसरे चावुन्द्राय जिनको की चावुन्द्राय I के नाम से जाना जाता था, जो कि अनेक दशकों के

प्रारम्भ में बहुत बड़े मंत्री, प्रधान सेनापति थे, साथ ही दक्षिण कर्नाटक के गंगा शासकों की कचहरी में एक साहित्यकार थे। चावुन्द्राय I ने कर्नाटक के श्रवणबेलगोल में लगभग 890 ईसवी सन् में विश्व प्रसिद्ध गोमतेश्वर की प्रतिमा का निर्माण करवाया था।

यह पत्रिका हलगन्नद पाण्डुलिपि के मुद्रित संस्करण पर आधारित है जिसको सन् 1950 में एच. सेश अयंगर ने संकलित किया था। हलगन्नद पाण्डुलिपि की एक प्रति मद्रास गर्वनमेन्ट ओरियेन्टल मैन्यूस्क्रिप्ट लाईब्रेरी (अडयर पुस्तकालय), चेन्नई से प्राप्त की थी। जबकि आज बहुत कम लोग हलगन्नद को जानते है, हमने सी. के. कुमुदनी, कन्नड़ अध्ययन विभाग, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर से अनुरोध किया कि इस पाण्डुलिपि को होसगन्नद (आधुनिक कन्नड़) में अनुवाद करे। उसके बाद होसगन्नद पाण्डुलिपि का अंग्रेजी में अनुवाद श्री वाल्मिकी श्रीनिवास अयंगार्य ने किया था। हम कुमुदिनी और वाल्मिकी द्वारा किये गये सभी तरह के कठिन परिश्रम के लिए उनके बहुत आभारी है।

लोकोपकार मे तीन टिप्पणियां लिखी गयी थी, एक वाई.एल. नेने द्वारा, दूसरी नलिनी साधले और शकुन्तला दवे तथा एक अन्य उमाशशि भालेराव द्वारा। आशा है, कि ये टिप्पणियां विद्वानों (पण्डितों) और अनुसंधानकर्त्ताओं को लोकोपकार की वैज्ञानिक गुणवता के विवरण को उपलब्ध कराकर प्रोत्साहित करेगी। मैं ऐसा विश्वास करता हूं कि आज के भारतीय कृषि वैज्ञानिकों के सामने वर्तमान दिनों की कृषि से उस विरासत को सम्बद्ध करने का अद्वितीय मौका (अवसर) है।

ज्यादातर लोग हलगन्नद के मूल–पाठ को पढ़ नहीं सकते, हमने मुद्रित पाण्डुलिपि (परिशिष्ट) के केवल एक पृष्ठ की प्रतिकृति को बुलेटिन (पत्रिका) में विशिष्टता प्रदान करने के लिए दी है। इस प्रकाशन में पादप नामों की दो सारणियों को सम्मिलित किया गया है वो वाई. एल. नेने ने तैयार की थी।

हमें आशा है कि यह प्रकाशन एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन के अन्य प्रकाशनों की तरह वे सभी जो कृषि में रूचि रखते है केवल भारतीय ही नहीं बल्कि विश्व के किसी भी कोने के हो उन सभी के लिए यह उपयोगी साबित होगा ।

वाई. एल. नेने
अध्यक्ष
एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन

लोकोपकार

(मानव जाति के कल्याण के लिए)

(द्वारा चावुन्द्राय 1025 ईसवी सन्)

About the Translator
(Kannad to English)

Sri Valmiki Sreenivasa Ayangarya is a mathematician by training, who, about 20 years ago, renounced materialistic lifestyle and dedicated his life to imporve rural agriculture. For the last sevem years, he is actively involved in utilizing knowledge of 1000-years old Vrikshayurveda (Science of Plant Life) for the benefit of farmers in Karnataka, Maharashtra, and Arunachal Pradesh states of india. He has been regularly contributing communications to the AAHF journal Asian Agri-History.

Present address : Keshavapuri, Khorad Village, Dongarkharda Post 445 323, Yavatmal Jilla, Maharashtra, India (email : vajadeva@rediffmail.com)

परिचय

लोकोपकार का वर्तमान अंग्रेजी अनुवाद मौलिक मूल–पाठ का संक्षिप्त रूप है। उस मौलिक मूल–पाठ को 12 अध्यायों में "मद्रास गर्वनमेन्ट ओरिएन्टल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास (अडयर पुस्तकालय, मद्रास) ने सन् 1950 में प्रकाशित किया था। वर्तमान में मौलिक मूल–पाठ ना तो वर्तमान कन्नड़ (होसगन्नद) और ना ही अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है। वर्तमान में इसका 1950 में होसगन्नद में मुद्रित संस्करण भी उपलब्ध नहीं है। इस अनुवाद में सभी अध्यायों, केवल अध्याय 1,2,3 और 12 छोड़कर इसमें सम्मिलित किये गये थे। अध्याय 9 में मौलिक 246 श्लोकों को केवल 58 श्लोकों में संक्षिप्त किया गया है। अध्याय 10 में मौलिक 53 श्लोकों को केवल 23 श्लोकों में संक्षिप्त किया गया है और अध्याय 11 में 113 श्लोकों को केवल 41 श्लोकों में संक्षिप्त किया गया है।

मौलिक मूल–पाठ में निम्नलिखित अध्यायों को अन्तर्विष्ट किया था–

अध्याय 1 : फलित–ज्योतिष दृष्टिकोण

अध्याय 2 : विभिन्न सांसारिक और धार्मिक कार्यों के लिए शुभ और अशुभ मुहूर्त

अध्याय 3 : वास्तु (आर्किटेक्चर)

अध्याय 4 : चमत्कार

अध्याय 5 : जल की भविष्यवाणियां करना

अध्याय 6 : वृक्षायुर्वेद (पेड़ों सहित पादपों के लिए आयुर्वेद)

अध्याय 7 : सुंगधित द्रव्य

अध्याय 8 : सूप–शास्त्र (नुस्खे)

अध्याय 9 : मानव और जन्तुओं के लिए औषधि

अध्याय 10 : सर्पदंश जहर का उपचार आदि

अध्याय 11 : जानवरों के लक्षण

अध्याय 12 : पूर्व –सूचना देना

इसके बाद प्रसिद्ध कवि जिसका नाम चावुन्द्राय था ने ईसवी सन् 1025 में लोकोपकार के मौलिक मूल–पाठों को लिखा था। मूल–पाठ पुरानी कन्नड़ भाषा (हलगन्नद) में काव्य के रूप में लिखा था। यद्यपि लोकोपकार के अंश बहुत ही प्रायोगिक प्रतीत होते है और आम आदमी और शासकों के सदृश इनकी सांसारिक उपयोगिता है, इस कार्य को कवि के मौलिक कार्य की तरह नहीं माना जा सका था। सबसे अच्छा इसको विभिन्न विज्ञानों का उस समय का सार –संक्षेप कह सकते है जो कि संक्षिप्त रूप में था। इस पुस्तक में दिये गये सभी विषय पहले से ही कई प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में उपलब्ध थे जैसे–वराहमिहिर की बृहत् संहिता, वृहत् जटक, चरक संहिता, माया मतम आदि। वराहमिहिर को 505 ईस्वी सन् काल के है जो कि चावुन्द्राय के

लगभग 520 वर्षों पूर्व का है। कवि ने स्वयं ने यह स्वीकार किया है कि ये जानकारियां बृहत् संहिता, मा रिदचार्य मथा आदि से चुनी गयी है। (अध्याय 4 के श्लोक 36 को इस प्रकाशन में सम्मिलित नहीं किया गया है। यद्यपि सभी अंश नये नहीं थे, इसका पुरानी कन्नड़ भाषा में प्रस्तुतीकरण उस जीवन काल के दौरान निश्चित रूप से उपयोगी और प्रचलित था। यह प्रस्तुतीकरण उस समय आम जनता के लिए मददगार था, जो कि संस्कृत नहीं जानते थे। इसका नाम लोकोपकार (मानव जाति के कल्याण के लिए) था, जो कि एक उपयुक्त शीर्षक था। यद्यपि बहुत से दूसरे प्राचीन संस्कृत कार्यों का सम्बन्ध उन्हीं विषयों से पहले से ही था, यह कवि चावुन्द्राय का उद्देश्य दिखाई देता है जैसे–सामाजिक उपकार, इसमें सम्मिलित नहीं था। सामाजिक उपकार का यह उद्देश्य जिसको कि इस कार्य को आम लोगों और पंडितों में लोकप्रिय करना था। संभवत : जो लोग संस्कृत नहीं जानते थे वो लोग इसको पढ़ नहीं पाते थे, हमेशा यह कार्य नया और मौलिक कार्य दिखाई पड़ता था।

क्योंकि भारत में शिक्षा तंत्र की शुरूआत मैकुली (1880–1859) ने, ब्रिटिश शासन के दौरान की थी और आज भी निरन्तर चल रही है। हमारे बहुत से प्रायोगिक कार्यों और सांसारिक प्राचीन कार्यों जैसे–लोकोपकार की ओर ध्यान नहीं दिया गया। इस पुस्तक में दिये गये सभी विषयों का आम आदमी के दैनिक जीवन में आज भी प्रायोगिक उपयोग किया जा सकता है और संभवतः आगे आने वाली शताब्दियों में भी। हलगन्नद में साधारण प्रस्तुतीकरण है, प्राचीन कन्नड़ भाषा, जिसको आसानी से समझा जा सकता है। शायद, इसकी होसगन्नद में अनुवाद की आवश्यकता है, वर्तमान दिन का कन्नड़ गद्य, आज के आम आदमी के उपयोग के लिए ।

अभी तक यह कार्य केवल मुद्रित हुए भावान्तर में उपलब्ध है, श्लोकों को हलगन्नद में काव्य ग्रन्थाकार में लिखा था। हलगन्नद में यह गद्य–या–काव्य रूप में टिप्पणी सहित है। इसमें जो टिप्पणी दी गयी है वो प्रत्येक अलग श्लोक की दी गयी है लेकिन कुछ स्थानों पर यह अपूर्ण है। यहां पर बहुत से विलोपन या संयोजन है। कुछ निश्चित स्थानों पर टिप्पणी मौलिक श्लोक से सहमत नहीं है। जबकि कुछ स्थानों पर मौलिक श्लोक अनुपलब्ध है। ये गलतियां मौजूदा चारों पाण्डुलिपियों में है, जिससे वर्तमान मुद्रित भाषान्तर तैयार किया गया था। जहां कुछ वाक्यांशों या शब्दों का मौलिक श्लोक या टिप्पणी में विलोपन है। मैंने मौलिक हलगन्नद के श्लोकों को अच्छी तरह से समझा साथ ही उससे सम्बन्धित उपलब्ध प्राचीन संस्कृत कार्यों के भी संदर्भों को देखा। मैंने इसमें कुछ श्लोकों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ा, जहां कहीं मुझे लगा कि यहां पर लुप्त (गायब) है। यह कार्य एक मात्र इरादे से किया जा रहा है, कि चावुन्द्राय के प्रशंसनीय कार्य को न्याय मिल सके साथ ही अंग्रेजी अनुवाद पढ़ने के स्वरूप में प्राप्त हो सके।

जब मैं ये अंग्रेजी अनुवाद कर रहा था । मुझे कुछ चमत्कारी दृश्यों के दृष्टान्तों की खबर अखबारों और रेडियों से प्राप्त हुयी, जिसमें मेरा अपना स्वयं का अवलोकन भी था। मैं यहां उनका वर्णन पढ़ने वालों के लाभ के लिए कर रहा हूं –

- बंगलौर में 5 सितम्बर 2002 को दोपहर के समय सूर्य के चारों ओर प्रभामण्डल के निर्माण का होना, जो कि बंगलौर कर्नाटक के अंग्रेजी दैनिक डेक्कन हेरल्ड में 6 सितम्बर 2002 को प्रकाशित हुआ था।

- मैंने आकाशवाणी रेडियों के समाचारों में सुना कि 3 अक्टूबर 2002 को पश्चिम बंगाल के एक गांव में एक बड़े तालाब का पानी गुलाबी हो गया है। ग्रामीणों ने बताया कि एक हवाई जहाज ने घुसपैठ कर तालाब के अन्दर कोई चीज गिरा दी है। भारतीय वायु सेना ने इस बात से पूरी तरह से इंकार कर दिया कि उस दिन, उस जगह पर भारतीय वायु सीमा द्वारा किसी भी विमान की कोई घुसपैठ नहीं हुयी है।
- 13 अक्टूबर 2002 को जब मैं केशवपुरी महाराष्ट्र के परिसर में घूम रहा था, तब मैंने चन्द्रमा के चारों और प्रभामण्डल का बनना देखा था। यद्यपि मैं इस बात से अनभिज्ञ था कि उस समय सही वक्त क्या था, वहां पर तीन या चार छोटे बादल चन्द्रमा को ढ़के हुए थे और उसके चारों ओर प्रभामण्डल दिखाई दे रहा था। जब बादल अदृश्य (लुप्त) हुए तो प्रभामण्डल भी लुप्त हो गया था।
- मैंने 22 अक्टूबर 2002 को केशवपुरी में 19.40 बजे शाम को चन्द्रमा के चारों ओर प्रभामण्डल के निर्माण को भी महसूस किया।

मैनें ये सभी घटनाएं केवल इसलिये बतायी है, कि इन विषयों का इस पुस्तक से संबंध है जो कि आज भी प्रायोगिक रूप में उपलब्ध है और बहुत ज्यादा सांसारिक, यद्यपि कुछ आधुनिक वैज्ञानिक सोच वाले लोगों ने इन अंशो को अस्पष्ट कर दिया। इसमें कोई शक नहीं होना चाहिए कि हमारे पूर्वजों के कार्य जो कि विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है वो काफी प्रायोगिक है।

मैंने कभी भी लोकोपकार के विषयों पर कन्नड़ साहित्यिक क्षेत्र में बौद्धिक वाद–विवाद या विचार विमर्श नहीं किया। मैंने अनेक सांसारिक सांस्कृतिक आदतों, उपचारी मानदण्ड और प्रौद्योगिकी आदि पर कई दूसरे वाद–विवाद या वैज्ञानिकों के सुझावों को मूल–पाठों में वर्णित किया है। शायद, होसगन्नद गद्य मूल–पाठ की अनुपस्थिति, आधुनिक संस्करण की अनुपस्थिति और इस पुस्तक में दिये गये विषयों की प्राचीनता आदि कारणों के कारण एक बौद्विक वाद–विवाद की अनुपस्थिति रही। मैंने 1996 में होसगन्नद भाषा में प्रकाशित लोकोपकार के छोटे भाग को पढ़ा, जिसका तीसरा संस्करण अप्रैल 1997 में निकला था और जो कि केवल अध्याय 6 वृक्षायुर्वेद से संबंधित था। इस पुस्तिका के संकलनकर्ताओं के अनुसार कर्नाटक सरकार के वन विभाग के अधिकारियों ने लोकोपकार के अध्याय 6 वृक्षायुर्वेद में दिये गये श्लोकों की अनुशंसा के अनुसार सफलतापूर्वक प्रयोगों का संचालन किया। वन विभाग द्वारा संचालित औषधीय पादप बगीचा में 1992 में आंवला पादप पर प्रयोग का सफल संचालन किया था। जिसको इस पुस्तिका के पिछले आवरण पर वर्णित किया गया था जिससे की पढ़ने वालों को प्रभावित किया जा सके और वृक्षायुर्वेद के श्लोकों का दिन–प्रतिदिन उपयोग कर सके। इस छोटी पुस्तिका को छोड़कर एक संक्षिप्त वाद–विवाद पुराने मैसूर क्षेत्र के कार्बनिक किसानों के छोटे समूह के बीच हुयी, लोकोपकार 1950 तक अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पायी। यह आवश्यक है, कि वर्तमान पीढ़ी को इस अद्वितीय (बेजोड़/लाजवाब/अनुपम) प्रायोगिक और बहुत ज्यादा सांसारिक मूल–पाठों को प्रतिपादित करना चाहिये।

यहां भारतीय फलित ज्योतिष की प्रायोगिक उपयोगिता पर भी सीमित विचार –विमर्श किया गया था जो कि 20 वीं शताब्दी के पश्चिमी वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार की गयी थी, यह बात

बृहत् संहिता के परिचय में उपलब्ध है जिसका अनुवाद एम. आर. भट्ट द्वारा किया गया था। मैं अभी तक बृहत् संहिता के सारांश की विस्तृत अभिलेखी को और उसकी वर्तमान दिनों में प्रायोगिक उपयोगिता को ढूंढ रहा हूं।

अम्बूगरेयुवुदु विषय पर संक्षिप्त विचार विमर्श परिचय में दिया गया है जिसको एच. सेश. अयंगर ने सम्पादित किया था, उनके अनुसार यह केवल मुद्रित अनुवाद में है। एच. सेश. अयंगर ने अपने विचारों में स्पष्ट किया था कि *अम्बूगरेयुवुदु* में दिये गये उपचारी उपयोग स्पष्टरूप से मूल–पाठ या टिप्पणी के अन्दर उल्लिखित (कथित) नहीं है। उन्होनें जैन परम्परा के *गोमुखीव्रत* के अवांछित प्रमाण का समर्थन किया और इस विषय को जैन परम्परा की दिशा की ओर ले जाने का प्रयास किया। जो साफ तौर पर गलत था। संभवतः उनकी ये सोच थी कि लोकोपकार और उसके सभी अध्याय मौलिक है और कवि चावुन्द्राय का स्वतंत्र कार्य है, जो कि गलत है। संभवतः लोकोपकार के मूल्यांकन की कमी की वजह से कि यह विभिन्न विषयों का एक सार–सग्रंह (सांराश) है जो कि पहले से ही प्राचीन संस्कृत कार्यों जैसा बृहत् संहिता और दूसरे आदि में दिया हुआ था। एच. सेश. अयंगर ने जैन धार्मिक ग्रंथ *गोमुखीव्रत* का बिना आवश्यकता के सहारा लिया था। लोकोपकार के अध्याय 4 का श्लोक 4 जो कि बिल्कुल हलगन्नद अनुवाद के छठे सूत्र जो कि बृहत् संहिता के छियालिसवें अध्याय का है।

जब श्लोकों की तुलना करते हैं तो प्रायश्चित जिसको *अम्बूगरेयुवुदु* कहते है वो *रूद्रयथने भूमऊ गोदोहाथ* है जिससे यह मतलब होता है कि रूद्रमन्दिर की भूमि पर गायों के दूध का दोहन करना जो कि वराहमिहिर और उसके बृहत संहिता से पूर्व एक उत्तेजना पैदा करने वाली प्रथा थी। यहां तक कि वराहमिहिर ने अपने अनेक पूर्वज कार्यों का बृहत् संहिता के अन्दर उल्लेख किया है, इसलिए एच. सेश. अयंगर की यह सहमति की ''रूद्र मन्दिर की भूमि पर गायों के दूध का दोहन करना जिसको चावुन्द्राय *अम्बूगरेयुवुदु* के नाम से पुकारते थे जो कि वैदिक परम्परा नहीं है जो कि साफ तौर पर गलत है। क्रमशः उसने जैन परम्परा के भ्रामक संकेत का समर्थन किया, सेश अयंगर ने *यक्ष* और *यक्षी* की मूर्तियों के अनुरक्षण की प्रथा को उल्लेखित किया था, जिसका कि उनको कोई ज्ञान नहीं था जबकि वो पूर्व वैदिक परम्परा में दी हुयी थी। *यक्ष* आदि की मूर्तियों के विषय में और उनके अप्राकृतिक व्यवहार के बारे में बृहत् संहिता के 46 वे अध्याय के 13 और 14 श्लोकों में साफ तौर पर उल्लिखित है। इसलिए जैन परम्परा के सम्बन्धों के साथ कोई न्याय संगत नहीं है।

प्रचलित वैदिक प्रथाओं का जिनको कि मुझे ज्ञान है, विशेषकर जिनका कि भारत के ग्रामीण भागों में अनुसरण किया जाता है। *अम्बूगरेयुवुदु* में भी थोड़ा विभिन्न रूप में प्रतिपादित किया है। गाय के दूध दोहने की प्रथा का वर्णन कुछ भारतीय महाकाव्यों जैसे *श्री वेंकटेश्वर महात्मे* आदि में मिलता है। एक वैदिक प्रथा जिसका आज भी उपचारी उपाय के लिए किया जाता है वो है *क्षीरअभिषेक*। यह *क्षीरअभिषेक* एक भारतीय परम्परा है जिसमें देवताओं की मूर्तियों को कर्मकाण्डी स्नान कराया जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि देवताओं की मूर्तियों को संभावित अद्भूत घटनाओं से होने वाली सभी तरह की बीमारियों से शुद्ध करने के लिए कर्मकाण्डी स्नान करवाया जाता है। *'आईन्बू'* का कन्नड़ में मतलब होता है *दूध, गरेयुवुदु* से तात्पर्य होता है दूध दोहन, बहाव आदि। इसलिये *अम्बूगरेयुवुदु* शब्द को धार्मिक दृष्टि से भी

समझा जा सकता है जिसमें मूर्ति को पवित्र करने के लिए ताजा दूध का उपयोग किया जाता है वो पूर्णतया शोधक दूध स्नान होता है। वर्तमान में *क्षीरअभिषेक* बहुत से मन्दिरों में निरन्तर चलने वाली प्रथा है। विशेषकर रूद्रमन्दिरों और वैदिक हवनों में। *क्षीरअभिषेक* के पश्चात् कर्मकाण्डी दूध को उपचारी उपाय के लिए आए हुए लोगों के बीच में वितरित कर दिया जाता है भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी ऐसा विश्वास किया जाता है कि दूध का आपस में बांटना समृद्धि, धन और स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता है। मैंने स्वयं ने भी कई स्थानों पर इस तरह के उपचारी उपाय करवाये और मैंने भी कई महोत्सवों में भाग लिया। घर में समृद्धि (वैभव या सम्पन्नता) को पशुधन और दूध की मात्रा द्वारा पहचाना जा सकता है। किसी भी घर या गांव या राज्य की धनाढ़यता और समृद्धि के लिए एक प्रचलित श्लोक है *हेलिना होल। हेलिना होल* का कन्नड़ में मतलब होता है "दूध की अधिकता"।

लोकोपकार मूल–पाठ के विषयों को प्रायोगिक रूप में स्वीकार करना, मैंने अपने दैनिक जीवन में कई बार अपनाये, जबकि एक समय ऐसा भी था जब मैंने इस पुस्तक को पढ़ा भी नहीं था। मेरे पूर्वज विभिन्न सुगंधित द्रव्यों को तैयार कर उपयोग करते थे विशेषकर *सादु*, विभिन्न नुस्खों और पकवानों को *'सूप शास्त्रम्'* (पाक विधि का विज्ञान) के अनुसार तैयार करना, शादी संगति का मिलान करना और विभिन्न औषधियों का आयोजन करना आदि। जब मेरे में लड़कपन था। मैंने स्वयं ने बहुत से नुस्खे बिना लोकोपकार या बृहत् संहिता के ज्ञान के तैयार किये। इन प्राचीन मूल–पाठों का हमारे जीवन के दैनिक काम–काज में समावेश करना था। आज भी, मेरी माताजी जो कि 60 साल से बड़ी है वो लोकोपकार में उल्लिखित सभी चीजों को तैयार कर लेती है। वह मैकुली शिक्षा तंत्र की स्नातक नहीं है, लेकिन वह परंपरागत भारतीय शिक्षा विद्यालय में एक "विद्यावाचस्पति धारक" और एक "अनुसंधान निर्देशक" है। मैंने अपनी माताजी और सम्बन्धियों से बहुत सी चीजों को बनाना सीखा। मैं अब उन सभी को बना सकता हूं। मैं यहां पर यह उल्लिखित करता हूं कि पढ़ने वाला प्राचीन सिद्धान्तों और रिवाजों को समझकर आज भी इन सभी को अपने दैनिक जीवन में अपना सकता है।

हमारे गांव में, जहां हमारे समुदाय के लोग एक साथ रहते है। ज्यादातर पाकविधि व्यक्तिगत रूप से नियमित तैयार की जाती है, जो कि दोनों व्यक्तिगत घरों और सामुदायिक स्थलों जैसे– मन्दिर आदि पर। युवा पीढ़ियां परंपरागत विद्यालयों में प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षित है। इसमें कोई शक नहीं है कि यहां सभी जगहों पर वैश्वीकरण की वजह से परंपरागत साधनों पर "भारी चुंगी" देनी पड़ती थी।

मैं ग्रामीण औषधि व्यवसायी होने के कारण, मैंने यह पाया कि यह पुस्तक विभिन्न औषधियों के आयोजन (निर्माण) में काफी उपयोगी है। कुछ औषधियों का निर्माण और *सूप शास्त्रम्* का आयोजन, यहां पर यह कार्य हमारे दैनिक जीवन का एक भाग है या जीवन का धार्मिक रास्ता है। हमने इस विलक्षण को ढूंढा, इस ज्ञान को हमने अपने माता–पिता परिवार के सदस्यों और समाज के माध्यम से प्राप्त किया। जिसका कि गत वर्षों के साहित्य के अन्दर प्रमाण है।

मैंने अपने अनुभवों और वृक्षायुर्वेद के मूल–पाठों के ज्ञान के आधार पर कई पादप औषधियां निर्मित की थी। मैंने सुरपाल *वृक्षायुर्वेद* को 2001 और लोकोपकार के *वृक्षायुर्वेद* को

1996 में जाना। मैंने *वृक्षायुर्वेदम्* के सिद्धान्तों को उपयोग कर विभिन्न हर्बल (जड़ी–बूटी) कीटनाशक रसायन और वृद्धि प्रवर्तक तैयार किये। मैंने इस तरह लोकोपकार की कई तकनीकों का मेरे दैनिक जीवन में उपयोग किया और यह पाया कि इसका उपयोग दैनिक जीवन को काफी प्रभावित करता है जिसका कि दूसरे प्राचीन संस्कृत कार्यों में भी उल्लेख किया गया है, यद्यपि मैं उन सब से अच्छी तरह परिचित हूं।

लोकोपकार अध्याय 11 हाथियों, घोड़ों, गायों, बकरियों, कुत्तों और कुक्कुट आदि के लक्षणों से संबंधित है, यद्यपि आज इन सभी को अस्वीकार करने के कारण इनका बहुत ज्यादा उपयोग नहीं हो रहा है, आज इन जन्तुओं को आम आदमी या शासकों द्वारा ज्यादा पालन पोषण नहीं किया जा रहा है। लेकिन यह निर्णय गलत होगा। आज भी, भारत के विशेषकर केरल राज्य में हाथियों का पालन–पोषण और व्यवसाय एक ग्रामीण प्रथा (रिवाज) है। हाल ही का उदाहरण है कि वर्ष 2001 में तमिलनाडु राज्य की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता ने गुरूवयुर, केरल के भगवान कृष्ण मन्दिर में एक हाथी का दान किया था। इस मन्दिर में आज भी 15 से अधिक हाथियों को पाला जाता है। आज भी बहुत से ग्रामीण भागों में इमारती लकड़ी और अन्य भारी वस्तुओं के यातायात के स्थानीय साधन के रूप में हाथियों का उपयोग किया जाता है। केरल में आज भी हाथियों का प्रजनन और व्यापार की प्रथा निरन्तर चल रही है। व्यापारी हाथियों को खरीदने से पूर्व इस पुस्तक में उल्लिखित सभी लक्षणों को देखते हैं। इसी प्रकार से तमिलनाडु के कुछ आन्तरिक भागों में, मैंने घोड़ों में प्रजनन और व्यापार को पाया, विशेषकर देशी प्रभेदों को। इस क्षेत्र के आम ग्रामीण लोग घोड़ों की सवारी करना अपने जीवन का अंग मानते है। इन क्षेत्रों में घोड़ों का उपयोग वस्तुओं और लोगों को लाने ले जाने में किया जाता है। पहाड़ी क्षेत्र और दूरवर्ती स्थान होने की वजह से, सिरूमलाई में कोई भी आधुनिक यातायात सुविधा नहीं है जबकि वह दींदीगुल से केवल 30 कि.मी. की दूरी पर है, जो कि तमिलनाडु का एक तालुका (उप जिला) मुख्यालय है। घोड़ों की खरीददारी से पूर्व लोग इस सार–संग्रह में उल्लिखित घोड़ों के लक्षणों को देखकर ही खरीदते है। मवेशियों का व्यवसाय आज भी भारत के दोनों ग्रामीण और अर्द्ध–शहरीय भागों में बहुत ही आम बात है। व्यापारी या विशेषज्ञ गायों, सांडों और गाय के बछड़ों को खरीदने से पूर्व यह निश्चित करते है, कि इनके दांतो, आंखों, कानों, सींगों, बालों के वृतों (वलयों), पीठ, खुरों, जीभ, गुल्फ–संधि, कूबर, मजबूती, थन, वृषण तथा रंग आदि लक्षणों को देखकर खरीदने को निश्चित करते है। कोई भी विशेषज्ञ मवेशी को खरीदने से पूर्व दांतों की संख्या को उस मवेशी के मुंह में हाथ डालकर देखते है। इसी प्रकार से ग्रामीण क्षेत्र के लोग बकरियों, कुत्तों, और कुक्कुट को खरीदने से पूर्व उनके लक्षणों को देखने के बाद ही खरीदने का निश्चय करते है। इस पुस्तक में दिये गये विषय को ग्रामीण कर्नाटक में जनजातीय (कबीली) के लिए ज्ञान और प्रयोग का विश्वकोष कहा जाता है क्योंकि यह पुस्तक कन्नड़ भाषा में लिखी हुयी है।

हमारे परंपरागत प्राचीन जीवन तंत्र और उसके प्रयोगों से मेरी निकटता होने की वजह से, मैं लोकोपकार के संक्षिप्त भाषान्तर को अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए तुरन्त सहमत हो गया, जब मुझे डॉ. वाई. एल. नेने अध्यक्ष, एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउण्डेशन ने अगस्त 2002 में अनुरोध किया। मैं उनको इसके लिए धन्यवाद प्रस्तुत करता हूं कि उन्होंने विश्व के लिए मुझे

यह कार्य करने का मौका दिया, जो कि निश्चित रूप से लोगों की बहुत बड़ी संख्या को लाभ पहुंचायेगा। निश्चित रूप से यह कवि चावुन्द्राय की अभिलाषा ही थी कि उन्होनें लोकोपकार को 10 शताब्दियों से पूर्व हलगन्नद भाषा में संकलित किया।

मैं आज भी लोकोपकार व बृहत् संहिता में उल्लिखित विषयों के सभी प्रसंगो की खोज कर रहा हूं। इसमें सभी विषय प्रायोगिक है, जिनका की विशेषकर दूरदराज के क्षेत्रों में भारतीय कृषि वातावरण में उपयोग हो रहा है। जिस किसी को भी भारतीय ग्रामीण कृषि परंपरागत वातावरण का प्रायोगिक अनुभव और ज्ञान नहीं है उनके लिए यह पुस्तक अनुपयोगी है। महानगरीय, शहरीय, गैर–कृषीय, बहुमंजिला इमारतों में रहने वाले लोगों के लिए इस पुस्तक की कोई प्रायोगिक उपयोगिता नहीं है क्योंकि उनसे सम्बन्धित विषयों को इस पुस्तक से बाहर रखा गया है। मैंने कुछ हलगन्नद / संस्कृत शब्दों के सही या निकट अर्थ के लिए कठोर मेहनत की। जिसका की अंग्रेजी भाषा में वो अर्थ नहीं है। मैंने यह प्रयास किया है कि कुछ तकनीकी शब्दों का सम्पूर्ण विवरण दिया है जिससे की पढ़ने वाले को वो अच्छी तरह से समझ आ सके। मुझे दिये गये मुद्रित संस्करण में जब कभी मुझे लगा की मूल–पाठ और टिप्पणी में असमानता है तो मैंने केवल मूल–पाठ पर ही विचार किया।

मुझे पुस्तक में दिये गये विषयों पर पूछताछ (शंका) और विचार प्राप्त होगें तो मुझे सुखद अनुभव होगा। जो कि एक और सभी के लिए गहन बौद्धिक सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवायेगा।

संदर्भिका

Anonymous. 2001. *Ajji Maddu* (In Kannada). Ayurveda Prakasana, Panaje 574 259, Karnataka, India.

Bhat, M.R. 1985. Brhat Samhita. Vols. I and II. Motilal Banarsidass Private Limited, Delhi, India.

CSIR. 1994. Useful Plants of India. Council for Scientific and Industrial Research (CSIR), New Delhi, India.

Kittel, F. (Rev.) 1894. Kannada-English Dictionary. Basel Mission Book & Tract Depository, Mangalore, India.

Nagesha Rao, M.S. (Ed.) 1998. *Vrksyurveda* (In Kannada). Dr M S Nagesha Rao, Smaraka Ayurveda Pragathi Maththu Samsodhana Kendhra, Krakala 574 104, Karnataka, India. [This is not the Kannada translation of Surapala's Vrikshayurveda.]

Sesha Iyengar, H. 1950. Lokopakaram (printed edition with Halagannada poetry and commentary). Madras Government Oriental Manuscripts Library, Madras (Chennai), India.

Yoganarasimhan, S.N. (Ed.) 1996. Medicinal Plants of India – Volume I, Karnataka. Interline Publishing Private Limited, Bangalore, India.

लोकोपकार (हिन्दी अनुवाद)
मानव जाति के कल्याण के लिए

अध्याय 1, 2, 3 और 12 को इस प्रकाशन में सम्मिलित नहीं किया गया है।

अध्याय 4
चमत्कार

1. सांसारिक विश्व के अन्दर, बहुत सी ऐसी प्रतिकूल (विरोधी या विपरीत) घटनाएं होती है जो प्रकृति और प्रजा (लोग) दोनों को उत्पीड़ित करती है। मैं उन सभी घटनाओं की प्रायश्चित विधियों के साथ व्याख्या करुंगा, जो मानव जाति को ऐसे चमत्कारों से होने वाले दुष्प्रभावों से सुरक्षा (बचाव) प्रदान करती है।
2. लोगों द्वारा किये जाने वाले दुष्कर्म (अपराध), धीरे–धीरे महापाप के रुप में संचित होते जाते हैं, जिनका निवारण देवता (ईश्वर, परमेश्वर या भगवान) अपनी कृपा दृष्टि से करते हैं। परिणामस्वरुप देवताओं द्वारा प्रकट किया गया असंतोष ही चमत्कार होता है। चमत्कार तीन (खगोलीय, वायुमण्डलीय और स्थलीय) प्रकार के होते हैं।
3. ''ग्रहों'' जैसे– सूर्य, चन्द्रमा आदि, तारापुंज जैसे– अश्विनी आदि के अप्राकृतिक व्यवहार को खगोलीय चमत्कार कहते हैं। तूफान, मेघ गर्जन (गड़गड़ाहट), उल्काएं, इन्द्रधनुष और प्रभामण्डल आदि को वायुमण्डलीय चमत्कार कहते हैं। स्थिर (निश्चल या अचल) वस्तुओं जैसे– पौधों, मूर्तियों, पृथ्वी और जानवरों आदि की अप्राकृतिक क्रियाओं को स्थलीय चमत्कार कहते हैं।
4. ईश्वर (परमेश्वर) चमत्कारों से होने वाले दुष्प्रभावों का मूल्यांकन कर उसको उपचार के साथ सभी को संतुष्ट करते हुए उसको सम्पादित कर, शान्त करते हैं। सोना, भोजन, भूमि तथा गायों के दान से खगोलीय चमत्कार शांत हो सकते हैं। चूल्हा (अंगीठी) को जगह (स्थान) के उत्तर–पूर्व (ईशान) चतुर्थांश पर विधि–विधान के द्वारा प्रतिष्ठापित (स्थापित) किया जाता है। इस कार्य को अग्नि पूजा (उपासना) करते हुए सम्पन्न करना चाहिए। रुद्र मन्दिर की जमीन (भूमि) पर गायों के दूध का दोहन भी किया जाना चाहिए। उपरोक्त वर्णित युक्तिगत उपचार तीनों प्रकार के चमत्कारों को शान्त करेगें। इन तीनों चमत्कारों में से खगोलीय चमत्कार सर्वाधिक हानिकर (विषाक्त/जहरीला) होता है। खगोलीय चमत्कार को शान्त करने का उपाय आगे वर्णित किया गया है।

   [टिप्पणी में रुद्र मन्दिर की भूमि पर गायों के दूध के दोहन वाले उपाय का वर्णन नहीं किया गया है, लेकिन मूल–पाठ में इसका वर्णन उपलब्ध है।

   हवन एक प्रकार से पवित्र आग में भेंट की गयी वस्तुओं से निर्मित होता है, जो कि ईश्वर (परमात्मा/देवत्व) के प्रति प्रासंगिक भजनों को गाकर खुशी मनाना होता है।]
5. खगोलीय चमत्कारों के दुष्प्रभावों के परिणाम राजा (शासक) के साथ, उसके बच्चों (प्रशासक और प्रतिनधि), कोषागार (वित्त), शिक्षक या गुरु (अधिकारियों), सवारी (चक्रयान या वाहन) जैसे– शाही घोड़े आदि (वाहन और सेना), पति या पत्नि (कर्मचारियों) और नागरिक (उसके राज्य के लोग) पर प्रकट होते हैं जो उनको सहन करना पड़ता है।

6. मूर्तियों का विकृत होना या ब्रह्मा (सृष्टि के निर्माता), यम (मृत्यु के देवता) की प्रतिमाओं और बुद्धिमान ब्राह्मणों का अनिष्ट होना (वैदिक धर्मग्रंथ के विद्वान/पंडित लोग)। प्रभु के आठ चौके (चतुष्क) जैसे– इन्द्र (भगवानों के प्रभु), अग्नि (अग्नि देवता), यम (मृत्यु के देवता) निरुथी (असुरों के राजा), वरुण (वर्षा के देवता), वायु (हवा के देवता), कुबेर (धन के देवता), इशनारा (सूर्य) आदि की मूर्तियों के विकृत होने का प्रभाव मवेशियों पर पड़ता है। नाग (सर्प देवता) की मूर्तियों के विकृत होने पर उसका दुष्प्रभाव परिजनों पर होता है। कार्तिकेय स्वामी की मूर्तियों के विकृत होने पर उसका दुष्प्रभाव सामान्य (साधारण) अधिपति (राजा) पर होता है। विनायक (विघ्न हरण) की मूर्तियों के विकृत होने पर राज्य के मुख्य अधिकारियो पर बुरा प्रभाव होता है। विष्णु (सर्वशक्तिमान) और ब्रह्मा (सृष्टि के निर्माता) की मूर्तियों के विकृत होने पर उसका वृहत् प्रभाव नागरिकों पर होता है। यक्ष (अर्धदेव) की मूर्तियों के विकृत होने पर महिलाओं के लिए खतरा होता है। राक्षस (नरपिशाच या असुर) की मूर्तियों का विकृत होना बच्चों के लिए खतरा होता है। ग्रहों जैसे– शुक्र, बृहस्पति (गुरु) तथा शनि की मूर्तियों के विकृत होने का प्रभाव मंत्रियों पर होता है। इन चमत्कारो के दुष्प्रभावों का असर शुरु होने के दिन से आठ महीनों के अन्दर होता है।

7. भगवानों की मूर्तियों, मन्दिरों तथा लिंगों (शिव की मूर्ति का प्रतीक) का थरथराना (कांपना या कम्पन या स्पन्दन), गिर जाना और टूट जाना तथा मन्दिर की गाड़ी या कार (मन्दिर की लकड़ी की गाड़ी) के पहिये और धुरी (कीली) का टूट जाना या नीचे गिर जाना या गाड़ी मेले में मन्दिर गाड़ी की निश्चलता (सुस्थिरता) देश के राजा के विनाश की भविष्यवाणी करता है।

8. क्रोध को शांत करने के लिए (चमत्कारों के दुष्प्रभाव का परिणाम या नतीजा), शाही (राजकीय या राजसी) पुरोहित (पुजारी) को स्नान कर अपने आप को मानसिक और शारीरिक रुप से शुद्ध करना चाहिए। उसको तीन दिनों तक उपवास (व्रत) रखना चाहिए और सात दिनों तक गानों, नृत्य और वाद्य आदि के साथ आठ तरीकों से विकृत मूर्ति की उपासना करनी चाहिए।

   [*स्नान* (पानी), *कुसुम* (फूल), *अनुलेपन* (चन्दन लेई), *वस्त्र* (कपड़े), *मधुपरक* (दही, घी, पानी, शहद तथा शक्कर से निर्मित एक नुस्खा), *भिक्षा* (भोजन), *बलि* (एक समर्पण) और *स्थलिपाक* (आग को समर्पण) आदि को उपासना के आठ तरीकों के रुप में जाना जाता है।]

9. पुरोहित द्वारा इन सात दिनों के अन्दर एक क्रमबद्ध रीति से विकृत मूर्ति को सोलह श्रद्धांजलि जैसे *मधुपरक* आदि की अर्पण (भेंट) करनी चाहिए। इन सात दिनों के अन्दर देवता के प्रासंगिक स्त्रोतों (भजनों) को गाते हुए हवन में *स्थलिपाक* अर्पण (भेंट) करनी चाहिए। यह इन चमत्कारों को शांत करने की अगुवाई करेगा।

   [सोलह श्रद्धांजलियों का क्रम इस प्रकार है– *आसन* (स्थान), *स्वागत* (सत्कार), *पद्य* (पानी से पैरों को धोना), *अर्घय* (पीने का पानी देना), *स्नान* (कर्मकाण्डी प्रक्षालन), *वस्त्र* (कपड़े पहनना), *अभरन* (सोने और चांदी के आभूषण), *गंध* (चंदन लेई), *सुमन* (श्लोक स्तुति), *धूप* (लोबान या सुंगध), *दीप* (दीपक) और *नैवेद्य* (खाने योग्य भेंट) और *वन्दना* (आराधना/श्रद्धा) आदि है।

   स्थलिपाक से तात्पर्य है कि कर्मकाण्डी आग पर स्वतः ही एक कलश (घट) में चावल का पकाना, बाद में हवन की आग में उसको आहुति के रुप में अर्पित किया जाता है।]

10. दिन के अन्दर अंधेरा, वायु बल की अनुपस्थिति में धूल का निर्माण, बिना आग की उपस्थिति के धुंआ, दिन के समय के अन्दर आसमान के अन्दर तारों का दिखना तथा रात के समय स्वच्छ आसमान में तारों का नहीं दिखना आदि चमत्कारों के अवलोकन से पूरे देश में दु:ख–तकलीफ (विपत्ति या कलेश या कष्ट या संकट), अकाल या भुखमरी और महामारी आती है।

11. सोना, फलों और धान्यों की भरमार (बौछार) लोगों में विचित्रता और भयोत्पादकता उत्पन्न करती है। जलते हुए कोयले की वर्षा और वायु दबाव की अनुपस्थिति में धुएं का प्रकटीकरण उस विशिष्ट शहर (स्थान) को नष्ट कर देता है। अप्राकृतिक रुप से जानवरों की मृत्यु के चमत्कार से पूरे देश का विनाश होता है। बहुत अधिक मात्रा में जब वर्षा होती है, सूखा, टिड्डी, चूहों, तोतों और अन्य पक्षियों की खीझ (नाराजगी) और अपनी सेना या बाहरी सेना द्वारा आक्रमण होने पर जो कठोर विपत्ति आती है वैसी ही कठोर विपत्ति रुक–रुक कर वर्षा होने पर आती है।

12. बिना बादलों के वर्षा या सात दिनों तक लगातार असामयिक वर्षा होने का चमत्कार राजा के लिए खतरनाक होता है। खून और पानी की वर्षाओं का दुष्प्रभाव मुख्यमंत्री पर पड़ता है। अत्यधिक मात्रा में खून की वर्षा का दुष्प्रभाव राजा पर पड़ता है।

13. यदि किसी भी चीज (वस्तु) की छाया सूर्य की दिशा की ओर पड़ती है। यदि किसी भी चीज (वस्तु) की छाया बादलविहीन आसमान में चमकते हुए सूर्य की ओर नहीं पड़ती है। यदि ठंडे से गर्म का होना और इसका उलटा (विपरीत) होना। उपरोक्त वर्णित चमत्कारों के कारण पूरे देश की प्रजा पर आपदा (भीषण दुर्घटना) आयेगी। यदि बादलविहीन दिन या रात में इन्द्रधनुष दिखाई देता है तो इस चमत्कार के दुष्प्रभाव से जीवित प्राणियों में भुखमरी की समस्या उत्पन्न होती है।

14. आसमान से गाने और वाद्य यंत्रों की आवाज सुनाई दे तो इस चमत्कार से महामारी और लोगों की मृत्यु होती है। वाद्य यंत्रों पर बिना किसी मार के आवाज का निकलना या उस पर मारने पर आवाज का नहीं निकलना, यह राजा की मृत्यु तथा उग्र (खूंखार) युद्ध के होने की पूर्व सूचना होती है।

15. वायु के वातावरणीय चमत्कारों को शांत करने के लिए, राजा को अत्यधिक श्रद्धा के साथ वायु देवता के भजनों का कीर्तन करते हुए पूजा (अर्चना) करनी चाहिए। राजा को ब्राह्मणों से *जप* (वैदिक स्त्रोतों या गानों को गाना) और हवन करने के लिए अनुरोध करना चाहिए। ब्राह्मणों को आलीशान (बहुमूल्य) भोजन परोसना चाहिए तथा दयालु (परोपकारी) और पवित्र (सदाचारी) लोगों को दान और उपहार देना चाहिए। ये उपाय वायु से उत्पन्न चमत्कारों को शांत करेगें।

16. सूर्य उदय के समय बेमौसम में क्षणिक गड़गड़ाहट का होना राजा और मंत्रियों के लिए, द्वितीय *यम* में शहर के मुखिया के लिए, तृतीय *यम* में ब्राह्मण सेवकों के लिए तथा चर्तुथ *यम* में यानी सूर्य अस्त के समय व्यापारियों, चोरों, जुआरियों तथा नीची जाति के लोगों के लिए घोर विपत्ति (संकट या अनर्थ या दुर्घटना या महाविपदा) की पूर्व सूचना या पूर्व बोध या पूर्व संकेत होता है।

17. रात्रि के प्रथम *यम* में गड़गड़ाहट का होना पादप जीवन के लिए, द्वितीय *यम* में बेताल (पिशाच) और शैतानों के लिए, तृतीय *यम* में हाथियों और घोड़ों के लिए तथा रात्रि के चतुर्थ *यम* (सूर्य उदय से पूर्व) में यात्रियों के लिए घोर विपत्ति (संकट या अनर्थ या दुर्घटना

या महाविपदा) की पूर्व सूचना या पूर्व बोध या पूर्व संकेत होता है।

[प्रत्येक दिन और रात को चार बराबर भागों में विभाजित किया जाता है जिसको *यम* के नाम से जाना या पुकारा जाता है। दिन का प्रथम *यम* सूर्य उदय के साथ प्रारम्भ होता है तथा चतुर्थ *यम* सूर्य अस्त के साथ समाप्त होता है। इसी प्रकार से रात्रि के समय प्रथम *यम* सूर्य *अस्त* के समय प्रारम्भ होता है तथा रात्रि का चतुर्थ *यम* दूसरे दिन के सूर्य उदय के समय समाप्त होता है। एक *यम* की अवधि दिन और रात की लम्बाई के आधार पर परिवर्ती (विविध) होती है। जब रात और दिन बारह घंटे की बराबर अवधि के होते है तो एक *यम* तीन घंटे का होता है (कुछ लोग इसको 'वाच' कहकर पुकारते है, जो कि मैं महसूस करता हूं कि वो उचित अंग्रेजी अर्थ नहीं है। *यम* एक संस्कृत शब्द है जिसको कन्नड़ में *जव* के नाम से जाना जाता है)]

18. आसमान की सभी दिशाओं में विभिन्न रंगों की उल्काएं दिखाई देती है। इनको पांच प्रकारों में विभाजित करते है जैसे– उल्काएं, वज्रपात, बिजली, तारों की गोलीबारी और *धिनस्य* (आग के गोले) आदि।

[मूल–पाठ और टिप्पणी में पंचम उल्का को *विष्णु* के नाम से जाना जाता है, जो कि विकृत है। यह *धिनस्य* होना चाहिए। संभवतः यह त्रुटि धीरे–धीरे आगे बढ़ती हुयी पांडुलिपि में सम्मिलित हो गयी, जो कि मुद्रित संस्करण में छप गयी है। बृहत् संहिता में इसका संदर्भ अध्याय 33, श्लोक 1 है।]

19. उत्तर में सफेद उल्काओं का दिखाई देना (दृश्य) ब्राह्मणों के लिए, पूर्व में लाल उल्काओं का दिखाई देना क्षत्रियों (योद्धा या सैनिकों) के लिए, दक्षिण में पीली उल्काओं का दिखाई देना वैश्यों (व्यापारियों) के लिए तथा पश्चिम में काली उल्काओं का दिखाई देना या प्रकट होना अनिष्ट की पूर्व सूचना होती है।

20. विलक्षण घटनाएं जैसे– दोपहर में शीतलन (ठंडक), चन्द्रमा की किरणों से गर्मी, पृथ्वी का कम्पन (थरथराना) करना, मौसम की वर्षा की अनुपस्थिति में बहुरंगी उल्काओं का गिरना आदि। ये सभी विलक्षण घटनाएं राजा पर विपत्ति (अनिष्टकर/अशुभ) की पूर्व सूचना देते हैं। पड़ौसी राजा देश में घुस जायेगा। अकाल (भुखमरी) पड़ता है। इन सभी का संकलन मंदाचार्य के विज्ञान से किया गया है।

21. जब कूच करने वाले राजा के सूर्य दायीं तरफ होता है तो वह विजयी होता है। यदि चन्द्रमा उसके बायीं ओर है तो वो युद्ध में हारता है। कूच करने वाले राजा के सामने आसमान से उल्काएं गिरती है तो वह राजा युद्ध में विजयी होता है। यदि जिस दिशा में लड़ाई चल रही है उसी दिशा में उल्काएं गिरती है तो वह राजा युद्ध में विजयी होता है।

22. यदि ग्रामीण देवताओं की मूर्तियों पर उल्काएं गिरती है तो यह पूरे राष्ट्र के लिए विपत्ति की, शस्त्रागार पर गिरती है तो राजा के लिए विपत्ति (संकट), खेत पर गिरती है तो सम्बद्ध किसान के लिए, घोड़े पर गिरती है तो सम्बद्ध मालिक के लिए, मवेशी छप्पर पर गिरती है तो मवेशियों के लिए, गांव के चबूतरे पर लगे हुए पेड़ों जिसकी पूजा अर्चना की जाती है उस पर उल्काएं गिरती है तो वो देश के महत्वपूर्ण व्यक्ति के लिए मुसीबत की पूर्व सूचना होती है।

23. मेघश्याम (धुंधला) मौसम में जब सूर्य किरणें हवा के साथ बहकर कई रंगों में परिवर्तित होकर धनुष जैसी दिखाई दे, आज इसे इन्द्रधनुष के नाम से जाना जाता है। इसकी चमक अधिशेष के मणि छत्र के समान होती है, जो कि उसके श्वास के साथ उत्सर्जित होती है।

यात्री (मुसाफिर या पथिक या राहगीर) के सामने की दिशा में इन्द्रधनुष का दिखाई देना उसके लिए विनाश (तबाही या बरबादी) की पूर्व सूचना है।

[अधिशेष, सर्पों के राजा, भगवान विष्णु (सर्वशक्तिमान) की शय्या को कहते हैं।]

24. यदि बहुरंगी इन्द्रधनुष पृथ्वी को छू रहा है और उसके दोनों सिरे दुगुने आकार के दिखाई दे तो यह शुभ या मांगलिक होता है और बहुत अधिक (प्रचुर/विपुल) मात्रा में वर्षा होती है।

25. एक गुलाबी रंग का इन्द्रधनुष युद्ध, पीले रंग का इन्द्रधनुष आग से क्षति और काले रंग का इन्द्रधनुष विनाशकारी सूखे की भविष्यवाणी है।

26. पेड़ों पर इन्द्रधनुष का दृश्य दिखाई देने से फसलों की अच्छी पैदावार होती है। भूमि पर इन्द्रधनुष का बनना पादप जीवन को नष्ट करता है। पानी पर इन्द्रधनुष का बनना अकाल का संकेत है। वर्षा के अन्दर इन्द्रधनुष का बनना सूखे की पूर्व सूचना है। सूखे के समय के अन्दर इन्द्रधनुष का बनना या पश्चिम की ओर इन्द्रधनुष का दिखाई देना अच्छी वर्षा का संकेत है।

27. *ज्येष्ठ* (मई–जून), *आषाढ़* (जून–जुलाई) और *श्रावण* (जुलाई–अगस्त) आदि महीनों में पश्चिम दिशा की ओर इन्द्रधनुष का दिखाई देने से अगले तीन महीनों तक सूखे की स्थिति रहती है।

28. रात्रि में पूर्व की ओर इन्द्रधनुष का दृश्य राजा के लिए विचित्रता और भयोत्पादकता लाती है। दक्षिण में गांव के मुखिया के लिए, पश्चिम में जागीरदार (सामन्त), राजा (राजकुमार) और व्यापारियों आदि के लिए विपत्ति, उत्तर में सलाहकार (परामर्शदाता) और मंत्रियों के लिए विपत्ति आती है। मध्यवर्ती चतुष्कों जैसे–दक्षिणपूर्व (आग्नेय), दक्षिणपश्चिम (नैर्ऋत्य), उत्तरपश्चिम (वायव्य) और उत्तरपूर्व (एशान्य) में अपने–अपने चतुष्कों में रहने वाले लोगों के लिए हानिकर होती है।

29. सूर्य और चन्द्रमा की किरणों से नीली, मोर जैसी नीली, चांदी, सीसम (काली), दूध (शंख) या पानी जैसी प्रभामण्डलों का निर्माण होना। सूर्य और चंद्रमा से शांत (मधुर), चक्रीय और सफेद प्रभामण्डलों का बनना शुभ (मांगलिक) होता है और समृद्धि या सम्पन्नता की भविष्यवाणी करता है।

30. मोर की गर्दन के रंग का प्रभामण्डल बनने से प्रचुर (विपुल या बहुत अधिक) मात्रा में वर्षा होती है। एक बहुरंगी प्रभामण्डल राजा के लिए खतरे की भविष्यवाणी है। इन्द्रधनुष का बनना युद्ध और धुएं के रंग का इन्द्रधनुष आतंक पैदा करता है।

31. चक्रीय, खंडित (टूटा हुआ), अखण्डित (अटूट), खुरदरी (ऊबड़–खाबड़) जो कि ठेला या गाड़ी, धनुष या एक त्रिकोण के जैसी दिखाई दे, ऐसे प्रभामण्डलों का सूर्य उदय या सूर्य अस्त तक आसमान में ठहरना पूरे विश्व के लिए महाविपदा (घोर विपत्ति या संकट या दुर्घटना) की भविष्यवाणी करता है।

[टिप्पणी विकृत है। यहां पर मूल–पाठ को ध्यान में रखकर अनुवाद किया गया है।]

32. उषाकाल (भोर) के समय में सूर्य और चन्द्रमा से प्रभामण्डल के निर्माण के समय जंगली जानवरों और पक्षियों का चिल्लाना, दोपहर या रात्रि में विचित्रता और भयोत्पादकता की भविष्यवाणी करता है। प्रभामण्डल के निर्माण के समय उल्काओं का गिरना धनवान व्यक्ति की मृत्यु का कारण होती है।

33. प्रभामण्डल के भीतरी भाग में मंगल ग्रह की उपस्थिति मंत्रियों, गांव के मुखिया और राजा के लिए शस्त्रों (हथियारों) से खतरे की भविष्यवाणी होती है। बुध की उपस्थिति शास्त्री

(धर्मशास्त्री), पादप जीवन और मंत्रियों के लिए शुभ या मांगलिक होती है। बृहस्पति (गुरु) की उपस्थिति राजा, मंत्री और राजकीय (शाही) पुजारी के लिए अशुभ का संकेत है।

34. प्रभामण्डल के भीतरी भाग में शुक्र ग्रह की उपस्थिति रानी के लिए घोर व्यथा (यन्त्रणा या प्राणपीड़ा) की भविष्यवाणी होती है। शनि ग्रह के कारण शुद्रों (मजदूर या श्रमिकों) और धान्य (बाजरा) का अनिष्ट होता है। राहु के कारण प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है और गर्भवती महिला के भ्रूण के लिए कठिनाई पैदा करता है। केतु के कारण विभिन्न तरह की दुःख तकलीफे (विपत्ति) आती है।

35. प्रभामण्डल के भीतरी भाग में दो ग्रहों की उपस्थिति का परिणाम युद्ध, तीन ग्रहों की उपस्थिति का परिणाम अकाल (भुखमरी), चार ग्रहों की उपस्थिति राजा के लिए खतरा, पांच ग्रहों की उपस्थिति का परिणाम देश की जनता (जनसमूह) का विनाश होता है।

36. प्रभामण्डल में दो वलयों (चक्रों) की उपस्थिति सेना के सेनापति के लिए, तीन वलयों (चक्रों) की उपस्थिति राजकुमार के लिए अशुभ की पूर्व सूचना होती है। धूमकेतु (केतु?) का दिखाई देना, जबकि प्रभामण्डल के भीतरी भाग में ग्रहों की उपस्थिति, सभी विपत्तियों को शीघ्रता से निष्प्रभावित कर देती है।

[यह जानकारी बृहत् संहिता से ली गयी थी]

37. सूर्य के उत्तर में एक सूर्याभास का आभास होना, वर्षा को लाती है। दक्षिण में हो तो प्रचण्ड हवा आती है। सूर्य के दोनों ओर हो तो अत्यधिक वर्षा होती है। सूर्य के ऊपर हो तो राजा की मृत्यु तथा सूर्य के नीचे हो तो आमजन के लिए खतरा होता है। यदि सूर्य के चारों तरफ हो तो महामारी, राजा के लिए अशुभ तथा नीची जाति के लोगों (शिकारियों) के लिए अनिष्टकर होता है।

38. विशिष्ट मौसम में सूर्य के अधिकृत रंगों में से सूर्याभास का आभास होना। नीला, सफेद और दूधिया रंग आदि शुभ और मांगलिक होते हैं। पीले रंग के कारण रोगों और व्याधियों में वृद्धि होती है। लाल रंग के कारण भीषण (प्रचण्ड) युद्ध होता है। उपरोक्त सूर्याभासों का परिणाम उस देश पर होता है जहां पर सूर्याभास का आभास होता है।

39. सफेद रंग के काल्पनिक शहर का आभास होना ब्राह्मणों के लिए, लाल रंग क्षत्रियों (योद्धाओं) के लिए, सोने जैसा पीला रंग वैश्यों (व्यापारियों) के लिए, काला रंग शुद्रों (श्रमिकों) और धुएं जैसा रंग शिकारियों के लिए अशुभ होता है।

[टिप्पणी विकृत है। मारसर्प को प्रतिसूर्या में प्रस्तुत किया गया है जो कि सही नहीं है। मारसर्प का कन्नड़ में गंधर्व नगर नाम है (काल्पनिक शहर)।]

40. पूर्व में काल्पनिक शहर का आभास होना राजा के लिए पश्चिम में हो तो नागरिक (प्रजा या जनता), दक्षिण में हो तो सेना के सेनापति, उत्तर में हो तो शाही पुजारी (पुरोहित) के लिए खतरा होता है और सभी चतुष्कों में पूरे देश के साथ–साथ राजा को भी असीम खतरा होता है। *संत* दिशाएं राजा को विजय दिलाती है और *दिप्त* दिशाएं राजा के लिए घोर विपत्ति लाती है।

[*संत* और *दिप्त* दिशाएं प्रत्येक यम के दिन और रात पर निर्धारित की जाती है। (कृपया नीचे दी गयी तालिका को देखें)]

संत और *दिप्त* दिशाएं								
	दिन[1]				रात[1]			
यम	I	II	III	IV	I	II	III	IV
दिप्त	पूर्व (E)	आग्नेय (SE)	दक्षिण (S)	नैर्ऋत्य (SW)	पश्चिम (W)	वायव्य (NW)	उत्तर (N)	एशान्य (NE)
संत	उत्तर और पश्चिम (N&S)	एशान्य और नैर्ऋत्य (NE&SW)	पूर्व और पश्चिम (E&W)	आग्नेय और वायव्य (SE&NW)	दक्षिण और उत्तर (S&N)	नैर्ऋत्य और एशान्य (SW&NE)	पश्चिम और पूर्व (W&E)	वायव्य और आग्नेय (NW&SE)
[1]E (East) = पूर्व, SE (Southeast) = आग्नेय, S (South) = दक्षिण, SW (Southwest) = नैर्ऋत्य W (West) = पश्चिम, NW (Northwest) = वायव्य N (North) = उत्तर, NE (Northeast) = एशान्य								

41. शहर के उत्तर की ओर 'काल्पनिक शहर' का आभास होना शहर पर विपत्ति की पूर्व सूचना है। यद्यपि शहर के उत्तरपूर्व में 'काल्पनिक शहर' का आभास होना शहर के लिए शुभ (मांगलिक) होता है, लेकिन पांच कारीगरों (शिल्पकारों) जैसे– बढ़ई (काष्ठकार/खाती), सुनार, लोहार, राजमिस्त्री (संगतराश) और ठठेरा आदि के लिए विपत्ति की पूर्व सूचना है।

42. शहर के दायीं ओर 'काल्पनिक शहर' का आभास होना राजा के विजयी होने की पूर्व सूचना है। बायीं ओर होने पर शत्रु से हारने की आशंका बनी रहती है। यदि बहुरंगी झंडा जैसा दिखाई देता है तो यह युद्ध की पूर्व सूचना है।

43. ऊपरोक्त वर्णित वातावरणीय और स्थलीय चमत्कारों जैसे – सूर्याभास, इन्द्रधनुष, काल्पनिक शहर, प्रभामण्डल और उल्काओं आदि को निष्प्रभावी करने के लिए इस क्रम में राजा को सूर्य और चन्द्रमा की पूजा या उपासना करनी चाहिए। पूजनीय देवताओं की मूर्तियों और प्रतिमाओं को स्थापित करना चाहिए और पूर्ण निष्ठा के साथ सोलह श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। ब्राह्मणों को भोजन, कपड़े तथा सोने आदि के साथ पूजनीय देवताओं की मूर्तियों का परम सुख के साथ दान करना चाहिए। इससे उपरोक्त चमत्कार शांत होते है।

44. यदि अचानक आग लग जाती है या किसी आग के बिना धुएं का आभास होना या अचानक आग अवलोकित (प्रेक्षित) हो, ये विचित्रता और भयोत्पादकता तथा राजा की मृत्यु की पूर्व सूचना है। साथ ही पूरे देश का विनाश (विध्वंस) होता है।

45. यदि शस्त्र जैसे– तलवार (खड़ग/कृपाण) आदि म्यान से बाहर निकालने के बाद स्वतः ही कांपते हुए आवाज आती है, घर के बाहर लगी हुई बन्दरवार (तोरण) में आग की चिनगारी लग जाती है, यदि मन्दिरों, घरों, मेहराब तथा झंडों आदि में बिना आग के जल जाये या बिजली से जल जायें, उपरोक्त सभी चमत्कार अगले छः महीनों के अन्दर एक युद्ध होने की घटना की भविष्यवाणी होती है।

46. शयनकक्ष में बिना आग के धुएं की उपस्थिति, फटे–पुराने कपड़ों का जलना, स्वयं के सिर पर एक बार चिनगारी के गिरने के कारण सम्बद्ध व्यक्ति की तुरन्त मौत हो जाती है।

47. ऊपर वर्णित आग के चमत्कारों के हानिकर (अशुभ) प्रभावों को दूर करने की दिशा में, उस व्यक्ति विशेष को अग्निदेवता (आग के देवता) हवन घी, सरसों बीज और दूधिया पेड़ों की *समिधा* (टहनियां) से करना चाहिए। साथ ही अग्निदेवता का ध्यान कर वैदिक स्त्रोतों का उच्चारण करना चाहिए। उसको गाय, भूमि, भोजन तथा सोना आदि का ब्राह्मणों को दान करना चाहिए, इससे हानिकर प्रभाव निष्प्रभावित होते है।

48. यदि कभी ना सूखने वाले स्थान जैसे– झीलों, गहरे हौज या कुंड और तालाब (छोटे या बड़े) अचानक सूख जाते हैं, यदि गांव के सामने नाला ऊपर की ओर बहता है, तो ये चमत्कार गांव के तेजी से विनाश होने की पूर्व सूचना है।

49. यदि नदियों का बहाव वसा, रक्त, शराब (मद्य) या प्रचुरता में तेल के साथ बह रही है, तो यह शत्रु राजा द्वारा अगले छः महीने के अन्दर आक्रमण करने की और पूरे देश के विनाश की पूर्व सूचना होती है। शत्रु अश्लील (गंदे/मैले) खुशबूदार उत्पादों का पता लगाते है। शत्रु की सेना भू–भाग पर आधिक्य (अतिक्रमण) करती है। यदि काल्पनिक स्थान से ऊपर की ओर पानी प्रकट होता है तो पृथ्वी पर प्रचण्ड घोर विपत्ति (अनर्थ या महाविपदा) आती है।

50. अचानक आग, धुंआ, पानी में बुलबुले, बात करने की आवाज, चिल्लाना, कृपादान (आशीवार्द या वरदान), गाने की आवाज़ तथा पानी की प्रतिबिम्बित (परावर्तित) प्रतिमा से रोने की आवाज का आभास होना। यह पूरे देश में महामारी फैलने और विध्वंस (सर्वनाश या तबाही) की भविष्यवाणी है।

51. उपरोक्त पानी के चमत्कारों को शांत करने के लिए वरुण (पानी के देवता) देवता से सम्बन्धित स्त्रोतों का उच्चारण करते हुए पूजा (उपासना) करनी चाहिए। ब्राह्मणों को *जप–तप* (ध्यान) और हवन का आयोजन करना चाहिए। इससे पानी से सम्बन्धित चमत्कारों से होने वाले अशुभ प्रभावों का निवारण होगा।

52. तेज हवा की अनुपस्थिति में अचानक पेड़ों की टहनियों का गिरना या पेड़ों से रक्त का बहना आदि इस बात की भविष्यवाणी है, कि उस स्थान पर अचानक युद्ध होता है। धुएं और वाष्प का आभास तथा गांव के धार्मिक (पवित्र या पावन या पुण्य) पेड़ों पर बेमौसम फूलों और फलों का लगना आदि देश के राजा के लिए खतरे की भविष्यवाणी है। अचानक पानी का बहना या पेड़ों से दूध का रिसना, ये सूखे के कारण भोजन और धन की कमी होने की भविष्यवाणी है।

53. कुम्हलाये (मुरझाये) हुए पेड़ों से नये अंकुरों का फूटना, स्वस्थ पेड़ों का मुरझा जाना, पेड़ों से तेल का बहना आदि देश में अकाल और फसलों के नुकसान के कारण होते हैं। यदि घी जैसा द्रव्य पेड़ों से बहता है तो देश के जनसमूह (जनता) के बीच महामारी फैलेगी।

54. बेमौसम में तरुण पादपों में पुष्पण होना उस स्थान के बच्चों में नश्वरता (मर्त्यता या घातकता) की भविष्यवाणी होती है। असमय पेड़ों पर फूलों और फलों का आना तथा बिना तेज हवाओं का पेड़ों का उखड़ जाना देश के लिए खतरे (जोखिम या संकट) का संकेत होता है। इसी प्रकार से पेड़ों में चहलकदमी (हवाखोरी) और बोली (अभिव्यंजक) देश के लोगों के विनाश (सर्वनाश या विध्वंस) की भविष्यवाणी है।

55. उपरोक्त वर्णित पेड़ों के चमत्कारों के आभास के बाद दस महीनों के भीतर ये घटित होते हैं। पेड़ों से होने वाले चमत्कारों से होने वाले हानिकर प्रभावों के निवारण के लिए, ऐसे पेड़ों को एक छाते से ढ़क देना चाहिए। ऐसे पेड़ों के नीचे प्रभु रुद्र (शिव) की मूर्ति को शास्त्रों (विज्ञान) में वर्णित विधि–विधान के अनुसार स्थापित करनी चाहिए। ब्राह्मणों द्वारा हवन का आयोजन किया जाना चाहिए और श्रेष्ठ (सर्वोत्तम) भोजन (दूध में पके हुए चावल जिसमें शर्करा या चीनी मिश्रित हो, सामान्यतः कन्नड़ में इस तरह के भोजन को *हेतु पयस* के नाम से पुकारते है) का सेवन करना चाहिए। ब्राह्मणों को अपनी क्षमता के अनुसार जमीन का दान करना चाहिए। ये सभी उपाय पेड़ों के चमत्कारों को शांत करेगें।

56. यदि ज्वार, जौ तथा कांगनी के डंठल पर भुट्टे की दो बालियां पायी जाती है या पदमा और कुमुद के पादप संयुक्त रुप से एक साथ उगते हैं, तो ये सभी उसके मालिक की मृत्यु की भविष्यवाणी है।

57. यदि रोपी गई फसल काफी घनी है, यदि एक अकेले पादप पर बेमौसम में असमान फूल, कोमल (नरम) फल, अपरिपक्व (कच्चे) फल और फल पाये जाते है, ये सब इस बात की भविष्यवाणी है, कि विदेशी शत्रु राजा द्वारा देश पर आक्रमण और हमला होगा। यदि निरोग लोग फीके खाद्य पदार्थ और फलों को ढूंढ़ निकालते है या यदि तिल के बीजों से तेल नहीं निकलता है या बहुत कम मात्रा में निकलता है, ये सभी देश में विचित्रता और भयोत्पादकता की भविष्यवाणी है।

58. पादपों और पेड़ों के ऊपर पाये जाने वाले असामान्य फूलों और फलों को हटाकर (उतारकर) उनको गांव के बाहर वाले स्थान पर रख देते हैं और उसके दुष्प्रभावों को खत्म करने के लिए पूजा (उपासना) करनी चाहिए। *शास्त्रों* (हवन विधि–संग्रह के अनुसार सम्पन्न करें) के अनुसार विधि विधान के साथ हवन का आयोजन सम्पन्न करना चाहिए। सोना या अन्य दूसरे उपहार ब्राह्मणों को दान करना चाहिए। उपरोक्त उपचारों द्वारा फसलों के चमत्कारों से होने वाले अनिष्टकर प्रभावों का निवारण किया जाता है।

59. यदि इन्द्र की पताका विभिन्न त्यौहारों पर घर के अन्दर बंधी हुयी है, झंडा और बंदरवार (तोरण) दरवाजे पर बंधी हुयी है, जो स्वतः ही, बिना किसी कारण के टूटकर गिर जाती है तो ये सभी राजा की मृत्यु की भविष्यवाणी है।

60. यदि जुताई के कार्य के समय बैल और हल अटक जाता है, यदि घर के बर्तन विकृत हो जाते हैं, यदि सियार दिन के समय सूर्य की तरफ मुंह करके जोर से चिखता या चिल्लाता है, ये सभी देश के अन्दर अस्त्रों (हथियारों) से खतरे की पूर्व सूचना है।

61. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय *दिप्त* दिशा की ओर पक्षियों और जानवरों का जोर से चिखना और आसमान में पक्षियों का विपरीत दिशाओं में बहुतायत में भ्रमण (धूमना–फिरना), देश में वृहत् (विशाल) और अचानक खतरे की पूर्व सूचना है।

62. यदि गांव के पक्षी जंगलों में भ्रमण करते हैं और जंगल के पक्षी गांव और शहरों में भ्रमण करते हैं। यदि दिन के समय में उड़ने वाले पक्षी रात में उड़ते है या रात में उड़ने वाले पक्षी दिन के समय में उड़ते है। यह देश में विपत्ति का संकेत है।

63. जंगली पक्षी *हल्लकी,* काली चिड़िया (पक्षी), जंगली कबूतर, सारस, बाज तथा उल्लू आदि राजमहल के सामने आवाज करते हैं, तो यह राजा और शहर दोनों के लिए अनिष्ट की भविष्यवाणी है।

[*हल्लकी* एक छोटा उल्लू है जो कि विशेषकर चांदनी रात में उड़ता है और मानव की आवाज की नकल उतारता है।]

64. यदि पक्षी घरों के दरवाजों और तोरण (बंदरवार) पर बैठते हैं, यदि सर्प घर के अंदर घुस जाता है, घरों में शहद के छत्ते का निर्माण हो जाता है, ये सभी घर के मालिक के लिए खतरे की भविष्यवाणियां है। कुत्ते द्वारा हड्डियों और शव (लाश) के भागों को घर पर लाना, यह घर के सदस्यों के बीमारी की भविष्यवाणी है। यदि पशु अपने साथ तीरों (बाणों) को खींचते हुए गांव में घुस जाता है, तो यह देश के राजा के विनाश की पूर्व सूचना होती है।

65. जानवरों और पक्षियों के चमत्कारों से होने वाले अनिष्टकर प्रभावों से बचने के लिए आनन्दोत्सव (आमोद–प्रमोद) और हवनों का आयोजन करना चाहिए। ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन खिलाना चाहिए। भूमि, पशु और अन्य उपहारों का दान करना चाहिए।

66. यदि एक गर्भवती महिला अजीब दो, तीन, चार या उससे अधिक बच्चों को जन्म देती है तो इससे पूरे कुल का पतन होता है।

67. यदि गायों, भैसों, हाथियों, घोड़ों तथा ऊंटों द्वारा जुड़वां बच्चों को जन्म दिया जाता है तो उस मां की मृत्यु हो जायेगी या अगले छः महीनों में वह झुण्ड को छोड़ देगी। इस तरह के जानवरों को दूसरे देश में भेज देना चाहिए। इन अनिष्टकर प्रभावों से बचने के लिए नम्रता (विनय), श्रद्धा और उदार मन से ब्राह्मणों को गायों, भूमि तथा सोना आदि का दान करना चाहिए।

68. यदि सर्पों, चूहों, गायों और मछलियों को छोड़कर सजीव जीवधारी अपने परिवार के साथी का मांस सेवन करते हैं तो ये सूखे और अकाल की भविष्यवाणी होती है। यदि स्तनधारी और घोड़ों को छोड़कर अन्य चौपाया जानवर दूसरी नस्लों के जानवरों को अपना साथी बनाते हैं तो इससे पूरे देश का विनाश होता है।

69. यदि स्वस्थ गायें अपने पैरों को लगातार या निरन्तर मारती या पीटती है तो उसका मालिक बीमार होता है। यदि गायें अपना सिर पीछे की ओर मोड़कर अश्लील चीजों को खाती है तो यह उसके मालिक के लिए अशुभ होता है। यदि गायें बिना किसी कारण के ठिठुरती या कांपती है तो यह चोरी होने की पूर्व सूचना होती है। यदि गाय अच्छे भोजन में से द्वेष के कारण सूखे हुए भोजन को छोड़ देती है तो उसके मालिक को नुकसान होता है। यदि बांझ गायें अधिक मात्रा में दूध देती है तो उसके मालिक पर विपत्ति आती है।

70. दायें चर्वणक (दाढ़) दांत का टूटना राजा के लिए, मध्य दांत का टूटना पूरे देश के लिए, ऊपर के दांत का टूटना नौकरों के लिए, बायीं चर्वणक (दाढ़) का टूटना रानी के लिए, बायें मध्य दांत का टूटना शाही पुजारी के लिए, बांयी तरफ का ऊपर का दांत टूटना मंत्रियों के लिए विपत्ति का कारण है।

71. अचानक पादपों और पेड़ों का गिरना, पूरे देश में विचित्रता और भयोत्पादकता लाती है। *दिप्त* दिशाओं में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय चमत्कारों का अवलोकन (प्रेक्षण), पृथ्वी की अपरिष्कृत भूमि पर दरार का आना और पृथ्वी का थरथराना या कांपना, नागरिकों (प्रजा) के दुःख–तकलीफ की भविष्यवाणी होती है। अचानक राक्षस के लक्षणों का प्रकट होना। इन अनिष्टकर प्रभावों से बचने के लिए राजा को एक करोड़ (10 दस लाख) हवनों का आयोजन करना चाहिए।

72. मैं यहां पर छठे मौसम जैसे *बसन्त* (मार्च–मई) ऋतु में होने वाले अहानिकर चमत्कारों के तथ्यों की व्याख्या करता हूं। सूर्य और चन्द्रमा के प्रभामण्डलों, भूकम्प, अचानक धुएं का निर्माण, गड़गड़ाहट, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य का कृमिज रंग का होना, बिना किसी वायु दबाव के अचानक धूल (गर्द) का निर्माण होना, बिना घने बादलों के निर्माण के वज्रपात (बिजली) का होना, पेड़ों से शहद के समान तरलों का रिसाव होना और रंगहीन गाढ़ा तेल का निकलना, बेमौसम में फूलों का खिलना और *बसन्त* ऋतु के *चैत्र* (मार्च–अप्रैल) और *बैशाख* (अप्रैल–मई) महीनों में पक्षियों (चिड़ियों) और जन्तुओं का यौन–संसर्ग का अवलोकित होना, नुकसानदायक नहीं होता है।

73. अंधेरी रातों में उल्काओं का गिरना, धूल का निर्माण, मजबूत वायु दबाव, सूर्योदय और सूर्यास्त पर आसमान का लाल होना, बिना किसी आग के ज्वालाओं और धुएं का आभास, सूर्य और चन्द्रमा की किरणों का आभास जैसे– दो किरणें, तालाबों (कुण्डों) और नदियों का अचानक सूख जाना और *ग्रीष्म* ऋतु के *ज्येष्ठ* (मई–जून) और *आषाढ़* (जून–जुलाई) के महीनों में आसमान से महासागर में समुद्री लहरों की तरंगों जैसा आभास का होना, नुकसानदायक नहीं होता है।

74. इन्द्रधनुष का बनना, बिजली का आभास होना, सूर्य और चन्द्रमा के प्रभामण्डलों का बनना, सूखे हुए पेड़ों में अंकुरण का होना, पृथ्वी में घड़घड़ाहट और दरार का बनना, घरों का गिरना और वर्षा ऋतु के *श्रावण* (जुलाई–अगस्त) और *भाद्रपद* (अगस्त–सितम्बर) महीनों में नदियों, तालाबों और कुओं का छलकना नुकसानदायक नहीं होता है।

75. *शरद (शीत)* ऋतु के *आश्विन* (सितम्बर–अक्टूबर) और *कार्तिक* (अक्टूबर–नवम्बर) महीनों में परियों, गंधर्वों, देवताओं और ईश्वरीय हितैषियों के संकलन (संग्रह या जमाव) का आभास होना, जंगलों और पहाड़ियों से संगीत और गानों की आवाजों का सुनाई देना और दिन की रोशनी में तारों का दिखाई देना आदि नुकसानदायक नहीं होता है।

76. गर्गचार्य के विचारों के अनुसार *हेमन्त* ऋतु के *मार्गशीर्ष* (नवम्बर–दिसम्बर) और *पुष्य* (दिसम्बर–जनवरी) महीनों में पक्षियों और जन्तुओं का विकृत आवाज में चिल्लाना, ओस, सूर्य की शीतलता, ठंडी हवा, पाला, झीलों और जंगलों में पहाड़ियों का आभास होना, राक्षस तथा लपेटे हुए कपड़ों का दिखाई देना और पृथ्वी पर सूर्य के उदय और अस्तगमन का आभास होना आदि नुकसानदायक नहीं होता है।

77. *शिशिर* ऋतु के *मघा* (जनवरी–फरवरी) और *फाल्गुन* (फरवरी–मार्च) के महीनों में वायु के चमत्कारों से, महिला द्वारा अजीब बच्चे का जन्म, दिन और रात के समय उल्काओं का गिरना, लताओं की असामान्य वृद्धि, आसमान में अंधेरे का आभास होना आदि नुकसानदायक नहीं होते हैं।

78. आठ चतुष्कों के प्रभु क्रमशः इन्द्र, अग्नि, यम, निरुथी, वरुण, वायु, कुबेर और इशनारा आदि होते है। दिन और रात के आधे *यम* (एक और आधा घंटा) में ऊपर दिये गये क्रम के अनुसार इनका शासन चलता है।

79. *अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा* और *स्वाति* से मिलकर वायु (हवा) तारापुंजों का समूह बनता है। इसको *वायु मंडल* (हवा का समूह) के नाम से जाना जाता है।

80. *वायु मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का परिणाम शिल्पी (शिल्पकार), व्यापारियों, कवियों, संगीतज्ञों, बढ़ई, दर्जी, और अन्य कुशल लोगों आदि के लिए परेशानी उत्पन्न करता है। सभी देशों में वर्षा की कमी के कारण फसलें तबाह हो जाती है। यह भूकम्प कुरु (पश्चिम उत्तरप्रदेश का भाग), मगध (पश्चिम बिहार, अब झारखंड), द्रविड़ (तमिलनाडु) और कुंतल (कर्नाटक का एक बड़ा भाग) आदि को छोड़कर शुभ (मांगलिक) होता है।

[मूल–पाठ और टिप्पणी दोनों ही विकृत है। यह संशोधित अंग्रेजी अनुवाद है।]

81. *भरणी, कृतिका, पुष्य, मघा, पूर्वफाल्गुनी, विशाखा और पूर्वभाद्रपदा* से मिलकर अग्नि (आग) तारापुंजों का समूह बनता है। इसको *वैश्वनारा मंडल* के नाम से जाना जाता है।

82. *वैश्वनारा मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का परिणाम देशों के विभिन्न भागों जैसे– अंग (उत्तरी बिहार के भागों), वंग (पश्चिम बंगाल और बंगलादेश के भागों), कलिंग (उड़ीसा

का ज्यादातर भाग) और मलयाल (दक्षिणी कर्नाटक और केरल के भागों), सिंधु (पाकिस्तान के सिंध), द्रविड़ (तमिलनाडु) आदि के लिए परेशानी पैदा करता है। अकाल, ज्वर, अपचन और अनियमित हैजा होते है। अन्य देशों के राजाओं में भरोसे और मित्रता की कमी के कारण लड़ाईयां होती है।

[मूल–पाठ और टिप्पणी दोनों ही सुविस्तृत नहीं है। यह एक संशोधित अनुवाद है।]

83. *रोहिणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, अभिजीत* और *धनिष्ठा* से मिलकर इन्द्र (राजाओं के देवता) तारापुंजों का समूह बनता है। इसको *इन्द्र मंडल* के नाम से जाना जाता है।

84. *इन्द्र मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का परिणाम देश के सौराष्ट्र (गुजरात का आधुनिक सौराष्ट्र) और अभिसारा (जम्मू कश्मीर का एक भाग और पंजाब का एक भाग) में विचित्रता और भयोत्पादकता उत्पन्न करता है। कई राजा बरबाद (नष्ट) हो जाते है। पूरा भूमण्डल नष्ट हो जाता है जिससे प्रजा को विविध असाध्य रोगों का सामना करना पड़ता है।

[मूल–पाठ और टिप्पणी दोनों ही सुविस्तृत नहीं है। यह एक संशोधित अनुवाद है।]

85. *आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, शतभिषक्, उत्तरभाद्रपदा और रेवती से मिलकर वरुण* (पानी के देवता) तारापुंजों का समूह बनता है। इसको *वरुण मंडल* के नाम से जाना जाता है।

86. *वरुण मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का परिणाम देशों के विदेह (बिहार में आधुनिक तिरहट) गोवर्धन (उत्तरप्रदेश के मथुरा के पास का क्षेत्र या महाराष्ट्र का नासिक जिला), सेदी (बुंदेलखंड का पूर्वी भाग) और बिहार (?) आदि में परेशानी पैदा करता है। दुश्मनी दोस्ती में परिवर्तित हो जाती है। वहां पर अत्यधिक वर्षा होगी।

[मूल–पाठ और टिप्पणी दोनों ही सुविस्तृत नहीं है। यह एक संशोधित अनुवाद है।]

87. *वायु मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प की घटना से *वायु मंडल* पर इसका कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होगा। *इन्द्र मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प की घटना *वायु मंडल* पर एक बार प्रतिक्रिया करता है। *वरुण मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प की घटना को *अग्नि मंडल* एक बार प्रभावहीन कर देता है। देवताओं के मंडलों के परस्पर (आपसी) विरोध के कारण भूकम्प के होने वाले हानिकर प्रभाव संतुलित और कम हो जाते हैं।

[तारापुंजों के कटान काल में यह भूकम्प की घटना का वर्णन करता है।]

88. *अग्नि मंडल* और *वायु मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का आना या इसका विपरीत (विलोमतः) परिणाम भयावह अकाल, सूखा और समूह में मृत्यु का होना होता है। *वरुण मंडल* और *इन्द्र मंडल* के तारापुंजों में भूकम्प का आना या इसका विपरीत का परिणाम अच्छी वर्षा और भोज्य फसलें प्रचुर मात्रा में होती है।

89. *वायु मंडल* में आने वाले भूकंप का असर उसी समय (तुरंत), *इन्द्र मंडल* का एक सप्ताह में, *वैश्वनारा मंडल* का एक महीने के अन्दर तथा वायु मंडल का दो महीनों में प्रभाव दिखाई देता है। भूकम्प के शुभ (मांगलिक) परिणामों की अनुभूति आगामी 6 महीनों में होगी।

अध्याय 5
जल की भविष्यवाणियां करना

1. सांसारिक विश्व के अन्दर, पूर्ण जीवन चक्र में जल अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए, मैं इसके बाद जल के स्त्रोतों (साधनों) के विज्ञान की व्याख्या करता हूं।
2. शास्त्रों के अनुसार वरुण की पूजा (उपासना) से और निम्नलिखित तारापुंजों (नक्षत्रों) जैसे–*पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, शताभिषक् और उत्तरभाद्रपदा* के पश्चात् के दिनों में कुओं की खुदाई की जाएं तो कुओं से अच्छी मात्रा में जल मिलता रहता है।
3. किसी भी गांव में एक कुआं, एक बड़ी टंकी या एक कुंड का निर्माण उत्तरी दिशा में होना चाहिए (आग्नेय और वायव्य दिशाओं को छोड़कर), भूमि की खुदाई तब तक करनी चाहिए, जब तक की जल नहीं निकल आवे।
4. ऐसा स्थान जहां चमकदार पेड़ हो, उस पेड़ पर लटकती हुई भरपूर लम्बी–लम्बी शाखाएं हो, जो धरती को छू रही हो, साथ ही वो पेड़ फूलों और फलों से भरपूर हो, यह इस बात का संकेत होता है कि उस पेड़ के आस–पास में जल की विद्यमानता है। ऐसा स्थान जहां सूखा, मुरझाया (कुम्हलाया) हुआ, खोखला (पोला), पीला और उस पेड़ पर पत्ते ना हों यह इस बात का संकेत होता है कि उस पेड़ के आस–पास में जल का अभाव है।
5. ऐसा स्थान जहां पर हरी घास नहीं हो उस स्थान पर हरी घास का टुकड़ा और ऐसा स्थान जहां पर हरी घास हो तथा उस स्थान पर घास रहित टुकड़ा हो, ये दोनों इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर भूमिगत खजाने का दबाव है जो कभी भी प्रकट हो सकता है।
6. लाल रंग के अंकुर के साथ करंज की मौजूदगी तथा साथ ही नीचे की तरफ लाल मृदा (मिट्टी) में छोटे करंज पादपों की विद्यमानता इस बात का संकेत है कि उस स्थान के आस–पास तीक्ष्ण (कटु या कसैला या कषाय) भूमिगत जल उपलब्ध है।
7. ऐसा स्थान जहां पर कुंआ खोदा जा रहा हो और उस स्थान की चट्टान का रंग अंजीर फल, शहद, घी, बादल, कबूतर, काजल तथा गहरा मणि (रत्न) जैसा हो तो यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है।
8. कुएं की खुदाई के समय यदि काले रंग की मिट्टी विद्यमान है, तो उस स्थान पर तीक्ष्ण (कटु या कसैला या कषाय) जल उपलब्ध होगा। यदि मिट्टी का रंग सफेद और नीले रंग का होगा तो वहां पर स्वादिष्ट जल होगा। यदि लाल रंग की मिट्टी के साथ राख के रंग की मिट्टी और कंकड़ निकलते है तो उस स्थान का जल कड़वा होगा। यदि सफेद मिट्टी के साथ लाल रंग की मिट्टी मिश्रित होती है तो उस स्थान का जल खारा होगा।
9. गांव में कुंआ खोदते समय उस गांव की आठों दिशाओं में से किसी एक दिशा में यदि चट्टान की विद्यमानता है तो यह इस बात का संकेत है कि उस चट्टान के नीचे बहुतायत में भूमिगत जल होगा तथा अन्य दिशाओं में बहुत कम मात्रा में भूमिगत जल उपलब्ध होगा।
10. अर्ध–मरुस्थलीय क्षेत्र में हरिताभ खण्ड की विद्यमानता इस बात का संकेत है कि उस स्थान से पश्चिम दिशा की ओर 3 हाथ (क्यूबिट) की दूरी पर तथा पांच हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है (एक क्यूबिट = लगभग 45.7 सें.मी.)।

11. ऐसा स्थान जहां पर चींटियों या दीमकों के बिलों के कारण बना मिट्टी का ढ़ेर या मिट्टी का बड़ा ढ़ेर हो, उस स्थान पर कांटे रहित खेजड़ी के पौधे की विद्यमानता (मौजूदगी) इस ओर संकेत करती है कि उस स्थान के पांच हाथ नीचे भूमिगत जल की उपलब्धता है।

12. भूमि का ऐसा स्थान जहां पर धुंआ (भाप) उत्पन्न होती हो, अच्छी मात्रा में वनस्पति का उत्पादन होता हो तथा हरा चौलाई का पौधा अपघटित हो जाता हो, यह इस बात का संकेत है, कि उस स्थान के 10 हाथ नीचे भूमिगत जल उपलब्ध है।

13. यदि धरती से सुखद (प्रिय) आवाज का अनुभव हो या उत्पादित हो या उस स्थान की रोशनी बिजली के समान प्रभावित करती हो, वहां की भूमि में सफेद कंकड़ हो, वहां पर लगे हुए पादप की एक टहनी नीचे की तरफ भूमि को छू रही हो। ये सभी इस बात का संकेत है कि उस स्थान के 10 हाथ नीचे भूमिगत जल उपलब्ध है।

14. पानीरहित नलिका प्रणाली में जहां पर चींटियों या दीमकों के बिलों के कारण बना मिट्टी का ढ़ेर हो तथा उसके पश्चिम में कृष्ण आलूबुखारे (जामन) का पेड़ हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर 10 हाथ की गहराई पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है, जो कि चीटियों द्वारा निर्मित मिट्टी के ढ़ेर से दक्षिण दिशा की ओर, दो हाथ की दूरी पर होता है।

15. काली मिट्टी, कठफोड़वा या मछलियों के रंग से मिलते–जुलते कंकड़ की विद्यमानता, इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर 5 हाथ की गहराई पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है।

16. चींटियों या दीमकों के बिलों के कारण बने मिट्टी के ढ़ेर के पास बहुत अच्छा विकसित निर्गुण्डी के पेड़ की विद्यमानता हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान के आस–पास बहुतायत में अच्छा मीठा भूमिगत जल उपलब्ध है। भूमिगत जल वाला स्थान चींटियों द्वारा निर्मित मिट्टी के ढ़ेर से दक्षिण दिशा की ओर तीन हाथ की दूरी तथा 10 हाथ की गहराई पर होता है।

17. बहुत अच्छी तरह से विकसित पीले फल युक्त कंटकारी या धतूरे, भारंगी या भांगी और आंवले के पौधे जिनकी पत्तियां चमकदार (चिकनी या चमकीली) हो, यह इस बात का संकेत है कि इन पौधों से दो हाथ की दूरी पर दक्षिण दिशा की ओर, 15 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

18. ऐसा स्थान जहां पर कांटेदार झाड़ियों के मध्य (बीचों–बीच) में कांटे रहित पेड़ का उगना या इसका विपरीत, इस बात का संकेत है कि उस स्थान के पश्चिम दिशा की ओर, 25 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

19. ऐसा स्थान जहां पर बेर और ढ़ाक या पलाश के पेड़ साथ–साथ उगे हुए हों, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान के पश्चिम दिशा की ओर, 15 हाथ की गहराई पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है। इसी तरह से यदि बेल और अर्जुन के पेड़ साथ–साथ उगे हुए हों, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान के उत्तरी दिशा की ओर, 15 हाथ की गहराई पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है।

20. पेड़ रहित ऐसा स्थान जहां पर सिर्फ अंजीर पेड़ समूह की विद्यमानता हो, यह इस बात का संकेत है, कि उस स्थान से तीन हाथ की दूरी पर पश्चिम दिशा की ओर, 15 हाथ की गहराई पर बहुतायत में भूमिगत जल उपलब्ध है।

21. ऐसा स्थान जहां पर चींटियों या दीमकों के बिलों के कारण बने मिट्टी के ढ़ेर के साथ जंगली अंजीर के पेड़ की विद्यमानता हो, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि उस स्थान के पश्चिम की ओर 15 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है। दूसरा संकेत भी है कि उस स्थान पर सफेद रंग के कंकड़ उपलब्ध हो।

22. ऐसा स्थान जहां पर चीटियों या दीमकों के बिलों के कारण बना मिट्टी के ढ़ेर के साथ पोंगम के पेड़ की विद्यमानता हो, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि उस स्थान के दक्षिण की ओर भूमिगत जल उपलब्ध है। उस स्थान की एक *मुंडा* खुदाई के समय नीचे की ओर एक छोटा कछुआ दिखाई दे सकता है (1 *मुंडा* = दो से ढ़ाई हाथ गहरा)।

[ना तो मूल–पाठ में ना ही टिप्पणी में भूमिगत पानी की गहराई का कोई उल्लेख नहीं दिया गया है। उसी तरह से एक *मुंडा* से तात्पर्य है एक आदमी की गर्दन तक की लम्बाई, जो कि लगभग साढ़े चार हाथ के बराबर होती है। प्रांसगिक संदर्भ बृहत् संहिता के अनुसार (अध्याय 54, सूत्र 33–34) भूमिगत जल की गहराई 17.5 हाथ होती है तथा एक *मुंडा* 2.5 हाथ के बराबर होता है।]

23. ऐसा स्थान जहां पर चींटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर के साथ बेर के पेड़ की विद्यमानता हो, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि उस स्थान के पश्चिम की ओर ढ़ाई हाथ की गहराई पर छिपकली या गिरगिट की विद्यमानता है।

24. ऐसा स्थान जहां पर ताड़ी या ताड़ का पेड़ हो तथा उसके पश्चिम की ओर चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर 15 हाथ की गहराई पर पश्चिम की ओर भूमिगत जल उपलब्ध है।

25. जंगल के अंदर किसी भी पेड़ के धरातल के पास मेंढ़क की विद्यमानता इस बात का संकेत है कि उस स्थान से दक्षिण की ओर चार हाथ की दूरी पर तथा 20 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है। दूसरा संकेत है, कि उस स्थान की जमीन हरी, काली या सफेद हो तथा उस जमीन के नीचे नेवले की विद्यमानता भी भूमिगत जल की उपलब्धता का संकेत है।

26. चींटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर के साथ पूर्ण विकसित ताड़ी (ताड़) या नारियल के पेड़ की विद्यमानता हो, यह इस बात की ओर संकेत करता है कि इन पेड़ों से उत्तरी दिशा की ओर 6 हाथ की दूरी पर तथा 20 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

27. तिलक पेड़, जंगली आलूबुखारा पेड़, चिरबिल्व या चिलबिल पापड़ी या बनचिला पेड़, बेल पेड़, भेला या भेल या भेल्वा या भिल्वा या भिल्वया मार्किंग नट पेड़, अंकोल या वांग पेड़, सिरिस पेड़ और आंवले आदि के पेड़ों के धरातल के चारों ओर चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के बहुत सारे ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि इन पेड़ों से उत्तरी दिशा की ओर साढ़े तीन हाथ की दूरी पर तथा 20 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

28. चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर और दूधिया पेड़ों रहित ऐसा स्थान जहां पर, पेड़ जैसे – सोनपथा या श्योनक, हर्रा या हरड़, अशोक, पारल या पारोली तथा जांबुल पेड़ आदि और घास जैसे – दारभा तथा पाल्मा रोजा आदि की विद्यमानता हो तो यह इस बात का संकेत है कि इन पेड़ों से उत्तरी दिशा की ओर दो हाथ की दूरी पर, 25 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

29. सिरिस या महुए के पेड़ों के उत्तरी दिशा में चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान के उत्तरीपश्चिमी (वायव्य) दिशा की ओर 25 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है। दूसरा लक्षण ये है कि उस स्थान के पांच हाथ की गहराई पर मृतिका (चिकनी मिट्टी), एक सर्प और काला पत्थर की विद्यमानता हो तो जल की शिरा पूर्वाभिमुख (पूर्व की ओर) की ओर बहेगी।

30. नीम पेड़ के आस–पास दक्षिण दिशा की ओर चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान से उत्तरी दिशा की ओर 7 हाथ की दूरी पर, 25 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है। भूमिगत जल की शिरा पूर्व, पश्चिम ओर उत्तरी दिशा की ओर बहेगी।

31. बरगद (बड़ या वट) पेड़ के पूर्व दिशा की ओर चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान से दक्षिण दिशा की ओर 25 हाथ की गहराई पर स्वच्छ और लवणीय भूमिगत जल का स्त्रोत उपलब्ध है। दूसरा लक्षण ये है कि उस स्थान के पांच हाथ की गहराई पर बहुत सारे बहुरंगी सर्पों की विद्यमानता हो।

32. टूथब्रुश या मस्टर्ड या अरक या पीलू के पेड़ के उत्तरीपूर्वी (एशान्य) दिशा की ओर चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान से दक्षिण दिशा की ओर 15 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है, लेकिन इस जल में फैरस जंगाल (जंगार) की बदबू आती है। दूसरा लक्षण यह है कि उस स्थान से 5 हाथ नीचे की ओर हरे रंग (हरिताभ) की मिट्टी और हिमश्वेत मेढ़क की विद्यमानता हो।

33. कदम या कदम्ब के पेड़ के पश्चिम दिशा की ओर चींटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो, यह इस बात का संकेत है कि उस स्थान से पश्चिम दिशा की ओर 25 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है। दूसरा लक्षण यह है कि उस स्थान के नीचे की ओर भूरी मृतिका और मेढ़क की विद्यमानता हों।

34. ऐसा स्थान जहां पर चींटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर पर मुलायम (नरम या कोमल) दूब या दूर्वा, ढ़ाक (पलाश) का पेड़ या डाब या दारभा घास का उगना इस बात का संकेत है कि उस स्थान पर 105 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

35. कचनार पेड़ के उत्तरी दिशा की ओर चींटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी का ढ़ेर हो। यह इस बात का संकेत है, कि मिट्टी के ढ़ेर से दो हाथ की दूरी पर तथा 75 हाथ की गहराई पर भूमिगत जल उपलब्ध है।

36. उपरोक्त दिये गये विवरण में यदि कहीं पर पेड़ और चीटियों के बिलों के कारण निर्मित मिट्टी के ढ़ेर से भूमिगत जल की उपलब्धता की दूरी की माप नहीं दी गयी है तो उस स्थान से पांच हाथ की दूरी पर जल का स्त्रोत निर्मित किया जा सकता है। यह एक नियम है, इस नियम का पालन कर किये गये कार्य के प्रयत्न का परिणाम सफल होता है।

37. कुंआ खोदते समय यदि चट्टानें आ जाती है तो उस स्थान पर भारतीय तेंदु और पलाश (ढ़ाक) के पेड़ों के लट्ठों का ढ़ेर लगाकर आग लगा देनी चाहिए। साथ ही दूध और पानी का मिश्रण बनाकर चट्टानों पर प्रवाहित करने से चट्टानें तत्काल टूट जाती है।

38. पलाश (ढ़ाक) या हर्रा/हरड़, के पेड़ों के लट्ठों के जलाने से प्राप्त हुए गदले (धुंधले) घोल को अच्छी तरह से गर्म करके और उस लेई को अच्छी तरह से चट्टानों पर नियमित रुप से लीपते रहें। नियमित रुप से 3 दिन तक उपचार करने पर चट्टानें नर्म पड़ जाती है।

39. छाछ (मट्ठा), औषध जल और बेर फल को अच्छी तरह मिश्रित करके सात दिन तक किण्वित करें। किण्वित जल को उष्ण कठोर चट्टानों पर प्रवाहित करने से चट्टानें टूट जाती है और जल चट्टानों से निकलकर उछलने लगता है।

40. मदार पेड़ का क्षीर, कबूतर और चूहे की विष्ठा और भेड़ा सींग से निर्मित चारकोल को आपस में अच्छी तरह से मिश्रित कर लें। इस मिश्रण को छेनी (टांकी) के किनारे पर लगाकर, गर्म कर, फिर ठंडा कर लें। इसके बाद छेनी को तेल या छाछ (मट्ठा) में डूबो दें। यह छेनी को कठोरता प्रदान करता है।

अध्याय 6
वृक्षायुर्वेद

1. जब मुझे यह महसूस हुआ कि *वृक्षायुर्वेद* एक आदर योग्य और ब्रह्माण्ड (विश्व) के सभी जीवधारियों के लिए एक उपयोगी विज्ञान है। मैं *वृक्षायुर्वेद* के शोध प्रबन्ध (पुस्तक) को विद्वान या पढ़े–लिखे लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

2. बीजों की बुवाई तारापुंजो (नक्षत्रों) जैसे– *रोहिणी, मृगशिर्षा, मघा, हस्त, चित्रा, विशाखा, मूल* और *श्रवण* के अंतर्गत विज्ञान (*शास्त्रों*) में दिये गये निर्देशों का कठोरता से पालन करते हुए उनके समनुरुपता के अनुसार करनी चाहिए।

3. ऐसा खेत जिसकी मिट्टी की पानी सोखने की क्षमता अच्छी हो, उस खेत की पहचान कर, उसका चयन कर और उस खेत का उपयोग करने से पूर्व अच्छी तरह से समतल करवा लेना चाहिए। उस खेत में वार्षिक फसलों को उगाने के लिए बीजों की बुवाई पर्याप्त गहराई पर करनी चाहिए। पेड़ों को उगाने के लिए एक दो हाथ लम्बा और चौड़ा तथा चार हाथ गहरा गड्ढ़ा होना चाहिए, इस गड्ढ़े को खाद से भरकर इसमें पेड़ के बीज को बो दें।

4. दो गड्ढ़ों के बीच की दूरी इतनी होनी चाहिए कि इनमें लगे हुए पेड़ों की शाखाएं आपस में एक–दूसरे के ऊपर ना गिरें। दो गड्ढ़ों के बीच की दूरी यदि 16 हाथ है तो उसको श्रेष्ठ (उच्च या बेहतर), 14 हाथ की है, तो उसको संतुलित या मध्यम और यदि 10 हाथ है, तो उसको घटिया या निकृष्ट माना गया है।

5. खेत के किनारों पर बने हुए गड्ढ़ों को पांच प्रकार की मिट्टी और कार्बनिक खाद से भर देना चाहिए। रीति के अनुसार इसको *भूमि सम्सकार* या भूमि की तैयारी कहते है।

6. बीजों की बुवाई से पूर्व बीजों का उपचार इस प्रकार से करें –

   प्राकृतिक रुप से पके हुए फलों के बीजों को संग्रहित कर, इन बीजों को गाय के गोबर के साथ अच्छी तरह से मिश्रित कर पांच दिन और पांच रात तक छायादार स्थान पर सूखने दें। तत्पश्चात् इसको सात दिन तक दूध में भिगने दे। इसके बाद बीजों पर बृहती फलों के रस और लवणीय पानी के मिश्रण की परत चढ़ा दें। परत चढ़े हुए बीजों को *विडंग* पाउडर और घी के साथ धूमित किया जाता है।

7. उपरोक्त उपचारित बीजों को गड्ढ़ों के अन्दर शुभ (मांगलिक) जन्म कुण्डली के प्रधान ग्रह (पूर्वज) और मांगलिक समय *मुहूर्त* पर बोना चाहिए। बीजों को बोने से पूर्व गड्ढ़ों में *कुनप* जल का अच्छी तरह से छिड़काव कर दें। (*कुनप* जल से तात्पर्य है, कि फल के गूदे और मांस को किण्वित कर तैयार किया गया द्रव)। इस तरह से बोये गये बीजों का अंकुरण और विकास बहुत अच्छा होगा।

8. इन नवर्निमित पादपों को ग्रीष्म ऋतु में नियमित रुप से सुबह तथा शाम दोनों समय पानी पिलाना चाहिए। वर्षा और शीत कालों में भूमि में नमी की मात्रा का निरीक्षण कर उसी के अनुसार पानी पिलाना चाहिए।

9. पादप रोपण से एक वर्ष तक पादपों को ओलावृष्टि, बिजली (गड़गड़ाहट), गर्म उष्मा, आग और पक्षियों आदि से सुरक्षित रखना चाहिए। एक वर्ष तक पादप के आस–पास उगने वाली खरपतवारों को नियमित रुप से उखाड़ते रहना चाहिए।

10. पादपों को ओलावृष्टि से बचाने के लिए, पादपों पर चावल के दही का छिड़काव करना चाहिए। ऐसे पादप जो कि बिजली (गड़गड़ाहट) की वजह से जल चुके हों, उनकी राख का उपयोग पादपों को धूमित करने के लिए किया जाये तो पादप पाले की मार (सर्दी या ठण्ड) से सुरक्षित रहते हैं। पादपों को मछली मांस, सरसों और केलों के पत्तों से धूमित किया जाये तो इसकी मदद से पादप का विकास अच्छा (तंदुरुस्त) और हृष्ट–पुष्ट होता है।

11. हींग राल, बच या गोरबच, *अतीस* जड़, काली मिर्च, *विडंग,* भिल्लाट, *इन्द्रायण,* सरसों और गाय सींग के पाउडरों को अच्छी तरह से मिश्रित कर इन सभी को एक सप्ताह तक गौ–मूत्र में किण्वित करें। तैयार घोल को पादपों के चारों ओर छिड़काव करने से कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

12. *विडंग,* गूगल, मछली मांस, हल्दी, सरसों तथा अर्जुन फूल आदि के पाउडरों के मिश्रण से पेड़ों को धूमित किया जाये तो वे पेड़ रोग मुक्त हो जाते है साथ ही उन पेड़ों से बहुतायत में फल प्राप्त होते हैं।

13. यदि किसी भी पेड़ की शाखाएं टूट जाती है, उसमें घाव पड़ जाते है, पेड़ पीला पड़ जाता है या सूख जाता है तो इससे यह मालूम होता है कि पेड़ किसी रोग से ग्रसित है। पेड़ के ग्रसित भाग को गर्म घी से लीपकर तथा *विडंग* पाउडर और काली मिट्टी (काली मिट्टी में कार्बनिक खाद मिश्रित कर दें या खाद मिट्टी) से भर दें। पेड़ पूर्ण रुप से स्वस्थ होकर पूर्ण क्षमता के साथ बढ़ने लगता है।

14. शतपुष्प की पत्तियों के पाउडर के काढ़े (क्वाथ) का प्रयोग (उपयोग) या बकरी मांस रस का पेड़ों पर छिड़काव किया जाये तो यह पेड़ों को शक्ति प्रदान करने के साथ–साथ इन पेड़ों में अच्छा अंकुरण होता है तथा ये पूर्ण क्षमता के साथ बढ़ने लगते हैं।

15. बकरी के दूध में जौ, मूंग और उड़द को पकाकर इस घोल का उपयोग पेड़ों पर किया जाये तो यह पेड़ के लिए मददगार होता है। इससे पेड़ में चमक आ जाती है साथ ही पेड़ पत्तियां, फूलों और फलों से भरपूर होने से यह पेड़ आर्कषक (मनोहर) दिखाई देता है।

16. यदि उपरोक्त दिये गये उपचार का नियमित रुप से उपयोग किया जाये तो पेड़ शाखाओं, पत्तियों, फूलों, नरम (मुलायम या कोमल) फलों, अपरिपक्व और पके हुए फलों से परिपूर्ण (लबालब) होगा। पेड़ वर्ष भर फलों से भरपूर रहेगा और हर कोई इसकी सुन्दरता को देखकर अभिभूत होगा।

17. विभिन्न प्रकार के पादपों का प्रतिरोपण इस प्रकार से करें–

    पूर्ण रुप से विकसित पेड़ों का प्रतिरोपण सर्दी (*मृगशिर्षा – पुष्य* या दिसम्बर–जनवरी) में, फलों वाले पेड़ों का प्रतिरोपण वर्षा ऋतु में (*श्रवण – भाद्रपदा* या अगस्त–सितम्बर) और तरुण पेड़ों का प्रतिरोपण सर्दी के बाद (*मघा – फाल्गुन* या फरवरी–मार्च) में किया जाता है। इस तरह से प्रतिरोपित किए गए पादप की बढ़वार विस्मयकारी तथा पादप हृष्ट–पुष्ट होता है।

18. पेड़ों की पूर्व–प्रतिरोपण क्रियाविधि इस प्रकार से है–
शास्त्रों के अनुसार पेड़ों की पूजा (उपासना) होनी चाहिये। पेड़ों को गाय के गोबर, दूध, *विडंग* बीज, घी, शहद, खस जड़ें और सीसम (तिल) आदि के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिश्रित कर, इनकी लेई बनाकर, अभ्यंजित करना चाहिये और उसके बाद उस पेड़ को उखाड़ना या उपाड़ना चाहिये। पेड़ की जड़ों को भी उपरोक्त वर्णित लेई से ही अभ्यंजित कर, उसके बाद पेड़ को नए स्थान पर पुनः रोपित करना चाहिये। पुनः रोपित करने के तुरन्त पश्चात् पुनः लेई से अभ्यंजित करना चाहिए। इस प्रक्रिया के दौरान निरन्तर पाईप और ड्रमों द्वारा लगातार उत्साही (उमंगी) और शुभ (मांगलिक) की धुन पर गाने बजते रहने चाहिये। पुनः रोपित पेड़ को नियमित रुप से पानी पिलाते रहना चाहिये।

19. मृग (हरिण) मांस, सूअर का गोश्त, *अंकोल* ये बीज पाउडर, घी और शहद आदि के मिश्रण का नियमित उपयोग करने से पेड़ पर नवीन पत्तियां शीघ्रता से आती है साथ ही फूलों के खिलने व फलों के लगने आदि में यह मिश्रण मददगार होता है। पेड़ दिखने में सबको अपनी ओर आकर्षित करता है।

20. उपरोक्त वर्णित उपचार के बाद ब्रह्मा (सृष्टि के रचयिता) भी वाटिका (बाग या बगीचा) की सुन्दरता, पेड़ों के आकर्षित करने वाले लक्षण, बहुतायत में फलों और सुखद (प्रीतिकर) स्थान को देखकर उसकी व्याख्या करने में असमर्थ हो तो, क्या दूसरों के लिए इसकी व्याख्या करना सम्भव होगा?

21. अनार (दाड़िम), कटहल (पनस), पाटल, जांबू (जांबूल), अशोक, केला, वनमल्लिका, मधविलथा, बड़ा निम्बू (बिजौरा) तथा अन्य पेड़ों और लताओं (आरोहक) आदि के बीजों या शाखाओं (डालों) से अच्छे आकर्षित पादप निर्माण के लिए गाय के गोबर से लेपित करना चाहिए। उसके बाद उसको गड्ढ़ों में बोना चाहिए, इससे पेड़ का जड़ तंत्र मजबूत होता है और पादपों की वृद्धि अच्छी होती है।

22. कलम लगाने की विधि इस प्रकार है–

दो विभिन्न प्रकार की जातियों के बीज या शाखाओं को लेकर तोड़ लें और उन्हें पुनः जोड़ लें। कलम वाली शाखा या बीज और पादप जिस पर कलम लगानी है, को उसी समय घी और शहद से अभ्यंजित करें। जब इस कलम वाले पादप की वृद्धि होगी तो इस पादप की जड़ व फल शाखाएं अलग से विकसित होगी।

23. पदमा और कुमुद के प्रकन्दों को घी और शहद से अभ्यंजित कर उसी पादप के साथ कलम को जोड़ दें। सामूहिक प्रकन्दों पर मृग (हरिण) के गोश्त के रस का नियमित रुप से छिड़काव करने से विभिन्न प्रकार के फूल खिलते हैं।

24. भूमि को अच्छी तरह से तैयार कर किसी भी पेड़ के बीज को लगायें (गड्ढ़े को इसी अध्याय में दिये गये श्लोक 3, 4 तथा 5 के अनुसार तैयार करें)। सूअर गोश्त और दूध को गर्म कर ठंडा कर लें। इस मिश्रण से बीजों को उपचारित करने से बीज जल्दी अंकुरित होते हैं साथ ही इन बीजों से उत्पादित होने वाले पादप से बहुतायत में चमकदार पत्तियां, फूल और फल प्राप्त होते हैं।

25. आम के पेड़ की कुंडी में सुअर गोश्त रस, अंकोल के बीजों का रस, दूध, शहद और घी का मिश्रण तैयार कर, विनियोग (प्रयोग) करने से वर्ष भर आम के पेड़ से फल मिलते रहते हैं।

26. आम का पेड़ जिस पर खट्टे फल लगे हुए हैं, उससे मीठे फल प्राप्त करने के लिए अंजीर, बरगद (बड़), कटहल (पनस), पलक्ष या पिलखान तथा पीपल आदि पेड़ों के अंकुरों का क्वाथ (काढ़ा) और भेड़िया, सूअर, हरिण, बैल या सियार, (गीदड़) के मज्जा के क्वाथ का नियमित रुप से पेड़ की कुंडी में विनियोग (प्रयोग) करें।

27. नागरमोथा (नट ग्रास), खस जड़ें और जांबू (जांबूल) के प्रकन्दों के पाउडरों के क्वाथ (काढ़ा) का निर्माण कर आम के पेड़ की कुंडी में नियमित रुप से विनियोग (प्रयोग) करने से आम के मनोहर (रमणीय या सुखकर या सुखद या प्रिय) सुगन्ध वाले फल प्राप्त होते हैं।

28. वनकदली पेड़ से बड़े आकार के फल प्राप्त करने के लिए, घोड़े और बनैला सूअर के गोबर के मिश्रण में आग लगाकर एक सूई को गर्म कर लें और जहां पर कदली के फलों का गुच्छा (समूह) उदित हो रहा हो उस स्थान पर गर्म सूई का भेदन (छेदित) करें।

29. वनकदली पेड़ से हाथीदंत गजदंत के समान बड़े आकार के फल प्राप्त करने के लिए हाथी के मदकाल को बन्दर की खोपड़ी या सूअर के दांत में पेड़ की कुंडी में दफनाते हैं।

30. वनकदली पेड़ से अनार फल के आकार जैसे बड़े आकार के फल प्राप्त करने के लिए अंकोल बीज का रस, सूअर का गोश्त और सूअर के खून आदि के मिश्रण का नियमित उपयोग करें।

31. जब पूर्ण रुप से विकसित कटहल का पेड़ पैंदे से लेकर ऊपर तक धान घास से ढ़का हुआ होता है तो कटहल के फल पैंदे से प्राप्त होते हैं।

32. नारियल पेड़ से बहुतायत में फल प्राप्त करने के लिए पीसे हुए सीसम (तिल), गाछ–मुंगा (अगस्त) बीज, *विडंग,* सेंधा नमक आदि के मिश्रण को शहद और औषध जल के साथ मिलाकर शाम के समय नारियल के पेड़ की जड़ों में नियमित प्रयोग (विनियोग) करें।

33. बांझ मुसम्मी (मौसम्बी) पेड़ से बहुतायत में फल प्राप्त करने के लिए गुड़ (गन्ने से प्राप्त), मांस और दूध का क्वाथ (काढ़ा) बनाकर कुण्डी में नियमित प्रयोग (विनियोग) करें और खरगोश के गोबर से पेड़ को धूमित करें।

34. बिजौरा (गलगल या तुरंज) पेड़ से बहुतायत में फल प्राप्त करने के लिए मछली मज्जा, जंगली गाय का मांस (देशी किस्म जिसके द्वारा उत्पादित दूध का उपयोग मानव द्वारा नहीं किया जाता है) अगुरु (अगर) पेड़ की राल और आंवले की टिकिया/टिक्की या खली को मिश्रित कर कुण्डी में नियमित प्रयोग करें। परिवर्तक के रुप में लोमड़ी के मांस का नियमित उपयोग किया जा सकता है।

35. नियमित रुप से बड़े आकार के अनार फल को प्राप्त करने के लिए बकरी के गोबर और नर लोमड़ी के मांस के अच्छी तरह पीसे हुए मिश्रण से बनायी गयी गेंद (या छोटी टिकिया) का प्रयोग करें।

36. इमली पेड़ की अत्यधिक वृद्धि के लिए, पीसे हुए धान, जौ, तिल और उड़द के पाउडर को मांस के साथ मिश्रित कर रोपण स्थल पर प्रयोग करें।

[टिप्पणी या मूल–पाठ में किसी विशिष्ट जानवर का उल्लेख नहीं किया गया है, यहां पर सूअर के गोश्त का उपयोग कर सकते हैं]

37. वर्ष भर बेर के पेड़ से बहुतायत में स्वादिष्ट फल प्राप्त करने के लिए, पीसे हुए यस्टीमधु और तिल को पानी, शहद और घी के साथ अच्छी तरह से मिश्रित कर प्रयोग करें।

[पानी को पीसे हुए मिश्रण से अलग से संग्रहित करके रख सकते हैं, ताकि पानी को मिश्रण के उपयोग के समय मिश्रित किया जा सके]

38. वर्ष भर बेल या नीम पेड़ से बड़े आकार की चमकदार पत्तियों की उत्पति के लिए, गुड़ (गन्ने से प्राप्त), शहद, दूध और घी के मिश्रण का कुंडी में प्रयोग (विनियोग) करें।

39. बांझ आंवले के पेड़ से बहुतायत में फल प्राप्त करने के लिए, पेड़ की एक शाखा को कुल्हाड़ी से अलग करके, उस शाखा को सीसम (तिल) शहद और घी के मिश्रण से भरकर पेड़ के दोनों भागों को जोड़कर रस्सी से बांध दें।

40. किसी भी पेड़ से बीज रहित मीठे फल प्राप्त करने के लिए, मुलहठी (यस्टीमधु), महुआ के फूल, शहद, शर्करा और कुष्ठ जड़ों के मिश्रण को पेड़ के आधार के चारों तरफ कुंडी में गाड़ दें।

41. किसी भी पेड़ की एक शाखा पर लम्बे समय तक अर्द्ध पके फल सुरक्षित रहें, जबकि उसी पेड़ के दूसरे भागों में फल पकते रहें। जिस शाखा पर अर्द्ध पके हुए फलों को संरक्षित रखना है, उस विशिष्ट शाखा को बकरी की त्वचा या काली गाय/बैल की त्वचा की सात परतों से *पुष्य* तारापुंज के दिन ढ़क देना चाहिए।

42. अशोक पेड़ पर कोई चरित्रवान महिला जिसने बाएं पांव में लाल लाख रंग प्रयुक्त कर रखा हों, वो यदि इस पेड़ पर अपना बायां पैर लगाती है तो पेड़ हरा–भरा रहता है या अच्छा फलता–फूलता है। चरित्रवान महिला जिसने अल्पमात्रा में द्राक्षासव ले रखी हो वो बकुल या मौलसरी पेड़ पर बोलते समय थू–थू करती है तो उसके बाद उस पेड़ का अति प्रभावशाली सौन्दर्य हो जाता है, साथ ही उस पर बहुतायत में फूल आते हैं। सुंदर और कुंआरी लड़की की दृष्टि नागकेशर वृक्ष को रक्षित करती है। आम और प्रियंगु पेड़ों के मिलन के पश्चात् पेड़ों से बहुतायत में फल प्राप्त होते है।

[आम और प्रियंगु पेड़ों के मिलन से यहां यह तात्पर्य है, कि आम के पेड़ को उस पर प्रियंगु लता की वृद्धि स्वीकार्य है।]

43. अशोक के पेड़ को क्रमानुसार दो मिश्रणों जैसे– भूनकर, कूटा हुआ सीसम (तिल) और औषध जल तथा औषध जल और शहद से पोषित किया जाए तो इस पेड़ की सभी शाखाएं हरी–भरी और अच्छी तरह से फलती–फूलती है।

44. नागकेशर और बकुल या मौलसरी के पेड़ों को सुबह के समय नियमित रुप से पानी मिश्रित दूध, मांस, रक्त आदि और आम, जांबू या कैथ (कठबेल), नींबू और बेल पेड़ों की टहनियों को कूटकर निकले हुए रस से वर्ष भर पोषित किया जाये तो नागकेशर और बकुल के पेड़ हरे–भरे रहते है।

[उपरोक्त वर्णित पांच पेड़ों की टहनियों को *पंच पल्लव* के नाम से जाना जाता है।]

45. देवदारु बीज, हल्दी, औषध जल, पिप्पली, सुपारी, सिद्धार्थ, नीम की निंबोली, वचा प्रकन्दों, गुंजा बीज आदि के पाउडरों का पानी में निषेचन कर छिड़कने से चम्पक का पेड़ हरा–भरा रहता है तथा गुच्छों में फूल प्राप्त होते हैं।

46. नियमित रुप से जांबू पेड़ की टहनी, खस जड़ें, नागरमोथा प्रकन्दों और औषध जल के क्वाथ को किसी भी फूल वाले पादप या पेड़ पर प्रयोग करने से उस पेड़ पर बहुत अधिक फूलों के गुच्छे लगते है।

[मुद्रित संस्करण के मूल–पाठ या टिप्पणी में उपरोक्त श्लोक (छंद या पंक्ति) का उल्लेख नहीं है। इसके अनुवादक ने श्रेणी (अनुक्रम) के अनुसार इस श्लोक को इसमें जोड़ा है।]

47. कुत्ते का मांस केतकी झाड़ी की कुण्डी में रखकर नियमित रुप से इस पर सफेद चंदन लेई के प्रलंबन का छिड़काव करते रहे तो केतकी की झाड़ी हरी–भरी रहती है साथ ही खुशबूदार फूल प्राप्त होते हैं।

48. ऐसा स्थान जहां पर सूखी घास को जलाया गया था, उस स्थान की भूमि को अच्छी तरह से तैयार कर चमेली शाखाओं का रोपण करने से जल्दी से पुष्पण होता है।

49. जब पीली चमेली और साधारण चमेली पर अगुरु की लकड़ी और पदमा प्रकन्दों के क्वाथ का प्रयोग किया जाता है तो उनके फूलों के खुशबू की अदला–बदली हो जाती है।

50. कुरंत पादप पर घोड़ें के मांस के उपयोग से उसके फूलों के रंग का फीका पड़ने जैसी घटना का निवारण हो जाता है। रात्रि में गुड़हल पादप में औषध जल (शर्करा से निर्मित) और भैंस के दूध का उपयोग करने से सुबह सफेद फूल प्राप्त होते हैं।

51. ऐसी भूमि जहां पर पादप से बदबूदार पुष्पण हो रहा हो वहां पर मिट्टी में खुशबूदार पदार्थों का उपयोग करने से तथा उसके बाद पानी मिश्रित गाय के गोबर का नियमित उपयोग करने से खुशबूदार महक वाले फूल प्राप्त होते हैं।

52. पदमा से खुशबूदार फूल प्राप्त करने के लिए पीसे हुए हाथी हस्तदंत लेई को पीसे हुए चने (काबुली चना) के साथ मिलाकर कमल प्रकन्दों में रखकर अभ्यंजित करें।

53. अंगूर बेल से प्रचुर मात्रा में फल प्राप्ति के लिए कुक्कुट के गोबर या इसके क्वाथ से अंगूर बेल को लेप दें।

54. सूअर मांस और अंकोल बीज के क्वाथ को पानी के साथ देने के बाद जैट्रोफा पादप से करेले के आकार के अंडकोष (अंड) प्राप्त होते हैं।

55. कद्दू लता पर अपरिपक्व (कच्ची) अवस्था में लगे हुए कद्दू फल में छोटे आकार का छेद कर उसमें ताजा बैंगन के बीजों को घी के साथ रख कर फिर उस कद्दू को ढ़क दें तथा प्राकृतिक अवस्था में उसको पकने दें। पके हुए कद्दू में से बीजों को निकालकर गड्ढ़ों में बो दें। इस तरह से विकसित कद्दू पादप से बैंगन प्राप्त होते हैं।

56. किसी भी लता की ग्रंथि (गांठ या पर्णग्रंथि) को लगाने के पश्चात् उसके पूर्ण विकसित प्रकन्दों को लगातार सात बार काटकर पादप लगाने पर, सातवीं बार लगायी गयी लता से बीजविहीन फलों की प्राप्ति होती है।

57. अंकोल बीज, धातकी (धाई) के फूल और मांस के क्वाथ का उपयोग किसी भी लता पर करने से वर्ष भर फल प्राप्त होते है।

58. किसी भी लता से बहुतायत में फल प्राप्त करने के लिए या तो उसको काजल और गाय के घी के मरहम से लेप दें या उसकी जड़ को बिच्छु डंक से भेदित करें। इसके अलावा सुअर मांस और मृत अखरोट (?) के मिश्रण को इसकी कुंडी में दफन (छिपा) कर दें।

59. किसी लता पर अजगर मांस, सूअर, बकरी मूत्र और दूध के मिश्रण का नियमित रुप से उपयोग किया जाये तो उससे प्रचुर मात्रा में फल प्राप्त होते हैं, जो कि बहुत से लोगों की भूख को तृप्त करेगें।

60. एक *बल्ला* जौ, चार *कोलागास* तिल, दो *बल्लाज* बकरी गोबर और एक *कोलाग* गौमांस को सात दिन तक किण्वित कर किसी भी पादप, झाड़ी या लता पर नियमित उपयोग किया जाये तो उससे वर्ष भर फल प्राप्त होते हैं।

[ग्यारहवीं शताब्दी में *कोलग* और *बल्ला* माप (आयतन द्वारा) का उपयोग किया जाता था। धान का माप *कोलग* और *बल्ला* से ही किया जाता था। एक *कोलग* चार *बल्ला* के बराबर होता है। इसी प्रकार से *अधक* और *द्रोना,* जहां एक *द्रोना* चार *अधक* के बराबर होता है।]

अध्याय 7
सुगंधित द्रव्य

1. मैं यहां पर सुगंधित द्रव्यों की प्रौद्योगिकी की व्याख्या करता हूं जो कि सभी जीवित प्राणियों (व्यक्तियों) के लिए उनके जीवन में लाभदायक होगी।

2. *बकुल* (मौलसरी) के फूलों से सुगंध प्राप्त करने के लिए चंदन और कुष्ठ की जड़ों के पाउडरों को आपस में मिश्रित कर उसकी लेई बनाकर मिलायें। श्योनक के फूलों से सुगंध प्राप्त करने के लिए कुष्ठ की जड़ों, अरणी की अंतःकाष्ठ लकड़ी और चंदन के पाउडरों को आपस में मिश्रित कर उसकी लेई बनाकर मिलायें। *कदम्ब* (कदम) के फूलों से सुगंध प्राप्त करने के लिए, पीसी हुई काली मिर्च, दालचीनी वृक्ष की छाल और चंदन को एक साथ मिलायें। चम्पक के फूलों से सुगंध प्राप्त करने के लिए पन्ना, इलायची (एला) तथा चंदन के पाउडरों को आपस में मिश्रित कर मिलायें। कुमुद के फूलों से सुगंध प्राप्त करने के लिए पदमा के फूलों, पतचौली (पाची) की पत्तियां, केतकी के नर फूल और चंदन को आपस में मिश्रित कर मिलायें।

3. **दंत पाउडरः**

   हर्बल (जड़ी–बूटी या शाक) दंत–लकड़ी (दांतुन) को बनाने की प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार है।

   एक ठंडा निषेचन या हरितकी, विभितक या सिरिश में से किसी एक पेड़ की छाल का क्वाथ तैयार करें। [विकल्पतः, हरितकी, विभितक और सिरिश की बाह्य छाल का उपयोग भी किया जा सकता है।] क्वाथ और निषेचन स्वाद में तीक्ष्ण होगा। गुग्गल की लकड़ी, सुपारी, वचा तथा दालचीनी आदि उत्पादों को क्वाथ में मिलाकर मिश्रण बना लें। [गुग्गल की लकड़ी, सुपारी, वचा तथा दालचीनी आदि उत्पादों का अलग से क्वाथ भी बनाया जा सकता है और उसको पहले क्वाथ में मिलाते हैं।] दंत–लकड़ी (दांतुन) को एक सप्ताह के लिए अंतिम घोल में रख दें। [मूल–पाठ या टिप्पणी में समय का विवरण नहीं दिया गया है।] एक सप्ताह के बाद दंत–लकड़ी (दांतुन) को छाया में सुखा लें। जो व्यक्ति इन दंत–लकड़ियों (दांतुनों) का उपयोग करता है, उनके दांत मजबूत हो जाते हैं।

4. **मुख धावन (मुख स्वच्छता):**

   द्रवीय हर्बल (जड़ी–बूटी या शाक) मुख धावन (मुख स्वच्छता) को बनाने की प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार है।

   सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, मस्त प्रकन्दों, दालचीनी, दालचीनी की पत्तियां, इलायची, कत्था, धनिया आदि के पाउडरों और शहद आदि संघटकों को बराबर मात्रा में मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रित कर लें। इस मिश्रण में पानी मिलाकर मुख धावन के लिए काम में लिया जा सकता है और इससे कुल्ला करने पर मुख की दुर्गन्ध दूर होती है।

   [पानी और मिश्रण का अनुपात नहीं दिया गया है। इसको 10:1 या 20:1 में लिया जा सकता है]

5. **एक साधारण सुगंधित द्रव्य को इस प्रकार से निर्मित किया जा सकता हैः**

   मस्त प्रकन्दों, इलायची, लौंग, चंदन, जटामांसी जड़ें, केतकी के नर फूल और नागकेशर

के फूल को बराबर मात्रा में लेकर मिश्रण तैयार कर लें। इस मिश्रण से तैयार क्वाथ एक साधारण सुगंधित द्रव्य होता है।

6. **बोतल बंद सुगंधित द्रव्य को इस प्रकार से निर्मित किया जा सकता है:**

ऊपर वर्णित साधारण सुगंधित द्रव्य में ताजा खुशबूदार फूलों या उसके रस को मिश्रित कर सकते हैं और वांछित फूल का सुगंधित द्रव्य प्राप्त कर सकते हैं। विकल्पतः, वांछित फूल के रस में चंदन पाउडर को मिलाया जा सकता है। इस निजी सुगंधित द्रव्य को अपने शरीर पर अभ्यंजित कर सकते हैं।

[यदि चमेली के फूलों का सुगंधित द्रव्य बनाना है तो साधारण सुगंधित द्रव्य में चमेली के फूलों के रस को मिलायें और उपयोग करें। विकल्पतः, चमेली के फूलों के रस में चंदन का पाउडर मिलायें।]

7. **उत्तम सुगंधित द्रव्य – इस प्रकार से बनाते हैं।**

निम्नलिखित संघटकों के पाउडरों से मिश्रण तैयार करें:

कपूर (9 भाग), गुग्गल (1 भाग), कमल ट्री पाउडर (3 भाग), कस्तूरी या मुश्क (1 भाग), लौंग (1 भाग), कुष्ठ जड़ें (1 भाग) और बे (ट्री) तेल (3 भाग) आदि।

इस मिश्रण में चंदन लेई (या पाउडर) को मिलायें। यह एक उत्तम सुगंधित द्रव्य होता है।

[**कमल पाउडर:** यह कमल ट्री के फलों के ग्रन्थिल (ग्रन्थीय) रोमों का पाउडर होता है। आज जो *कुमकुम* बाजार में बेचा जाता है, वो एक कृत्रिम उत्पाद है जो कि इस उत्पाद का प्रतिस्थापी नहीं है। *कम्पिल्लाकह* पाउडर की बजाय केसर का भी उपयोग किया जा सकता है। *कम्पिल्लाकह* पाउडर के स्थान पर विकल्प के रूप में नारंगी रंग के रंजक का उपयोग किया जा सकता है। बे तेल एक आवश्यक तेल है जिसको बे पेड़ की हरी पत्तियों से प्राप्त किया जाता है जिसका उत्पत्ति स्थान वेस्टइंड़ीज और उष्ण कटिबंधीय अमेरिका है।]

8. **मुख का एक सुगंधित द्रव्य – मुख का एक हर्बल सुगंधित द्रव्य तैयार कर सकते हैं।**

एक बड़े नीम्बू (बिजौरा) फल में छेदकर उसको साधारण सुगंधित द्रव्य से भर लें। नीम्बू को मजबूती से ढ़क्कर क्रूसिबल या कुठाली (मृदु आग का गड्ढ़ा) में रख दे। बिजौरा फल के शोधन (परिष्करण) के बाद इसे बाहर निकाल लें। अन्तिम उत्पाद मुख के लिए एक सुगंधित द्रव्य होता है। जिसको कन्नड़ और संस्कृत में *मुखवाश* कहते हैं। यह सुगंधित द्रव्य मुख को अच्छी सुगंध देता है।

9–10. **मुख का एक मनोहर सुंगधित द्रव्य यानि मुख धावन (मुख स्वच्छता) टिकिया:**

मुख के लिए एक मनोहर सुंगधित द्रव्य यानि मुख धावन (मुख स्वच्छता) टिकिया बनाने के तरीके का वर्णन इस प्रकार है–

निम्नलिखित संघटकों (अवयवों) के पाउडरों के प्रत्येक के एक भाग को लेकर मिश्रण तैयार कर लें।

चंदन, कमल पाउडर, अगर (अगुरु), रेणुका, जायफल, तवक्षीर, कस्तूरी, शर्करा और जावित्री आदि।

कपूर (4 भाग), बे तेल (4 भाग) तथा कत्था (16 भाग) आदि।

इन सभी संघटकों को अच्छी तरह पीसकर मिश्रित कर लें और *सहकार तेल* में इस मिश्रण को मिलाकर छोटी टिकियाएं बना लें।

[इन टिकियाओं को कन्नड़ में *खेरा गुलिगे* कहते हैं।]

सहकार तेल बनाने की विधि का वर्णन अगले श्लोक में किया गया है।

11. ***सहकार तेलः***

नीचे दिए अनुसार *सहकार तेल* तैयार करें।

बड़ा नीम्बू (बिजौरा), *नयीनरेल,* बेल, आम और गुग्गल पेड़ों की छाल और पत्तियों को बराबर भागों में ले। क्वाथ तैयार करने के लिए इनको उबाले और तब तक उबालते रहे जब तक कि इसका कुल आयतन घटकर आठवां हिस्सा ना रह जायें। इस क्वाथ में बराबर अनुपात में सरसों का तेल मिलायें। इसमें *हस्तिदंति* पेड़ की छाल का रस मिलायें। इस द्रवीय मिश्रण को बे पेड़ की पत्तियों से घूमित करें। इसको *सहकार तेल* कहा जाता है। इस तेल का उपयोग सामान्य प्रयोजन के लिए किया जाता है।

12. किसी विशिष्ट खुशबूदार तेल को बनाने के लिए, कच्चे सुगंधित द्रव्य के एक भाग को 4 भाग सीसम तेल तथा 16 भाग पानी के साथ मिश्रित करें। इस मिश्रण को तब तक गर्म करें जब तक की इसमें पूरी तरह से पानी नहीं उड़ जाये।

13. तेल की कोई भी अशुद्धता को दूर करने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक को मिलायें।

सल्लाकी, गुग्गुल, कननशेखर पत्तियों का रस और सुरण पाउडर।

14. **स्वर्णिम (स्वर्णमय) तेलः**

पदमा फूल, यश्टिमधु, हल्दी, रेणुका फल और धतुरा छाल आदि को बराबर मात्रा में लेकर ऊपर वर्णित विधि के अनुसार तेल (सीसम?) में मिलायें। अच्छी तरह मिश्रित कर और उसे तब तक गर्म करें जब तक उसका रंग स्वर्णिम ना हो जाये।

15. **लाल तेलः**

लाख (लाक्षा), हींग, मंजिष्ठा, लाल चंदन, मेहदीं के फूलों के और लताकरंज पाउडरों को बराबर मात्रा में लेकर, ऊपर वर्णित तेल में मिलायें और उसको तब तक गर्म करें जब तक की उसका रंग गहरा लाल ना हो जायें।

16. ***चम्पक तेल* (राजाओं के उपयोग के लिए):**

केतकी के नर फूल (3 भाग), कुष्ठ की जड़ें (1 भाग), दालचीनी (2 भाग) और दालचीनी की पत्तियों (10 भाग) को 128 भाग सीसम के तेल में मिलायें।

17. इस तेल को सात दिन तक सूर्य की रोशनी में गर्म करें, इसमें खुशबू की तीव्रता बढ़ाने के लिए प्रतिदिन चम्पक के फूलों को मिलायें। इसको *चम्पक तेल* कहते हैं, जो कि राजाओं के उपयोग के लिए अच्छा होता है।

18. **श्योनक फूल तेल *(पादरी तेल)*:**

एक भाग तगर की जड़ें, दो भाग अगर (अगुरु), तीन भाग दालचीनी, चार भाग पाची की पत्तियां, पांच भाग *भरुण्डी* की पत्तियां, छः भाग कुष्ठ की जड़ें और सात भाग दंत (दंती) बीजों के पाउडरों को तिल (सीसम) के तेल में मिलाकर सूर्य की रोशनी में गर्म करें। इस तेल में ताजा श्योनक फूल के तेल को मिलायें। अन्तिम उत्पाद श्योनक फूल तेल (पादरी तेल) होता है।

[*चंपक तेल* के लिए वर्णित विधि का भी यहां पर उपयोग किया जा सकता है।]

19. **तगर तेलः**

एक भाग तगर की जड़ें, एक भाग दालचीनी, एक भाग जटामांसी की जड़ें, एक भाग

केतकी के नर फूल, एक भाग इलायची, एक भाग सुपारी, एक भाग जांबू की पत्तियां, एक भाग *रेणुका* फल, एक भाग कुष्ठ की जड़ें, एक भाग कपिकच्छू (केवांच) की जड़ें, आठ भाग खस–खस की जड़ें और आठ भाग देवदारु आदि के पाउडरों को मिश्रित कर लें।

20. इस मिश्रण को सीसम के तेल में मिलायें और हल्की आंच पर उबालें। तेल को ठंडा होने पर ताजा तगर फूलों को मिलायें। इसको *जगी तेल* कहते है।

21. **चमेली तेलः**

एक भाग कपिकच्छू की जड़ें, एक भाग कुष्ठ की जड़ें, एक भाग कपिकच्छू के बीज, एक भाग लौंग, एक भाग इलायची, एक भाग पूर्ण सहदेवी पादप, एक भाग केतकी के नर फूल, दो भाग जांबू पेड़ की छाल, तीन भाग जटामांसी की जड़ें और तीन भाग तगर की जड़ें आदि के पाउडरों को तिल (सीसम) के तेल में मिलाकर उबालें। तेल को ठंडा होने पर ताजा चमेली के फूलों को मिलायें। इसको *मल्लिका तेल* (चमेली तेल) कहते हैं।

22. **कोई भी विशिष्ट खुशबू वाले फूल का तेलः**

तिल के बीजों को पत्थर पट्टी पर रगड़कर (घिसकर) इसके काले आवरण को हटायें। इन बीजों को पानी से धोकर सुखा लें। सूखे सफेद तिलों में विशिष्ट ताजा फूलों को मिलायें और इसको बैलों से चलित तेल की घाणी में डाल दें। तेल को एकत्र कर और तेल में पुनः विशिष्ट ताजा फूलों को मिलायें। यह तेल विशिष्ट फूलों का खुशबूदार तेल होता है।

23. ***मृगमदा तेल (कस्तूरी तेल):***

सफेद तिल बीजों में केतकी के नर फूलों को मिलायें और उस मिश्रण को गंधराल, फैरिक ऑक्साइड, आमाहल्दी (आंबाहल्दी) प्रकन्दों, जटामांसी जड़ों, सुपारी और इलायची आदि के साथ घूमित करें।

24. कपूर, कमल लकड़ी पाउडर (केसर), कस्तूरी, चंदन पाउडर, हरितकी पाउडर, विभीतिका पाउडर, धात्री (आंवला) पाउडर, लोध्र पेड़ की छाल (पत्तियां) आदि को बराबर भागों में लेकर घूमित तिल बीजों में मिलायें और उसको दबाकर तेल निकाले। इस सुगंधित तेल को सात दिनों तक सूर्य की रोशनी में गर्म करें। इसको *मृगमदा तेल* (कस्तूरी तेल) कहते हैं।

25. **कपूर तेलः**

पके और पूरी तरह से सूखे हुए बेल फलों के बीजों को अच्छी तरह से पीसकर लोई (गुंधा) बना लें। इस लोई को छाया में सूखा लें। तेल को प्राप्त करने के लिए पानी को उड़ने दें। इस तेल में कपूर को मिलाकर कपूर तेल प्राप्त किया जाता है।

26. **सुगंधित कपूर तेलः**

बंद बर्तन में कपूर तेल को डालकर उसे देवदारु, शहद, अपरिष्कृत शर्करा, *भारंगी* पत्तियां, अगर और बेल पत्तियां आदि के पाउडरों से घूमित करने पर कपूर तेल प्राप्त होता है।

27. **सुगंधित आंवला (धात्री):**

एक भाग *मुर*, एक भाग गुग्गल, एक भाग मारुबक की पत्तियां, एक भाग जटामांसी की जड़ें, एक भाग लताकरंज को चावल के दलिये के साथ मिलाकर पीस लें और एक अच्छी लेई बना लें। लेई में इलायची और दालचीनी पाउडरों को मिलाकर एक दिन के लिए किण्वित होने दें। इस दलिये को गुड़ (गन्ने का) के साथ घूमित करें। इसको सुगंधित आंवला (धात्री) कहते हैं।

28. एक भाग मारुबक की पत्तियां, एक भाग पूर्ण नागदमनी पादप, एक भाग पतचौली (पाची) की पत्तियां, एक भाग *हतिसुर (भरुण्डी)* की पत्तियां, एक भाग तगर की पत्तियां, एक भाग देवदारु जड़ें, एक भाग इलायची और इक्कीस भाग धात्री (आंवला) के बीजों को चावल के दलिये के साथ मिलाकर पीस लें और एक अच्छी लेई बना लें। लेई में इलायची और दालचीनी के पाउडरों में मिलाकर एक दिन के लिए किण्वित करें। लेई को गुड़ (गन्ने का) के साथ घूमित करें। इसको भी हम सुगंधित आंवला (धात्री) कहते हैं।

29. **शरीर का सुगंधित द्रव्यः**

नख (हीना ?), सल्लाकी, जटामांसी और मारुबक के पाउडरों को बराबर मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें। यह एक शरीर के लिए बढ़िया सुगंधित द्रव्य होता है।

30. **परिधान सुगंधित द्रव्यः**

चंदन, अगर (अगुरु), अपरिष्कृत शर्करा, लताकरंज, करंज के बीज और कुष्ठ की जड़ों के पाउडरों को बराबर मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें। यह एक परिधान सुगंधित द्रव्य होता है। इस सुगंधित द्रव्य को कपड़ों पर छिड़क सकते हैं। विकल्पतः, कपड़ों को इस सुगंधित द्रव्य से धूमित भी कर सकते हैं।

31. **सुगंधित लकड़ी (*अगरबत्ती*):**

दो भाग कस्तूरी, एक भाग कपूर, एक भाग फैरस सल्फेट, एक भाग सल्लाकी, एक भाग चंदन और एक भाग जटामांसी जड़ों के पाउडरों के मिश्रण को 14 भाग शर्करा घोल में अच्छी तरह मिश्रित कर, उसकी लोई से सुगंधित लकड़ी तैयार कर छाया में सुखा लें। इन तैयार की गयी सुगंधित लकड़ियों पर तिल के तेल को छिड़कना चाहिये। जब इन सुगंधित लकड़ियों को जलाया जाता है तो ये खुशबूदार सुंगध देती है।

32. चंदन, सल्लाकी, मस्त प्रकन्दों, नख (हीना ?), सुपारी, गुग्गल, लताकरंज, दालचीनी और केतकी के नर फूल आदि को बराबर भाग में लेकर मिश्रण बना लें। फिर इस मिश्रण को पीसकर, इसकी लोई बनाकर सुगंधित लकड़ी तैयार करें। इनको भी सुगंधित लकड़ियां (अगरबत्ती) कहते हैं। जिनको जलाने पर खुशबूदार सुंगध आती है।

33. देवदारु लकड़ी, लताकरंज, *मुर* छाल, साल, फैरस सल्फेट और लाख आदि को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। इस मिश्रण को छोटी रुई की गठरी में भर दें। इस रुई की गठरी को *सुगन्धमय धूप बत्ती* यानि सुंगधित गठरी। जब इन *सुगन्धमय धूप बत्ती* को जलाया जाता है, तो बहुत अच्छी खुशबूदार सुंगध आती है।

34. चंदन, *भरुण्डी* की पत्तियां, केतकी के नर फूल, अपरिष्कृत शर्करा, लाख और कुष्ठ की जड़ों आदि को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। इस मिश्रण को छोटी रुई की गठरी में भर दें। जब इन रुई की गठरी को जलाया जाता है, तो बहुत अच्छी खुशबूदार सुंगध आती है।

35. **दसंग धूप (दस सुगंधित द्रव्यों की सुगंध):**

अगर (अगुरु), मस्त प्रकन्दों, *भरुण्डी* की पत्तियां, जटामांसी जड़ों, नख (*हीना ?*), मारुबक पत्तियां, लताकरंज पेड़ की जड़ें, कपिकच्छू की जड़ें, केतकी के नर फूल और चंदन आदि को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। इस मिश्रण में शहद और शर्करा मिलाकर लोई बनाकर और छोटी टिकियां बना लें। इसको *दसंग धूप* (दस सुगंधित द्रव्यों की सुगंध) कहते हैं।

36. ***पंचाग धूप* (पांच सुगंधित द्रव्यों की सुगंध):**

एक भाग *नख* (हीना ?) पाउडर, दो भाग कपूर पाउडर, तीन भाग अगर (अगुरु) पाउडर,

चार भाग चंदन पाउडर और पांच भाग बेल फल का गूदा को मिलाकर मिश्रण बना लें। इसको *पंचाग धूप* (पांच सुगंधित द्रव्यों की सुगंध) कहते हैं।

37. **ईश्वरीय सुगंधित द्रव्यः**

चंदन, *भरुण्डी* की पत्तियां, केतकी के नर फूल, अपरिष्कृत शर्करा, अगर और कुष्ठ जड़ आदि के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। इस अन्तिम मिश्रण में गुड़ (गन्ने का) मिला लें और अंडाकार आकार की गोलियां बना लें। इसको ईश्वरीय सुगंधित द्रव्य कहते हैं, जो सभी देवताओं को प्रिय होती है।

38. **फैलने वाला सुगंधित द्रव्यः**

यहां पर फैलने वाले दो प्रकार के सुगंधित द्रव्य के बारे में बताया जा रहा है। पहला, लाख, मस्त प्रकन्दों, *भरुण्डी* की पत्तियां, हरितकी फलों का बाह्य भाग, गुड़ (गन्ने का) तथा फूलवाड़ के फूलों के पाउडरों को बराबर मात्रा में लेकर, इस मिश्रण की गोलियां बना लें। दूसरा, लाख, गुड़ (गन्ने का) तथा विभित्तिका काष्ठफल का बाह्य भाग आदि के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिलाकर, उसकी गोलियां बना लें। इन दोनों मिश्रणों की गोलियों को जलाने पर सुखद खुशबू प्राप्त होती है।

39. **कीट और अन्य कीड़ेमकोड़ों को दूर करने वाली सुगंधः**

मक्खी, पिस्सू, कीड़े और चमगादड़ को दूर भगाने के लिए चंदन, *विडंग* बीज, अर्जुन पेड़ के फूलों आदि को गुड़ (गन्ने का) और शहद के साथ मिश्रित कर घर के अन्दर घूमित करें।

40. **वांछित सुगंधित द्रव्यः**

नागकेशर पेड़ों की जड़ों को संग्रहित कर उसको पानी से अच्छी तरह साफ कर सूखा लें। इसके बीजों के गूदे और इसकी जड़ों के पाउडरों को आपस में मिश्रित कर लें। इस पाउडर में वांछित सुगंधित द्रव्य को मिला दें (इस अध्याय के श्लोक 6 को देखे)। इस सुगंधित द्रव्य को बाद में हरितकी के बीजों के साथ घूमित करें। इस प्रकार से वांछित सुगंधित द्रव्य का पाउडर प्राप्त होता है।

41. ***बकुल* फूल की खुशबूः**

चंदन, जांबू पेड़ की छाल, बेल पेड़ की छाल, शतपुष्प (पूर्ण पादप), हरितकी काष्ठफल की छाल के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। किसी भी खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो वो बकुल फूल की खुशबू देगा।

42. ***चंपक* सुगंधित द्रव्यः**

पुल्लास लकड़ी, चंदन, केतकी के नर फूल, अगर (अगुरु) आदि पाउडरों के एक भाग तथा गुग्गल के सोलह भाग लेकर मिश्रण बना लें। किसी भी खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो वो चम्पक फूल की खुशबू देगा।

43. **केतकी फूल की खुशबूः**

चंदन, सिगरु पेड़ की जड़ें, केतकी के नर फूल, मस्त प्रकन्दों, हरितकी काष्ठफल की छाल, जटामांसी जड़ें, गुड़ (गन्ने का) और इलायची आदि के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिलाकर मिश्रण बना लें। किसी भी खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो वो केतकी फूल की खुशबू देगा।

44. ***चन्द्र मल्लिका* फूल की खुशबूः**

एक भाग मारुबक की पत्तियां, एक भाग दालचीनी, दो भाग सल्लाकी और चार भाग धनिये

के पाउडरों को लेकर मिश्रण बना लें। किसी भी खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो वो *चन्द्र मल्लिका* फूल की खुशबू देगा।

45. **चमेली फूल की खुशबू:**

एक भाग पुल्लास पेड़ की जड़ें, दो भाग हरितकी काष्ठफल, तीन भाग दालचीनी और चार भाग दालचीनी की पत्तियों के पाउडरों को लेकर मिश्रण बना लें। किसी भी खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो वो चमेली फूल की खुशबू देगा।

46. **फूलों की खुशबू का प्रतिधारण करना (न खोना):**

पुन्नाग के बीज, टिन्दुक के फूल, बोरेक्स, कपूर और गुग्गल को बराबर भागों में लेकर मिश्रण तैयार कर लें। खुशबूदार फूल पर इस मिश्रण का छिड़काव करेगें तो उस फूल की खुशबू वैसी की वैसी रहेगी।

47. शहद, पाठा की जड़ों का रस और कपूर को उचित अनुपात में मिलाकर किसी भी खुशबूदार फूल पर छिड़कते हैं तो उससे रस निकलता है जो उसकी खुशबू को वैसी की वैसी बनाये रखता है।

48. सिगरु पेड़ की जड़ों के पाउडर में शहद और कपूर मिश्रित कर उसका 1/16 भाग क्वाथ तैयार करें। इस मिश्रण को कटोरे की भीतरी सतह पर लेपकर उसके अन्दर केतकी के नर फूलों को रख दें और कटोरे को निष्क्रिय आग से उष्मा दें। फूलों से रस का रिसाव होगा लेकिन उसकी खुशबू वैसी की वैसी रहेगी।

49. अगर (अगुरु), चम्पक, कम्पिलाक पाउडर, कस्तूरी, ग्रन्थिपर्णी बीज (पत्तियां) आदि को पीसकर मिश्रण बना लें। इनकी छोटी–छोटी गोलियां बनाकर छाया में सूखा लें। जब किसी भी पदार्थ को इन गोलियों से घूमित किया जाता है तो उसकी खुशबू कस्तूरी से भी ज्यादा अच्छी होगी।

50. ***सादु:***

पदमा फूलों के पराग, कुष्ठ जड़ें, बेल जड़ें, अर्जून फूल, लकुचा फल और शहद आदि को मिलाकर पीस लें। प्राप्त हुयी लेई को बर्तन में लेकर कसकर बंद कर दें और दो महीनों के लिए उस बर्तन को जमींदोज (भूमिगत) कर दें। इसकी सुगंध बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली होती है जिसको *सादु* (कन्नड़ में) कहते हैं।

51. एक भाग गुड़ (गन्ने का) और एक भाग देवदारु तेल को लेकर, उसको 8 भाग सिगरु पेड़ की जड़ों के रस के साथ मिश्रित कर लें। इस द्रव्य को इतना उबालें की इसकी मात्रा घटकर एक तिहाई रह जाये। इसमें दालचीनी और इलायची के पाउडरों को मिला दें। यह अलग प्रकार का *सादु* होता है।

52. कस्तूरी के दो भाग, एक भाग अगर (अगुरु), एक भाग बेल पेड़ की छाल का तेल, एक भाग पूर्ण पादप हंसपड़ी का रस और एक भाग चंदन आदि को पीसकर, गर्म पानी में डाले।

53. उपरोक्त लेई को बिजौरा फल की बाह्य त्वचा में भरकर तब तक पकायें जब तक की उसका छिलका पूरी तरह से ना जल जाये। पकी हुयी लेई की खुशबू कपूर से भी ज्यादा अच्छी होगी और इसका उपयोग शरीर पर सुगंधित द्रव्य के रुप में कर सकते हैं।

54. ***उदयभास्कर सादु:***

एक भाग कस्तूरी, दो भाग चंदन, तीन भाग नर केतकी के फूल, चार भाग अगर (अगुरु) और पांच भाग *नख* (हीना ?) आदि को पीसकर और पकाकर अन्तिम लेई बना लें। पकी हुयी लेई में शहद और शर्करा मिलाकर, उसको धूमित कर लें। इसको उदयभास्कर सादु के नाम से जाना जाता है।

55. ***महिसिदल सादुः***

एक भाग गुग्गल, दो भाग *शलि* (दीर्घ अवधि, प्रतिरोपण) चावल, तीन भाग चंदन, चार भाग अगर (अगुरु), पांच भाग *कम्पिल्लाकह* पाउडर, छः भाग सहदेवी का पूर्ण पादप, सात भाग *भरुण्डी* की पत्तियां, आठ भाग नागकेशर के फूल आदि को पीसकर एक साथ कर लें और उसकी छोटी–छोटी गेंद बना लें और छायादार स्थान पर सूखा लें। इसको फूल के त्रिशाख से प्राप्त रस में मिला दें । इन गेदों को बिजौरा के छिलके में पकायें (श्लोक 53 में दिये गये वर्णन के अनुसार)। परिणामी उत्पाद को *महिसिदल सादु* कहते है जो कि रानी के लिए एक सुगंधित द्रव्य है।

56. दारुहरिद्रा छाल, कपिटाह का गूदा, पदमा की जड़ें, वरूण पेड़ आदि को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर और छायादार स्थान पर सूखा लें। सूखे हुए उत्पादों को बराबर भाग में लेकर कटहल, अंजीर, बरगद, पीपल और *पीलखान* आदि की पत्तियों के क्वाथ में पकायें।

57. पके हुए उत्पाद को फूल के रस के साथ पीसकर चिकनी लेई बना लें। इस लेई को ऊपर वर्णित तरीके से पकायें (श्लोक 53 देखे)। पकी हुयी लेई में गुग्गल, फैरस सल्फेट और बकरी के गोबर को मिलायें। अन्तिम उत्पाद को धूमित करें और एक खुशबूदार फूल के सुगंधित द्रव्य को मिलायें। यह एक दूसरा *सादु* होता है।

58. हरितकी, केतकी, साल, बेल, अगर (अगुरु), गुग्गल, पांडुनाग और सल्लाकी आदि की छालों के तेलों को अलग–अलग लेकर गुड़ (गन्ने का) के साथ धूमित करें।

59. वर्षा काल में चार गुना और शीत काल में आठ गुना गुड़ (गन्ने का) की मात्रा से धूमित करें। यह एक बहुत उच्च गुणवत्ता वाला *सादु* होगा।

60. उपरोक्त तेलों (श्लोक 58 देखें) को गुड़ (गन्ने का) की जगह लाख, गुग्गल, जटामांसी, केतकी के नर फूल, नख (हीना ?), साल, अगर (अगुरु), चंदन, मारुबक पत्तियां, कपूर, कस्तूरी, शर्करा के स्थान पर शहद आदि से भी धूमित कर सकते हैं। इन तेलों में अच्छी खुशबू होगी।

61. ***कुमकुमः***

किसी भी खुशबूदार फूल के दो भागों को अर्जुन के एक भाग और केतकी के नर फूल के एक भाग के साथ अच्छी तरह पीसकर, इस लेई को सूर्य की रोशनी में सूखा लें। इसमें बराबर मात्रा में चंदन के फूलों के परागों को अच्छी तरह मिलाकर मिश्रण बना लें। यह *कुमकुम* होता है।

62. ***कुमकुम केसरी* (केसर) :**

कुसुम के ताजा फूलों को भरपूर मात्रा में दही लेकर उससे धोयें (मठ्ठा या छाछ ?)। इन धुले हुए फूलों को किसी भी सुगंधित द्रव्य (श्लोक 6 देखें) के साथ खुशबू प्रदान करें। इन फूलों को छाया में सूखा लें और इन फूलों को कत्था और शैवाल (साधारण) के रस में उबालें। उसके बाद उसको पकायें (श्लोक 53 देखें) ।

63. पके हुए उत्पाद को पुनः बेल फल के आवरण में पकायें। अन्तिम उत्पाद को कुमकुम के सोलहवें भाग के साथ मिश्रित करें। बने हुए उत्पाद को *कुमकुम केसरी* कहते हैं।

64. **मस्क (*कस्तूरी*):**

कपूर 1 भाग, कस्तूरी 1 भाग, अगर (अगुरु) 1 भाग, दालचीनी 1 भाग, जायफल 1 भाग और लताकरंज के बीजों के 4 भागों को शहद के साथ पीस लें।

65. किसी भी खुशबूदार फूल के रस, *कननशेखर* की पत्तियां और बकरी के मूत्र को मिलायें।

इस द्रव्य को उबालें और केतकी के नर फूलों को मिलाकर खुशबू प्रदान करें। अन्तिम उत्पाद को घातु के डिब्बे (अच्छा हो कि वो सोना, चांदी या तांबे का बना हो) में भर लें और दो दिनों (दो से चार सप्ताहों – स्थानान्तरक) के लिए डिब्बे को धान्य ढ़ेर में छिपा दें (चावल ?)। प्राप्त हुआ उत्पाद कस्तूरी होता है।

66. **अपरिष्कृत कपूरः**

बोरेक्स को क्रमशः गर्म पानी, चावल चूरा और भैंस के दूध से प्रक्षालित करें। पुनः इसको केतकी के रस से प्रक्षालित करें। प्रत्येक समय प्रक्षालित किए हुए बोरेक्स को धूप में सूखाना चाहिए।

67. इस प्रक्षालित और सूखे हुए बोरेक्स को भुरज की छाल से बने हुए थैले में रखकर उबलते हुए दूध में डूबो दें, जिससे बोरेक्स गर्म हो जायेगा। थैले में बची हुई मात्रा को बाहर निकालकर उसमें एक चौथाई मात्रा में अच्छी गुणवत्ता वाला कपूर मिला दें। प्राप्त हुआ उत्पाद अपरिष्कृत कपूर होता है।

68. **हींगः**

दो भाग लहसुन, एक भाग हींग, एक भाग नीम पेड़ का गोंद, एक भाग बकरी के दूध का मक्खन और एक भाग नीम का तेल आदि को लेकर मिश्रण बना लें। इस मिश्रण को तब तक उबालें जब तक कि इसका पूरा पानी ना उड़ जाये। अन्तिम उत्पाद हींग होता है।

69. **खाद्य हींगः**

तीन भाग हींग, एक भाग अदरक पाउडर, दो भाग गुड़ (गन्ने का) और पांच भाग बकरी दूध में एरण्ड बीजों का गूदा आदि को पीसकर मिश्रण बना लें। इसमें फूलों के रस को मिलाकर, उसको उबाल लें। अन्तिम उत्पाद खाद्य हींग होता है।

70. **व्यापारिक हींगः**

दो भाग लहसुन, एक भाग अदरक पाउडर, छः भाग बेल फल का गूदा, एक भाग कपूर, एक भाग गुड़ (गन्ने का) और आठ भाग उड़द का आटा लें। उपरोक्त अवयवों को बकरी के दूध में और किसी भी खुशबूदार फूल के रस को मिलायें। इस उत्पाद को लौकी के आवरण में भर दें और उसको धान के ढ़ेर में एक महीने के लिए छिपा दें। अन्तिम उत्पाद व्यापारिक हींग होता है।

अध्याय 8

सूप-शास्त्र

(पाक-विधि की कला और विज्ञान)

1. हमारे पूर्वजों का कहना था कि भोजन ही जीवन है। तदनुसार, मैं यहां पर लोगों के कल्याण के लिए भोजन पकाने के विज्ञान की व्याख्या करता हूं।

2. **उचित तरीके से चावल का पकानाः**

   उचित तरीके से चावल पकाने के लिए, साफ कच्चे चावलों को लेकर, स्वच्छ पानी से तीन बार धोयें। धोयें हुए चावलों को उबलते हुए पानी में पकायें। अच्छी तरह से चावल पके इसके लिए चावल पकाते समय कोई लेई (गूदा) दिखाई दे तो उसको अलग से निकाल लें। यदि पकाये जा रहे चावल अधिक मृदु हो गये हों तो उसमें लेई (गूदा) को पुनः मिला दें और पुनः अतिरिक्त लेई को निकाल लें। इस तरीके से चावल बहुत अच्छी तरह पकेगा।

3. **पके हुए चावल को परिरक्षित करनाः**

   तुलसी और बड़ा नीम्बू (बिजौरा) की पत्तियों का क्वाथ तैयार करें। विकल्पतः, साधारण अमरुद पेड़ (?) की छाल की राख को पानी में मिलाकर घोल तैयार करें, और घोल की राख को नीचे बैठने दें, फिर उसको छान लें। इन दोनों में से किसी एक घोल को लेकर गर्म कर लें। धोयें हुए चावलों को इस गर्म घोल में डालकर उचित तरीके से पकायें। पके हुए चावलों में बराबर मात्रा (अनुपात) में दही मिलायें। इस तरीके से पकाये गये चावल लम्बे समय तक खराब या अपघटित नहीं होगें।

4. गाय के दूध में मूंग और हाथ से कूटे हुए भूरे चावल (हाथ से कूटे हुए चावल का रंग रक्ताभ या भूरा होता है।) को कलश (घट) में मिलाकर पयस (मीठा दलिया) तैयार करें। *पयस* वाले कलश को उसकी गर्दन तक भरे हुए पानी में रख दें। जो कोई भी *पयस* का सेवन करेगा वो *पयस* के खत्म होने तक भूखा नहीं रहेगा (?)।

   [सामान्यतः भूरे चावल को *दोद्दू भैरा नेल्लू* के नाम से पुकारते है। इसमें स्टार्च की मात्रा सामान्य चावल की अपेक्षा ज्यादा होती है और यह बहुत अधिक मीठा भी होता है। कोई भी इस चावल को ज्यादा मात्रा में सेवन नहीं कर सकता है। इसको कन्नड़ में *कलावे अक्की* के नाम से जाना जाता है।]

5. साफ जौ को दूध में भिगोकर, सूर्य की रोशनी में भिगो दें। सूखे हुए जौ को सेककर, पत्थर चक्की में अच्छा आटा पीस लें। इसमें केसर, दालचीनी, दालचीनी पत्तियों तथा इलायची के पाउडरों को मिला दें। इस आटे में शर्करा या घी मिला लें। यह एक बहुत उच्च पौष्टिक भोजन होता है।

   [आज बहुत से लोग इसी तरह से सामान्य भोजन के रुप में *रवे उन्डे* को कई त्यौहारों और समारोह में बनाते हैं।]

6. साफ जौ को गर्म दूध में भिगोकर और पीसकर इसकी लेई बना लें। इस लेई के छोटे गोले (पिण्डों) को घी में तल लें। इसको *घृत पुरेत* कहते हैं यानी घी में तले हुये पिण्ड। यह बहुत स्वादिष्ट होता है और उसको एम्ब्रोसिया फूड (अमृत भोजन) भी कहते हैं।

   [इसको तमिल में *अप्पम* और कन्नड़ में *कज्जया* कहते हैं।]

7. मृदु और गर्म *मेंडिज* को गर्म दूध और घी के मिश्रण में भिगोयें। इस मिश्रण में केसर, दालचीनी, दालचीनी पत्तियों तथा इलायची के पाउडरों को और शर्करा के साथ कोमल (नरम) नारियल के पानी को *मेंडिज* में मिला दें। सभी अवयवों को अच्छी तरह से मिश्रित करके बर्तन में रख दें। इस बर्तन को मोटी मिट्टी की परत से सील (बंद) कर दें और इस सील किये हुए बर्तन को आग के मध्य में रख दें। बर्तन में पके हुए खाद्य पदार्थ को बाहर निकाल लें। इसको *खंडघृत पुर* कहते हैं।

[*मेंडिज* चावल और गेहूं आदि का पका हुआ आटा होता है।]

8. पीसा हुआ नारियल, खजूर और शर्करा को आपस में मिलाकर अच्छी तरह से घोटकर मिश्रण बना लें। लोई का एक भाग लेकर अच्छी तरह से भरी हुयी छोटी टिकिया बना लें। इन टिकियाओं को घी में अच्छी तरह से तल लें। इसको *चटपटी टिकिया* कहते हैं।

[इसको कन्नड़ और तमिल में सज्जप्प कहते हैं।]

9. गर्म कड़ाही पर राजगिरी पादप की जड़ों या कोकिलक्षा की पत्तियों से लीप दें। इस कड़ाही में भैंस के दूध को पकायें। इससे मृदु पनीर प्राप्त होता है (कन्नड़ में *हलुवुग* कहते हैं)।

10. **दूध पिण्ड:**

अतिबाल जड़ों या बाल के पाउडर का भैंस के दूध में मिलाकर उस दूध को आधा कर लें। इस गर्म दूध की द्रवीय अवस्था में घी, शर्करा, दालचीनी, दालचीनी पत्तियों और इलायची आदि को मिलाकर, इसे अच्छी तरह से मिश्रित कर लें। अब इस जमे हुए दूध से पिण्ड तैयार कर सकते हैं। इन दूध पिण्डों का स्वाद अमृत के समान होता है।

11. ***इडली:***

उड़द दाल को अच्छी तरह से धोकर उसको पीस लें और इसमें दही की सतह पर पाये जाने वाले स्वच्छ पानी को मिला दें। इसमें हींग, जीरा, धनिया और काली मिर्च मिला दें। पीसी हुई लेई से इडलियां तैयार करे जो कि काफी स्वादिष्ट होगी।

12. ***लड्डू* (मिठाई पिण्ड):**

गर्म दूध में दही मिलाकर और उसको कुछ समय के लिए रख दें, जिससे की वो दही में परिवर्तित हो जाये। दही को हिलाते हुए उसमें गर्म घी अच्छी तरह से मिश्रित करें। उसमें चावल का आटा (हाथ से पीसा हुआ भूरे चावल का आटा) मिलाकर अच्छी तरह से पकायें। इससे साफ कपड़े पर *सेवीज* तैयार करें। शर्करा पाक (चाशनी) और आसंजक के रुप में दूध का उपयोग करते हुए *सेवीज* से पिण्डों को तैयार करें। इसको *लड्डू* कहते हैं।

[*सेविज* सेवई के समान ही होता है, जहां पर दलिया या रबड़ी (या एक मोटा दलिया) को छेददार (सछिद्र) मशीन द्वारा दबाते है। *पक*–शर्करा घोल को गर्म करने से गाढ़ी चाशनी प्राप्त होती है।]

13. गोलमटोल *सेविज* (चावल आटे की, जिसको घी में पकाते है जैसा कि श्लोक 12 में) में बेर फल या इमली जड़ों का रस मिश्रित करें। शर्करा पाक (चाशनी) को आसंजक की तरह उपयोग करते हुए पिण्डों का निर्माण करें। इसको भी *लड्डू* कहते हैं।

14. गोलमटोल *सेविज* (जैसा कि श्लोक 12 और 13 में) से टिकिया (मीठी रोटी) तैयार करें। टिकियाओं को कूटकर और उसका अच्छा पाउडर बना लें। इस पाउडर में 20 प्रतिशत (वजन द्वारा ?) खजूर या बेल फलों का रस या अंगूर को मिलाकर, इसमें *पक* को मिश्रित करते हुए श्रेष्ठ लोई बना लें। लोई में केसर, दालचीनी, दालचीनी पत्तियों और खाद्य योग्य कपूर के पाउडरों आदि को मिला दें। इस लोई से निर्मित किये गये पिण्डों को *खंड लड्डूज* कहते हैं।

15. लोई (चावल या गेहूं) में गर्म घी मिलायें तथा पत्थर की ओखली में कूटते हुए अच्छी तरह से मिश्रित कर लें (यह एक कारीगर का कार्य है)। इस लोई से आमिष (मांस/गोश्त) के आकार जैसा पिण्ड या टिकिया बनाकर और उसको सूखा लें। इन पिण्डों को चने (आटा?) के निषेचन में भिगो दें और अपनी मन पसंद का पकवान बनायें। यह पकवान शरीर को मांस के समान मजबूती प्रदान करेगा।

16. भूने हुए चने के पाउडर की लोई से जब मछली के आकार की टिकिया बनाये या पीसे हुए उड़द की लेई को गर्म सरसों तेल में तल लें, यह टिकिया पकी हुयी मछली के समान पौष्टिक होती है।

17. कासमर्द की पत्तियों को चावल की लेई में तीन दिन के लिए भिगो दें। इसके स्वच्छ पानी को बाहर निकालकर उसमें जौ, तिल और उड़द पीस लें। इस दलिए में हींग और हल्दी के पाउडरों को मिश्रित कर लें। इस दलिए से *सेंडिज* बनाये।

[*सेंडिज* एक विशिष्ट प्रकार का मसाला होता है जो धान्यों या दालों के आटे से तैयार किया जाता है। इसको सूर्य की रोशनी में सूखाकर, उपयोग से पूर्व तेल या घी में तला जाता है। यह पुराने मैसूर राज्य, तमिलनाडु और भारत के अन्य भागों के लिए एक प्रकार का घरेलू पकवान है। इसको सामान्यतः दैनिक उपयोग के लिए ग्रीष्म ऋतु में तैयार किया जाता है और वर्षा ऋतु में इसका उपयोग किया जाता है।]

18. *कम्बोजी* पत्तियों के छोटे काटे हुए टुकड़ों को नमक और नींबू रस से उत्तेजित करे (तीव्र करना)। गुड़हल को छाछ (मट्ठा) से उत्तेजित करें। इन दोनों द्रव्यों को पीसकर, आपस में मिश्रित कर लें। इसका हल्का मूंगिया रंग होता है और स्वादिष्ट (सुगंधित/खुशबूदार) होगा।

19. *मत्सयक्षी* की जड़ों के छोटे टुकड़ों को अल्प नींबू रस के साथ, खाद्य केले पादप के आभासीतनों के कोमल मर्म (हृदय) को नींबू के साथ मिश्रित कर, इस मिश्रण को अच्छी तरह पका लें। इसमें आवश्यकतानुसार मसाले मिला लें। परिणामी मृदु और स्वादिष्ट वल्य (पकी हुयी सब्जी – केला आभासीतना) होगा।

20. पीपल के तनों को छाछ (मट्ठा) में भिगोकर अच्छी तरह से मिश्रित कर लें। इसमें कोमल बेल फल और नमक (लवण) को मिला दें। इसमें पानी, दूध, आंवला, आम और नमक को मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रित कर लें। अन्तिम उत्पाद में महक (सुगंध) सुरक्षित रहेगी और यह स्वादिष्ट और मृदु होगा।

21. *करवेल्ला* पत्तियां, इमली तना, अरण्डी तना और *पलाश* फूलों को नींबू पानी में अलग–अलग पकायें। इन पत्तियों और फूलों को स्वच्छ (साफ) पानी से अच्छी तरह धोयें। कोई भी विशिष्ट पकवान इन पत्तियों और फूलों से बनाये जा सकते है।

22. सेम की पत्तियां या अंकुरों को हल्दी पाउडर के क्वाथ से धोयें। धोयी हुयी पत्तियों या अंकुरों और मरिषा की जड़ों को पकायें। पकी हुयी सब्जी को पत्थर के खरल में पीसकर उसकी लेई में आवश्यकतानुसार मसाले मिला दें। अन्तिम उपक्रम का स्वाद कासमर्द पत्तियों के जैसा होगा।

23. **विषाक्तता को दूर करना:**

इण्डियन बीच के बीज और जांबू को मेषश्रृंगी [कन्नड़ में कदसिजे भी कहते है।] की जड़ों के साथ नींबू पानी में पकायें। पके हुए बीजों को साफ पानी से धोने के पश्चात् ये अपनी विषाक्तता को खो देते हैं। इन विषाक्त रहित बीजों से निर्मित *थोव्वे* (चटनी जैसी) स्वादिष्ट होगी।

24. **कड़वाहट दूर करने की विधिः**

पके हुए नागकेशर की टहनियों और बीजों को करेले की जड़ों के साथ मिलाकर ताजा नींबू पानी में भिगोयें। बाद में टहनियों को पानी से धो लें। पके हुए नागकेशर तने को किसी भी प्रकार का सूप, *सांभर* बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। नागकेशर के उपचारित बीजों के पाउडर द्वारा *सेंडिज* बनाया जा सकता है, जो कि बहुत स्वादिष्ट होगा।

25. *बकुल* की जड़ों, गुंजा, सहिजन या तुलसी के साथ नीम की पत्तियों को पकाने पर, नीम की पत्तियों की कड़वाहट दूर हो जाती है।

26. *निर्गुण्डी* की टहनियों को हल्दी पाउडर, कपास की जड़ों और ताजा नींबू के साथ उबालकर, पानी से धोना चाहिए। कडुवाहट दूर किये गये अंकुरों से किसी भी प्रकार का *सांभर* बनाने पर वह बहुत स्वादिष्ट होगा।

27. **विपर्याय शाकों या हर्बल उत्पादों से कड़वाहट इस प्रकार से दूर करेः**

खदिरावल्लरी की पत्तियों के लिए, यह श्लेष्मतक का रेशा है। पूर्ण पादप और गुलांचा की पत्तियों के लिए, यह सिरिश की पत्तियां है। वज्रद्रमा जड़ों के लिए, यह सेम की पत्तियां है। *लधुलोनिक* पत्तियों के लिए, यह नमक (लवण) है। लहसुन और प्याज के लिए, यह सेम की पत्तियां है। *शतावरी* के अपरिपक्व फलों के लिए, यह बेर की पत्तियां है। सूरण प्रकन्दों के लिए, यह पान की पत्तियां है। घीकुंवार (ऐलो) रस के लिए वज्रद्रमा की जली हुई राख। आंकड़ा के लिए यह तिल है। कोमल बेर फल के लिए, यह चावल की लेई (गूदा) है। नमक (लवण) के लिए, यह तुलसी की पत्तियां है। जब इन विपर्याय शाकों को इनके साथ पकाया जाता है, तो इनकी कडुवाहट खत्म हो जाती है।

28. जब सूरण प्रकन्दों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर, कुछ समय के लिए चावल की लेई के साथ भिगोते हैं और इमली की टहनियों के साथ उबालते हैं तो इससे उत्पन्न होने वाली खुजली नहीं होती है।

[सामान्यतया इस सब्जी से होने वाली खुजलाहट को दूर करने के लिए इसको इमली पानी या छाछ (मट्ठा) के साथ पकाते हैं।]

29. कीटमारी पादप की जली हुयी राख को पानी के साथ भिगोकर पदमा प्रकन्दों को उसमें पकायें। पके हुए पदमा प्रकन्दों को निकाल लें और साफ पानी से धोयें। बाद में घी के साथ पकायें। पदमा प्रकन्दों की कडुवाहट दूर हो जाती है।

30. बिम्बी (कुंदरु) के अपरिष्कृत (कच्चा) फलों को नींबू पानी के साथ पकाने से इसकी कडुवाहट दूर हो जाती है। कड़वे नुकीले कद्दूवर्गीय फलों की कड़वाहट को दूर करने के लिए उनके पीसे हुए टुकड़ों को कोकिलक्षा की पत्तियों, अरण्डी और व्याघ्रनाखी आदि को पानी के साथ उबालना चाहिए।

31. कुचले हुए धतूरे को एक दिन के लिए चूने के पानी में भिगो दें। दूसरे दिन इसको साफ पानी से धोयें। साफ कुचले हुए धतूरे को गुंजा की पत्तियों, कारवीर (सफेद) और पदमा पादप के साथ चूने (नींबू) पानी में उबालें। इस धतूरे को घी के साथ भूनें। इस धतूरे से बनाया गया कोई भी व्यंजन बहुत स्वादिष्ट होगा।

32. आम और दूसरे अपरिपक्व (कच्चे) फलों की गोली (गुटिका) को घी में परिरक्षित किया जा सकता है। पके हुए आमों को कई दिनों तक परिरक्षित किया जा सकता है। आम के रंग और स्वाद को बनाये रखने के लिए उसे द्रवीय गुड़ (गन्ने से प्राप्त) या शहद में परिरक्षित करते है।

33. आम के कटे हुए टुकड़ों को गुड़ (गन्ने से प्राप्त) और मिर्च के मिश्रण का आलेप लगा देते हैं। जब इसे सूर्य की रोशनी में रखते हैं, तो उससे रस टपकने लगता है। उसी तरह से, आम फलों से भी रस टपकता जब उसके गूदे पर चट्टानी नमक का आलेप लगाते है और उसको सूर्य की रोशनी में रखते हैं।

34. बिजौरा फल को दो अर्ध भागों में बराबर काटकर और उसके गूदे पर बोरेक्स और काठकोयला पाउडर, जो कि अल्पायुषी को जलाने पर प्राप्त होता है, का आलेप लगाने के बाद सूर्य की रोशनी में रखेगें तो उससे रस टपकता है।

35. कटहल का खाद्य भाग, *नयीनरेल* की टहनी, कपूर और तेल के मिश्रण को सूर्य की रोशनी में रखने से कटहल रस में परिवर्तित हो जाता है।

36. इमली फूल, *चित्रक* जड़ें, काली मिर्च, कोमल केला और दूर्वा (दूब) की कोमल पत्तियां या जांबू की पत्तियों के पाउडरों की लेई का केले के फलों पर आलेप कर दें। जब केले के फलों को सूर्य की रोशनी में रखते हैं तो केले का फल उसके रस में परिवर्तित हो जाता है।

37. जांबू फल को गन्ने के रस का आलेप करने से और उसको सूर्य की रोशनी में रखने से उससे रस टपकता है।

38. बोरेक्स, कपूर, धतूरा बीज और साधारण चमेली की पत्तियों के पाउडरों के मिश्रण का जामरुल पर आलेप लगाकर सूर्य की रोशनी में रखने से उसका रस टपकता है।

39. मिलोत्पल प्रकन्दों की पीसी हुई लेई में 20 प्रतिशत गुड़ (गन्ने से प्राप्त) से शर्करा प्राप्त होती है।

40. गर्म दुर्ललित या खराब (विकृतगंधी) घी को उबलते हुए दूध में मिलायें और उसमें दही मिलाकर उसको जमने दें। इस दही से मक्खन निकालकर उसको घी में परिवर्तित करें। यह घी शुद्ध (कोई दुर्गंध नहीं) होता है। विकल्पतः दुर्ललित या खराब (विकृतगंधी) घी में शतपुष्प की पत्तियों को मिलाकर गर्म करें। यह घी शुद्ध (निर्गन्धीकृत) हो जाता है और उसकी खुशबू कस्तूरी जैसी होगी।

41. तेल, दही, मट्ठा (छाछ) और ताजा घी को बराबर मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें, उसमें धनिये बीज के पाउडर को मिला दें और उस मिश्रण को गर्म कर लें। इससे बहुत अच्छी (उत्तम) गुणवत्ता वाला घी प्राप्त होता है।

    [क्या यह एक कार्बनिक घी या हर्बल घी है।]

42. कपिटाह गूदा और तिल तेल के मिश्रण को गर्म करें। इसमें बराबर मात्रा में घी मिलाकर गर्म करें। यह अच्छी (उत्तम) गुणवत्ता वाला घी होता है।

43. **अच्छी गुणवत्ता वाला मक्खनः**

    दूध की जितनी मात्रा है, उसको गर्म करके उसका आधा कर लें और उसमें *अपामार्ग* या महाबला की जड़ों का पाउडर मिला दें। इस दूध को दही जमने के लिए रख देना चाहिए, इस दही से मक्खन निकाल लें, जो कि उत्तम गुणवत्ता वाला होता है।

44. दूध में कर्नीकर के फूलों या शुद्ध तिल तेल को मिलाकर, गर्म कर लें। इस दूध का दही जमायें। इस दही से मक्खन निकालें। जब इस मक्खन को गर्म करेगें तो बढ़ी हुई मात्रा में घी प्राप्त होगा।

45. दूध में चना और अदरक का पाउडर मिलाकर, उस दूध को बर्तन में गर्म करें। इस पात्र को ठण्डे पानी में रख दें। यह दूध ठोस अवस्था में परिवर्तित हो जायेगा।

46. पीसे हुए नारियल को पिप्पली के निषेचन में भिगोयें, बाद में पूर्ण मिश्रण को पीस लें। इससे निचोड़े गये द्रव्य का स्वाद दूध के जैसा होगा।

47. कपिटाह के गूदे को 21 दिन के लिए दूध में भिगो दें। गूदे को छाया में सूखा लें। इस गूदे में गन्ने का रस मिला दें, इस रस का स्वाद दूध जैसा होगा।

48. **आम और चम्पक का दही:**

साफ पात्र के भीतरी भाग पर आम रस का आलेप कर दें। इस बर्तन में गर्म दूध डालें। दूध दही में परिवर्तित हो जाता है, जिसमें आम की खुशबू होगी। इसी प्रकार से *चित्रक* की जड़ों की पीसी हुई लेई को पात्र के भीतरी भाग पर आलेप कर दें और उसमें गर्म दूध डाल दें। यह दूध दही में परिवर्तित हो जाता है तथा इस दूध में चम्पक फूल की खुशबू आयेगी।

49. बर्तन के भीतरी भाग में ताजा हरे आंवले के रस में या कपिटाह के गूदे का आलेप कर दें। फिर उस बर्तन में गर्म दूध डाल दें, इससे जो दही जमता है वो काफी गाढ़ा (घना) होता है।

50. बांस पराकाष्ठा के खोखलेपन को गर्म दूध से भरकर, उसको कसकर बंद कर दें। इस बंद किये हुए पराकाष्ठा को बदबूदार कीचड़ में तीन दिन के लिए छिपा दें। पराकाष्ठा में दही जम जायेगा और उसका आकार भी पराकाष्ठा जैसा ही होगा।

51. **ताजा दही तैयार करना:**

गाढ़े दही में कपिटाह के गूदे का रस हाथों से 21 बार निचोड़ना चाहिए। गूदे पर अधिक भार डालना चाहिए और छाया में सूखा लें (या सूर्य में)। इस सूखे हुए गूदे या उसके पाउडर को नए पात्र में इकट्ठा कर लें और इस दही पाउडर का दैनिक उपयोग के लिए काम में लें। इसको पानी में मिलाकर उपयोग करें और उसका स्वाद दही जैसा होता है।

52. गर्म दूध में पदमा पाउडर (या केसर) को मिलाकर उसको दही जमने के लिए रख दें। इस दही से दबाव डालकर रस निकाल लें। इसका स्वाद आम जैसा होगा और वो बहुत स्वादिष्ट होगा।

53. बिजौरा फल के रस में कालीमिर्च, जीरा, शर्करा और सौंठ के पाउडरों को मिला दें। इस मिश्रण में आनुपातिक दही मिला दें और उसको रख दें। इसके रस में हींग, नागकेशर फूल (या कलियां) लौंग और दालचीनी आदि मिला दें। इस रस को गुड़ (गन्ने से प्राप्त) के साथ धूमित करे। यह रस छाछ (मट्ठा) के समान स्वादिष्ट होता है।

54. ***सिखरिनी:***

दही में आनुपातिक दालचीनी, सौंठ, कालीमिर्च, चट्टानी नमक, गुड़ (गन्ने से प्राप्त), जायफल, वनहरिद्रा और नागकेशर फूलों के पाउडरों आदि को मिलायें। इस दही को आंवला, लाख, शहद और गन्ने के रस के साथ धूमित करें। बाद में इसमें खाद्य योग्य कपूर मिलायें। इसको *सिखरिनी* कहते हैं।

55. पीसी हुई इलायची, जीरा, सरसों, काली मिर्च, दालचीनी और धनिये बीज आदि को पानी में मिलायें। इस लेई को अच्छी तरह से हिलाते हुए, किसी भी दाल का दलिया मिला दें। दलिए को पकाये और उसमें दूसरे भूने हुए मसाले मिलाएं *(ओग्गेरेन)*। इस दलिए का सूप बहुत स्वादिष्ट होगा।

[यह एक बहुत साधारण व्यंजन है, जो पुराने मैसूर और तमिलनाडु के ज्यादातर घरों में आज भी बनाया जाता है। विशेषकर ब्राह्मणों के घरों में। कभी–कभी इसमें सब्जियां भी

मिलाते हैं। अरहर या चने से दलिया तैयार करें। जब अरहर से तैयार करते हैं तो कन्नड़ में इसे *हुली* (तमिल में *कोलाम्बू*) कहते हैं तथा जब इसे चने से तैयार करते हैं, तो कुटू (तमिल में भी) कहते हैं। इसकी कई दूसरी व्यंजन विधियां भी है। यह व्यंजन लगभग सभी समुदायों के दोपहर के भोजन/भोज में अनिवार्य होता है।]

ओग्गरेनः इसके लिए कोई भी अंग्रेजी शब्द नहीं है। यह एक प्रकार का मसाला है। जिसको उबलते हुए घी और तेल में डालते है और उसके बाद सब्जी में मिलाते हैं तथा मिश्रण के साथ पकाते हैं। या दालों को नमक हल्दी और मिर्च आदि के साथ मिलाते हैं (स्त्रोतः रेव. एफ. कीटेल, कन्नड़–अंग्रेजी शब्दकोष)

56. बेर, आंवले, अनार, हल्दी और बिजौरा फलों के रसों को अलग–अलग गर्म कर लें। सभी में शर्करा या गुड़ मिलाकर सभी रसों को अलग–अलग सफेद कपड़ों से छान लें।

57. इन रसों को सफेद अगर (अगुरु), मस्त प्रकन्दों और कपूर से अलग–अलग घूमित करें। इसमें काली मिर्च, नागकेशर के फूल, दालचीनी, जायफल और इलायची के पाउडरों को मिलायें। यह एक अच्छा पेय है और इसका स्वाद अमृत के समान होता है।

अध्याय 9
जानवरों का उपचार

यहां पर जानवरों के आयुर्वेदिक उपचारों के 58 श्लोकों को सम्मिलित किया गया है।

मवेशियों का उपचारः

ब्याने के दौरान की समस्याएंः

1. बकरी का घी या भेड़ का दूध बांझ गाय के भग में प्रवाहित करें। साथ ही कुचली हुई खस–खस की जड़ों का रस भी भग में प्रवाहित करें। यह बांझ गाय के भ्रूण निर्माण में मदद करता है।
2. *बाकुची,* तिल, सेम और गाछ–मूंगा के पाउडरों के मिश्रण को गाय या एक भैंस को खिलाया जाये तो इनके गर्भाशय में अटके हुए मृत बछड़े को बाहर निकालने में यह मिश्रण मदद करता है।
3. गाय के प्रसव हो जाने के पश्चात् यदि गर्भ के बाह्य (बाहर की) झिल्ली बाहर नहीं निकलती तो गाछ–मूंगा, मूंग, सेम, *बाकुची* बीज, कंटकारी बीज, तिल की खली और लौकी के पूर्ण पादप (जड़ों सहित) के पाउडरों के मिश्रण को दूध या औषध जल में पीस लें और गाय को खिलायें। यह गर्भ की बाह्य झिल्ली को मुक्त करने में मदद करता है।
4. भैंस, घोड़े, बकरी और दूसरे जानवरों के गले में सेमल पेड़ के नीचे की तरफ उगी हुई गुंजा के बीज या दूर्वा (दूब) को बांधने से यह गर्भ की बाह्य झिल्ली को शीघ्रता से मुक्त करने में मदद करता है।
5. प्रसव के तुरन्त बाद यदि गाय अपनी गर्भ के बाहर की झिल्ली को खा जाती है तों उसको गुड़ (गन्ने से प्राप्त) के साथ *सुसालु* खिलाना चाहिये। विकल्पतः पीसे हुए गाछ–मूंगा को दूध के साथ देना चाहिये। यह गाय के विकार (रोग) दूर करता है।

   [*सुसालु या सुसल* एक प्रकार का विशिष्ट व्यंजन है, इसको तिल के पाउडर को वनकदली या कोई दूसरी पत्ती में अच्छी तरह से मोड़कर भाप देकर पकाकर तैयार किया जाता है। इसको बाद में चावल आटा और गुड़ (गन्ने से प्राप्त) के साथ मिलाकर खिलाया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में *सुसालु* बनाने का अलग–अलग तरीका है।]
6. यदि गाय के गर्भकाल समय से पूर्व बछड़ा गर्भाशय के बाहर आ जाता है तो उसे अम्लीय दलिये से साफ करना चाहिए और बाद में मकोई फल के रस या अपामार्ग की जड़ों का आलेप करना चाहिए और मुट्ठी में भरकर धकेलना (आगे बढ़ाना) चाहिये। यह बछड़े को पुनः गाय के गर्भाशय में निश्चित स्थान पर पहुंचाने की शक्ति देगा।
7. जब गाय अपने बछड़े को अपने पास नहीं आने देती है, तो मस्त प्रकन्दों, नमक, पीसा हुआ जीरा आदि को छाछ में मिलाकर बछड़े का विलेपन करें, और गाय के सामने रख दें। गाय अपने बछड़े को चाटेगी और मां जैसा प्यार देगी।
8. उग्र गाय को आज्ञाकारी बनाने के लिए पीसी हुयी सुपारी की लकड़ी *को* बकरी के मूत्र में मिलाकर गाय के आंखों पर आलेप लगाते हैं। विकल्पतः, पीसी हुई काली सरसों, बच और डाबी के बीजों को बकरी मूत्र के साथ पत्थर के खरल में पीस ले, उसका गाय की आंखों पर आलेप लगा दें। गाय पहले से मृदु हो जायेगी।

9. अग्निमंथा (अरनी) की जड़ें, *गरभड़ा, कंटकारी* और *अकुंद* (मंदरा) में नमक मिलाकर छाछ के साथ पत्थर के खरल में पीस ले। इस लेई से जंगली गाय के शरीर को विलेपित करने से जंगली गाय दूध देने लगेगी।

मुंह के रोगः

10. गायों के मुंह को गर्म पानी से धोयें। मदार की पत्तियों को सरसों के तेल के साथ पीसकर उसमें तिल का तेल मिला दें। गायों के मुंह पर इसका आलेप लगाने से मुंह के रोगों से मुक्ति मिल जाती है।

11. तेजी (शीघ्र) से सांस का आना, लाल रंग का मुंह और थाली जैसा मुंह का होना, मुंह के रोगों के लक्षण हैं। इसके उपचार के लिए कौवें के पंखों से गाय के मुंह को पोंछना चाहिये और गर्म पानी से धोना चाहिये। अदरक, पिप्पली और कालीमिर्च की लेई का गायों के मुंह पर आलेप लगायें।

खांसी (कास):

12. नीली पत्तियों की पीसी हुई लेई को दलिये में मिलाकर नस्य (नसवार) करने से या गाय की छाछ में गाछ–मूंगा की पत्तियों की पीसी हुयी लेई या धुले हुए चावलों को नमक के साथ मिश्रित करें। इस उपचार से गाय की खांसी ठीक हो जाती है।

एल्ब्यूगोः

13. मदार पादप के रस को जलाकर एक छोटी लकड़ी या बांस कवच में भर लें। इस राख को मक्खन क्षारक के साथ मिलाकर विलेप (मरहम) तैयार कर लें और उसका आंखों पर आलेप लगायें। विकल्पतः, गुंजा जड़ों की पीसी हुयी लेई का आंखों पर आलेप लगायें। यह एल्ब्यूगो की चिकित्सा है।

[एल्ब्यूगो एक प्रकार की आंख की वेदना (दुःख) है जिसमें परिणामतः आंख का कॉर्निया (स्वच्छमंडल) सफेद फूली (फुल्ली) में परिवर्तित हो जाता है।]

सूजन (शोथ):

14. भूम्यमलकि के पूर्ण पादप, नमक, मज्जा रस (नेनवुली?), *पटलगरुड़* की जड़ें, कुंदरु (बिम्बा फल) और द्रव (रस) में ऊदबिलाव के मरने के स्थान की मिट्टी आदि को मिलाकर औषध जल में पीस लें। इस लेई का उपयोग सूजन (शोथ) पर लगाने से रोग मुक्त हो जाता है।

फूला हुआ (सूजा हुआ/बढ़ा हुआ/उभरा हुआ) पेटः

15. यदि गायों का पेट फूल जाता है, तो निम्नलिखित का प्रयोग करे–

मरिषा का पूर्ण पादप (सब्जियों के लिए), चट्टानी नमक, अपरिपक्व बेल फल, *निर्गुण्डी* पत्तियां, बरगद पेड़ की कलियां, धतुरे की जड़ें, पदमा प्रकन्दों और पोटकी पूर्ण पादप को पानी के साथ पत्थर की खरल में पीस लें। यह उपचार पेट (उदर) की सूजन को दूर करता है।

पेट दर्दः

16. गैर–चराई, थकावट (थकान), सिसकारी (फुफकार) और पैरों को लगातार खूब मारना आदि गाय के पेट दर्द के लक्षण है। अदरक, लहसुन, *गजपिप्पली*, काली मिर्च की लता,

हींग, वनहरिद्रा, गुड़ (गन्ने से प्राप्त), नमक, हल्दी, बच और यावनी को पानी में पीसकर गाय को दे। इस उपचार से गाय को पेट दर्द से आराम मिलता है।

बुखार (ज्वर):

17. कानों का लटकना (झुकना), हिचकी, कांपना (थरथराना), लेटना और उच्च तापमान आदि बुखार के लक्षण होते हैं। कुचले हुए *वनमल्लिका* पादप का रस दें। विकल्पतः, *निर्गुण्डी* और नीम पत्तियों का क्वाथ दें। कुलथी और *वरहिकंद* की जड़ों का गर्म क्वाथ अच्छी तरह से हिलाकर दें। इससे गाय का बुखार ठीक हो जाता है।

18. निम्न जाति के लोगों की स्माधि स्थल से राख को लेकर गाय पर लीप दें या चैन वाइपर की जली हुयी राख को गाय के शरीर पर लीपने से बुखार ठीक हो जाता है।

तन्त्रिकीय (स्नायविक / स्नायुसंबंधी) विकार (रोग):

19. सनसनाना (आह करना या सरसराना), सिसकारी (फुफकार), कानों का लटकना या झुकना और बेहोशी (मुर्च्छा) आदि लक्षण तन्त्रिकीय विकार के होते हैं। इसके उपचार के लिए पीसे हुए चट्टानी नमक, चावल आटा, काली मिर्च, शोरा या खार (स्वाभाविक जलमय सोडियम कार्बोनेट) अदरक आदि की लेई को चावल के दलिये के साथ गाय को दें।

20. फूला हुआ आमाशय, मुंह से नींबू की गंध और वलित जीभ आदि स्नायविक विकार के लक्षण हैं। इसके उपचार के लिए वलित जीभ पर हल्दी और नमक के मिश्रण को लीपने से वलित जीभ बाहर निकल जाती है।

21. कानों का लटकना, शरीर में कठोरता, अधखुली आंखों से देखना और आंखों का कुम्हलाना आदि को उपचारित करने के लिए रेशम के धागों की जली हुयी राख को आंखों पर लगाते हैं। विकल्पतः, नीम फलों (निम्बोली) को कान में डालते हैं। दूसरे ढंग से गाय के अंदर कान से एड़ी तक के भाग में दागते है।

ऐंठन रोगः

22. यदि गाय ऐंठन के समय बांयी ओर गिरती है, इससे दायीं नासिका छिद्र (नासाद्वर) की नस ढ़ीली पड़ जाती है। यदि गाय ऐंठन के समय दांयी ओर गिरती है, इससे बायीं नासिका छिद्र (नासाद्वर) की नस ढ़ीली पड़ जाती है। यह ऐंठन रोग का उपचार है।

गैर–जुगाली – *कोगाइल* रोगः

23. पीसी हुयी अदरक, काली मिर्च और पिप्पली आदि की लेई को आंखों पर लेपने से, जुगाली निकलती है और आराम मिलता है। इसी प्रकार से रुई के बीजों के कुटे हुए आटे को घी के साथ मिश्रित कर मरहम बना लें और उसे गाय की आंखों पर लेप दें। इससे गाय का *कोगाइल* रोग ठीक हो जाता है।

क्षय रोगः

24. गायों का झुकना, आंखों की निष्क्रियता, आंखों से आंसू टपकना और शरीर में अकड़न आदि क्षय रोग के लक्षण हैं। इसका उपचार निम्नलिखित है–

चावल के पानी में *पटलगरुड़, गिरीकर्निका* और कंठारी की जड़ों को पीसकर गाय को दें। विकल्पतः, जानवर की गर्दन पर लौकी बांधना चाहिये।

मसूढ़ा और खुर का फोड़ा:

25. कुचली हुयी हल्दी, *सुरस,* धतुरे की जड़ें, मदार और रसना की जड़ें आदि को गाय के दूध के मक्खन में पकायें। रोगी मसूढ़ों पर इस मरहम का लेप लगाकर उपचारित करें। खुर के फोड़ें को काटकर और उस पर केतकी की पत्तियों और चट्टानी नमक के मिश्रण को मट्ठे में पीसकर लगायें। उपचारित फोड़ें की सेंकाई (सेंक) करें। इससे खुर का फोड़ा ठीक हो जाता है।

नसों और शिराओं आदि पर फोड़ा:

26. *कुरतिजे* की जड़ें, बादाम, लताकरंज, अर्क का दूध, काली मिर्च, वनहरिद्रा, अदरक और इन्द्रवरुणी को तिल तेल में पकायें और उसको फोड़ें पर लगायें। विकल्पतः, इमली रस को उबालकर इसके रस को पकायें। यह रस इस तरह से फोड़ों को ठीक करता है और बैलों में होने वाले सहयोगी दर्दों को कम करता है।

सीगों के अन्दर के कीड़ें:

27. यदि मवेशियों के सींगों पर कीड़ें आक्रमण करते हैं तो कुत्ते की खोपड़ी को मवेशियों की गर्दन पर बांधना चाहिये। विकल्पतः, *उतकंट* की जड़ों को गूदे (चावल ?) के साथ पीसकर और लेई को दोनों सीगों के चारों ओर लगा दें। इससे कीड़ें खत्म हो जाते है और कोई क्षति होती है तो ठीक हो जाती है।

कंधों पर सूजन (शोथ):

28. अर्क की जली हुयी राख, *भृंगराज* का रस और नमक को मिलाकर कंधें पर रखें (इस मिश्रण का एक थैला)। विकल्पतः, लज्जालू, हल्दी, कूटसल्माली की कली, गुग्गल, सोमलता, अपामार्ग और सुपारी आदि को पीसकर इन सभी को तिल तेल में पकायें। इस मरहम को कंधे पर लगाने से सूजन (शोथ) ठीक हो जाती है।

कमजोरी:

29. गैर–चराई, गैर–पेयजल, गैर–जुगाली और उनींद आदि मवेशियों में कमजोरी के लक्षण होते हैं। नीम की पत्तियों (या छाल) और अदरक के क्वाथ को देने से कमजोरी दूर हो जाती है।

सभी प्रकार के रोगों में:

30. पिसी हुयी *द्रोणपुष्पी* की पत्तियों, *निर्गुण्डी,* लौकी, अर्क, सरसों, नागवल्ली (तम्बूला) और नींबू आदि की लेई को दलिये में सीसम तेल के साथ चलायें। इस औषधि को जबानी देने से मवेशियों के 96 प्रकार के रोग ठीक होते हैं।

[सामान्यतः मवेशियों के उपचार में, एक बांस नली (ट्यूब), जिसको कन्नड़ में *गोट्टा* या *कोट्टा* कहते हैं, का उपयोग जबानी औषधि के देने के लिए करते हैं। जहां कहीं भी इस तरह का हवाला दिया गया है, बांस नली का उपयोग मवेशियों को जबानी औषधि देने के लिए किया जाता है।]

घोड़ों का उपचार:

31. घोड़ों में विकार त्रिदोष (द्रव या तरल पदार्थ) जैसे– *वात, पित्त* और *कफ* के विकार के कारण होता है। इनका संतुलन स्वास्थ्य की दशा को निर्धारित करता है। *वात* विकारों से

घोड़ों में पाचक दहन बढ़ जाता है। *पित्त* विकार के कारण शरीर का तापमान बढ़ जाता है और *कफ* के कारण पाचन शक्ति कम हो जाती है। जब सभी त्रिदोष संतुलित अवस्था के अंदर होते है तो घोड़े स्वस्थ (तंदुरुस्त या नीरोग) होते हैं।

पाचन शक्तिः

32. निम्नलिखित निर्मित औषधि को सभी नस्लों के घोड़ों को देने से घोड़ों की सभी नस्लों को रोग मुक्त किया जा सकता है। निम्नलिखित अवयवों को पत्थर खरल में मट्ठे के साथ पीसकर लेई बना लें।

    बादाम पेड़ की जड़ें, *वसक* पत्तियों, *कटुक* जड़ें, इन्द्रवरुणी, *निर्गुण्डी* पत्तियां, ब्राह्मी पूर्ण पादप, नीम पत्तियां, हींग, विडंग, अर्क पत्तियां, *गिरीकर्निका* जड़ें, वनहरिद्रा, *चित्रक* जड़ें और पटोल की जड़ें आदि।

    इस लेई को जबानी देने से घोड़ों के सभी प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं।

33. यदि घोड़ों का तापमान *पित्त* के कारण बढ़ जाता है तो सुबह के समय द्रवीय भोजन देना चाहिए, नमक और दूसरी औषधि दोपहर में और कुलथी का क्वाथ और इसके उपक्रम शाम को देने चाहिए।

34. राख, *रसअंजन* [एक उपक्रम जिसमें दारुहरिद्रा की जड़ों (या जड़ों का पाउडर) के क्वाथ को दूध के साथ मिश्रित कर और उसके निर्जलीकरण द्वारा काजल (सुरमा) तैयार किया जाता है।] हल्दी, पिप्पली, चट्टानी नमक, रसना की जड़ें, यश्टिमधु और अदरक को पत्थर खरल में पीसकर बकरी के दूध में मिला दें। इस लेई (या छोटी टिकिया) को घोड़े की नासिका छिद्र में रखने से *पित्त* और उससे सम्बन्धित विकार ठीक हो जाते हैं। उपरोक्त वर्णित पीसी हुयी लेई को गाय के मूत्र में मिलाकर इस मिश्रण को नासिका छिद्र में रखने से *कफ* के विकार ठीक हो जाते हैं। मिश्रण को गर्म पानी में मिलाकर उसका नासाछिद्र में विनियोग करने से *वात* विकार ठीक हो जाते हैं।

रेंट (नाक से निकलने वाला पदार्थ):

35. यदि घोड़े की नाक पानी के समान बह रही है या हल्दी समान पीली या सफेद कफ, इसको रेंट रोग कहते हैं।

36. देवदारु जड़ें, चट्टानी नमक, मस्त प्रकन्दों, जीवाश्म नमक, *विडंग,* खार (क्षार) को पीसकर अच्छी तरह हिलाते हुए तिल तेल और गो–मूत्र में मिश्रित करें। इस लेई को नासिका छिंद्र पर लगाने से रेंट रोग ठीक हो जाता है।

कफ (बलगम):

37. सिरिस, गेहूं, चिचिंढ़ा, *वसक,* सप्तपर्णी, बेल, *गम्भरी,* पाटल और एरण्डी की पत्तियों को काटकर झुण्ड में गर्म करें। इस गर्म पत्तियों के झुण्ड को बार–बार घोड़े के मुंह पर लगायें। इससे कफ (बलगम) ठीक होता है।

खांसीः

38. *कंटकारी* और ब्रहति की जडों को काटकर, नीम, *निर्गुण्डी* और *वसक* की पत्तियों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर, सुखाकर और पीसकर अच्छा पाउडर बना लें। इस मिश्रण

के पाउडर को गौ–मूत्र में मिलाकर उसको पकायें। सौंठ और *भारंगी* की जड़ के पाउडरों को इस क्वाथ में मिलायें। घोड़ों को यह क्वाथ जबानी देने से खांसी ठीक हो जाती है।

प्रचण्ड (तीक्ष्ण / तीव्र) दर्दः

39. मूर्च्छा (बेहोशी), चेहरे पर सूजन, हांफना (घड़कना), पेट (उदर) पर सूजन और आमातिसार (रक्तातिसार) आदि प्रचण्ड दर्द के लक्षण हैं। इसके उपचार के लिए पिप्पली और चट्टानी नमक के पाउडरों के मिश्रणों को नासाछिद्रों, कानों और गुदा (मल द्वार) के अन्दर और वृषण (अंड–ग्रंथि) नसों के अंदर भी रखते हैं।

40. विकल्पतः, नमक पिप्पली, वचा, सरसों, अपरिपक्व *मुल्लकरी* के फलों और सौंठ (सूखी अदरक) के पाउडरों को गाय के मट्ठे, दलिया और सीसम (तिल) तेल के साथ मिश्रित कर घोड़ों के नासाछिद्रों में रखते हैं।

41. चट्टानी नमक, जीवाश्म नमक, काला नमक, *सोचल* नमक और साधारण नमक (पांचों नमक – *पंचलवण*), हींग, पिप्पली, टिन्दुक के अपरिपक्व फल, धनिया, दुर्लभ, *अतीस* जड़ें, *चित्रक* जड़ें और यावनी के परिष्कृत पाउडरों को बराबर मात्रा में मिश्रित कर औषध जल में मिलाकर जबानी देने से तीक्ष्ण दर्द का उपचार (चिकित्सा) होता है।

जलोदर या दर्दः

42. घोड़ी के गर्भकाल के दौरान यदि जलोदर के साथ तीक्ष्ण दर्द होता है तो *ब्राह्मी* का रस और तिल के तेल के मिश्रण को घोड़ी को जबानी देते हैं। यह दर्द की चिकित्सा या उपचार है।

कीड़ा उत्पीड़न

43. पीसी हुयी सेम की जड़ों की लेई और घी के मिश्रण को घोड़े को जबानी देना चाहिये। पीसी हुयी परिभाद्र की पत्तियों की लेई और तिल तेल या घी को भी दे सकते हैं। यह कीड़ा उत्पीड़न की चिकित्सा या उपचार है।

अतिसार (दस्त / प्रवाहिका):

44. दही पानी (दही की ऊपरी सतह पर स्वच्छ पानी, जब गर्म दूध एक मिट्टी के बर्तन में स्कंदित / जम जाता है) में पीसी हुयी *कुटज* की लेई और यस्टिमधु के प्रलंबन (निलंबन) में अतीस जड़ें और अदरक के पाउडरों को मिलायें। अन्तिम प्रतिपादन को जबानी दें। यह अतिसार (दस्त / प्रवाहिका) की दवा है।

मूत्र और खूनी मूत्र का अवरोधन

45. बेर फलों के गूदे की छीलन का रस दें। विकल्पतः, बेल की जड़ों को पानी के साथ पत्थर पट्टी पर पीसकर रस तैयार करें। यह घोड़ों को दें। यह घोड़ों में मूत्र के अवरोधन से छुटकारा दिलाता है। *वसक* की पत्तियों (पत्तियों से रस निकालने के लिये इसे जलते हुये कोयले पर गर्म करते हैं) के रस को गाय के दूध और शर्करा में मिलाकर और घोड़ों को दें। यह गुजरने वाले खूनी मुत्र को रोकता है।

बुखार के लक्षण और उपचारः

46. सीधा (उर्ध्व) गिर जाना, शारीरिक आलस्य, मुंह से बदबूदार गंध, गैर–चराई, अत्यधिक तृष्णा, उनींद और हांफना (घड़कना) आदि घोड़ों में बुखार के लक्षण है।

47. बुखार के लिए उपचार इस प्रकार से हैं–

मस्त जड़ें, पिप्पली, देवदारु, खदिर (कत्था), नीम की पत्तियां, *चित्रक* जड़ें, सप्तपर्णी पेड़ की छाल, जांबूल (जांबू) पेड़ की छाल, *अश्वगंधा* की जड़ें, *भूनिम्बा* (पूर्ण पादप), जयपाल बीज, *कटुक* जड़ें, गुलंचा के पूर्ण पादप आदि के पाउडरों से क्वाथ एक बर्तन में तैयार करें और इस क्वाथ के आयतन को एक तिहाई तक कम करें। इस क्वाथ में शहद मिलाकर घोड़े को दें। विकल्पतः यदि दूसरे अवयव उपलब्ध ना हो तो नीम की पत्तियों, पिप्पली और कटुक की जड़ों को पानी और शहद के साथ हाथ से पीसकर लेई बनाकर घोड़ें को दें। इससे घोड़े में होने वाले सभी प्रकार के बुखार ठीक हो जाते हैं।

48. मूंग और उबले हुए चावल को नीम पत्तियों के क्वाथ में पकायें। पटोल जड़ों का रस, शहद और पिप्पली के पाउडर को पके हुए चावल में मिलायें। अच्छी तरह से मिश्रित कर इससे चावल के पिण्ड तैयार करें। इन पिण्ड़ों को घोड़ों को खिलाने से बुखार ठीक हो जाता है।

विभिन्न रोगः

49. गठिया और थकावट (थकान) वाले रोगों के दौरान सर्दियों में घोड़ें को पानी नहीं पीने देना चाहिए। बल्कि हरितकी पाउडर और चट्टानी नमक के मिश्रण के साथ पानी देना चाहिए। मिश्रण तैयार करने का तरीका और उसकी मात्रा इस प्रकार है–

दो सौ हरितकी फलों के पाउडर में चट्टानी नमक मिला दें। इस को आठ बराबर भागों में बांटकर, इसको प्रत्येक *यम* में एक भाग को दें, ऐसा दो दिनों तक करें (देखें अध्याय 4, श्लोक 17 *यम* के लिए, यह खुराक भोजन के साथ मिश्रित कर सकते है)। गर्मियों में यह मिश्रण गुड़ (गन्ने से निर्मित) के साथ देते हैं, खुराक की मात्रा एक समान ही होती है। यह उपचार घोड़ों के अनेक रोगों को दूर करता है। इससे *कफ* और *वात* साम्यावस्था में हो जायेगें।

50. रसना की जड़ें, *वसक* की पत्तियां, शतपुष्प, बेल पेड़ की छाल, पदमक के फल, अदरक, मस्त प्रकन्दों, *निकुम्ब* की जड़ें, दुर्लभ की जड़ें, *विडंग, अग्निमंथा* की जड़ें, अरंडी की जड़ें, *गोखरु* की जड़ें, *कंटकारी* की जड़ें और जहरीली बदरी (?) की जड़ें आदि के अच्छी तरह से पीसे हुए पाउडरों से क्वाथ तैयार करें। यह क्वाथ घोड़ों को देने से सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।

51. कीचड़ को चाटना (स्पर्श करना), उदास चेहरा, हिचकी, उनींदापन, सूजन (शोथ) और नशा (मस्ती / उन्माद) आदि में घोड़ों को ऊपर वर्णित क्वाथ से उपचारित करें (श्लोक 50 देखें)।

सूजन (शोथ):

52. निम्नलिखित अवयवों को पत्थर की खरल में पीसकर लेई बनायें–

पुल्लास की जड़ें, कोकिलक्षा का पूर्ण पादप, सहिजन की जड़ें, तुलसी की जड़ें, *निकुम्ब* की जड़ें, सूरण प्रकन्द, अदरक, चमेली, पांच लवणों जैसे– चट्टानी नमक, जीवाश्म नमक, काला नमक, *सौचल* नमक और साधारण नमक, मदार की पत्तियां, काली सरसों, हल्दी और दारुहरिद्रा का तना आदि।

इसमें चीटियों या दीमकों द्वारा निर्मित मिट्टी के ढ़ेर की कीचड़ को लेई में मिलाकर, पानी में अच्छी तरह से मिश्रित करें। इस मिश्रण को गर्म करें। इस गर्म दलिये की लेई को सूजन

पर लगाने से सभी प्रकार की सूजन ठीक हो जाती है। विकल्पतः, खार (क्षार) और घी के मिश्रण को लगाने से भी सूजन ठीक हो जाती है।

खुजली होनाः

53. वज्रद्रमा की जली हुयी राख और घी के मिश्रण को खुजली के स्थान पर लगायें। दूसरा, सृज की जली हुयी राख और तेल के मिश्रण को लगायें। इससे भी घोड़ों में होने वाली खुजली ठीक हो जाती है।

54. नमक, सिन्दूर (सीसे का रेड ऑक्साईड), हल्दी और खार (क्षार) पाउडरों को पीसकर, इसमें चट्टानी नमक, कुमारी या नीलि में से किसी एक को इस दलिये में मिलायें और इस विलेप (मरहम) को खुजली पर लगायें। इससे खुजली ठीक हो जाती है।

फोड़ाः

55. हरताल, ताजा नींबू, कर्नीकर बीज, सल्फर (गंधक), दारुहरिद्रा, पांच लवणों (पूर्व में वर्णित), अदरक, पिप्पली, काली मिर्च, हल्दी और खार (क्षार) आदि के पाउडरों को बकरी के दूध और तिल के तेल में अच्छी तरह मिश्रित कर लें। इस विलेप को लगाने से विभिन्न प्रकार के फोड़े ठीक हो जाते हैं।

खुर का फोड़ाः

56. हरताल, गुड़ (गन्ने से प्राप्त), साल (*शोरिया रोबुस्टा* ?), अपरिष्कृत सीसा, लाख और काली मिर्च आदि के पाउडरों के मिश्रणों को तिल तेल में मिलाकर विलेप (मरहम) तैयार करें। इस मरहम के उपयोग से खुर का फोड़ा ठीक हो जाता है।

हाथियों का उपचारः

57. काली मिर्च, चविका, *विडंग* बीज, *कटुक* जड़ें, *चित्रक* जड़ें, सहिजन जड़ें, काजल (घी से निर्मित), रसना जड़ें, वचा, हींग पेड़ की जड़ें, पिप्पली की जड़ें, पांच लवण, दो *अजवायन* (अम्मी और अजमुद), अजमोद, सप्तपर्णी की जड़ें, नीम की पत्तियां, हींग, अतीस जड़ें, कड़वा चिचिंडा की जड़ें, काली सरसों, सफेद जीरा, अदरक, विभीतिका काष्ठफल, आंवला काष्ठफल, जांबू पेड़ की छाल, हरितकी काष्ठफल, लताकरंज और शोरा आदि।

58. उपरोक्त सभी को बराबर मात्रा में लेकर, पाउडर बना लें और दलिये में अच्छी तरह से मिश्रित करके हाथियों को खिला दो। यह उपचार तीक्ष्ण दर्दों, तिल्ली के विकार, कीड़ा उत्पीड़न, आलसी (सुस्त), कमजोर पाचन शक्ति, भूख की कमी आदि रोगों की दवा है।

अध्याय 10
सर्पदंश ज़हर का उपचार

1. सर्पों द्वारा केंचुली उतारते समय पार–गमन, सर्पों के पीछे वृतीय चित्रों का निर्माण, शत्रुतापूर्ण सर्पों को लकड़ी से पीटने पर, भोजन पश्चात् सम्मोहित होने पर, जहर का अत्यधिक मात्रा में इकट्ठा हो जाने पर, जब सर्प खड़ा हो, नर और मादा सर्पों के सहवास के दौरान लोगों द्वारा परेशानी उत्पन्न करने पर और सर्प के दिमाग में संदेह उत्पन्न हो जाने आदि कारण सर्पदंश के है।
2. दफन भूमि, चीटिंयों या दीमकों के बिलों के कारण बना मिट्टी का ढेर, पेड़ के नीचे, बगीचों और चौराहों पर गरुड़ (ईगल) के भय से सर्प नहीं काटता है।
3. सिर, गर्दन, चेहरा, लट (गुच्छ/जलपाश), हाथ की हथेली के नीचे, मस्तक के बीच में, आंखों, गालों, पैर के तलवे में, नाक की नोक पर, नाभि, दाढ़ी, छाती (सीना), मस्तक (ललाट), सिर के पीछे, शिश्न (लिंग), बांयी छाती की नोक पर, पीछे और भौंहें आदि पर सर्पदंश हो, जो कि गरुड़ द्वारा भी सहन नहीं किया जा सकता है, उसको दूसरे द्वारा कैसे सहन किया जा सकता है ?

संदेशवाहक के लक्षण (गुण/विशेषता):

4. चिकित्स्य (सुसाध्य) लक्षण या दूसरे ढंग से भी सर्पदंश का संदेशवाहक के लक्षणों द्वारा पता लगाया जा सकता है। एक संदेशवाहक जिसके पास सर्पदंश का समाचार हो, जो कि कांप रहा हो, डर रहा हो, दुःखी हो, जो विलाप कर रहा हो, थका हुआ हो, उसका शरीर तेल से अभ्यंजित हो, जिसने लाल रंग के कपड़े पहन रखे हो, जिसने चोटी पर लाल रंग का फूल लगा रखा हो, जिसने लकड़ी पकड़ रखी हो, चमड़ा पकड़ रखा हो आदि, सभी सर्पदंश के अचिकित्स्य लक्षण के संकेत है। एक संदेशवाहक जिसने सफेद रंग के कपड़े पहन रखे हो, हंस रहा हो, एक आदमी अपशब्द बोलने वाले स्वभाव का ना हो, मीठा बोलता हो, रोगी और अच्छे स्वभाव का आदमी आदि सभी सर्पदंश के चिकित्स्य लक्षण के संकेत हैं।
5. यदि संदेशवाहक को सर्पदंश के समाचार मिलने के पश्चात् आसमान की ओर झांकता है तो यह सर्पदंश के अचिकित्स्य लक्षण है। यदि वह शरीर के किसी भाग को छूता है तो यह इस बात का संकेत है, कि सर्प ने उसके शरीर पर दांत से काटा है। रोगी किस जाति से है के बारे में, यदि संदेशवाहक अपने सिर को छूता है तो वह एक ब्राह्मण है। कंधे को छूता है तो वो एक क्षत्रिय है। जांध को छूता है, तो वह वैश्य है और अगर पैर को छूता है तो वह एक शुद्र है।
6. समाचार मिलने के समय, यदि *वैद्य* (चिकित्सक/जन्मजात चिकित्सक) रविवार, मंगलवार, शनिवार को अपनी श्वास दांयी, नासाछिद्र से छोड़ रहा हो तो वो बहुत ज्यादा अनुकूल होता है। संयुग्मन (संयोग) और खाना खाने के लिए जाते समय मिलते है तो वो भी शुभ (मांगलिक) होता है। यदि श्वास बांयी नासाछिद्र को दबाकर ऊपर या नीचे या बीच में छोड़ते हैं तो वह अनुकूल होता है। अनुपयुक्तता की ओर संकेत है, कि सभी अशुभ है।
7. यदि संदेशवाहक सामने की ओर खड़ा है या बांयी ओर तो उसकी प्रार्थना फलीभूत (सफल होना/कामयाब) होती है। यदि उस समय श्वांस बांयी नासाछिद्र से छोड़ा जा रहा है तो

यह इस बात का संकेत है कि रोगी महिला है और श्वांस दांये नासाछिद्र से छोड़ा जा रहा है तो, एक आदमी है। यदि श्वांस दोनों नासाछिद्रों से छोड़ा जा रहा है तो अशुभ परिणाम का संकेत है।

8. जीभ पर लार की अनुपस्थिति, सिर से बालों का उन्मूलन (विनाश), नाखून और दांतों का काला रंग, ठंडा निःश्वसन, पेट (उदर) पर सूजन, धंसी हुयी आंखें, सूखा गला, एक तरफ से गर्दन का झुकना और नाक ध्वनि (स्वर) आदि इस बात के संकेत है, कि रोगी को किया जा रहा उपचार अस्वीकार है।
9. वायु मंत्र (*ओम हरिम वा*) के मूल अक्षरों के पवित्र पानी का अभिषेक करते हुए रोगी पर छिड़का जाये और यदि रोगी आंखें खोलता है, तो यह रोगी के जीवित रहने का संकेत है।
10. यह एक संकेत है, कि रोगी अपने अंगों और शरीर के दूसरे भागों को दर्द और गहरी आह के पश्चात् भी हिला रहा हो। गरुड़, वायु और गगन (आकाश) जैसे– *ओम (व्यम) हम सा, (ओम) प्लवसह (ओम) प्लयवसह* के मूल अक्षरों के पवित्र पानी का अभिषेक करते हुए रोगी पर छिड़कना चाहिए।
11. उसके पश्चात्, उपरोक्त हमसा (गरुड़), वायु और गगन मंत्रों से पवित्र किए हुए ठंडे पवित्र पानी की उल्टी (कै) कर देता है, तो यह इस बात का संकेत है, कि रोगी जीवित नहीं बचेगा।

प्राथमिक विधियां (उपचार):

12. सर्वप्रथम कर्णमल (कर्णगूथ) को निकालकर और रोगी की आंखों पर उसका आलेप लगा दें। सर्पदंश वाले स्थान को काट दें और मालिश करते हुए जो भी जहरीला पदार्थ हो उसको निकाल दें। सर्पदंश के काटे हुए स्थान के ऊपर और नीचे की ओर रक्तबंध को अच्छी तरह से बांधकर उस स्थान से रक्त को निकाल दें। काटे (दंश) हुए स्थान को जला देना चाहिए और रक्त वाहिकाओं को हल्के हाथ से रगड़े ताकि जहर शरीर के अंदर ना फैले। ये सर्पदंश की प्राथमिक विधियां या उपचार है, यदि इसको तुरन्त किया जाये, तो इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है।
13. एक बड़ी छत्र वाली बौ या एक चेन वाइपर के काटे हुए स्थान को सोने या लोहे की गर्म छड़ से जलाना चाहिए या जलते हुए काठकोयला से। आग जहर को जलाकर उसको राख बना देती है और शरीर के अंदर जहर नहीं फैलता है।

    [मूल–पाठ अधूरा है। मुद्रित संस्करण में टिप्पणी उपलब्ध नहीं है। अनुवादक ने सामान्य अनुक्रम और अपने अनुभव के आधार पर श्लोक को प्रस्तुत किया है।]
14. यदि रोगी नाक और मुंह से तेज श्वांस ले रहा है और आपस में खींच रहा है और श्वास बंद हो रही है। उस वक्त हमसा मंत्र *ओम हम सा* रोगी के कानों में गाना (अलापना) चाहिये। इससे रोगी पर उसके जहर का प्रभाव क्षीण (फीका/मंद) हो जाता है।

दवाईयां:

15. दही, मक्खन, कालीमिर्च, पिप्पली, अदरक और नमक से तैयार की गयी एक उत्तम औषधि को रोगी को देने से विभिन्न प्रकार के सर्पों के काटने के जहरीले प्रभाव को समाप्त करता है।
16. इन्द्रवरुणी, *पटलगरुड* जड़ों के रस, कीटमारी और *अपराजिता* की जड़ों के रसों को मिश्रित कर उसको करेले के गूदे के रस में मिलाकर औषधि का निर्माण कर लें। इस औषधि को रोगी को देने से रोगी सर्पदंश के जहरीले प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

17. *गोकरनी* और नीलि की जड़ों, तलिषा फल, कोशातकी के बीज और *भृंगराज* की पत्तियों के मिश्रण को एक साथ लेने से, शरीर की सर्पदंश से प्रतिरक्षित (असंक्राम्यता) बढ़ती है, जो कि गरुड़ के समान होती है। (गरुड़ एक पौराणिक पक्षी है, जो सर्पों का दुश्मन है।) ऐसे व्यक्ति के पास सर्प नहीं आते हैं।

[एक प्रथा यह है, कि यदि कोई नागपंचमी के दिन (*श्रावण* महीने का पांचवा दिन यानि जुलाई–अगस्त के बाद नाग की पूजा/उपासना करें, सर्पों के देवता) हर साल एक बार यह औषधि लें। इस औषधि को दूध या भोजन में मिलाकर, उसके साथ लेते हैं। भारत के कुछ भागों के समुदायों में यह प्रथा है।]

मंत्रों द्वारा सर्पों को बाहर भगानाः

18. सर्पों के रेखाचित्र और को गिरी (गिरीदार फल) तेल से उसी मंत्र के वर्णविन्यास को एक गरुड़ मंत्र *ओम कुरुकुल्ले* स्वाह षट्कोणीय तावीज के रुप में अंकन करते हुए लिखें। यह तावीज (कवच) पूर्ण सर्प समुदाय को भगा देता है।

वर्ष भर सर्पदंश से बचाव की विधियांः

19. एक व्यक्ति पीसी हुई भंडी की जड़ों के पेय को गुरुपुष्य के दिन लेता है (गुरुपुष्य गुरुवार और *पुष्य* नक्षत्र का संयोजन होता है जो कि बहुत शुभ/मांगलिक माना जाता है) वो सर्पदंश से नहीं डरेगा। विकल्पतः, पीसे हुए भंडी के फूलों की लेई को गुरुपुष्य के दिन लेने से उसको सर्पदंश का खटका नहीं रहता है। मंडी के फूलों के पाउडर को चावल के पानी के साथ लेने से भी उपरोक्त फायदे होते हैं।
20. सूअर के दांतों से निर्मित गरुड़ की मूर्ति को *पुष्य* नक्षत्र वाले दिन पहनने से, उसकी सर्पदंश प्रतिरक्षित क्षमता बढ़ जाती है जो गरुड़ के समान होती है।

चेन वाइपरः

21. वाइपरों के दंशों की विषाक्तता के जहरीले प्रभावों को खत्म करने के लिए निम्नलिखित तरीके से औषधीय घी तैयार करना चाहिए–

    मयूरशिखा पादप व फूलों और इण्डियन बीच के बीज, घी, शहद, अरंगक की पत्तियां और पीसी हुयी काली सरसों आदि। विकल्पतः, वचा, करेले की जड़ों को घी में मिला दें। इन दोनों को तैयार किये हुए औषधीय घी में से किसी एक को चैन वाइपरों के जहर के प्रभाव की विषाक्तता को कम करने के लिए रोगी को दे सकते हैं।

कोबरा या बौः

22. वनहरिद्रा प्रकन्दों के पाउडरों को गाय (भूरी गाय) के गोबर के अर्क के साथ पीसकर लेई बनाकर रोगी को दें। यह काटे हुए स्थान पर भी लगाना चाहिए। दूसरा, गाय के घी और तिल तेल को बराबर अनुपात में लेकर मिश्रित करके रोगी को देना चाहिए। यह उपचार कोबरा के विषैले जहर के प्रभाव की विषाक्कता को दूर करता है।

विविध सर्पः

23. पीसी हुयी काली मिर्च, पिप्पली, *पाटल* की जड़ें, *कारवीर* की जड़ें और मदार के फूल को दलिये में मिलाकर रोगी को दें। यह रोगी की विषाक्तता को दूर करता है।

अध्याय 11
जानवरों के लक्षण

1. एक हाथी जिसकी लम्बी सूंड़ हो, शरीर का आकार सूंड़ की अपेक्षा बड़ा (विशाल) हो, सुदृढ़ पीठ, एक मजबूत और गोल–मटोल शरीर, फैला हुआ रोयेंदार (रोमिल या बालदार) निचला होंठ, उन्नत गाल, लम्बा और चौड़ा *कुंभस्थल* और लाल रंग की भौंहें (भृकुटी) हो वो सौभाग्यशाली (शुभ / मांगलिक) लक्षणों का मालिक या स्वामी होता है।

   [*कुंभस्थल* हाथी के सिर का सामने की पालियों के बीच दबा हुआ क्षेत्र होता है।]

2. एक हाथी जिसके पांव का अंगूठा लम्बा हो, कान चौड़े और लाल हो, सूंड के अग्रभाग से आवाज निकालता हो, सुगंधित सांस, शरीर पर झुर्रियां साफ दिखाई दे। चिकनी, बाल रहित, लम्बी और गोलाकार सूंड हो। मुड़ी हुयी जांध (जंधा) हो जो आपस में रगड़ खाती हो, छोटी चिड़िया या गोरैया जैसी आंखे हो और दायां गजदंत बांयें गजदंत की अपेक्षा बड़ा या लम्बा हो। ऐसा हाथी पूजा (उपासना) के लिए उपयुक्त होता है।

3. एक हाथी जिसकी आंखें कबूतर या मछली के आकार के समान हो, पलक गहरी और सुन्दर हो, लम्बे गजदंत हो, आंख की पुतलियां शहद जैसी हो, वो श्रेष्ठ (उत्तम) होता है।

4. एक हाथी जिसके कोई लाल तिल ना हो, गोल आकार हो, शरीर पर पृथक सफेद या रंगीन धब्बे हो और उसकी आवाज नगाड़ों की आवाज जैसी हो, वह राजपद के लिए पूर्ण है।

5. एक हाथी के सिर पर एक समान खड़े बाल हो, धंसा हुआ आंखों का अन्तिम सिरा आकर्षित करता हो, एक उन्नत मस्तक हो और लम्बे मुंह के पीछे की ओर असंकुचित गर्दन हो, ऐसा हाथी पूजा (उपासना) के लिए उपयुक्त होता है।

6. हाथी जिसके कंधे लम्बे और सुदृढ़ हो, पूर्ण विकसित सिर, चौड़ा सीना (वक्ष), छरहरा (पतला) उदर, आकर्षक थन, एक चौड़ी सुदृढ़ और लाल नाभि, अंड–ग्रंथि का बाल रहित लम्बा अग्र भाग (छोर) और आर्कषक पुट्ठा और पूंछ, उत्तम (श्रेष्ठ) होता है।

7. एक हाथी जिसकी आंखें अर्द्ध विकसित फूल की तरह हो, उसका सीना सूअर के सीने के समान हो, गोल आकार की जांध हो, सुदृढ़ पैर हो, लम्बे कदम, चारों पैरों में 18 से 20 नाखून हो, जिनका कुल लम्बाई माप 5 से 7 क्यूबिट्स (एक क्यूबिट = लगभग 45.7 से.मी) हो, वो राजा के उपयोग के लिए उपयुक्त होता है। यह हाथी को समृद्धि और लम्बा जीवन प्रदान करता है।

8. हाथी जिसकी सूंड का अग्रभाग जोंक के आकार का होता है, पतला (छरहरा) या लम्बी कमर, दो गूंगे गजदंत जो कि अग्र भाग से जुड़े हो, काले बड़े थन, शीर्ष भाग ढ़ोंढ़ी (नाभि) जैसा बाहर निकला हुआ हो, धुसी हुयी अंड–ग्रंथि, दुबली–पतली पीठ तथा पैरों के वक्र (धुमाव) और छोटे नाखून आदि अशुभ होते हैं।

घोड़ेः

9. घोड़ों के विज्ञान के अनुसार, आठ लक्षण जैसे– शरीर के विभिन्न भाग, घूर्णमान, चाल, हिनहिनाना, रंग, ताकत (शक्ति), दुर्गंध और कामातुर आदि बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

10. ऐसा घोड़ा जिसके छोटे कान, अंड–ग्रंथि, गुल्फ संधि (टखना जोड़) और दूसरे जोड़ आदि होते हैं। लम्बी गर्दन, मुंह और घुटने आदि। सुसम्बद्ध (ठोस) नेत्र कूप, चौड़ी पूंछ, सीना और पुट्ठा, शरीर पर मुलायम बाल, मुंह और जीभ के पतले किनारे और शरीर, भुजाओं और उदर (पेट) पर बाल, ऐसा घोड़ा राजाओं की पूजा (उपासना) के लिए होगा।

11. एक घोड़ा जिसके रक्तरंजित कान हो, अच्छी दृष्टिशक्ति पानी पीते समय थूथनि डूब जाती हो, छरहरे बाल और तेज खुर, अंड–ग्रंथि थोड़ी लटकी हुयी तथा आर्कषक अग्रभाग और पृष्ठ भाग सीधा और चौड़ा हो वो निश्चित रूप से पूर्व जीवन बिताता है।

12. मध्य में चिमटी जैसे दिखने वाले दांतों के जोड़े (युग्म) हो, ऊपर और नीचे वाले जबड़ों को *सम्दम्स* कहते हैं। दोनों जबड़ों के दांतों के युग्मों को *मध्यमा* तथा जबड़ों के अंत के दांतों के युग्मों को *परिपक्व* कहते हैं। दो दांत हर महीने उगते हैं, इस प्रकार से छः महीनों में 12 दांत आते हैं।

13. *सम्दम्स* दांत एक साल की उम्र तक सफेद होते हैं। इस प्रकार 12 दांत पहले सफेद होते हैं। जो कि प्रत्येक दो महीनों में दो दांत आते हैं।

14. 18 महीनों तक घोड़ों के दांत लाल होते हैं। इसके पश्चात् ये दांत अगले दो साल में काले रंग में परिवर्तित हो जाते हैं।

15. जब घोड़ा ढ़ाई वर्ष का हो जाता है तो *सम्दम्स* दांत टूट जाते हैं और तीसरे वर्ष में पुनः प्रकट होते हैं। तीन साल के पूर्ण हो जाने पर दो *मध्यमा* दांत गिर जाते है और चौथे साल में पुनः प्रकट होते हैं। *परिपक्व* दांत चार साल पूर्ण हो जाने पर गिरते हैं। पांचवे साल में पुनः प्रकट होते हैं। यह चक्र पांच साल का होता है जिसमें दांतों का निर्माण और गिरना होता है। प्रथम चक्र से यह पता चलता है कि घोड़े की उम्र 5 साल हो गयी है।

16. पांच साल के पश्चात् घोड़े के दांतों पर काले रंग के धब्बे का निर्माण होता है जिसे *कटिके* कहते हैं। स्वर्ण धब्बे को *पोन्जे* (स्वर्णिम), सफेद धब्बे को *सूक्ति* और बालूकण जैसे रंग को कक कहते है। इसी प्रकार से शहद, शंख, उल्लू आदि रंगों के धब्बों को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

17. *सम्दम्स, मध्यमा* और *परिपक्व* आदि दांतों पर 9 विभिन्न प्रकार के धब्बे होते हैं। गणना के अनुसार प्रत्येक तीन साल में एक धब्बा होता है। अन्तिम धब्बा कुल 27 वर्ष की उम्र में होता है। वहां 5 वर्ष की उम्र तक कोई धब्बा नहीं होता है।

18. घोड़े के 10 घूर्णमानों में से दो सिर पर होते हैं, एक मस्तक पर, एक नाक के अग्रभाग पर, दो उदर (पेट) पर, दो बाह्य उदर की ओर और दो आन्तरिक उदर की ओर। इसको *दस ध्रुव* (दस स्थिरांक) के नाम से पुकारा जाता है।

19. मुंह के कोने, सीने पर, मस्तक पर, भौंहों के पास, आंखों और कानों के पास, एड़ियों, गला, अग्र पैरों के दोंनों तरफ मध्य में और कंधों पर घूर्णमान की उपस्थिति शुभ होती है।

20. गले के मध्य में *देवमणि* चक्र और गले के सामने की ओर *रोकमन* चक्र की उपस्थिति घोड़े के शरीर के अग्र आधे भाग पर पाये जाने वाले हानिकर (अशुभ) घूर्णमानों के अवगुणों (दोषों) को निष्प्रभावित कर देता है। यदि तीन घूर्णमान *एनी* (सीढ़ी) के आकार का, *हल्ली* (छिपकली) के आकार का या कोई दूसरे आकार का मस्तक पर हो, यह मस्तक पर पाये जाने वाले हानिकर (अशुभ) घूर्णमानों के अवगुणों (दोषों) को निष्प्रभावित कर देते हैं। इसी प्रकार से *मेधलाइक* धूर्णमान (करधनी या मेखला के पीछे की ओर मध्य भाग पर उपस्थित

होता है), जो कि घोड़े के पृष्ठ भाग पर पाये जाने वाले हानिकर (अशुभ) घूर्णमानों के अवगुणों को निष्प्रभावित कर देता है।

21. निम्नलिखित स्थानों पर पाये जाने वाले घूर्णमान अशुभ होते हैं–

टोढ़ी (ठोड़ी) और नासाछिद्र के नीचे, गालों पर पूंछ के आधार पर, गर्दन के निचले भाग पर और झुर्रीदार, दो नासाछिद्रों के मध्य में, कानों के नीचे, कानों के नीचे की ओर दोनों ओर की नसों पर, गले और भौंहों के ऊपर, नाभि के नीचे, नीचे और ऊपर के होठों पर, अंड–ग्रंथियों, घुटनों, आंखों के बाह्य कोनों पर, घुटनों के जोड़ों पर, कानों, आंखों, उदर (पेट), सीना और नाभि, सीने के मध्य में, गले, कमर, अग्र टांगों के मध्य और छोटे खुर के *रुकमण* और *देवमणि* के बीव के घूर्णमान।

22. घोड़े में पाये जाने वाले निम्नलिखित लक्षणों को अशुभ कहते हैं।

घोड़े की गर्दन के नीचे और मध्य भाग पर घूर्णमान, दो जीभों का आभास, दंत दोष, पिछले भाग पर घूर्णमान, एकल अंड–ग्रंथि और तीन कानों का आभास आदि।

23. अंगुली के आकार के खुर, गहरे काले रंग के खुर, नर घोड़ों में लम्बे आकार के नथ, पांच टांगों की उपस्थिति और सींगों की उपस्थिति आदि घोड़ों में पायी जाने वाली पांच आसानी से दिखने वाली कमियां है।

24. घोड़े के निम्नलिखित लक्षण शुभ होते है–

घोड़े के चलने, कूदने, मजबूती से दांयें और बांयें चलने से, स्वतंत्र रुप से चलने पर, सीधा मुंह करके चलने पर, उदास (अधोमुख) मुंह करके चलने पर, निर्विघ्न होकर चलने पर और टिटहरी, हरिण (मृग), तोता, राजहंस (हंस) या बाज के जैसे चलने पर भयभीत होते हो तो वो घोड़ा शुभ होता है।

25. ऐसा घोड़ा जिसकी आवाज गम्भीर हो, जैसे कि बड़े बर्तन को मारने पर और तबले पर मारने पर और एक जैसी आवाज आती हो वो अच्छा होता है। घोड़ा जिसकी आवाज ढ़ोल को मारने पर आती हो वैसी हो या कांपती (थरथराती) आवाज हो वो अच्छा नहीं होता है।

26. सफेद, लाल, पीला और काला आदि घोड़े के चार मूल रंग है। जो कि क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र आदि के द्योतक होते हैं। ये चारों रंग के घोड़े अच्छे होते हैं। मिश्रित रंगों के घोड़े, जो कि दिखने में मनोहर (सुखकर/सुखद) होते हैं, वो भी अच्छे होते हैं।

27. एक सफेद रंग का घोड़ा जिसके मस्तक के बांयीं ओर एक घना सफेद हो, जिसके मध्य के अन्दर अनेक रंग हो या फीका सफेद रंग हो अशुभ होता है। एक पूर्ण रुप से सफेद मुंह वाला घोड़ा शुभ होता है। सिर के मध्य में तिलक (मस्तक पर एक प्रकार का चिन्ह) जैसे आभाज वाला घोड़ा शुभ और समृद्धि (वैभव) लाता है।

28. अप्रसन्न (नाराज) आक्रमणशील व्यवहार वाले घोड़े को "घटिया (निकृष्ट) लक्षण" वाला मानते हैं। एक अप्रसन्न (नाराज) बुद्धिमान व्यवहार वाले घोड़े को "सुस्पष्ट लक्षण (क्रोध)" वाला मानते हैं। घमण्डी (हेकड़ी/अक्खड़पन) घोड़े को "राक्षसी लक्षण" वाला मानते हैं। एक अल्पभाषी (मितभाषी) दिमाग वाला घोड़ा, जो कि अत्यधिक मात्रा में खाता हो को "संदिग्ध (संदेहास्पद) लक्षण" (*पितो सत्व*) वाला मानते हैं। एक कामुक लड़ाका (आक्रमणशील) घोड़ा अच्छे और बुरे परिणामों का संकेत है। एक चमकीला, चमकदार, सुगंधित (खुशबूदार), तगड़ा (हट्टा–कट्टा), प्यारा, आकर्षित करने वाला और साफ घोड़े को "धार्मिक लक्षण" वाला मानते हैं।

[यह श्लोक मूल–पाठ और टिप्पणी दोनों में अधूरा है। बृहत् संहिता के मिलते–जुलते श्लोकों की सहायता से पूर्ण अनुवाद कर इस अनुवाद को प्रस्तुत किया गया है जो कि संस्कृत में पृष्ठ संख्या 592 पर संदर्भित है। वहां पर अंग्रेजी अनुवाद को प्रस्तुत नहीं किया गया है।]

29. यदि घोड़े के पसीने में खटमल, वचा, बदबूदार पदार्थ, लहसुन या मूत्र जैसी दुर्गन्ध आती है तो वो शुभ नहीं होता है। चम्पक फूलों, पदमा फूलों और चन्दन की खुशबूदार महक अच्छी और शुभ होती है।

30. एक घोड़ा जो कि सुखद और विभिन्न रंगों का हो उसको *भूमि अम्स भूत* (पृथ्वी के सत्व से उत्पन्न) कहते हैं। एक घोड़ा जिसका रंग बादल, पदमा फूल या पानी जैसा हो उसको *उदकम्स भूत* (पानी के सत्व से उत्पन्न) कहते हैं। एक घोड़ा जिसका रंग सोना एवं मूंगिया या एक माणिक्य जैसा हो उसको *अग्नि अम्स भूत* (आग के सत्व से उत्पन्न) कहते हैं। एक घोड़ा सौम्य (कोमल) और मोहक रंग वाला हो उसको *वायु अम्स भूत* (वायु के सत्व से उत्पन्न) कहते हैं। एक घोड़ा जो किसी भी अप्रिय और खुरदरे रंगों का हो उसको *अकासाम्स भूत* (वातावरण के सत्व से उत्पन्न) कहते हैं।

31. उपरोक्त पांच रंगों में से वातावरणीय और वायु रंगों वाले अशुभ होते हैं। दूसरे रंगों जैसे– आग, पानी और पृथ्वी आदि शुभ और वे प्रतिष्ठित परिणाम प्रदान करते हैं।

गायें:

32. इस सांसारिक विश्व में छरहरा पश्च भाग, चौड़ा अग्र भाग, बड़ी कूबर, आंखों के किरण पुंजों में चमक, मृदु बाल, चूहे की पूंछ जैसी मृदु पूंछ, बिना किसी दृष्टिगोचर भौतिक दोष के और लाल खुर आदि एक उत्तम (श्रेष्ठ) गाय के आवश्यक गुण है।

33. एक सांड के निम्नलिखित लक्षण अशुभ ही नहीं होते हैं बल्कि विनाशक (विध्वंसक) भी होते हैं।

    भूरा, काला या लाल शरीर, काले रंग का गला, जीभ, होंठ, कर्ण (कान) कोने और पैरों, खोखला कूबर, एक समय में छितरा या बिखरा हुआ मूत्र और गोबर, एक कौवें या एक बिल्ली के चेहरे जैसा और पीली आंखें आदि।

34. एक विशिष्ट गाय का पृष्ठ भाग (पिछवाड़ा) जिसमें निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं उसका जीवन सुखी नहीं होगा।

    लम्बी या छोटी गर्दन, बहुत बड़ा कूबर, अनुपयुक्त अवयवों (अंगों), अत्यधिक और बुरे (खराब) दांत, घंसी हुयी और आंखों में विषमता, सींगों की तुलना में लम्बा चेहरा और आंखों में आंसू आदि।

35. निम्नलिखित लक्षणों वाली गायें मालिक का विनाश (विध्वंस) ही नहीं करती बल्कि उसको विस्थापित भी करती है।

    हमेशा दांतों का किटकिटाना, दबे हुए पीछे के दांत अंदर की तरफ मुड़े हुए हो, ढ़ेलेदार खुर, सींगों का हिलना (कांपना/थरथराना), साधारण सिर, काले रंग की जीभ, बाहर निकली हुयी आंखें, बिल्ली जैसी आंखें, आधी खुली हुयी आंखें, क्षीणता (क्षय) और क्षय रोग, बाजूओं का एक दूसरे से चिपकना और छितरे हुए बाल आदि।

बकरियां:

36. एक सफेद सिर वाली नर बकरी, जिस पर कृतिका तारापुंज की तरह यहां–वहां सफेद

धब्बे हो, जिसके आठ या नौ दांत हो, जो कि चबूतरे पर पैर रखकर पानी पीती हो वो सर्वोत्तम (श्रेष्ठ / उत्कृष्ट) होती है।

कुत्तेः

37. एक कुत्ता जिसमें निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं वो शुभ होता है।

    चौड़ा पेट (उदर), छरहरी और सुन्दर कमर, चकाचौंध नेत्र, तीन पैरों में पांच नाखून और दांयें अगले पैर में छः नाखून हो, लाल रंग होंठ और थूथन, शेर के समान चाल हो और झबरा (खुरदरी) पूंछ हो।

38. एक कुतियां जिसमें निम्नलिखित लक्षण पाये जाते हैं वो शुभ होती है।

    आर्कषक शरीर, टेढ़ी कुटिल पूंछ, अगले पैर में तीन नाखून हो और बाकी पैरों में पांच नाखून हो, तेज चाल और मुंह और आंख लाल हो।

मुरगा (कुक्कुट):

39. निम्नलिखित लक्षणों वाला मुर्गा राजा को धन–सम्पति प्रदान करता है।

    सीधा पंजा और एड़ी, जोंक के समान रंग वाली गर्दन, वसीय बाजू, लाल रंग के नाखून और चोंच और गम्भीर आवाज।

    एक मुर्गी जिसका रंग चमगादड़ के रंग जैसा हो, एक सफेद बगुला, कुरीकुम (लाल ?) भूरा और कबूतर के रंग जैसी मुर्गी शुभ होती है।

40. एक राजा को समृद्धि (वैभव) प्राप्त करने के लिए एक भेड़, दो भैंसों, तीन गायों, आठ घोड़ों, छः कुत्तों और सात हाथियों का पालन पोषण नहीं करना चाहिए।

41. विज्ञान (*शास्त्र*) के अनुसार आदमी और हाथियों की जीवन अवधि 120 वर्ष और 5 दिनों की होती है, जबकि घोड़े की 22 वर्ष, गधे की 25 वर्ष तथा ऊंट, भैंस और गायों की 19 वर्ष जबकि कुत्तों की 12 वर्ष और बकरी और अन्य जानवरों कि 16 वर्ष होती है।

टिप्पणियां

वाई एल नेने[1]

चमत्कार (अध्याय 4)

यह अध्याय पढ़ने में बहुत ही रोचक (रूचिकर/दिलचस्प) है, जिसमें 89 श्लोकों को सम्मिलित किया गया है, क्योंकि यह साधारण लोगों के सोचने की पूरी जानकारी प्रदान करता है, विशेषकर वे लोग जो सहस्त्राब्दि पूर्व ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते थे।

इन चमत्कारों को उचित रीति से तीन समूहों जैसे– खगोलीय, वायुमण्डलीय और स्थलीय चमत्कारों में विभाजित (वर्गीकृत) किया गया था। उस युग में जीवन रहस्यों (भेदों) से भरपूर होता था, जिसका नतीजा (परिणाम) ही चमत्कार होते थे। आज उनमें से बहुत से चमत्कारों का कोई मतलब नही है, यानि निरर्थक है। लेकिन उस समय के लोगों के दिमाग पर उसका बहुत अधिक प्रभाव होता था। आज हमको सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर के प्रभामण्डलों, शिथिल धूल (गर्द), धूम (धुआं) संवहन, बेमौसम (चक्रवाती) वर्षा, बादलविहीन दिन में इन्द्रधनुष, उल्काओं का गिरना और जलाशयों का अचानक सूख जाना आदि का ज्ञान है। यहां एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सावधानीपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता है जो कि जानवरों और पक्षियों के व्यवहार से सम्बन्धित चमत्कार है। आज हम जानते हैं कि जानवरों में यह प्रतिभा होती है कि वे सन्निकट महाविपदा की पूर्व सूचना देते हैं।

बहुत से चमत्कार मानव मन (चित्त) में भय और असुरक्षा को प्रतिबिम्बित करते हैं। पृथ्वी पर ऐसा कोई समाज नहीं है, जिनका की अन्धविश्वासों में अपना कोई अंश नही होता हो, यहां तक आज भी। जैसे–जैसे ज्ञान बढ़ता जा रहा है, बहुत से आज के चमत्कारों को भूलते जायेगें। तथापि समाज में ऐसा कभी नहीं होगा कि कम से कम कुछ चमत्कारों पर विश्वास न करें।

यह हमेशा कहा जाता है कि विगत लोगों कि अपेक्षा आज के लोग ज्यादा तनाव में रहते हैं। चमत्कारों के वर्तमान मूल–पाठ को पढ़कर हर कोई स्वीकार करेगा कि हमारे पूर्वज पूरे समय ज्यादा तनाव में बने रहते थे।

जल की भविष्यवाणियां करना (अध्याय 5)

चावुन्द्राय ने उपलब्ध जानकारी का 40 श्लोकों में सार प्रस्तुत किया था। यह स्मरण करना उपयोगी होगा कि बृहत् संहिता द्वारा वराहमिहिर (505–587 ईसवी सन्) में इस विषय पर 125 श्लोकों को समाविष्ट किया था। चावुन्द्राय ने बृहत् संहिता से ज्यादातर जानकारी दक्षिण भारत से सम्बन्धित ली थी। भूमिगत पानी की उपलब्धता (उपस्थिति) का पता लगाने के लिए मापदण्ड (मानक) है। (1) पेड़ों को जैविक सूचकों के जैसा (2) दीमक (3) रंगीन चट्टानें (4) मेंढ़क जैसे जीवजन्तु (प्राणि–समूह) (5) घासें और (6) भूमि से धुएं का प्रकटन (आविर्भाव) आदि। ये सभी सम्बन्धित है। अनुमानित के रूप में निश्चित पेड़ों और दीमक की उपस्थिति सर्वाधिक सामान्य संकेत थे।

---

[1]Asian Agri-History Foundation, Secunderbad 500 009, India (emil: ynene@satyam.net.in)

यहां यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वराहमिहिर ने यह कार्य 6 शताब्दी ईसवी सन् में किया था। सदियों से चली आ रही इस जानकारी का मौलिक (मूल) स्त्रोत के रूप में उपयोग किया जा रहा है और हम इस जानकारी का पता लगाने का काम कर रहे हैं, जो कि 57 श्लोकों में अन्तर्विष्ट है। कुछ संयोजन के साथ, 1577 ईसवी सन् के अन्दर चक्रपाणि मिश्रा द्वारा लिखित विश्ववल्लभ में (साधले 2004)। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के जनसाधारण (जनता) द्वारा आज भी बहुत से सकेतों का उपयोग किया जा रहा है।

वृक्षायुर्वेद (अध्याय 6)

यह अध्याय पेड़ों, झाड़ियों और लताओं आदि के स्वास्थ्य प्रबंधन से सम्बन्धित है। चावुन्द्राय ने जो सारांश प्रस्तुत किया था, वो दक्षिण भारत से सम्बन्धित था, यह सुरपाला के 300 श्लोकों की तुलना में 60 श्लोकों में था, जो कि संभवतः एक समसामयिक था (साधले 1996)। श्लोक 2 के अन्दर 8 प्रबल नक्षत्रों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया था, जिसके दौरान बीज की बुवाई का कार्य करना चाहिये। सुरपाला ने 10 को उल्लिखित किया और वराहमिहिर ने 14 का विशेष रूप से उल्लेख किया था। वराहमिहिर का क्षेत्र पश्चिम भारत, सुरपाला का पूर्वी भारत और चावुन्द्राय का दक्षिण भारत था। यह इस बात का संकेत था कि हमारे पूर्वजों ने अपने अनुभवों द्वारा स्थान विशेष पर बुवाई के समय को जाना था। चक्रपाणि मिश्रा द्वारा लिखित विश्ववल्लभ ने किसी भी नक्षत्र का उल्लेख नहीं किया था क्योंकि पश्चिम भारत के राजस्थान में वर्षा की अनिश्चिता रहती थी।

श्लोंक 3 व 4 में रोपण के लिए गड्ढ़ों की खुदाई और गड्ढ़ों के बीच की दूरी का वर्णन किया गया है। एक बार पुनः स्थान विशेष पर निर्णय का प्रभावित होना जान पड़ता है। उदाहरण के लिए चावन्द्राय ने गड्ढ़ों का आकार 2 अग्रबाहु वर्ग का विशेष रूप से उल्लेख किया है। लेकिन सुरपाला ने अग्रबाहु वर्ग को उल्लिखित किया है। चक्रपाणि मिश्रा ने आकार के बारे में कोई सुझाव नहीं दिया है। गड्ढ़ों के बीच की दूरी के संबंध में सभी लेखक ने कई प्रकार की दूरियां बतलायी थी। जैसे–घटिया (निकृष्ट), संतुलित (मध्यम) या श्रेष्ठ (उच्च)। वराहमिहिर संकेत 12, 16, 20; सुरपाला 14, 16, 20; चावुन्द्राय 10, 14, 16 और चक्रपाणि मिश्रा 12, 16, 20 आदि। वराहमिहिर और चक्रपाणि मिश्रा का सम्बन्ध पश्चिम भारत से था, इसलिये उनकी सिफारिशों में समानता का वर्णन है।

श्लोक 6 में रोपण से पूर्व बीज उपचार का वर्णन किया गया है। इसमें बीजो को गोबर के साथ प्रसाधन, सुखाना, दूध में भिगोना, बृहति फलों के अर्क का आवरण और लवणीय पानी और अन्त में *विडंग* बीजों के पाउडर से धूम्रीकरण करना आदि को सम्मिलित किया गया है (इस पुस्तक में दी गयी पादप सूची को देखें)। हमें ध्यान है कि दूसरों द्वारा भी इस तरह की सिफारिशें की गयी थी। ये उपचार बहुवर्षी (बारहमासी) पादपों के लिए थे ना कि वार्षिक पादपों के लिए। संभवतः ये सभी उपचार बीजों को इस अवस्था में ले आते हैं, कि वो जल्दी से अंकुरित हो जायेगें। इन सिफारिशों की मान्यता के लिए प्रयोगों की आवश्यकता है जिनसे हमें इनका उत्तर मिलेगा कि इन सभी विस्तृत उपचारों कि हमें आवश्यकता है या अपनी सुविधा और सुगमता के लिए इन्हें संशोधित किया जा सकता है। यह साफ है कि इन लेखकों के दिमाग में ये बातें नहीं थी। जबकि यह मूल–पाठ भी वृक्षायुर्वेद से संबंधित है ना कि कृषि, बाद में कृषि फसलों को सम्मिलित किया गया।

यहां पर ओलों द्वारा नष्ट पादपों के निवारण के लिए आश्चर्यजनक सिफारिश की गयी है, जैसे कि चावल के पादपों पर दही का छिड़काव। इसी तरह की सिफारिश सुरपाला (श्लोक 159) में की गयी थी। यह समझना बहुत मुश्किल है कि इन सिफारिशों का आधार क्या है।

श्लोक 11 में कीटों (कीड़ों) के घातक रोगों के नियंत्रण के लिए मूल–सिद्धान्तों की सिफारिश है। इसमें गौ–मूत्र को एक सप्ताह के किण्वन के बाद क्षारक के रूप में उपयोग करते है, जिसमें कीड़ा रोधी जड़ी–बूटियों जैसे–हींग, वचा, अतीस जड़, काली मिर्च, *विडंग,* भल्लातक बीज, *विसाल* और काली सरसों का उपयोग किया गया था। इसके अंदर गाय सींग (पाउडर) को भी मिश्रित किया गया था। सभी जड़ी–बूटियां विस्तृत रूप से कीटनाशी होती है। गौ–मूत्र को "जैविक उत्तेजको" की उपलब्धता के रूप में जाना जाता है, जो कि अवयवों की क्षमता को बढ़ाते हैं (खनुजा *एट अल.*, 2003) गाय के सींगो के किण्वन करने पर उसमें उपस्थित किरेटिन से सल्फरयुक्त अवयव प्राप्त होते है। आज के फुहारों की उपलब्धता को, प्राचीन काल के छिड़कावों से तुलना करें, यह संभवतः श्रेष्ठ कीड़ा नियंत्रक होना चाहिए। चक्रपाणि मिश्रा ने विभिन्न स्थानीय उपलब्ध जड़ी–बूटियों से इसी तरह के प्रतिपादन का सुझाव दिया था। सुरपाला ने विभिन्न जड़ी–बूटियों को धुएं और लिपाई आदि के लिए सुझाव दिया था, लेकिन उसमें क्षारक गौ–मूत्र नहीं था। गौ–मूत्र आधारित हर्बल (जड़ी–बूटियों) कीटनाशी की गांवों के छोटे किसानों में लोकप्रिय करने की सम्भाव्य है, जो कि उपलब्ध व्यापारिक उपक्रमों को खरीदने में असमर्थ हो। सत्यता यह है कि मुझे गो–विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, नागपुर ने बताया कि गौ–मूत्र और नीम प्रतिपादनों के लिए उन्हें यू.एस. एकस्वकृत (पेटेन्ट) मिला है। यह स्वागत योग्य है (राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के श्री सुनील मानसिंगका और डॉ. सी. एस. नौटियाल से व्यक्तिगत संम्प्रेषण)।

श्लोक 12 में जड़ी–बूटियों और मछली मांस से धूमीकरण (धूमन) और "रोग" नियंत्रण पाने को उल्लिखित किया है। इन जड़ी–बूटियों को कीट रोधी और सूक्ष्मजीवाणु रोधी गुणधर्मों के रूप में जाना जाता है। चक्रपाणि मिश्रा ने इसी से सम्बन्धित विभिन्न महत्वपूर्ण उपायों को अध्याय 8, श्लोक 41 और 43 में उल्लिखित किया है।

कुनप यह एक द्रवीय खाद है जो कि मांस (गोश्त) को पानी में सड़ाने (किण्वित) करने और गर्म करने से प्राप्त होती है। चावुन्द्राय के मूल–पाठ में इसका चित्र भी है। उन्होनें *कुनप* के रूपभेदों का विभिन्न श्लोकों में वर्णन किया है। इन श्लोकों के रूपभेदों में किसानो को *कुनप* निर्माण में बहुत लचीलापन दिया गया है।

साफतौर पर श्लोक 22 और 23 में वर्णित रोपण विधि को हमने ढूंढ निकाला। बहुत से लेखकों ने गलती से यह आकलित किया है कि पश्चिम एशियन और यूरोपियनों ने भारत में रोपण की धारणा को प्रस्तुत किया है। जबकि रोपण विधि पर 6 वीं शताबदी ईसवीं सन से कार्य चल रहा था (भट 1981)। लोकोपकार के अन्दर " सादृश्य रोपण" की विधि का वर्णन दिया गया था। संयुक्त प्रकन्दों की विधि से कमल और कुमुदिनी के मिश्रित फूलों के प्राप्त होने का वर्णन भी था। हमें यह मानना चाहिए कि रोपण की दूसरी विधियों का परिचय विदेशी खोजकर्ताओं द्वारा किया गया था।

श्लोक 25 से 39 में आम, केला, कटहल, नारियल, मुसम्मी, बिजौरा, अनार, इमली, बेर, बेल, नीम और आंवला से उच्च पैदावार और अच्छी गुणवत्ता वाले फलों को प्राप्त करने की विधियों का वर्णन किया गया है। श्लोक 43 से 52 फूलों से सम्बन्धित है। *कुनप* के उपयोग में जी लाने वाली सामग्री की प्रासंगिकता के साथ विभिन्न दूसरी सामग्रियों का सुझाव दिया गया था । इन सिफारिशों के वैधीकरण के लिए क्रमबद्ध अनुसंधान की आवश्यकता है। जिससे बहुत उपयोगी और प्रायोगिक जानकारी उत्पन्न की जा सके, विशेषकर छोटे किसानों के लिए। श्लोक 35 का सारांश है कि सामग्रियों (कच्चे माल) के छोटे पिण्डों या टिकियाओं को पेड़ के आधार में रखने का सुझाव दिया गया है। आधुनिक फलोद्यानी के लिए इसके उपयोग का बहुत ही आसान तरीका है।

श्लोक 42 का सारांश सुरपाला के द्वारा लिखित वृक्षायुर्वेद (श्लोक 148 से 152) में एक जैसा है, यद्यपि कुछ पादप जातियां अलग है। इन सिफारिशों पर टिप्पणी करना बहुत मुश्किल है। फिर भी दोनों चावुन्द्राय और सुरपाला की टिप्पणी जो संभवतः समसामयिक थी, लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में स्थित (सुरपाला– पूर्वी भारत और चावुन्द्राय दक्षिणी भारत) थे। वे महिलाओं द्वारा वृक्षों के व्यवहार के असर के बारे में आश्चर्यजनक एक समान टिप्पणी देना और इसको आगामी अनुसंधान से प्रमाणित करने की आवश्यकता है।

सुगंधित द्रव्य (अध्याय 7)

इस अध्याय के सारांश से हर किसी को यह स्वीकारना चाहिए कि भारतीयों ने सुगंध–शाला के क्षेत्र में उस समय कितनी उन्नति (तरक्की) की थी । अर्थववेद (सन् 2500 ई. पू.) के अनुसार सुंगध–शाला की प्रारंभिक शुरूआत को माना जा सकता है। जिसको चरक के समय (सन् 700 ई. पू.) इण्डियन मेटेरिया मेडिका के अन्दर मान्यता प्राप्त हुयी थी। वराहमिहिर ने 6 वीं शताब्दी ईसवी सन् (भट, 1981 देखें भाग 2) ने एक अध्याय लिखा था, *गंधयुक्ति* (सुंगधित द्रव्यों को तैयार करना) जिसमें उन्होनें ना केवल विशिष्ट खुशबूदार पादप जातियों का वर्णन किया था, बल्कि यह भी बताया था कि विभिन्न सम्मिश्रण को प्राप्त करने के लिए किस अनुपात में उनको मिश्रित किया जाये, जिससे बहुत सी अलग (पृथक या भिन्न) खुशबू (सुगन्ध) प्राप्त हो। चावुन्द्राय ने बहुत सी सामग्रियों (कच्चा माल) को बताया और विशिष्ट उद्देश्यों के साथ निर्माण भी किया जैसे–सुगंधित बालों का तेल और काया तेल, पाउडर, सुंगधित धूप (लोबान), सुगंधित दातुन आदि। आधुनिक समय के अन्दर सुगंधित द्रव्यों को पुष्प निर्मित, मसालेदार (चटपटा) काष्ठीय (काष्ठ–सदृश) और काईदार आदि में वर्गीकृत किया गया है। चावुन्द्राय ने प्रथम तीन प्रकारों को आवृत किया था।

इस अध्याय के अन्दर चावुन्द्राय ने 100 से अधिक पादप जातियों को उल्लिखित किया था जिनमें से ज्यादातर का उपयोग खुशबूदार वस्तुओं और कुछ पूरक वस्तुओं के निर्माण या बनाने में किया जाता था।

श्लोक 2 में असंबद्ध चीजों को मिश्रित कर विशिष्ट खुशबू को प्राप्त करने के लिए विभिन्न नुस्खें दिये गये हैं। उदाहरण के लिए चम्पक फूलों की सुगंध प्राप्त करने के लिए पन्ना पाउडर, इलायची और चन्दन पाउडर को एक साथ पीसा जाता था। इसी तरह के नुस्खे श्लोक 41 से 45 और श्लोक 65 में दिये गये हैं।

श्लोक 3 और 4 का सारांश जबानी (मौखिक) स्वास्थ्य विज्ञान से संबंधित है। सुंगधित दंत लकड़ी, पाउडर और ताजगी भरा आदि इसको निर्दिष्ट करते हैं। एक जबानी (मौखिक) सुगंधित द्रव्य, बिजौरा के उपयोग की सिफारिश (अनुशंसा) की थी, जिसको की आज नींबू पुदीना के समान माना जा सकता है (श्लोक 8 और 9) साधारण तेल को बनाने के तरीके का वर्णन श्लोक 10 और 11 में किया गया है।

यह हमें ध्यान रखना चाहिए कि श्लोक 12 से 24 में सुंगध को प्राप्त करने के लिए तिल तेल का उपयोग किया गया था। आज सुंगधित तेल के निर्माण के लिए यह बहुत प्रचलित विधि है। प्रायः तिल का तेल अद्वितीय (लाजवाब या बेजोड़) होता है, क्योंकि यह कभी भी विकृतगंधी नहीं होता है क्योंकि इसमें उच्च प्रति ऑक्सीकर का अंश (मात्रा) होती है।

विभिन्न प्रयोजनों में अगरबत्ती और सुंगधित धूप का उपयोग बहुत प्राचीन है। श्लोक 31 से 39 में हमें उपयोग के लिए खुशबूदार अगरबत्ती, रूई कलिका, पाउडरों, टिकियाओं और कृमिनाशक अवरोधी आदि के बनाने की विधियों का पता लगा।

यह दिलचस्प विवरण है, कि फूलों की महक को लम्बे समय तक रखने की विधियों का विस्तृत वर्णन श्लोक 46 से 49 में किया गया है। विशेष सुंगधित द्रव्य जिसका नाम *साद्रु* है का श्लोक 50 से 59 में वर्णन किया गया है।

इस अध्याय का सम्पूर्ण अध्ययन हर किसी पढ़ने वाले को प्रभावित करेगा क्योंकि हमारे पूर्वजों ने जड़ी–बूटियों का उपयोग करके बहुत सी खुशबूदार किस्मों का नवपरिवर्तन कर विकसित किया था, लेकिन कुछ दूसरी सामग्रियों जैसे कस्तूरी का उपयोग भी किया। सहस्त्राब्दि पूर्व जड़ी–बूटियों में कुछ मिलाकर उपयोग किया जाता था।

संदर्भिका

Bhat, M.R. 1981. Varahamihira's Brhat Samhita. Parts I and II. Motilal Banarasidass, Delhi 110 007, India. 1106 pp.

Khanuja, S.P.S., Kalra, A., and **Darokar, M.P.** 2003. Scientific studies of utilization of biological activities of cow urine and its *arka* (distillate) for agriculture and health. Abstract of the paper presented at the National Seminar on Cow in Agriculture and Human Health, 16 December 2003, Kota, Rajasthan. Asian Agri-History Foundation (Rajasthan Chapter), Udaipur 313 002, India.

Sadhale, Nalini. (Tr.) 1996. Surapala's Vrikshayurveda (The Science of Plant Life by Surapala). Agri-History Bulletin No. 1. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad 500 009, India. 94 pp.

Sadhale, Nalini. (Tr.) 2004. Vishvavallabha (Dear to the World: The Science of Plant Life). Agri-History Bulletin No. 5. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad 500 009, India. 134 pp.

नलिनी साधले[1] और शकुन्तला दवे[2]

लोकोपकार मूलतः चावुन्द्राय ने 1025 ईसवी सन् में कन्नड़ भाषा में लिखी थी। चावुन्द्राय भारत के कर्नाटक राज्य के पश्चिमी चालुक्य की कचहरी के अन्दर एक कवि थे। इस प्रकाशन के प्रथम भाग का अंग्रेजी अनुवाद वाल्मिकी श्रीनिवास अयंगर द्वारा किया गया था। प्रकृति के अन्दर के सर्वज्ञान–विषयक का मूल कार्य है जो कि विभिन्न शाखाओं के विषयों जैसे – फलित–ज्योतिष, वास्तुकला (वास्तुशिल्प) में पवित्र वास्तुशास्त्र के साथ समनुरूपता, जल की भविष्यवाणियां करना, नुस्खे, मानवों, पादपों और जन्तुओं के लिए औषधियां, जन्तुओं, पूर्व सूचना देना और चमत्कारों के लक्षण आदि से सम्बन्धित है। उपरोक्त सभी विषयों पर लोगों को साधारण भाषा में व्यवस्थित सूचनाओं की आवश्यकता है। सामान्य तौर पर यह पुस्तिका मानव जाति की रूचि के विभिन्न विषयों के वर्तमान कार्यों की आपूर्ति करता है। शीर्षक से तात्पर्य है "मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य" जो कि दोनों विषयवस्तु और व्यवहार (रीति) की ऊपर वर्णित विषयों की सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण करता है।

यह भारत के इतिहास के मध्यकाल में क्षेत्रीय भाषाओं के उदित होने का काल (समय) था। बड़ी संख्या में लोग संस्कृत भाषा के ज्ञान से धीरे–धीरे पृथक हो रहे थे। यद्यपि 18 वीं सदी के अन्त तक वेदों और शास्त्रों और दो महाकाव्यों में बहुत टिप्पणियां निरन्तर संस्कृत में लिखी जा रही थी, कई शोध प्रबन्ध (पुस्तक) इसके प्रमाण है, विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अधिक रचनायें थी। शैक्षणिक क्षेत्रों से सम्मान प्राप्त हो रहा था। संस्कृत के दो लोकप्रिय महाकाव्य रामायण और महाभारत जो कि दोनों पहले से ही अनुवादित थे या इनकी विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रतिपादन (अनुवाद) करने की प्रक्रिया चल रही थी । इस काल के दौरान संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं के अन्दर चल रही शैक्षणिक गतिविधियां निरन्तर पास–पास आ रही थी। ज्यादातर क्षेत्रों में संवाद के लिए क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग किया जाता था और संस्कृत के ज्ञान रखने वाला ही संस्कृत भाषा में प्रवीण होता था, जो कि उसको (कुशल / दक्ष) सुगमता से जान सकता था। विभिन्न क्षेत्रों के ज्यादातर शासक, आमजनता की दिलचस्पी के कारण गतिविधि को क्षेत्रीय भाषाओं में प्रोत्साहित करते थे।

कर्नाटक के अन्दर राजा साहित्यिक और शैक्षणिक कृतियों के लिए कवियों और विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को चालुक्य राजाओं द्वारा प्रोत्साहित किया जाता था। जबकि पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वरदेव ने एक विश्वकोष प्रतीक मनसोल्लास की संस्कृत भाषा में रचना की थी। "लोकोपकार" का वर्तमान कार्य चावुन्द्राय को दिया गया था, चावुन्द्राय पश्चिमी चालुक्य राज्य में एक कवि थे जिन्होने लोकोपकार की रचना कन्नड़ में की थी। मनसोल्लास और लोकोपकार दोनों के सारांशो मे बहुत ज्यादा समानता थी। ये दोनों रचनाएं (पुस्तके) एक ही समय और एक क्षेत्र में संकलित की गयी थी। इस समय की साहित्यिक गतिविधियों को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

[1]B-1, Kanakalaxmi Apartments, Street No. 6, Hardikar Bagh, Himayatnagar, Hyderabad 500 029, Andhra Pradesh, India
[2]22-6-740, Ambika Nilayam, Panjesha, Dekchigulli, Hyderabad 500 003, Andhra Pradesh, India.

- महत्वपूर्ण संस्कृत साहित्य और विज्ञान के मूल–पाठों से टिप्पणियों की संस्कृत में रचना करना।
- महत्वपूर्ण और लोकप्रिय संस्कृत कार्यों का क्षेत्रीय भाषाओ में अनुवाद करना।
- संस्कृत महाकाव्यों, पुराणों और शास्त्रीय (प्रतिष्ठित) मूल–पाठों की क्षेत्रीय भाषाओं मे मौलिक प्रतिलिपियों की रचना करना ।
- विश्वकोष सृष्टि (प्रकृति) के कार्यों की संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं दोनो में रचना करना, जिसमें चुनकर प्रारम्भिक कार्यों की उपयोगी जानकारियों को चुनकर एक साथ करना था।

लोकोपकार अन्तिम श्रेणी के अन्दर उल्लिखित है। उपलब्ध अनेक उपयोगी और दिलचस्प विषयों की जानकारियां उस समय केवल संस्कृत में प्रतिपादित थी। उस काल में आम आदमी द्वारा उसको समझना और एक आम बोल चाल की भाषा में बोलने की आवश्यकता थी। लोकोपकार का मूल पाठ एक विश्वकोष प्रकृति (सृष्टि) का है, जिसको कन्नड़ में लिखा गया था, जो इस प्रक्रम (प्रक्रिया) का प्रतीकात्मक उदाहरण है।

लोकोपकार के अध्याय 9 का दस्तावेज पुराने कन्नड़ में था। उसमें जानवरों और जानवरों के रोगों से सम्बन्धित जानकारियां थी, जिसका कि उत्तरी कर्नाटक क्षेत्र के अन्दर 11 वीं शताब्दी के शुरू में प्रचलन था। अध्याय 10 सिर्फ सर्पदंश के उपचार से संबंध रखता है और अध्याय 11 जानवरों के लक्षणों से संबंध रखता है। प्रत्येक विषय का सम्बन्ध और उसका फैलाव तालिका 1 से साफ हो जाना चाहिए।

तालिका 1

लोकोपकार में वर्णित विषयों और जानवरों पर की गयी परिचर्चा

अध्याय संख्या	श्लोकों की संख्या	विषय	परिचर्चा किये गये जन्तुओं के मान	श्लोक संख्या
9	58	रोग और उपचार	गाय (मवेशी) घोड़ा हाथी	श्लोक 1 से 30 (30 श्लोक) श्लोक 31 से 56 (26 श्लोक) श्लोक 57 और 58 (2 श्लोक)
10	23	सर्पदंश	सर्प	श्लोक 1 से 23 (23 श्लोक)
11	41	जन्तुओं/पक्षियों के लक्षण	हाथी घोड़ा गाय (मवेशी) बकरी कुत्ता मुर्गा	श्लोक 1 से 8 (8 श्लोक) श्लोक 9 से 31 (23 श्लोक) श्लोक 32 से 35 (4 श्लोक) श्लोक 36 (1 श्लोक) श्लोक 37 और 38 (2 श्लोक) श्लोक 39 से 41 (3 श्लोक)

अध्याय 9 और 10 के सांख्यिकीय आंकड़ों को देखा जाये तो यह इस बात को प्रकट करता है, कि यहां लेखकों की दिलचस्पी केवल घरेलू जानवरों में थी, जिनकी सेवाओं की आवश्यकता विभिन्न उद्देश्यों के लिए मनुष्य को होती थी। स्थिर अवलोकन और अनुभव के आधार पर निश्चित बाह्य लक्षणों को वांछित गुणों को निर्देशक के रूप में पहचाना जाता था। अध्याय 11 में श्रेष्ठ संभावित ढ़ग से विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होने वाले सही प्रकार के जानवरों को चुनने के लिए, मदद करने वाले लक्षणों का वर्णन किया गया है। जबकि जानवरों (जन्तुओं) से निजी सेवाएं प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक होता था कि उनके स्वास्थ्य का पूर्ण

रूप से ध्यान रखा जाये। अध्याय 9 उस प्रकार के रोगों और उनके उपचार से संबंध रखता है। अध्याय 10 का संबंध सिर्फ सर्पदंश और उनके उपचार से है। यह विशेषकर गांवो में एक प्रकार की विशेष मुख्य समस्या थी। सामान्य रूप से खेतों के अंदर कार्य करने वाले किसानों और मजदूरों में तथा गांवों में निवास करने वालों के सामने इसका खतरा बना रहता था।

लोकोपकार के अध्याय 9 में जानवरों के रोगों और उनके उपचार की जानकारियों का वर्णन किया गया है, जो कि इस टिप्पणी के विवेचन (परिचर्या/विचार–विमर्श) का मुख्य विषय है। यह क्षेत्र के बाहर नहीं होगा इसलिए यहां पर भारत में इस विज्ञान के उद्भव पर संक्षिप्त में विचार किया गया है।

पश्वआयुर्वेद का उद्भव (जन्तुओं के लिए औषधि का विज्ञान)

प्राचीन भारत के अन्दर वेदों और वैदिक बलिदान के निकट सहयोग के साथ ज्ञान आगे बढ़ रहा था। इस विज्ञान का उद्भव वेदों के अन्दर अधिक था। आयुर्वेद, एक तथ्यात्मक भारतीय विज्ञान का जीवन है, अर्थववेद का उपवेद (सहायक) है। यहां यह सुझाव दिया है कि बहुत पहले आदमी जन्तुओं (जानवरों) के रोगों के उपचार के बारे में सोच सकता था, उस समय जन्तु अपने स्वाभाविक ज्ञान से अपने आपको उपचारित कर लेता था। यही एक स्त्रोत था। जिससे जानवरों के व्यवहार को जानकर आदमी ने विभिन्न रोगों की औषधि के ज्ञान को सीखा। अर्थववेद के एक *सूक्त* (8–7–23–25)[1] में बहुत महत्वपूर्ण मंत्रों के प्रभाव के बारे में बताया गया है। वे परिचायक (तथ्य) है कि जन्तुओं के व्यवहार के अवलोकन से आदमी को आयुर्विज्ञान (चिकित्सीय) विज्ञान को समझने में मदद मिलती थी।

अश्विनी कुमार (नसत्य और दसर) के ऋग्वेद में देवताओं के चिकित्सकों का वर्णन है, जो देवताओं और मानवों के अलावा गाय, पक्षी और घोड़ों का भी उपचार करते थे।[2] एक दूसरे स्थान पर[3] वे विषपाल, एक घोड़ी की टूटी हुयी टांग के स्थान पर लोहे की टांग की मरम्मत की स्तुति करते है।

महाभारत के अंदर, मादरी के दो पुत्रों, नकुल और सहदेव का अश्विनी कुमार, ईश्वरीय चिकित्सक से उत्पन्न होना निश्चित था। अश्विनी कुमार *अश्ववैधक* (घोड़ों की चिकित्सा) और *गोवैधक* (मवेशियों की औषधि) में भी प्रवीण (निपुण) थे। जब वे गुप्त रूप से राजा विराट की राधानी में छिपे हुए थे उस समय वे विराट के घोड़ों और मवेशियों की देख–रेख करते थे।[4] सहदेव को गायों में जनन–अक्षमता का एक बहुत विशिष्ट (विशेष) और अचूक उपचार का निश्चित ज्ञान था। एक अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कवि ने मूल–पाठ में इस बिन्दु को प्रतिबलित किया था कि सहदेव केवल एक प्रजनन नर को चुनते थे और गाय केवल उसकी गंध से गर्भधारण कर लेगी।

ब्रहमवैवर्ता पुराण के अनुसार नकुल ने *वैद्यक सर्ववस्व* (औषधि विज्ञान में सम्पूर्णता) की रचना की थी। अग्निपुराण, गरूड़पुराण और बहुत से दूसरे पुराणों में जानवरों के रोगों के उपचारों के विषय की अधिक जानकारी अन्तर्विष्ट थी।

वैदिक दिनों के अन्दर, गायों को सर्वाधिक बहुमूल्य धन माना जाता था। जब आदमी ने खेती करना सीखा था तब जुताई या हल चलाने में बैलों के महत्व का ज्ञान हुआ था। जब

कृषतिस (मानवीय भूमि व्यवस्था) बढ़ने लगी और उसका विस्तार होने लगा था, तब सरकार ने उसके महत्व को समझा था (मनुस्मृति VII–1)। बड़े और छोटे राज्य अस्तित्व में आये थे, तो उनकी सेनाएं उसको प्रतिद्वन्दी (प्रतिस्पर्धी) से बचाती थी (कौटिल्य IX–2)। ये सेनाएं चार भागों से मिलकर बनी होती थी। (1) पैदल चलने वाले सैनिक और चलते समय लड़ाई करने वाले योद्धा। (2) घोड़ों (3) हाथियों (4) रथ (घोड़ों द्वारा चलित) बहुत प्रचीन समय से ही मवेशियों, घोड़ों और हाथियों को घरों मे पाला जाता था और उनके रोगों का उपचार, पशुओं के पालने का आवश्यक भाग होता था। इसी ने *पश्वआयुर्वेद* (जानवरों में औषधि विज्ञान) के उद्भव और वृद्धि का रास्ता दिखाया था। यह अनिवार्य बात फिर भी मान लेना चाहिए कि विज्ञान का कार्यक्षेत्र इन जानवरों के लिए हमेशा से ही बाधित था।

जानवरों जैसे– घोड़ों, हाथियों और मवेशियों आदि की अधिकांश बीमारियों (रोगों) और विकारों के ईलाज के लिए की गयी अनुशंसा का सीधा सम्बन्ध आयुर्वेद से था। आयुर्वेद जीवन विज्ञान का आधार है जो प्रत्यक्ष रूप से मानव रोगों और उनके उपचारों के ईलाज के लिए है, जो कि सामान्य रूप में सैद्वान्तिक आधार पर एक अच्छा गुणवत्ता जीवन प्रदान करती है, विशेषकर मानव जाति के लिए। विज्ञान मानव–अभिव्यक्ति को चार प्रकार से स्वीकार करती है। *जरायुज* (कोख / गर्भाशय जन्म लेना), *अंडज* (अण्डा जन्म लेना), *स्वेदज* (पसीने का उत्पन्न होना) और *उद्बीज* (अंकुरित होना) आदि। सभी प्रकार के जीवधारियों के रोगों और इलाजों के लिए यह पाठ्यक्रम समीप जाने के लिए मार्गदर्शिका का काम करता है। आयुर्वेद की मार्गदर्शिका, मूलभूत सिद्वातों और पद्धतियों आदि को जिसमें मानव से सम्बन्धित विषयों को छोड़कर उनका विस्तृत वर्णन किया गया है।

हमारे आलेख आयुर्वेद के संदर्भ में वृक्षायुर्वेद (एशियन एग्री–हिस्ट्री 10:9–31) में विस्तार से वर्णित किया गया है। बाद में इस शास्त्र के विद्वानों (पंडितों) ने विशिष्ट विषयों पर स्वतंत्र रूप से कार्य किया था। जैसे– जन्तुओं और पेड़ों आदि का ध्यान केन्द्रीकरण करते हुए *पश्चआयुर्वेद* से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन कार्य इस प्रकार से हैं।

- भोज का शैलीहोत्र (अश्वआयुर्वेद): घोड़ों के जीवन का विज्ञान (सन् 1800 ईसा पूर्व)[5]
- पंडित (मनीषी) पलकप्य की हस्तआयुर्वेद: हाथियों के जीवन का विज्ञान (सन् 1000 ईसा पूर्व)[6]
- अग्निपुराण (छन्द 286 से 297): घोड़ें, हाथियों और मवेशियों के रोग और उपचार।
- गरूड़पुराण (छन्द 197, 201, 207): घोड़ें, हाथियों के रोग।
- अश्व चिकित्सा (घोड़ी के विभिन्न रोग और उनके उपचार) और गजचिकित्सा (हाथियों के विभिन्न रोग और उनके उपचार) सोमेश्वरदेव की मनसोल्लास के अध्यायों से।
- पंडित पाराशर की कृषिशसना के अन्दर मवेशियों के विभिन्न रोग और उपचार ।

वर्तमान अध्ययन लोकोपकार के अध्याय 9 और 10 के सारांशों कि ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो कि आयुर्वेद सदंर्भ का अहसास कराता है।

परिचायक टिप्पणियां:

मानव जीवन को छोड़कर सिद्वान्त रूप में यह हमेशा से ही स्वीकार किया जाता रहा है कि *पश्वआयुर्वेद* या *वृक्षायुर्वेद* (पादपों के लिए औषधि विज्ञान) उपयोगों और विस्तारों के आयुर्वेद रूप है।

मूलभूत सिद्वान्तों और विचारों, रोगों और उनके लक्षणों, औषधियों और उपचार विधियों में, ज्यादातर मानव रोगियों के विज्ञानों के अन्दर समानता पायी जाती है। स्थिर स्वतंत्र शोध प्रबन्धों की रचना की गयी थी जो कि पादप जीवन और जन्तुओं के रोगों के विज्ञान से रूपान्तरणों प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित थी। रोगी को औषधियों और उपचार में गुणात्मक और मात्रात्मक रूपान्तरणों की आवश्यकता होती है, यही मूलभूत भिन्नता है। जबकि रोगात्मक (रोगविज्ञान) और औषध शास्त्रीय के सिद्वान्तों में ज्यादातर समानता होनी चाहिए। शारीरिक (शरीर रचना/संरचनात्मक) और दूसरे व्यवहारिक विभेदों के कारण रोगी के अनुसार बदलाव की आवश्यकता होती है। ये बदलाव क्या थे ? विज्ञानों की अलग–अलग शाखाओं में उपचार में परिवर्तनों के कारण कैसे न्यायसंगत हुए ? किस हद तक औषधि का सामान्य तंत्र मानवों, जानवरों और पादपों के आधार पर कार्य करता है। इन सभी विषयों पर अभी गहराई से अध्ययन की आवश्यकता है। इस टिप्पणी का सम्बन्ध लोकोपकार के अध्याय से है जिसमें जानवरों के रोगों और उनके उपचारों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है।

मवेशियों के उपचार के अन्दर गायों के विकारों पर जोर दिया गया है। लेखक ने साधारण आदमी के लिए इसको लिखा है। यह तथ्य हमें ज्ञात है, कि भारत में इस काल के दौरान प्रायोगिक रूप में प्रत्येक परिवार में गायों (भैसों) को पाला जाता था, जो कि घर से जुड़ी हुयी छोटी सी गोशाला होती थी। इसीलिये लेखक ने गाय के रोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। ब्याने आदि से सम्बन्धित समस्याओं पर इसीलिए काफी विस्तार से विचार–विमर्श किया गया है। कृषि पर कार्यों जैसे कृषिशसान जो कि मवेशियों के रोगों से सम्बन्धित है में मुख्य रूप से बैलों पर सान्द्रित है। यहां खेत जोतने के संदर्भ में बैलों के विभिन्न रोगों पर जोर दिया गया है जो कि मुख्य रूप से बैलों के स्वास्थ्य का मामला है। कंधों का दर्द, टांग का टूट जाना, लगड़ीचाल (लगड़ापन) आदि जो कि खेतों में जुताई के समय बैलों द्वारा खिंचाई के दौरान आसानी से होने वाले अतिसंवेदनशील रोग है। इन विषयों को ध्यान में रखकर, लोकोपकार में इन विषयों पर विचार किया गया है जो कि कृषिशास्त्र के कार्यों का पूरक है। घोड़ें और हाथियों की सेवा राजाओं और धनवान लोगों के लिए होती थी। लेखकों ने यहां पर इन विषयों के प्रस्तावों पर वर्णन किया है जो थोड़े से अलग है। हाथियों के रोगों के उपचारों को बहुत संक्षिप्त में लिया है।

लोकोपकार में आयुर्वेद के मूलभूत सिद्वान्तों के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से उपचारों की अनुशंसा की है, आयुर्वेद के अनुसार जन्तुओं के रोगों का मुख्य कारण *वात–पित्त–कफ* का असंतुलन है। लेखक ने गोजातीय (मंद बुद्धि) रोगों के उपचार के लिए औषधि सिद्वान्त को वर्णित नहीं किया है, उसी को इसमें स्वीकृति के लिए लिया गया है। वह विज्ञान के प्रायोगिक विषय से ज्यादा संबंधित है। कुछ अपवादों को छोड़कर लेखक ने रोगों के तकनीकी नामों को कथित नहीं किया है या उनके कारणों और लक्षणों को (सीएफ. कृषिशासन अध्याय 4 तुलना के लिए) लोकोपकार का शीर्षक बिल्कुल सही है, यहां पर वैज्ञानिक ज्ञान को अशिक्षित जानवरों के मालिकों के कल्याण के लिए अप्राविधिक (अपारिभाषिक) भाषा में लिखा गया है। जो कि ज्ञान के वास्तविक लाभार्थी होते थे।

सर्पदंश, अध्याय 10 में दिया गया विषय भी आम आदमी से संबंधित है। यहां पर लेखक द्वारा की गयी सर्पदंश उपचारों की अनुशंसा में बताया है कि उपचार स्थानीय आस्थाओं और अंधविश्वासों से प्रभावित थे।

शीर्षक से यह संकेत मिलता है, कि यह कार्य आम आदमी के कल्याण को अभिप्रेत करता है और इसलिये स्फूर्ति लाता है। इसका प्रस्तुतीकरण ऐसा दिखाई देता है जैसे कि लोकसाहित्य का संकलन (संग्रहक)। अभी तक का प्रमाण निम्न परिचर्या से है, पूर्ण रूप से लिया गया है, विषय वस्तु को दृढ़तापूर्वक *शास्त्रों* के अंदर से लिया गया है। लोकोपकार में जो चिकित्सकीय उपचार जानवरों के रोगों के उपचार के लिए वर्जित किये गये है, उन सभी का भारतीय चिकित्सीय विज्ञान, आयुर्वेद में मजबूत आधार है।

शैलीहोत्र और मनसोल्लास के मूल–पाठों में जन्तुओं के रोगों के बारे में दिये गये वर्णन में पहले उनके आहार (पोषाहार) और जन्तुओं के स्वास्थ्य के बारे में बताया गया है और उसके बाद उनके रोगों और उपचार का वर्णन दिया गया है। लोकोपकार के लेखक ने जन्तुओं के स्वास्थ्य में सम्बन्धित कोई दिशा या अनुशंसा नहीं की है।

लोकोपकार में रोगों के सिद्वान्त, लक्षण, कारण या निदान आदि का कभी–कभार वर्णन किया गया है। लेखकों ने ज्यादातर प्रत्यक्ष और प्रायोगिक रूप को अपनाया है।

कुछ रोगों के मामलों में दो या तीन उपचारों की अनुशंसा की गयी है, मनसोल्लास और शैलीहौत्र में लेखकों ने मृदु दवाओं से शुरू किया और दिया गया उपचार जो कि उत्तरोतर आक्रमणशील हो जाता है। लोकोपकार में कभी–कभी (यदा–कदा) वैकल्पिक उपचारों की अनुशंसा की है। लेकिन वे बिना क्रमबद्धता संकेत के हैं या उनको देने के क्रम का महत्व ।

आयुर्वेद के सिद्वान्तों के अनुसार *अनुपन* (औषधि का धारा–प्रवाह वाहन) औषधियों के अंतर के स्वाभावों को बताता है। लोकोपकार के लेखक ने विभिन्न *अनुपनों* के कुछ मामलों के सिद्वान्तों का उपयोग कर अनुशंसा की है लेकिन पुनः उसके महत्व के बारे में कुछ नहीं बताया गया है।

रक्तमोक्षन (रूधिरवाहिनीशिरानस–विफलता या रक्त बाधा) आयुर्वेद में एक आम उपचार है। *पश्वआयुर्वेद* के दूसरे लेखकों के मूल–पाठों में इसकी अनुशंसा की गयी है, लेकिन लोकोपकार में इसको संदर्भित नहीं किया गया है। संभवतः यह उपचार केवल निपुण (विशेषज्ञ) की उपस्थिति में ही सम्पन्न हो सकता है और इस पुस्तिका में आम आदमी के लिए कोई स्थान उद्धिष्ट नहीं किया है। इसके अलावा, आयुर्वेद के अन्दर, वहां पर दो स्कूलों (विद्यालयों) का अस्तित्व था। एक चरक का अनुगामी है, जो *पंचकर्म* उपचार पर निर्भर है। (औषधि रूप में पांच प्रकार के उपचार जैसे – वमनकारी औषधि को देना, विरेचक (शोधक/रोचक) औषधियां, कान, आंखों आदि के द्वारा औषधि देना और दो प्रकार के वस्तिकर्म (एनीमा) तैलीय (तेलयुक्त) बिना तेलयुक्त आदि। इस चिकित्सा को *कायचिकित्सा* के नाम से जाना जाता है। दूसरा सुश्रित का आगामी (अनुगामी) है जो कि *शल्यचिकित्सा* (शल्यक) पर जोर देता है, जिसको *शल्यचिकित्सा* के नाम से जाना जाता है। इस विद्यालय में रक्त जाने देना (अनुमति देना) की बहुधा अनुशंसा की है। स्पष्ट रूप से लोकोपकार में जो लेखन किया गया है, वो चरक विद्यालय का अनुगामी है।

एक मुख्य विभेद (अन्तर) मानवों और जन्तुओं के उपचार में यह है कि जानवरों को ज्यादा मात्रा में दवाईयों की खुराक का देना। स्पष्ट करता है कि यह जन्तुओं के आकार और वजन में ज्यादा अंतर होने के कारण है। कुछ मामलों के अन्दर लोकोपकार के लेखक ने जड़

सहित पूर्ण पादप का उपयोग औषधि निर्माण में किया गया है। यद्यपि एक पादप के सभी पांच अवयवों (*पंचांग*) जड़ों सहित मानव के लिए अधिक नुस्खे दिये गये हैं। ज्यादातर मामलों के अन्दर बहुत छोटे पादप को निर्धारित किया गया है।

लगभग 90 प्रतिशत दवाईयां या औषधियां (जन्तुओं के रोगो में दी जाने वाली औषधियां) मानवों को दी जाने वाली औषधियों के समान है। बची हुयी औषधियों को आयुर्वेद के मूल–पाठों में नही ढूंढ़ सके। कुछ निर्णायक (अत्यंत महत्वपूर्ण) प्रश्नों के उत्तर इनमें हो सकते हैं जैसे कि जन्तुओं और मानवों में अतिसूक्ष्म संवैधानिक विभेद होता है यद्यपि दोनों समरूप (समान) सजीव प्रजक अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, जीवन के रूप का अलग होना, उसका कारण है पांच मूलभूत तत्वों (आकाश, हवा, आग, पानी और पृथ्वी) के अनुपात का अलग–अगल होना। जिसमें आग सर्वाधिक प्रबल (प्रमुख/प्रधान) है। ये सभी जीवधारियों में *वात, पित्त* और *कफ* को प्रकट करते हैं। *जठरांग्नी* (पाचक अग्नि) जो कि शरीर में सबसे अधिक प्रभावी (प्रमुख/प्रबल) है। भगवद्गीता (XV-14) में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते है "मैं *वैश्वनर* होता, जीवन की आग और मैं स्वयं जीवधारियों के शरीरों में प्रकट होता। जीवन श्वांसों (सासों) के साथ मिलकर मैं चार प्रकारों के भोजन को पचा लेता। ज्यादातर पदार्थों को जबानी से दिया जाता है और ये भोजन के तरल के जरिये कार्य करते हैं जो कि इस आग द्वारा नियंत्रित होते है। शारीरिक (दैहिक) और उपचार में अन्तर का यह एक कारण हो सकता है।

निम्न विधियों का प्रस्तुतीकरण नीचे दी गयी टिप्पणी के निम्नलिखित भाग (अंश) में किया गया है।

1. अध्याय 9 के मूल–पाठ को तीन खण्डों (भागों) जैसे–मवेशी, घोड़ों और हाथियों में विभाजित किया गया है। उसके बाद अध्याय 10 में सर्पदंश के उपचारों को वर्णित किया गया है।
2. आतंरिक रूप से रोगों को मूल–पाठ के अनुसरण द्वारा आंतरिक रूप से वर्गीकृत किया गया है।
3. सामान्यतः प्रत्येक श्लोक का संबंध स्वतंत्र विषय से है। कभी–कभी दो या अधिक श्लोकों को संयुक्त किया गया है।
4. सर्वप्रथम रोग को पहचानने के बाद उपचार के लिए मूल–पाठ में पदार्थों की सूची दी गयी है और संख्याकित (क्रमांकित) किया गया है।
5. निर्धारित किये गये पदार्थों के गुणधर्मों पर विचार किया गया है और रोगों के संदर्भ में टिप्पणी की गयी है। इस भाग को स्त्रोतों के संदर्भों से प्रमाणीकरण किया है। यदि भिन्न निश्चित नहीं होता, लघु कोष्ठक में दी गयी संख्याएं द्रव्यगुणविजनन की पृष्ठ संख्याओं का संकेत है। (शर्मा 1956) चरक सुश्रित और वाग्भट के मूल–पाठों का पूर्ण टिप्पणी में पक्का आधार है। लेकिन विशिष्ट बिन्दुओं को अपने अपने मूल–पाठों के अंशों (खण्डों) अध्यायों और श्लोकों (परिच्छेदों) को सदर्भो द्वारा प्रमाणीकृत या सिद्ध किया गया है। कभी–कभी कथनों को आयुर्वेद के दूसरे मूल–पाठों द्वारा प्रमाणीकृत किया गया है।
6. अनुवादक वाल्मीकि श्रीनिवास अयंगर ने अपने आमुख में घोषित किया है कि अध्याय 9 में मूलतः 256 श्लोकों को संक्षिप्त करके 58 श्लोकों में रूपान्तरित किया गया है जो कि

वर्तमान प्रकाशन के मूल आकार से एक चौथाई से भी कम है। अध्याय 10 में मूलतः 53 श्लोकों को यहां पर 23 श्लोकों में रूपान्तरित किया गया है जो कि मूल आकार के आधे से भी कम है। अवलोकन (प्रेक्षण/टिप्पणी) समीक्षा जो तैयार की है वो इस भाग के लिए सीमित है। ज्यादातर पादप के नामों को संस्कृत में दिया गया है (इस पुस्तक की पादप सूची में देखें।)

मवेशियों के रोग और उपचार (अध्याय 9)

बांझपन (*बन्ध्यत्व*)

श्लोक 1–उपचारः

बांझपन या बन्धयता गायों मे पाया जाने वाला एक गम्भीर विकार है। आयुर्वेद के अनुसार यह या तो निरकुंश या प्रासंगिक है।

गायों में इसके होने का कारण जैसा कि औरतों में विभिन्न कारकों की वजह से जिसमें सामान्य कमजोरी सम्मिलित है। वर्तमान मूल–पाठ में इस हालत के लिए कोई विशिष्ट कारण वर्णित नहीं किया गया है लेकिन बाह्य उपचार का सुझाव दिया है और उसका संकेत सामान्य स्वास्थ्य से है या आन्तरिक जननांगों जैसे गर्भाशय की हालत जो कि सभवतः बांझपन का कारण नहीं है। उपचार से यह अनुमान लगा है कि बांझपन प्रासंगिक प्रकार है और यह कुछ बाह्य कारक जैसे घाव या योनि पथ (योनि दोष) के विकृत (अस्वस्थ) के कारण होता है। चरक ने कई योनि विकारों[9] का वर्णन किया है। जिससे औरतों में बांझपन की समस्या हो जाती है। यहां पर यदि बांझपन का कारण आंतरिक विकार है, यहां पर उपचार में प्रयुक्त की गई सामग्रियों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अत्यधिक उष्मा द्वारा पित्त (पित्त दोष) का असंतुलन हो जाता है जो कि बांझपन का मुख्य कारण है जो यहां पर संदर्भित है। इसकी वजह से इसको अंधकार में छोड़ देना और घृणित बदबूदार योनि भग और योनि नाल में जीवाणु की उपस्थिति को प्रेरित कर सकती है। जो कि आगे भ्रूण के निर्माण में बाधा उत्पन्न करता है।

भेड़ घी (कोई भी सामान्य घी) घाव रोगहर[8] का कार्य करता है और मादा बकरी[8] से बनाया घी तीन में से किसी एक दोष के कारण उत्पन्न विकारों को निश्चित रूप से ठीक करता है। इसकी विशेषकर योनि विकारों (सुश्रित, सूक्ति 45–101) के लिए अनुशंसा की गयी है। घी सूजन(शोध), जलन और दर्द में भी प्रतिकारक की तरह कार्य करता है। *उषिरा* के रस का गुणधर्म शीतलन[10] होता है। उपचार संभावित पित्त दोष को ठीक कर भ्रूण निर्माण के अवरोध को दूर करता है।

आयुर्वेद में औरतों में बांझपन के लिए बाह्य उपचारों की अत्यधिक अनुशंसा की गयी है।[11]

गर्भाशय में अटका हुआ मृत बछड़ा (*मृतगर्भ*)

श्लोक 2 – उपचारः

बाकुची (*बावची ?*), *तिल,* सेम (*लेबलेब पुरप्यूरिस ?*) (संस्कृत में इसके समकक्ष कुछ स्थापित नहीं किया जा सका) के पाउडरों के मिश्रण को गाय या भैंस को खिलायें।

आयुर्वेद के अनुसार *बाकुची* के बीज एक तंत्रिका (नस) टॉनिक होता है, जो कि हृदय

और परिसंचरण तंत्र को उत्तेजित करते हैं। उसके बीज वाजीकर (कामोत्तेजक) भी होते हैं (गोगटे, पृ. 436/437)। *बाकुची* के बीज गर्भाशय को मजबूती प्रदान करता है और गर्भाशय में अटके हुए बछड़े को बाहर निकालने के लिए संकुचन (सिकुड़न) को उत्तेजित करता है। इसकी स्नेहक विशेषता के कारण यह दर्द को कम करता है। *तिल* (सीसम) मासिक की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। और गर्भाशय को मजबूती प्रदान करते हुए संकुचन को उत्तेजित करता है (भाव. 652)। संस्कृत में सेम के समकक्ष कुछ नहीं मिल सका। *अगस्थय* के फूल गर्भाशय को उत्तेजित कर मासिक प्रक्रिया पूर्ण करवाता है (भाव. 509)। इस प्रक्रिया में गाय के बछड़े को बाहर निकालने के लिए उसको उत्तेजित करने में मदद करता है।

जरायु (गर्भ के बाहर की झिल्ली) का अवरोधन (*अपर्वअरोध*)

श्लोक 3 – उपचार 1:

अगस्थ, मूंग (ग्रीन ग्राम), सेम, *बाकुची* बीज, *कंटकारी* बीज, *तिल* की खली और *कटुतुम्बी* पूर्ण पादप (जड़ो सहित) को दूध या औषध जल के साथ पीसकर गाय को देते हैं।

उपचार सामग्रियों के तर्कसंगत को समझने के लिए, यह आवश्यक है कि निर्धारित इलाज से जरायु की अवधारण के लिए कारण का अनुमान करना। पशु द्वारा बछड़े के जन्म होने के पश्चात् दोनों को भूख लगती है और यह एक रेचन अवस्था होती है। गर्भाशय में निर्वात होने से *समन वायु* (भूख, भोजन का सेवन और पाचन के लिए हवा जिम्मेदार होती है) सक्रिय होती है, और जरायु को ऊपर की ओर खींचती है या बछड़े का अचानक और सशक्त (जोरदार) निष्कासन, जिससे नाभि नली अचानक टूटकर, जरायु के साथ उसको ऊपर की ओर धकेलती है और इस समय गाय में इतनी शक्ति नहीं होती कि इसे आगे की ओर धक्का दे सके। इस हालत में गाय को तुरन्त पोषाहार देना ही इलाज है और उपचार पुष्टिकर और मजबूती प्रदान करने वाले पदार्थ होते हैं।

अगस्थ, बाकुची और *तिल* के गुणधर्मों की पूर्व में विवेचना की गई है। मूंग पुष्टिकर होता है जो हल्का और आसानी से पच जाता है। *कंटकारी* उत्तेजक होती है और इसका प्रभाव गर्भाशय पर होता है। *कटुतुम्बी* पुष्टिकर होती है और मजबूती प्रदान करती है साथ ही जरायु को बाहर निकालने में गाय की मदद करती है।

श्लोक 4 – उपचार 2:

गुंजा के बीज या *दूर्वा* (दूब) को जन्तु की गर्दन पर बांधे ।

गाय के अलावा यह उपचार घोड़ियों और हाथियों के लिए भी निर्धारित है।

गुंजा का बीज जहरीला होता है (द्रव्य. 601)। कैय्यत के अनुसार पिशाच (असुर) तारों और विषों के कारण होने वाले दुष्प्रभावों को निष्कासित करता है (602)। गर्दन पर बीज को बांधने से वो *सुशुमन* (मुख्य धमनी या नस) को उत्तेजित करता है जो कि पूरे तंत्रिका तंत्र को भी उत्तेजित करेगा। *गुंजा* की जड़ों का उपयोग भ्रूण गर्भपात के लिए भी किया जाता है (602)। इस वर्तमान मामले में यह जरायु को भी बाहर निकाल सकता है। *दुर्वा* को जब जबानी देते हैं तो यह रक्तस्त्राव और मूत्राशय नली में घावों के कारण होने वाली जलन को भी नियंत्रित करता है। (गर्दन पर बाहरी और बांधने से रक्त संचार को उत्तेजित करने का कार्य करता है)। बाहर की ओर शाक बांधने का उपचार *अर्थवनी चिकित्सा* के अर्न्तगत आता है (उपचार नुस्खों और मंत्रो से

बना होता है)। आयुर्वेद में चिकित्सकीय पदार्थ पांच माध्यमों से होकर क्रिया करते है उनमें से एक है *प्रभाव* शाक की एक चमत्कारिक (प्रतीयमान) शक्ति जो कि तर्कसंगत (युक्ति युक्त) स्पष्टीकरण की अवज्ञा करता है।

बछड़े के जन्म के बाद गाय अपने जरायु को खा जाती है

श्लोक 5 – उपचारः

सुसालु (अनुवाद देखें), *गुड़* (गन्ने से प्राप्त या अपरिष्कृत शर्करा) और *अगस्थय* को दूध के साथ पीसे (भाव. पृ. 759)।

बछड़े के जन्म के पश्चात् गाय निःशक्त (थकी–मांदी / निढ़ाल) और भूखी होती है। यदि तुरन्त आहार (पोषाहार) नहीं दिया जाता है तो गायों में यह सामान्य है कि वो जरायु को खा जाती है। *सुसालु* और गुड़ पोषण प्रदान करते हैं जबकी *अगस्थय* और दूध पुनः मजबूती प्राप्त करने के लिए निर्धारित है।

संभावित असामयिक प्रसूति (प्रसव) के संकेत (*अकलप्रसूतिसंभव*)

श्लोक 6 – उपचारः

यदि गाय के गर्भकाल समय से पूर्व बछड़ा गर्भाशय से बाहर आ जाता है तो उसे अम्लीय दलिये से धोयें, उसके बाद *ककमची* फलों या *अपामार्ग* की जड़ों का आलेप करें और मुट्ठी में भरकर पीछे धकेलें ।

अम्लीय दलिया, खाद्यान्नों के अम्ल से बना होता है और इसकी पुनः स्थापित करने के लिए अनुशंसा की गयी है (एएच. श्लोक 80)। यह भ्रूण को पुनः स्थापित करने में मदद करता है। *ककमची* तीन दोषों और दर्द के लिए एक प्रकार का प्रतिकारक (विषहर) होता है। (भाव. 438)। *अपामार्ग* जड़ों की रक्तस्त्राव को रोकने के लिए अनुशंसा (भाव. 416) की गयी है। यह *अपन वायु* को ऊपर की ओर धकेल सकता है जिसके कारण भ्रूण को संकुचन से नीचे की ओर जाने से रोकता है।

नये जन्में बछड़े का बहिष्करण

श्लोक 7– उपचारः

मस्त प्रकन्दों, *नमक,* पीसा हुआ जीरा आदि को छाछ में मिलाकर बछड़े का विलेपन करे। बछड़े को गाय के सामने बैठा दे ।

मस्त बछड़े में त्वचा की कमियों को दूर करता है। बछड़े में इस तरह की कमियां और दूसरी त्वचा की समस्याएं विकर्षक (घिनारना) की तरह हो सकती है और इनके समाप्त हो जाने पर गाय बछडे की ओर आर्कषित हो सकती है। *मस्त* प्रकन्दों को नयी मां के शुद्धिकरण और उसके दूध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए भी निर्धारित किया गया है (305) और गाय के अन्दर अपने बछडे की ओर आकर्षण की भावना उत्पन्न होती है। *लवण* (नमक) *स्त्रोतस* (शरीर के लिए पोषक तत्वों को सम्प्रेषित करने का माध्यम) का शुद्धिकरण करता है और पाचक रस के स्त्रवण को बढ़ाता है। यह एक क्षुधावर्धक की तरह भी कार्य करता है (चरक सू. 46; भाव. 154)। यह गाय को बछड़े की त्वचा चाटने के लिए तुरन्त तैयार करता है। जीरे में बहुत ही रूचिकर खुशबू होती है जो कि स्वादकलिका को उत्तेजित करती है (चरक सू. 46)। यह गाय को बछड़े की ओर

आकर्षित कर सकता है। यह दर्द निवारक होता है (303) और गाय को दर्द से मुक्ति दिलाता है। छाछ पोषण प्रदान करती है और नयी मां के दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है।

गाय का उग्र होना

श्लोक 8 – उपचार 1:

करमुक लकड़ी को बकरी के मूत्र में पीसकर गाय की आंखों पर लगायें।

करमुक हृदय को शांत रखता है। यह बढ़े हुए रक्त चाप और भावनात्मक आवेश को कम करता है (586)। मनोदशा (मिजाज) अंसतुलन के लिए बकरी का मूत्र तेज, संकोचक (स्तम्भक) और एक प्रकार का विषहर (प्रतिकारक) होता है (चरक सू. I–100)। इस विरोधी (प्रतिद्वन्द्वी) पदार्थ के चुनने को, शीघ्र परिणाम प्राप्त करने के लिए वाहक *(गमीत्व)* के रूप में प्रस्तावित किया जा सकता है। आंखों पर लेप लगाने को तकनीकी रूप में *अंजनकर्म* कहते है और यह एक प्रकार का साधारण उपचारी माप है जिसकी आयुर्वेद में अनुशंसा की गयी है। इस उपचार विधि का वास्तविक सिद्धान्त और इसके पीछे का तर्क पता नहीं चल सका है। फिर भी यह पारंपरिक (परम्परागत) पद्धति है और अनुभव बताते हैं कि इससे अच्छे परिणाम प्राप्त हुए है। यह एक सामान्य अनुभव है कि जब भी कभी आंखों में कोई तेज पदार्थ डाला जाता है तो उसकी वजह से आंखों में अचानक संकुचन होने लगता है जो कि बचाव प्रतिक्रिया और सहज रूप से सभी भौतिक शरीर की नैसर्गिक क्षमता के निष्कासन के लिए होता है। वर्तमान मामले के अन्दर यह गाय की उग्रता को कम करती है और उसको ज्यादा आज्ञाकारी बनाती है।

श्लोक 8 – उपचार 2:

रजिक, वचा और *वरूण* (हिन्दी में *बरन* ?) बीजों को बकरी के मूत्र में पीसकर, इस लेई को गाय की आंखों पर लगाये।

रजिक तीक्ष्ण और *अग्निमय* (आग्नेय) होता है जिसमें बहुत जोरदार बदबू आती है। यह मूर्च्छा के लिए निर्धारित है (109)। वसा का उपयोग नशे के अन्दर बेहोशी की दवा के रूप में उपयोग किया जाता है। बकरी मूत्र के गुणधर्मों का विवरण पूर्व में किया गया है। आंखों पर लेप का उपचार गाय को शांत करता है।

पदार्थों के मूल–भूत गुणधर्मों के लिए पत्थर खरल की विशेष रूप से अनुशंसा की गयी है। जिससे कि धीमे रूप से पीसी गयी अभिक्रिया निष्फल नहीं होती है।

एक जंगली गाय का दूध देने से इंकार करना

श्लोक 9 – उपचार:

अग्निमंथा की जड़ें, *गरभड़ा, कंटकारी* और *अर्क* में नमक मिलाकर छाछ के साथ पत्थर के खरल में पीस लें। गाय को इस लेई के साथ विलेपित करे।

अग्निमंथा कफ और वात असंतुलन को दूर करता है, खाद्य वाहिका को शुद्ध करती है और तमोगुण (मानसिक उदासी, अज्ञान या अनभिज्ञता) के लिए प्रतिकारक (विषहर) की तरह कार्य करती है, बर्बरता को रोकती है और सौम्यता (कोमलता) को प्रोत्साहित करती है (182)। *गरभड़ा* को सफेद *कंटकारी* भी कहते है और यह दूसरी *कंटकारी* की तरह भ्रूण निर्माण में आने वाले अवरोध को दूर करती है। जबकि यह मातृत्व को प्रोत्साहित करती है, यह कोमलता

(सौम्यता) का भी कारण है। *अर्क* खाद्य वाहिका को शुद्ध करती है और स्तन दूध को बढ़ाती है। यह गाय में कोमलता को विकसित करती है। *लवण* (नमक) और छाछ के गुणधर्मों का विवरण पूर्व में वर्णित किया गया है।

मुंह के रोग (*मुख रोग*)

श्लोक 10 – उपचार 1:

मुंह को गर्म पानी से धोयें। *सर्शप* तेल के साथ *अर्क* की पत्तियों को पीसें और इस लेई का गायों के मुंह पर आलेप लगायें।

अर्क दांतों के कीड़ों को निकालता या हटाता है (355)। *सर्शप* कीड़ों को मारता है (सुश्रित सू. 45)। तिल घावों को भरता है और खून (रक्त) को बहने से रोकता है। तिल के बीजों को चूसने से कमजोर दांत मजबूत होते हैं (सुश्रित सू. 46) ।

श्लोक 11 – उपचार 2:

कौवें के पंखों से गाय के मुंह को पोछंना चाहिए और उसको गर्म पानी से धोयें। सौंठ, पिप्पली और कौवें की लेई का आलेप लगाये।

कौवें के पंखों का उपयोग लार टपकने को हल्के से पोछनें के लिए किया जाता है। गर्म पानी का उपयोग प्रभावी सफाई और जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए किया जाता है। सौंठ *कफ* अंसतुलन और लार टपकने को दूर करने में लिए किया जाता है (263–265)। *पिप्पली* जीभ और गले को साफ करती है और एक पूरक *(योगवाही)* पदार्थ की तरह कार्य करती है (भाव. पृ. 222)। *मरिच* जीवाणुओं को मारती है, *कफ* को निष्कासित करती है और तीक्ष्ण दांत के दर्द में आराम देती है (295)।

खांसी (कास)

श्लोक 12 – उपचार 1:

शरपुंखा (वाइल्ड इन्डिगो) की लेई को दलिये में मिलाकर दें।

शरपुंखा कफ को निष्कासित करती है (440, 442)। दलिया *कफ* और *वात* असंतुलन को दूर करता है और सांस फूलने को कम करती है (एएच. श्लोक 79/80)। इसको छूने से प्यास और बुखार ठीक होता है और इसके उपयोग से कफ और वात ठीक होते है (च.सू. 27–192)।

श्लोक 12 – उपचार 2:

गाय की छाछ या घुले हुए चावल के पानी के साथ *अगस्थय* पत्तियों की लेई दें।

अगस्थय कफ को बाहर निष्कासित करती है (सुश्रित सू. 46)। छाछ *कफ* और *वात* को ठीक करती है (एएच. श्लोक 33)। चावल का पानी क्षुधावर्धक (रूचिवर्द्धक) का कार्य करता है और पाचन को बढ़ाता है (च.सू. 27–191) ।

एल्बूगो

एल्बूगो नेत्र रोग है जो कि कॉर्निया (आंख की पुतली की रक्षा करने वाला सफेद सख्त भाग) में मोतियां बिंद हो जाने के कारण होता है।

श्लोक 13 – उपचार 1:

अर्क पादप को जलाकर लकड़ी के खोल में रख दें। इसकी राख को मक्खन के साथ मिलाकर मरहम तैयार करें और लगायें।

अर्क खुजली, घाव और सूजन को ठीक करता है (352–355)। मक्खन का प्रभाव जल –शीतलक होता है जो *वात, पित्त* और रक्त के दोषों को दूर करता है (एएच. श्लोक 35, 36)।

श्लोक 13 – उपचार 2:

गुंजा जड़ों की पीसी हुई लेई से विलेपित करें।

गुंजा तीन दोषों के असंतुलन को दूर करता है और नेत्र रोगों को ठीक करता है (600, 602)।

सूजन (*शोथ/श्वायथु/शोफ*)

श्लोक 14 – उपचार:

भूम्यामलकि, नमक, मज्जा रस, *पटलगरूड़* की जड़ें और ऊदबिलाव के मरने के स्थान की *बिम्बी* आदि को औषध जल में पीसकर लगायें।

भूम्यामलकि सूजन को दूर करती है (496, 497)। नमक भी सूजन को दूर करता है और दर्द को कम करता है (753) । मज्जा को *वात* के कारण होने वाली सूजन के लिए अनुशंसा की गई है। यह मीठी होती है और मजबूती प्रदान करती है (च.सू. 27–295)। *पटलगरूड़ कफ* और *वात* के कारण होने वाले लक्षणों को दूर करती है और यह इनके कारण होने वाली सूजन का इलाज भी है। *बिम्बी* सूजन ठीक करती है (432)। कुछ स्थानीय मान्यताओं या प्रथाओं के अनुसार इसका किसी विशिष्ट स्थान पर उपचार किया जाता है। इसका यदि कोई औषधीय महत्व है तो उसका पता नहीं लग सका। औषधजल भी सूजन की एक औषधि है (च.सू. 27–181)।

फूला हुआ पेट (*अधमन*)

श्लोक 15– उपचार:

मरिष का पूर्ण पादप, चट्टानी नमक, अपरिपक्व बेल (*बिल्व*) फल, *निर्गुण्डी* पत्तियां, *वट* (बरगद) की कलियां, *धतूरे* की जड़ें, पदमा प्रकन्दों और *पोटकी* के पूर्ण पादप को पानी के साथ पत्थर की खरल में पीस लें और इस लेई को जबानी दें।

मरिष का सफेद प्रभेद पाचन को बढ़ाता है और लाल प्रभेद शोधक (विरेचक) का कार्य करता है (भाव. पृ. 665) । चट्टानी नमक की विशेषकर आमाशय रोगों के लिए अनुशंसा की गयी है (एएच. सू. 144)। *बिल्व* तीक्ष्ण पेट दर्द का एक प्रतिकारक (विषधर) है और पाचन को बढ़ाती है (च.सू. 25) *निर्गुण्डी* आमाशय के फूलने को ठीक करती है (60, 62)। *धतूरा* दर्द निवारक है, सूजन और संकुचन को ठीक करता है (भाव. 317)। *पोटकी* कब्ज (मलबन्ध/मलावरोध) को ठीक करती है (च.सू. 27, भाव. 665)। *वट* (बरगद) और पदमा का पता नहीं चल सका।

पेट दर्द (*उदरशूल*)

श्लोक 16–उपचार :

अदरक, लहसुन, *गजपिप्पली, मरिच लता, हींग, वनहरिद्रा* अपरिष्कृत शक्कर, *हरिद्रा वचा* और *यावनी* को एक साथ पानी के साथ पीसकर जबानी दे।

अदरक भूख की कमी को ठीक करती है और आमाशय के *वातदोष* को समाप्त करती है (263)। लहसुन पाचक की तरह कार्य करता है, यह दर्द को दूर करता है और *वात* को नियंत्रित करता है (65)। *गजपिप्पली* की भूख की कमी, अपाचन और तीक्ष्ण पेट दर्द में अनुशंसा की गयी है (223)। *मरिच* पाचन, भूख और *वात* को नियंत्रित करने में मदद करती है। *हींग* पाचन, भूख, दर्द में आराम आदि में मदद करती है और *वात* को नियंत्रित करती है (299)। *वनहरिद्रा* वात को नियंत्रित करती है। अपरिष्कृत शर्करा, मूत्र और मल (विष्ठा) का शीघ्र निष्कासन करती है (एएच. श्लोक 47)। लवण (नमक) पाचक है और शोधक (विरेचक) है और यह वातदोष को दूर करता है (चर. सू. 27–304)। *हरिद्रा* वात को नियंत्रित करती है (133)। *वचा* तीक्ष्ण पेट दर्द को ठीक करती है (21, 22)। इसके अतिरिक्त *यावनी* पाचन और पेट दर्द को ठीक करती है और साथ ही कीड़ों को नष्ट करती है (396)।

बुखार (*ज्वर*)

श्लोक 17–उपचार 1:

पीसी हुयी या कुचली हुई *वनमल्लिका* के इस को जबानी दें।

वनमल्लिका त्रिदोष हर है जिसका मतलब हैं कि यह सभी तीनों (द्रव्यों) के असुतंलन को दूर करती है। इसकी बुखार के लिए विशेष अनुशंसा का पता नहीं चल सका।

श्लोक 17 – उपचार 2:

निर्गुण्डी और नीम की पत्तियों का क्वाथ दें।

निर्गुण्डी अपच को ठीक करती है, तापमान को नीचे लाती है और टायफाइड के लिए इसकी विशेष रूप से अनुशंसा की गयी है (60)। नीम की अपचन और नियमित अंतराल के बाद आने वाले बुखार के लिए विशेष अनुशंसा की गयी है (लम्बे समय के लिए चिर स्थायी–*कलिक ज्वर*) (123)।

श्लोक 17 – उपचार 3:

कुलथ और *वरहिकंद* को अच्छी तरह से मिलाकर गर्म क्वाथ दें।

कुलथ जीवाणुओं (रोगाणुओं) को मारती है और बुखार को कम करती है (509)। *वरहिकंद* बुखार को ठीक करती है और इसके अतिरिक्त मजबूती को पुनः स्थापित करती है (भाव. 387)।

श्लोक 18 – उपचार 4:

निम्न जाति के लोगों की स्माधि स्थल की राख को लीप दें। चैन वाइपर की जली हुयी राख को भी लेप दें।

इनके गुणधर्मों का पता नहीं चल सका। संभवतः यह कुछ स्थानीय धारणाओं के कारण प्रचलन (लोकप्रियता) में आया था।

जन्तुओं में बुखार एक सामान्य रोग है इसको *शास्त्रों* में विभिन्न नामों और विभिन्न विषयों द्वारा संदर्भित किया गया है। मवेशियों में बुखार को *'ईश्वर'* (शक्तिशाली) के नाम से जाना जाता है। संभवतः नाम से यह संकेत मिलता है, कि यह अधिकतम विशिष्ट रोग है। विचित्र (अजीब ढंग से) फिर भी कृषिशसन में इसकी विशिष्टता का उल्लेख नहीं है।

स्नायविक (तान्त्रिकीय) विकार (नाड़ीविकार)

श्लोक 19–लक्षणः

सनसनाना (आहकरना या सरसराना), सिसकारी (फुफकार) कानों की लटकन या झुकना और बेहोशी के कारण गिर जाना। ये *कफ* के कारण होने वाले विकार के संकेत है।

श्लोक 19–उपचारः

चट्टानी नमक, सरसों, चावल आटा, *मरिच,* शोरा, खार अदरक आदि की लेई को चावल के दलिये के साथ दें।

चट्टानी नमक एक दर्द निवारक है और इसकी हृदय विकारों के लिए अनुशंसा की गयी है (एएच. सू. 144)। सरसों की अनुशंसा स्नायविक विकारों के लिए की गयी है (108)। *मरिच वात* को नियंत्रित करती है (भाव. पृ. 17)।

अदरक हृदय और नसों के कार्यों को उत्तेजित करती है (263)। चावल का दलिया हृदय विकारों को ठीक करता है (च.सू. 27–191)। इससे पदार्थों का महत्व पता नही चल सका।

श्लोक 20 – लक्षणः

फूला हुआ आमाशय, मुंह से नींबू जैसी गंध और वलित जीभ आदि। ये विकार के संकेत है, जिससे स्नायियक विकार होते हैं।

श्लोक 20– उपचारः

जीभ को बाहर खींचकर, इमली और नमक के मिश्रण का वलित जीभ पर लेप लगायें।

इमली के कारण लार टपकती है (द्रव्य पृ. 284)। सभी प्रकार के द्रव्यों के विकार के लिए नमक की अनुशंसा की गयी है।

वलित जीभ एक प्रकार का लक्षण होता है। उपचार भी लक्षण के आधार पर किया जाता है ना कि रोग के अनुसार।

श्लोक 21 – लक्षणः

कानों का लटकना, शरीर में कठोरता, अधखुली आंखों से देखना और आंखों का कुम्हलाना आदि। ये वात विकार के संकेत हैं जिसके कारण स्नायविक विकार होते हैं।

श्लोक 21 – उपचार 1:

रेशम के धागों की जली हुयी राख कों आंखों पर लगाते है। यह *अजंनकर्म* है जिसका वर्णन पहले किया गया है।

श्लोक 21 – उपचार 2:

नीम फलों के रस को कानों में डालें।

श्लोक 21 – उपचार 3:

कान से एड़ी तक के भाग में दागे। यह *अग्निकर्म* है जिसकी अनुशंसा स्नायविक रोगों के उपचार के लिए की गयी है।

उपरोक्त वर्णित तीनों उपचार विलक्षण (विशिष्ट) है और इसके पीछे क्या धारणाएं है इनको समझना कठिन है। आयुर्वेद में मानव रोगों में हमेशा ही इसकी अनुशंसा की गयी है। यद्यपि विधियों और पदार्थों के उपयोग का विवरण है, लेकिन उनके काम करने के सही तरीके का विवरण *शास्त्रों* में नहीं है।

ऐंठन रोग

यह एक प्रकार का स्नायविक विकार का रोग है।

श्लोक 22–उपचार:

गाय ऐंठन के समय जिस ओर गिरती है उसके दूसरी तरफ की नासिका छिद्र (नासाद्वार) की नस ढ़ीली पड़ जाती है।

आयुर्वेद में इस उपचार विधि को *शिरविमोचन* के नाम से जाना जाता है। (रगड़ने या मलने से नसों को आराम मिलना आदि, संभावित अवरोध को हटाना जिसके कारण ऐंठन होगी) और भावी रक्त परिसंचरण को नियंत्रित करना। हमेशा ही यह तथ्य माना जाता है, कि आधुनिक चिकित्सकीय विज्ञान में मस्तिष्क के दाएं तरफ की शिराएं (नसें) शरीर के बांये भाग को नियंत्रित करती है और विलोमतः। संभवतया नासाछिद्र में स्थित नसों का केन्द्र अतिसंवेदशील और शक्तिशाली होता है। यहां पर बतायी गयी उपचार की विधि इसकी पुष्टि करती है।

गैर –जुगाली *(कोगाइल)* (अरूचि)

श्लोक 23– उपचार 1:

त्रिकटु (तीन तीक्ष्ण पदार्थों का मिश्रण जैसे– *शुंथी, मरिच* और *पिप्पली*) की लेई को आंखो पर लेपें (देखे श्लोक 8)।

यहां पर पदार्थ तैलीय है और इसलिये ये कोमल (सौम्य) और शामक है। ये स्नायविक तंत्र पर कार्य करते हैं, उसको शिथिल करते है और उसके द्वारा *जुगाली* के प्राकृतिक कार्य प्रोत्साहित होते हैं।

श्लोक 23 उपचार 2:

रूई के बीज के आटे और घी को मिश्रित कर इसकी लेई को आंखों पर लेपें।

ऊपर लिखित विवरण को देखें।

क्षय रोग (कश्य)

श्लोक 24 – लक्षण:

यहां जो लक्षण दिये गये है वो गोश्त के क्षय *(मन्सक्षय)* (च. सू. 17–65) और वसा क्षय (*मेदक्षय*) (च. सू. 17–66) के समान होते हैं। इस रोग का सामना करने के लिए दिया गया उपचार वृद्धि और क्षुधावर्धक निर्धारण को प्रेरित करता है।

श्लोक 24 – उपचार 1:

पटलगरूड़, गिरीकर्निका और *कंठारी* को चावल के पानी में पीसकर जबानी दें।

पटलगरूड़, पाचक 'आग' (जठराग्नि) को उत्तेजित करती है और पूर्व में सेवन किया हुआ भोजन और अपचित भोजन को पचाने में मदद करती है, फलस्वरूप गाय को पोषित करती है (द्रव. पृ. 605)। *गिरीकर्निका* को *अपराजिता* के नाम से ज्यादा जाना जाता है। यह सभी तीन दोषों के लिए एक प्रतिकारक (विषहर) होती है। यह अपच (बदहजमी/अजीर्ण) को ठीक करती है। इसको बुद्धि और याददाश्त को उत्तेजित करने के लिए भी जाना जाता है (भाव. 342)। यदि किसी मानसिक कमजोरी के कारण भौतिक क्षय रोग होता है तो यह उसका सामना कर सकती है। *कंटकारी* का पता नहीं चल सका। चावल पानी पुष्टिकर होता है।

श्लोक 24– उपचार 2:

जानवर की गर्दन पर लौकी बांधें।

सुश्रित (सू. 45) के अनुसार, लौकी (*कटुतुम्बी*) निचले उदर (पेट) के अंदर संग्रहित हुए दोषों को दूर करती है। स्पष्टरूप से, क्षय रोग के होने का अनुमानित कारण यह है, कि पाचनशक्ति का कमजोर होना जिससे कब्ज हो जाता है। आयुर्वेद विज्ञान "गंध को सांस के साथ खींचने" को स्थापित करता है जिसका मतलब यह है, कि इस उपचार से वमन और शोधन (शुद्धि) होती है। यहां लौकी की कड़वी गंध शोधक का कार्य करती है जिससे गाय को कोई नुकसान नहीं होता है। लौकी की गंध अन्तःश्वसन द्वारा धीरे–धीरे गाय के शरीर गठन द्वारा अवशोषित होती रहती है। लगातार अन्तःश्वसन के लिए लौकी को जानवर की गर्दन पर बांधने की सिफारिश की गयी है।

मसूढ़ों का फोड़ा

श्लोक 25– उपचार:

हरिद्रा, सुरस, अधपुष्पी, मदार (द्रव्य. 134, 542, 192, 352) धतूरा और रसना (भाव 319, 79) आदि को गाय के मक्खन में पकाकर इस गर्म लेई को लगायें।

सभी पदार्थों के विभिन्न गुणधर्म होते हैं उनमें से कुछ सामान्य गुणधर्म जिनका की यहां सम्बन्ध है। सभी जीवाणुओं को नष्ट करते हैं, खुजली को दूर करते है, शुद्ध करना, प्रभावित ऊतकों को खुरचन द्वारा घावों को स्वस्थ करना और दर्द को दूर करना आदि।

खुर का फोड़ा

श्लोक 25– उपचार:

फोड़ें को काटकर उस पर *केतकी* और चट्टानी नमक की लेई को छाछ में तैयार कर लगायें।

केतकी जीवाणुओं को मारती है, शुद्ध करती है और घावों को स्वस्थ करती है (भाव. 118)। चट्टानी नमक दर्द को दूर करता है और स्नायुओं (नसों) को उत्तेजित करता है (द्रव्य. 755)। छाछ दर्द को दूर करती है और सूजन को कम करती है (च.सू. 27–229)।

नसों पर फोड़ा

श्लोक 26–उपचार 1:

जिंजिनी, वतम, लताकरंज, अर्क रस (या दूध) *मरिच, वनहरिद्रा, शुंथी* और *इन्द्रवरूणी* को तिल के तेल में पकायें और इस मिश्रण को लगायें।

तिल तेल अस्थिभंग के उपचार में मददगार होता है। यह शुद्ध घावों को स्वस्थ और शुद्ध करता है साथ ही दर्द को दूर करता है (द्रव्य. 100)। *जिंजिनी* घावों को स्वस्थ करती है। छाल से निर्मित तेल चिरकालिक (पुराने) घावों पर लगाते है (भाव. 532)। *वतम* स्नावयिक तंत्र को मजबूती प्रदान करता है (द्रव्य. 576)। *लताकरंज* सूजन को ठीक करती है, घावों को स्वस्थ करती है और दर्द को दूर करती है (द्रव्य. 539) । *अर्क* भी खुरचनों, शुद्ध करना और घावों को स्वस्थ करना और दर्द को दूर करना (द्रव्य. 352)। *मरिच* तीक्ष्ण होती है और पाचन अग्नि को उत्तेजित करती है। यह कीड़ों को समाप्त करती है, और दर्द को दूर करती है (द्रव्य. 299)। *वनहरिद्रा* खून (रक्त) को शुद्ध करती है जो कि वात के असंतुलन द्वारा दूषित हो जाता है, यह जहर के लिए एक विषहर (प्रतिकारक) होता है (द्रव्य.135)। *शुंथी* सूजन और दर्द को दूर करती है (द्रव्य. 263)। *इन्द्रवरूणी* फोड़ें को ठीक करती है और जीवाणुओं को मारती है (द्रव्य) और घावों को स्वच्छ करती है।

श्लोक 26 – उपचार 2:

चिंचा पत्तियों के पके हुए रस को फोड़ें पर लगायें।

चिंचा सूजन को दूर करती है, रक्त को शुद्ध करती है, दर्द को दूर करती है और घाव से संबंधित किसी भी कठिनाई का इलाज करती है।

सींगों के अन्दर के कीड़ें

श्लोक 27 – उपचार 1:

कुत्ते की खोपड़ी को मवेशियों की गर्दन पर बांधें।

खोपड़ी में बहुत महीन गुहिकाएं समाविष्ट होती है जो कि सुरक्षित निवास के लिए कीड़ों को अपनी ओर आकर्षित करती है। इस अभिक्रिया में बहुत बड़ी संख्या में कीड़ों को एक प्रयत्न में निकाला जा सकता है।

किसी वस्तु को मक्खियों और चीटियों से सुरक्षित रखने के लिए यह एक सामान्य प्रथा है कि उस वस्तु के पास दूसरे अधिक आकर्षित करने वाले पदार्थ को रख दें जो उसको अपनी ओर लुभाएं। संभवतः इस सिद्धान्त को इस मामले में उपयोग के लिए बनाया था।

श्लोक 27 – उपचार 2:

उतकंट की जड़ों को चावल के साथ पीसें और इस लेई को सीगों पर लगा दें ।

उतकंट गर्म और तीक्ष्ण होती है (भाव. 814)। चावल पुष्टिकर होता है। लेई जो कि सीगों पर लगाई थी वो बचे हुए कीटों को जो कि बाहर आने की कोशिश करेगें का दम घोट सकती है और उन कीटों को लेई में उलझा (फंसा) देती है और अन्त में *उतकंट* के गर्म और

तीक्ष्ण होने की वजह से वे नष्ट या समाप्त हो जाते हैं। (व्युत्पन्न से तात्पर्य है *उत्+कंटक –उत्पातयति कंटकंन*–जो कि कांटों का उन्मूलन करती है या कांटों जैसा दर्द)

कंधों की सूजन (*स्कंधशोथ*)

श्लोक 28 – उपचार 1:

अर्क की जली हुयी राख, *भृंगराज* का रस और नमक के मिश्रण को कंधों पर लगायें। *अर्क* दर्द को दूर करता है और सूजन को कम करता है (352)। कफ के कारण होने वाली सूजन को भी *भृंगराज* दूर करती है इसके अतिरिक्त यह जहर के लिए विषहर (प्रतिकारक) भी होता है। लवण (नमक) दर्द को दूर करता है और दोषों (755) के असंतुलन को बाहर निकालने के लिए प्रेरित करता है।

श्लोक 28 – उपचार 2:

लज्जलू, हरिद्रा, शलमली (बीज), *गुग्गल, हरितकी, सदपह, अपामार्ग* और *क्रमुक* आदि पदार्थों को तिल के तेल में पकाकर मरहम तैयार कर इस मरहम को कंधों की सूजन पर लगायें।

तिल तेल की विशेषतः घावों की चिकित्सा के लिए अनुशंसा की गयी है। तैलीय होने के कारण यह *वात* को घटाता है, दर्द को कम करता है। यह मरहम बनाने के लिए सर्वोत्तम माध्यम है (100)। दूसरे पदार्थों के इसके अतिरिक्त उनके अपने अलग गुणधर्म होते है। एक साधारण गुणधर्म जो होता है वह सूजन और दर्द को कम करता है। इन सभी का संयुक्त प्रभाव, बहुत प्रभावशाली होता है (569, 134, 394, 48, 587, 83, 417, 559)।

कमजोरी (दौर्बल्य)

श्लोक 29 –लक्षण:

इसके लक्षण चरक (वि. श्लोक 8) द्वारा वर्णित पाचक नली के विकारों के लगभग समान होते हैं।

श्लोक 29–उपचार:

शुंथी और *निम्ब* पत्तियों या छालों का क्वाथ दें। *शुंथी* पहले से अपचित भोजन को पचाती है और पाचक आग को उत्तेजित करती है (263)। *निम्ब* रक्त को शुद्ध करती है और जिससे यकृत के विकार ठीक होते हैं जो रक्त की अशुद्धता की वजह से होते हैं। दूसरे गुणधर्म जो कि प्रत्यक्ष रूप से कमजोरी से जुड़े हुए होते हैं उनका पता नही चल सका (122)।

रोगों के विभिन्न प्रकार (*सर्वरोगचिकित्सा*)

श्लोक 30–उपचार

द्रोणपुष्पी (540), *निर्गुण्डी* (60), *कुटुतुम्बी* (313), *मदार* (352), *सर्शप* (124), *नगवल्ली* (258) और *निम्बुक* आदि दलिये और तिल तेल के साथ पीस कर जबानी दें। यह उपचार मवेशियों के 99 रोगों को ठीक करता है।

ऊपर वर्णित सभी पदार्थों के निम्नलिखित गुणधर्म (संबद्ध) प्रासंगिक होने की यहां पर अनुशंसा की गई है। पाचक आग को बढ़ाना, पहले से अपचित भोजन को पचाना, सात मूलभूत

तत्वों का शुद्धिकरण करना (वसा लसीका रक्त, गोश्त हड्डी, मज्जा और वीर्य) स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करना, *अपन वायु* के कार्य को नियंत्रित करना और बल प्रदान करना। ये सभी एक दूसरे से प्राथमिक रूप से पाचक तंत्र से संबंधित होते है जो कि इस ओर संकेत करता है कि मानव में पाचन तंत्र का सुचारू रूप से कार्य करना अच्छे स्वास्थ्य का आधार होता है, इसलिये यह सभी दूसरों के लिए जरूरी है।

घोड़ें के रोगों का उपचार (अध्याय 9)

श्लोक 31:

यह एक परिचायत्मक श्लोक है। इस श्लोक में लेखक द्वारा रोगों के सिद्धान्तों और घोड़ों के उपचार से संबंधित व्याख्या की है। लेखक ने यहां स्पष्ट किया है कि घोड़ों में विकारों के उत्पन्न होने का मुख्य कारण *त्रिदोषों* में विकार का होना है। अप्रत्यक्ष रूप से लेखक ने बताया है कि ये विकार मवेशियों में ज्यादा होते हैं जो कि *त्रिदोष* विकार के कारण उत्पन्न होते हैं। यहां यह साफ किया गया है कि विज्ञानों जैसे *अश्ववैद्यक* और *गौवेद्यक* दोनों ही आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित है। इस भाग में घोड़ों पर बताये गये *शास्त्र* के सिद्धान्तों की विवेचना करते हैं। लेखक ने पढ़ने या सुनने वालों लोगों के दो विभिन्न समूहों से विचार–विर्मश किया है। एक समूह के लोगों के जनसमूह को *शास्त्रों* में दिये गये मवेशियों पर किये जाने वाले बहुत महत्वपूर्ण प्रायोगिक उपयोगों के बारे में सम्बोधित किया गया। दूसरे समूह के लोगों को जिसमें उच्च वर्ग, राजा, सेना अधिकारी, आयुर्वेद चिकित्सक, धनवान लोग और व्यापारी शामिल थे, उनसे घोड़ों के बारे में विचार–विर्मश किया गया है, जो कि *शास्त्र* के सिद्धान्तों को समझने में ज्यादा रूचि रखते थे।

पाचन शक्ति के विकार (अजीर्ण)

श्लोक 32 – उपचार:

निम्नलिखित अवयवों को मट्ठे के साथ लेई तैयार कर जबानी दें। भारतीय *वतम* की जड़ें, *वसक* की पत्तियां, *कटुक* की जड़ें, *इन्द्रवरूणी, निर्गुण्डी* की *पत्तियां, ब्राह्मी, निम्ब* की पत्तियां, *हींगु, विडंग, मदार* की पत्तियां, *गिरीकर्निका* की जड़ें, *वनहरिद्रा, चित्रक* की जड़ें और *पटोल* की जड़ें आदि।

जैसा कि पूर्व में वर्णित परिचयात्मक श्लोक में बताया गया है, कि पाचक आग के बढ़ने और घटने से क्रमशः *वात* और *कफ* के विकार उत्पन्न होते हैं। वतम का वात (*वातवैरी*) के दुश्मन के रूप में वर्णन किया गया है (576)। *वसक* दस्त को रोकता है (199)। *कटुक* का जब कम मात्रा में उपयोग किया जाता है तो स्वाद कलिकाओं और पाचक आग को उत्तेजित करता है और यकृत के विकारों को ठीक करता है। जब इसका ज्यादा मात्रा में उपयोग किया जाता है तो कब्ज और गैस की समस्या को दूर करता है और साथ ही दूसरे पाचक विकारों को शोधन द्वारा दूर करने का कार्य करता है (349)। इसी प्रकार से *इन्द्रवरूणी* का कम मात्रा में उपयोग, स्वाद कलिकाओं और पाचक आग को उत्तेजित करता है, पहले के अपचित भोजन को पचाता है। यकृत की कार्यक्षमता को उत्तेजित करता है और अत्याधिक पित्त से पीछा छुड़ाता हैं। जब इसका अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता है तो वह शोधन की तरह कार्य करता है (347)। *निर्गुण्डी* के

गुणधर्म *इन्द्रवरूणी* के समान ही होते हैं इसके अलावा वो कीड़ों को मारती है (60)। *ब्राह्मी* पाचक आग को उत्तेजित करती है और शोधन के लिए एक प्रतिकारक (विषहर) की तरह कार्य करती है (3)। इसके अलावा स्वाद कलिकाओं और यकृत के कार्यों को उत्तेजित करती है। *निम्ब* कीड़ों को मारती है और शोधन के लिए तात्कालिक प्रतिकारक की तरह कार्य करती है (122)। दूसरे गुणधर्मों के अलावा यह पाचन को बढ़ाने में मदद करती है। *हींगु* पेट दर्द को कम करती है, *अपन वायु* के कार्य को नियंत्रित करती है जो कि उत्सर्जन और विमुक्ति के लिए जिम्मेदार होता है (28)। *विडंग* के गुणधर्म *हींगु* के समान ही होते हैं, *कीड़ों* को मारने के अलावा। दूसरे *गुणधर्मों* को छोड़कर *मदार* अत्यधिक *पित्त* को बाहर निकाल देता है। *गिरीकर्निका* ज़हर के लिए एक विषधर (प्रतिकारक) है और एक मृदुसारक की तरह कार्य करता है। *वनहरिद्रा अपन वायु* के कार्यों को नियंत्रित करती है और कीड़ों को मारती है। *चित्रक* की विशेष रूप से पाचन के लिए अनुशंसा की गई है। *पटोल* में सभी प्रकार के गुणधर्म पाये जाते हैं यह पाचन विकारों को ठीक करने में मददगार होती है।

ऊपर वर्णित अवयवों की सूची में जो अनुशंसा की गयी है। *चित्रक* ही केवल सामान्य औषधि है जिसका आयुर्वेद में अपच (अजीर्ण) के लिए उपयोग किया जाता है। लेखक ने विभिन्न दूसरी जड़ी–बूटियों के संयोग के नुस्खे दिये है जिनमें की पाचन विकारों को दूर करने के गुणधर्म होते हैं जिसकी विशिष्ट रूप से मानव के लिए अनुशंसा नहीं की गयी है। घोड़ों के उपचार में (सामान्य निचले क्रम के जन्तुओं में) विशिष्ट पाचन आग होती है। जिसकी वजह से उपचार अलग–अलग होते हैं।

पित्त वृद्धि से शरीर के अन्दर का तापमान बढ़ना (*पित्तज्वर*):

श्लोक 33– उपचारः

सुबह के समय द्रवीय भोजन, नमक और दूसरी औषधियां (?) दोपहर के समय दे और *कुलथ* का क्वाथ और उसके उत्पादों को शाम को दें।

घोड़ों में तापमान को *'अभिताप'* कहते है (पलकप्य, महारोगस्थान अध्याय 9 जो कि चरक के अन्दर त्रिपाठी ने उद्धृत किया, नि. 1–16, मनसोल्लास, II-6-639)। तीन दोषों *वात, पित्त* और *कफ* में प्रत्येक एक, आयुर्वेद के अनुसार ये पांच प्रकार (च. सू.) के होते है। यह *पाचक पित्त* (पाचक तरल से सम्बन्धित *पित्त*) होता है जो कि अपच (अजीर्ण) के कारण होता है जिसमें अपचित भोजन को आमाशय में छोड़ देता है। *भ्रजक पित्त* (*पित्त* जो कि शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है) के कारण शरीर का तापमान बढ़ जाता है। यद्यपि बुखार मुख्यतः सम्बद्ध *पित्त* विकार से होता है। *पित्त* विकार द्वारा दूसरे दो दोष भी बुखार के कारण होते हैं।

द्रवीय भोजन सुबह दिया जाता है (बुखार के शुरू होने पर ?) जो कि उपवास में उत्तम होता है। आमाशय में दूषित रस तत्व जिसकी वजह से अपचित भोजन रहता है में देने की अनुशंसा की गयी है। द्रवीय होने के कारण यह अपचित भोजन को निष्कासित करता है। इसके अतिरिक्त गर्म होने की वजह से यह *कफ* को ठीक करता है। नमक (755) और दूसरी पाचक औषधियां (दोपहर में दी जाने वाली यानि अपरान्ह) *पित्त* विकार का विरोध करती है। नमक के कारण पसीना आता है। जिसकी वजह से तापमान कम होता है। *कुलथ* का क्वाथ (जो शाम को दिया जाता है) जो *वात* को नियंत्रित कर बुखार का विरोध करता है (द्र. 509)। पूरा उपचार इस

प्रकार से तीन दोषों के विकारों को दूर करता है। यद्यपि लेखक ने केवल बुखार का कारण *पित्त* ही दिया है, उपचार से यह अनुमानित किया जा सकता है, कि बुखार में तीनों दोषों के विकार सम्मिलित होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार, तीन दोषों जिनकों की सामान्यतया *वात, पित्त* और *कफ* के नाम से जाना जाता है जो कि आयु, दिन, रात और भोजन ग्रहण के सदंर्भ मे उल्टे क्रम[12] में प्रभावी होते हैं। उदाहरण के लिए, दिन की स्थिति के अन्दर, सुबह के समय *कफ* ज्यादा प्रभावी होता है, *पित्त* दोपहर में और *वात* शाम के समय प्रभावी होता है।

आयुर्वेद में बुखार के उपचार की सामान्य रूपरेखा का श्लोक[13] में वर्णन किया गया है जो कि इस प्रकार है:–

"उपवास की स्थिति बुखार के शुरूआत में लाभदायक होती है। औषधियों के साथ नमक (पाचक) को बुखार के मध्य में देने की अनुशंसा की गयी है। औषधियां जो कि बुखार के लिए प्रतिकारक (विषहर) का कार्य करती है उनको अन्त में देना चाहिए और मृदु शोधक (रेचक) को तापमान के सामान्य होने पर देना चाहिए।"

लोकोपकार के लेखक ने इस मामले में आयुर्वेद के सिद्धान्तों के उपयोग को बहुत सरलतापूर्वक बताया है।

पित्त, कफ और *वात* के विकार

श्लोक 34 उपचार:

निम्नलिखित अवयवों की लेई सभी तीनों दोषों के लिए सर्वमान्य है। *रसअंजन* (*दारूहरिद्रा* की जड़ों के पाउडर को दूध के साथ मिश्रित कर क्वाथ बनायें और उसे निर्जलीकरण द्वारा काजल/सुरमा तैयार करें) हरिद्रा, *पिप्पली,* चट्टानी नमक, *रसन* की जड़ें, *यश्टिमधु, शुंथी* और लाख आदि ।

रसअंजन को बनाने की विधि का यहां जो वर्णन किया गया है वो बिल्कुल आयुर्वेद के मूल–पाठों का प्रतिरूप है। मानव नेत्र रोगों के लिए *रसअंजन* को सर्वश्रेष्ठ (उत्तम) औषधि बतायी गयी है। (एएच. पृ. 25)। *दारूहरिद्रा कफ* और *पित्त* विकारों को ठीक करती है। पित्त विकार के कारण होने वाले रक्तस्त्राव को रोकती है (413)। चरक के अनुसार (सू. 27–222) इसको तैयार करने में बकरी के दूध का उपयोग होना चाहिए जो कि *पित्त* का एक प्रतिकारक (विषहर) होता है। *हरिद्रा* सभी तीन दोषों के विकार का एक प्रतिकारक होता है (133)। *पिप्पली कफ* और *वात* विकार को बिल्कुल ठीक कर देती है (222)। चट्टानी नमक *कफ* और *वात* विकारों को रोकता है (755)। *रसन वात* और *कफ* विकारों को ठीक करता है (भाव. 79)। *यश्टिमधु वात* और *पित्त* विकारों को रोकता है (207)। *शुंथी कफ* और *वात* को बिल्कुल ठीक कर देती है (263)। लाख *कफ* और *वात* विकारों को शांत करती है (708)।

इस लेई का उपयोग तीन विभिन्न माध्यमों में तीन विभिन्न परिणामों के लिए किया जाता है जो कि इस प्रकार है –

1. लेई को बकरी के दूध में मिश्रित करें और नासाछिद्रों में गोलियों (या लेई) को रख दें, इससे *पित्त* विकार दूर होते है। यह *पित्त* को शांत करने के लिए है (च.सू. 27–222)।

2. लेई को गो–मूत्र में मिश्रित कर और इस मिश्रण को नासाछिद्रों में रखने से *कफ* विकार दूर होते हैं । यह *कफ* विकार को रोकता है (एएच. सू. 5–82)।

3. लेई को गर्म पानी में मिश्रित करें और इस मिश्रण को नासाछिद्रों पर लगायें जिससे *वात* विकार ठीक होते है (एएच. सू. 5–16)।

रसरंजन के नाम से स्पष्ट है कि मानवों के मामले में दूसरा उपयोग आंखों के लिए किया जाता है लेकिन यहां *रसरंजन* को अन्य दूसरी जड़ी–बूटियों के साथ मिलाकर घोड़ों के नासाछिद्रों में उपयोग किया जाता है। घोड़ों के मामलों में यह स्पष्ट हो जाता है कि तीन दोषों का तंत्रिका (स्नायु) केन्द्र नासाछिद्रों में स्थित है।

(तीनों विकारों के लक्षणों को नहीं बताया गया है)

रेंट (*पिनास* या *प्रतिश्यय*)

श्लोक 35– लक्षणः

घोड़ें की नाक से पानी के समान, हल्दी जैसा पीला या सफेद कफ बह रहा हो।

श्लोक 36– उपचारः

पीसी हुयी *देवदारू* की जड़ें, चट्टानी नमक, *मस्त* प्रकन्दों, जीवाश्म नमक, *विडंग* और स्वरजिक्षार आदि को अच्छी तरह से हिलाते हुए तिल तेल और गो–मूत्र में मिश्रित करें और इस लेई को नासाछिद्रों में लगाये।

नाक से तीन प्रकार का बहाव क्रमशः *वात, पित्त* और *कफ* विकारों की ओर संकेत करता है। *देवदारू* अत्यधिक *वात* को कम करती है, *कफ* को पिघलाती है और उसको निष्कासित करती है। यह तीक्ष्ण ठंड से बचाती है। चट्टानी नमक *कफ* और *पित्त* को पिघलाता है और उसके निष्कासन को सुसाध्य बनाता है (755)। *मस्त कफ* और *पित्त* विकारों को शांत करती है (304)। जीवाश्म नमक *कफ* विकारों को ठीक करता है (755)। *विडंग कफ* और *वात* विकारों को शांत करता है और उनको नाक के द्वारा तीन दोषों के विकारों द्वारा सिर में एकत्रित हुयी अशुद्धियों को बाहर निकालता है (402)। *स्वरजिक्षार कफ* विकारों को रोकता है (168)। तिल तेल सभी प्रकार के रोगों को ठीक करता है (च.सू. 27)। गो–मूत्र अत्यधिक *कफ* को निष्कासित करता है।

बलगम (*कफ*)

श्लोक 37 – उपचारः

निम्नलिखित अवयवों की पत्तियों की एक थैली गर्म करके चेहरे पर बार–बार लगाना चाहिए। *सिरिस,* गेहूं, *चिचिंडा* (*चिचिंडा* होना चाहिए यानी *अपामार्ग*) *वसक, सप्तपर्णी, गम्भरी, पटल* और *एरण्ड* आदि।

सिरिस सभी तीन दोषों के लिए एक प्रतिकारक (विषहर) है लेकिन विशेषकर *कफ* के लिए इसकी अनुशंसा की गयी है (द्र. 602)। *कफ* के लिए गेहूं के किसी भी गुणधर्म का पता नहीं चल सका। यह बिल्कुल सत्य है कि गेहूं के ज्यादातर गुणधर्म *कफ* का अनुमोदन करते हैं। दोष के असंतुलन को दोनों में से कोई एक के द्वारा शांत किया जाता है जब जरा सा थोड़ा ज्यादा हो

या जब ज्यादा मात्रा में निष्कासन हो। यदि यह शांत करने के लिए पर्याप्त मात्रा से कम है निष्कासन के लिए बहुत अधिक हो, यह आवश्यक होता है, कि पदार्थों द्वारा असंतुलन को बढ़ायें जिनका की अनुमोदन किया गया है। यदि यह दूसरे विरोधी पदार्थों के साथ दिया जाता है तो यह उपचार में मददगार हो सकता है। भोजन की तरह दिये जाने पर यह विकारों पर तीव्रता के साथ असर करता है। एक बार विरोधी पदार्थों द्वारा *कफ* का पर्याप्त मात्रा में बन जाने से यह आसानी से निष्कासित हो जाता है (च.सू. 272)। *चिचिंडा* का भी *कफ* विकारों को बढ़ाने के लिए अनुमोदन किया गया है और इसका उपचार में उपयोग गेहूं से इलाज की तरह किया जा सकता है (द्र. 534)। यदि यहां पर मुद्रण में किसी भी प्रकार की गलती है, *चिचिंडा* (हिन्दी) (*अपामार्ग, एकाईरेन्थस एस्पेरा*), इसकी विशेष रूप से *कफ* के निष्कासन के लिए अनुशंसा की गयी है और यह वर्णित किया गया है कि सिर में संग्रहित हुयी सभी अशुद्धियों की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि है। सिर को *कफ* का प्राथमिक स्थान बताया गया है (417, च.सू. 15)। *वसक* एक प्रभावशाली कफ निष्कासन करने वाला है (199)। यह *कफ* के लिए बहुत प्रचलित औषधि है। जिसका ऐलोपैथिक औषधियों में भी बराबर से उपयोग किया जाता है। *सप्तपर्णी बिल्व, गम्भरी, पटल* और *एरण्ड* आदि सभी बलगम को निष्कासित करते हैं (535,180,188,186, 51)।

रेंट के आने का मुख्य कारण बलगम होता है। विगत श्लोक में *वात* और *पित्त* को भी अतिरिक्त कारक माना गया है उसके अनुसार ही यहां उपचार की अनुशंसा की गयी है। यहां पर मुख्य कारक को ध्यान में रखकर उपचार किया गया है।

खांसी (कास)

ज्यादातर खाँसी मुख्यतया बलगम के कारण से होती है। फिर भी *वात* और *पित्त* भी इसके कारण हो सकते हैं।

श्लोक 38– उपचारः

निम्नलिखित पदार्थों को पीस लें। *कटंकारी* की *जड़ों* और *ब्रिहति, निम्ब* की पत्तियां, *निर्गुण्डी* और *वस* आदि। इनके पाउडर को गो–मूत्र के साथ मिलाकर क्वाथ तैयार करें। इस क्वाथ में शुंथी और *भारंगी* का पाउडर मिलाकर, इसे जबानी दें।

सभी पदार्थ बलगम के प्रतिकारक होते हैं, उनके अपने गुणधर्मों के अतिरिक्त। कोई भी बलगम का अनुमोदन नहीं है (225, 227, 122, 60, 199, एएच. 25, 82, 263, 239)

प्रचण्ड (तीक्ष्ण / तीव्र) दर्द

श्लोक 39– उपचार 1:

पिप्पली और *सैंधव* के मिश्रण को विभिन्न स्थानों पर रखते हैं।

पिप्पली अत्यधिक *कफ* और *वात* को कम करती है। इसकी विशेषकर दर्द निवारक के लिए अनुशंसा की गयी है (222)। *सैंधव* भी नली की सफाई के द्वारा दर्द में आराम देता है।

श्लोक 40 – उपचार 2:

नमक, पिप्पली, वचा, रजिक, पुंद्रिक के अपरिपक्व फल, *शुंथी* (गाय), छाछ, *कांजी* (*धन्यम्ल*) और *तिल* तेल के मिश्रण को घोड़ों के नासाछिद्रों में रखते हैं।

नमक और *पिप्पली* के गुणधर्मों की पूर्व में परिचर्चा की गयी है। *वचा, रजिक* और *शुंथी* की दर्द को कम करने के लिए अनुशंसा की गयी है (21, 107, 263)। अपचित भोजन की वजह से होने वाले दर्द को छाछ (मट्ठा) ठीक करती है और आमाशय में अत्यधिक बलगम और उदर की सूजन को घटाती है (च.सू. 27–229)। *कांजी* आमाशय को शुद्ध करती है और दर्द को ठीक करती है (एएच. सू. 5–79, 80)। *तिल* भी दर्द को दूर करता है और अत्यधिक *वात* को शांत करता है (100)। शरीर के अन्दर कोई भी दर्द, बिना *वात* के असंतुलन के नहीं होता है, यह उपचार के अन्दर उपयोगी है।

श्लोक 41–उपचार 3:

पंचलवण (पांच प्रकार के नमक) का मिश्रण, *हींगु, पिप्पली, शुंथी, टिंदुक* के अपरिपक्व फल, *धनयक, हरितकी, दुर्लभ, अतीस, चित्रक* की जड़े, *यवनी* को बराबर मात्रा में औषध जल में मिश्रित कर जबानी दें।

पंचलवण दर्द को दूर करता है, नलियों की सफाई करता है और वात के क्रिया–कलापों को ठीक करता है (755–757)। *हींगु* दर्द को दूर करता है और कीड़ों को मारता है (द्र. 282)। *पिप्पली* दर्द को दूर करती है और अत्यधिक वात को शांत करती है (222)। दर्द को दूर करने के अलावा *शुंथी* सूजन को भी कम करती है। *टिंदुक कफ* और *वात* के विकारों को शांत करती है। *धनयक* दर्द को दूर करती है और जलन संवेदन को शांत करती है (द्र. 253)। *हरीतकी* वात के विकारों को शांत करती है और दर्द को दूर करती है। *दुर्लभ* जलन संवेदन को शांत करती है और सड़न (सड़ाव) को ठीक करती है। यह घाव को भी भरती है (250)। *अतीस* सभी तीनों द्रव्यों *वात, पित्त,* और *कफ* के विकारों को शांत करती है (293)। *चित्रक* की पेट दर्द के लिए विशेष अनुशंसा की गयी है। यह सूजन को कम करती है और इसकी प्रसूति के बाद के दर्द के लिए अनुशंसा की गयी है। *यवनी* भी दर्द को दूर करती है और *वात* विकारों को ठीक करती है (द्र. 396)। औषधजल एक दर्द निवारक है (एएच. सू. 5–68)।

जलोदर / दर्द (*कफज शोथ*)

श्लोक 42–उपचार:

ब्राह्मी और तिल तेल के मिश्रण को जबानी दें।

वात की सूजन के कारण घोड़ी के गर्भकाल के दौरान होने वाले तीक्ष्ण दर्द में इस मिश्रण से उपचारित कर सकते हैं।

ब्राह्मी सूजन और दर्द को ठीक करती है(3)। *तिल* का ज्यादातर उपयोग दर्द निवारक के रूप में किया जाता है (100)।

कीड़ा उत्पीड़न *(कृमिवृद्धि)*

श्लोक 43 – उपचार 1

सेम (?) और घी के मिश्रण को जबानी दें।

घी ज़हर का एक विषकारक (विषहर) होता है और सभी प्रकार के जीवाणु, रोगाणु, कीटों और कीड़ों को नष्ट करने वाला होता है। इसलिये इसे *रक्षोधन* (मारने के लिए श्रेष्ठ) कहते हैं (669)।

श्लोक 43– उपचार 2:

पीसी हुई *परिभद्रा* और तिल तेल या घी की लेई को जबानी दें।

परिभद्रा दर्द निवारक होती है और जीवाणुओं को मारती हैं (84)। तिल और घी के गुणधर्मों को पूर्व में वर्णित किया जा चुका है।

अतिसार (दस्त / प्रवाहिका)

श्लोक 44–उपचार:

औषधि तैयार करने की विधि अस्पष्ट है। इसलिए हम यह सुझाव दे रहे हैं कि *कुटज* और *यस्टिमधु* की पीसी हुई लेई को अच्छी तरह से दूध में गर्म करके, जब वह गर्म हो जायें उसको दही जमने के लिए रख दें इससे सतह पर पारभासी (स्वच्छ) पानी (*मस्तु*) मिलता है। इस पानी के साथ *अतीस* और *शुंथी* के पाउडर को मिश्रित कर जबानी दें।

कुटज अतिसार की एक जानी पहचानी औषधि है (375)। *यस्टिमधु* एक मृदु शोधक है जो *अपन वायु* (जो कि निष्कासन शक्ति को नीचे की तरफ की गति को प्रेरित करती है) के कार्य को ठीक करती है (207)। पारभासी (स्वच्छ) पानी अतिसार और पेचिश के इलाज में बहुत मददगार होता है (665)। *अतीस* पाचक आग को उत्तेजित करता है और अपचित भोजन को जल्दी से पचाता है। यह बुखार और अतिसार के लिए एक प्रतिकारक (विषहर) है (293)। *शुंथी* बवासीर को ठीक करती है और पाचन का एक अच्छा इलाज है (263)।

मूत्र और खूनी मूत्र का अवरोधन (*मूत्रावरोध, रक्तमूत्र*)

श्लोक 45 – उपचार 1:

बेर फल के गूदे के रस को जबानी दें।

बेर मूत्रवर्धक होता है (272)।

श्लोक 45–उपचार 2:

बिल्व की जड़ों के रस को जबानी दें।

बिल्व मूत्र निर्माण को घटाता है इससे मूत्राशय का तनाव कम होता है (180)।

श्लोक 45 – उपचार 3:

वसक की पत्तियों का रस, *गोदुग्ध* और *शर्करा* को मिलाकर जबानी देने से खूनी मूत्र में फायदा होता है।

वसक रक्तस्त्राव को रोकती है (199)। ठंडा होने के कारण, *बिल्व* रक्तस्त्राव को रोकता है और पुष्टिकर होने के कारण रक्तस्त्राव से होने वाली कमी को दूर करता है (च.सू. 27–241)। शर्करा के संबंधित गुणधर्मो का पता नहीं चल सका लेकिन यह दूसरी औषधियों के प्रभाव को बढ़ा सकती है।

बुखार (ज्वर)

श्लोक 46 – लक्षण:

सभी तीन द्रव्यों *वात, पित्त* और *कफ* के विकारों के लक्षण ही है।

सीधा गिर जाना, गैर–चराई और हांफना आदि अत्यधिक *वात* के लक्षण है। गंदी दुर्गंध, अत्यधिक प्यास और हांफना आदि *पित्त* विकार के लक्षण होते है। शारीरिक निर्जीवता, उनींद और गैर चराई आदि बलगम विकार के लक्षण होते है (च.नी. I-21, 24 और 27)।

श्लोक 47 – उपचार 1:

मस्त जड़ें, पिप्पली, *देवदारू, खदिर, निम्ब, चित्रक* जड़ें, *सप्तपर्ण* की छाल, *जांबू* की छाल, *अश्वगंधा* की जड़े, *भूनिम्ब* का पूर्ण पादप, *दंती* के बीज, *कटुक* या *कटुकी* की जड़ें और *गुडुची* का पूर्ण पादप आदि के पाउडरों से क्वाथ (एक तिहाई) तैयार करें इसमें शहद को मिलाकर जबानी दें।

मस्त प्यास को नियंत्रित करता है और बुखार के लिए एक जाना पहचाना इलाज है (304)। *पिप्पली* भी बुखार को ठीक करती है (222)। *देवदारू* पसीना लाती है और बुखार को कम करती है (67)। *खदिर पित्त* विकार को शांत करती है, अपचित भोजन को पचाती है, यह ज्वरनाशी है (131)। *निम्ब* अपचित वसा–लसीका को पचाती है और बुखार को ठीक करती है (122)। *चित्रक* यकृत और प्लीहा (तिल्ली) की कठोरता को ठीक करती है और बुखार के लिए एक विषकारक है (297)। *सप्तपर्ण* बुखार के लिए औषधि है (535)। *जांबू* पाचन को बढ़ाती है और यकृत के कार्यों को उत्तेजित करती है (510)। बुखार के उपचार में *अश्वगंधा* का सीधा संबंध पता नहीं चल सका, लेकिन जाना पहचाना टॉनिक होने के कारण, यह बुखार के कारण आयी कमजोरी को दूर कर सकता है (595) । *भूनिम्ब* जलन संवेदन को नियंत्रित करता है और बुखार के लिए एक उत्तम औषधि है (526)। *दंती* बुखार को ठीक करती है और शोधक की तरह कार्य करती है (358)। *कटुक* भी जलन संवेदन और बुखार को ठीक करता है (349)। गुडुची एक बहुत लोकप्रिय बुखार की औषधि है (593)। शहद सभी तीन द्रव्यों के विकारों को ठीक करता है, और *योगवाही* (जिस दवा के साथ इसको दिया जाता है उसके प्रभाव को बढ़ाता है) की तरह होता है (710)।

श्लोक 48 – उपचार 2:

क्रिशर (पके हुए *मूदग* और *व्रिही* का मिश्रण) जिसमें की *निम्ब, पटोल, मधु* और *पिप्पली* को मिलाया है को घोड़ें को पर्याप्त मात्रा में भोजन खिलायें।

गैर–चराई के कारण आने वाली कमजोरी को पर्याप्त मात्रा में खिलाया गया भोजन दूर करता है। *मूदग पित्त* और बलगम के विकार को दूर करता है। यह रोगी का एक उत्तम आहार होता है (च.सू. 27–23)। *व्रिही* दिये जाने वाले आहार को मजबूती प्रदान करती है (च.सू. 27–15)। *पटोल पित्त* के कारण आने वाले बुखार और तीक्ष्ण बुखार के लिए औषधि है (529)। *निम्ब, मधु* और *पिप्पली* के गुणधर्मों का वर्णन पूर्व में किया गया है।

गठिया और थकावट (*आमवात और क्लम*)

विशेषकर सर्दी में गठिया बहुत तीव्र हो जाता है, और घोड़ें को निरन्तर खड़े रखना, जो कि उसके प्रति अतिसंवेदनशील होता है।

श्लोक 49 – उपचार:

हरीतकी और *सैंधव* पाउडर के मिश्रण को जबानी दें।

हरीतकी सूजन और दर्द को दूर करती है। इसको द्रवीय अवस्था में देने से यह सभी ऊतकों को प्रभावित करती है (587)। *सैंधव* नलियों की सफाई करता है और पसीना लाता है जो कि अपचित भोजन की अशुद्धियों को दूर कर सकता है।

विभिन्न रोग

श्लोक 49–उपचार 1:

हरीतकी और *सैंधव* के मिश्रण को दिये गये अनुपात में नियमित अन्तरालों पर घोड़े को देते है। गर्मियों में गुड़ को मिश्रण में मिलाते है।

हरीतकी को *सर्वरोगहर* के नाम से जाना जाता है जिससे यह तात्पर्य होता है कि सभी प्रकार के रोगों को ठीक करना। इसके मूलभूत पांच स्वाद होते है खारेपन को छोड़कर। नमक के साथ मिलाने से इसमें पूर्ण छः स्वाद हो जाते है और यह सभी प्रकार के रोगो को ठीक कर सकती है। गुड़ के साथ उपयोग करने से यह कहा जा सकता है कि यह सभी रोगों की उत्तम औषधि है।[14]

श्लोक 50 – उपचार 2:

निम्नलिखित से क्वाथ बनाये–*रसन* की जड़ें, *वसक* की पत्तियाँ, *शतपुष्प, बिल्व* की छाल, *पदमक* के फल (?), *शुंथी, मस्त* प्रकन्दों, *निकुम्भ* की जड़ें, *दुर्लभ* की जड़ें, *विडंग, अग्निमंथा* की जड़ें, एरण्ड की जड़ें, *गोक्षुर* की जड़ें और *कंटकारी* की जड़ें आदि ।

सभी प्रकार रोगों का कारण है तीन दोषों का असंतुलन, मुझे संदेह है कि बढ़ने या क्षीणता द्वारा, जिसको इन सभी औषधियों के संयोग से दूर किया जा सकता है (भा. 79, वस 199, 328, 180, 263, 304 भा. 399, 250, 402, 182, 52, 490, 225)

श्लोक 51 – लक्षण:

यह श्लोक घोड़ों में पाये जाने वाले विभिन्न रोगों के लक्षणों को बताता है जिसको ऊपर वर्णित औषधियों द्वारा ठीक किया जा सकता है।

सूजन (शोथ)

श्लोक 52–उपचार 1:

निम्नलिखित अवयवों को गर्म दलिये की लेई में उपयोग से–*पुल्लास* की जड़ें *कोकिलक्षा* का पूर्ण पादप, *शिग्रू* की जड़ें, *तुलसी* की जड़ें, *निकुम्भ* की जड़ें (लघुदंती), *सूरन* के प्रकन्दों, शुंथी, *युथिक/जती (?), पंचलवण* (पांच नमक) *अर्क, कृष्ण सशर्प, हरिद्रा और दारूहरिद्रा* के तने आदि ।

संस्कृत में *पुल्लास* के समकक्ष कुछ नहीं मिल सका। *कोकिलक्षा* रक्त को स्कंदित करती है और सूजन को दूर करती है (481) जबकि *शिग्रू वात* की सूजन को दूर करती है और दर्द को दूर करती है (542)। *निकुम्भ वात* की सूजन को दूर करती है (भा. 399)। *सूरन* जोड़ों (सन्धियों) की सूजन ओर दर्द की औषधि है और हाथीपांव और ट्यूमर (तन्तुओं के कारण उत्पन्न हुआ एक रोग) को ठीक करती है (435)। *शुंथी* रक्त को शुद्ध करती है और सूजन को दूर करती है (63)। *जती* रक्त को शुद्ध करती है लेकिन वात की सूजन का प्रत्यक्ष संबद्ध पता नहीं चल

सका। पांचों नमक में से केवल *सैंधव* ही सूजन को ठीक करता है (755)। *अर्क* सूजन और दर्द को ठीक करता है (353)। *कृष्ण सर्शप* का *वात* की सूजन से कोई सीधा संबंध नहीं होता है (124)। *हरिद्रा* सूजन को दूर करता है (133)। *दारूहरिद्रा* सूजन और दर्द को दूर करती है (413)।

श्लोक 52–उपचार 2:

खार या क्षार (*यवक्षार*?) और *गोधृत* का उपयोग।

यवक्षार विशेषकर मधुमेह द्वारा होने वाली सूजन को ठीक करती है (760) जबकि *गोधृत* तीन दोषों के असंतुलन की वजह से आने वाले ज्वर (बुखार) की सूजन को ठीक करता है।

खुजली होना (*कंदूया दादरू*)

श्लोक 53– उपचार 1:

वज्रद्रमा की जली हुयी राख (*दुग्धिका ?; यूफोर्बिया माइक्रोफाइला?*) और *गोधृत* के मिश्रण का उपयोग।

वज्रद्रमा (और *क्षिरनी* नहीं) की त्वचा रोगों के लिए अनुशंसा की गयी है और जहरीले कीटों के काटने के स्थान पर लगाते हैं। कोढ़ (कुष्ठ) के अस्तित्व के इलाज के लिए, यह खुजली को ठीक कर सकती है (356)। *गोधृत* की चिकनाई से *वात* के विकार दूर होते हैं, जिससे खुजली भी ठीक होती है। यह विषाक्तता को भी ठीक करता है जिससे बहुत अधिक खुजली हो सकती है (669)।

श्लोक 53 –उपचार 2:

सृज (व्हाईट डामर) की पत्तियों की जली हुयी राख और तिल तेल को लगायें।

सृज कीटाणुओं को नष्ट करती है और मवाद निर्माण को रोकती है जो कि फोड़ें और मवाद के उपचार के लिए उपयोगी है। खुजली में *सृज* का उपयोग बहुत प्रभावशाली होता है (37)। तिल सभी प्रकार के त्वचा रोगों को ठीक करता है (100)।

श्लोक 54 – उपचार 3:

निम्नलिखित की लेई का उपयोग : *लवण, नग* (सीसा), *हरिद्रा, यवक्षार* (खार/क्षार) और *सैंधव* या *कुमारी* या *नीलि* की जड़ें आदि ।

लवण त्वचा रोगों को बढ़ाती है। इसका गुणधर्म विरोधात्मक होता है, जिस औषधि के साथ यहां इसको मिश्रित किया जाता है। यहां पर इसकी अनुशंसा दूसरी औषधियों के बहुत तेजी से कार्य करने के लिए माध्यम के रूप में की जा सकती है। यह वाहिनियों को शुद्ध करने, त्वचा विकारों और खुजली को दूर करने में मदद करती है (753)। *नग* त्वचा रोगों को ठीक करती है (728)। *हरिद्रा* खुजली के लिए एक प्रतिकारक होती है (133)। *यवक्षार* भी खुजली को ठीक करने में उपयोगी होती है (760)। *सैंधव* खुजली को ठीक करती है (755)। *कुमारी* सभी प्रकार के त्वचा विकारों को ठीक करती है (367)। *नीलि* त्वचा पर अनुग्रहपूर्वक कार्य करती है और कोढ़ (कुष्ठ) को ठीक करती है (105)।

फोडा (*विद्रधी*)

श्लोक 55–उपचारः

मरहम में निम्नलिखित अवयवों का उपयोग करते हैं जैसे– *हरताल* (*शंखविष?*) *चूर्णक, कर्नीकर* के बीज, *गंधक, दारूहरिद्रा, नग, पंचलवण, शुंथी, पिप्पली, मरिच, हरिद्रा, यवक्षार, अजदुग्ध* और तिल तेल आदि।

हरताल जीवाणुओं को मारती है (722)। *चूर्णक* फोड़ें में जमी हुई अशुद्धियों को खुरचन द्वारा बाहर कर देती है, जहर के लिए एक विषनाशक का कार्य करती है, जीवाणुओं को मारती है और फोड़ें को ठीक करती है (749)। *कर्नीकर* वाहिकाओं को शुद्ध करती है, खून के रंग को बनाये रखती है और *वात* की सूजन, अत्यधिक बलगम और घावों को ठीक करती है (भा. 499)। गंधक जीवाणुओं को मारती है और फोड़ें में जमी हुयी अशुद्धियों को खुरचन द्वारा बाहर कर देती है (720)। *दारूहरिद्रा* सूजन, शुद्ध करना और घावों को भरना आदि को ठीक करता है और दर्द निवारक की तरह कार्य करता है (413)। *नग* सभी प्रकार के त्वचा विकारों को ठीक करता है (728)। पंचलवण का उपयोग फोड़ों को ठीक करने के लिए किया जाता है (753–755)। *शुंथी* दर्द और सूजन को दूर करती है (263)। *पिप्पली* और *मरिच* तीक्ष्ण दर्द की औषधि है और जीवाणुओं को मारती है (222, 229)। *हरिद्रा* शुद्ध करती है, और घावों को भरती है और अशुद्धियों को ऐंठ कर सिकोड़ देती है (133)। *यवक्षार* फोड़ें को ठीक करती है (760)। *अजदुग्ध* अत्यधिक पित्त में प्रभावित होने वाले रक्त को शुद्ध करती है (च.सू. 27–222)। तिल तेल दर्द को शांत करता है, और घावों को भरता है और एक स्नेहक की तरह कार्य करता है (100) ।

खुर का फोड़ा (*शाफ विद्रधी*)

श्लोक 56 – उपचारः

शंखविष, गुड़, *सल, नग, लक्ष, मरिच* और तिल तेल से तैयार मरहम को लगायें।

शंखविष जीवाणुओं को मारती है, *वात* की सूजन को दूर करती है और ट्यूमर तथा ग्रंथियों को ठीक करती है (722)। *गुड़* (गन्ने से प्राप्त) के गुणधर्मो का मूल–पाठों में कोई सम्बन्ध नहीं मिला लेकिन यहां चूर्ण और गुड़ के लगाने की प्रथा है। *सल* जीवाणुओं को मारती है, मवाद को दूर करती है और चोट के कारण होने वाले दर्द को कम करता है (35)। नग सभी प्रकार के त्वचा विकारों अपरिपक्व फोड़ा और गोश्त का ट्यूमर और हड्डियों के अन्दर का घाव आदि को ठीक करती है (728 / 29)। लक्ष रक्तस्त्राव को रोकता है और टूटी हुयी हड्डियों को जोड़ने के लिए उपयोगी होता है (708)। *मरिच* फोड़ें को पकाती है और अशुद्धियों को बाहर निकालने में मदद करती है (299)। तिल तैलीय होने के कारण अत्यधिक वात को शांत करती है जिससे दर्द भी शांत होता है (100)।

हाथियों के रोग और उपचार (*हस्तिचिकित्सा*) (अध्याय 9)

तीक्ष्ण दर्द, प्लीहा के विकार, कीड़ा उत्पीड़न, आलस्य, बलगम, कमजोर पाचन शक्ति, भूख की कमी आदि।

श्लोक 57, 58 – उपचारः

निम्नलिखित अवयवों के पाउडरों को बराबर मात्रा में मिश्रित कर, दलिये में

मिलाकर जबानी दें। *मरिच, यव, पिप्पली विंडग* बीज, *कटुक* की जड़े, *चित्रक* की जड़ें, शिखरू की जड़ें, *धृतदीपकज्जल, रसन* की जड़ें, *कुष्ठ* की जड़ें, *वच, करंज* (इण्डियन बीच ट्री, *पोंगमिया ग्लब्रा*) (द्र. 120), *पंचलवण* (पांच नमक) *यवनी, अजमोद, सप्तपर्णी* की जड़ें, *निम्ब* की पत्तियां, *हींगु, अतिविष* की जड़ें, *चिचिंडा* की जड़ें, *कृष्णसर्शप, जिरक, शुंथी, वि* (बि) *भीतकी, आमलकी, जांबु* पेड़ की छाल, *हरीतकी, लताकरंज* के बीज, *सरजीक्षार* आदि ।

मरिच तेज होती है और पाचन शक्ति को बढ़ाती है, पहले से अपचित भोजन को पचाना और पौरूष (पुरूषत्व) को बढ़ाती है, सभी प्रकार के बलगम को दूर करने में यह सभी प्रकार की औषधियों में अच्छी होती है (299) । *यव* कफ विकार को शांत करता है, टॉनिक की तरह कार्य करता है और मांसपेशियों को मजबूती प्रदान करता है अधिकांश मल की वृद्धि करता है (च.सू. 27–19)। *पिप्पली* क्षुधावर्धक होती है, स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करती है, यकृत और प्लीहा को बढ़ने से रोकती है और हृदय को मजबूती प्रदान करती है (222)। *विडंग* एक प्रभावी रूप से जीवाणु को मारता है, *कफ* और *वात* विकार को शांत करता है और तंत्रिका तंत्र को मजबूती प्रदान करता है और बौद्धिक शक्ति को बढ़ाती है (402)। *कटुक* एक शोधक होता है और अत्यधिक *कफ* और *पित्त* को बाहर निकालता है। यह अत्यधिक लघुशंका की औषधि है (349)। *चित्रक वात* और *कफ* विकार को शांत करती है, पाचक शक्ति को बढ़ाती है, अपचित भोजन को पचाती है। अत्यधिक *पित्त* को निष्कासित करती है और गूदा की सूजन को ठीक करती है (279)। *शिग्रू कफ* और *वात* के विकारों को शांत करती है, पाचक तंत्र को बढ़ाती है स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करती है, हृदय को मजबूत करती है, *वात* की सूजन को दूर करती है, अत्यधिक वसा को कम करती है, और ज़हर के लिए एक विषकारक है (97)। *घृतदीपकज्जल* के बारे में कुछ पता नहीं चल सका लेकिन संभवतया यह अनुमान लगाया है, कि यह निश्चित रूप से कार्बन को अवशोषित कर आमाशय में गैस का निर्माण करता है। यहां कार्बन का निर्माण जब घी को दीपक पर जलाया जाता है तब होता है। जिससे इसमें स्नेहन का गुणधर्म आ जाता है जो कि आंत को मृदु कर सकता है और पाचक तंत्र को बढ़ाता है। *रसन* आठ प्रकार के *वात* विकारों को ठीक करती है। यह अत्यधिक कफ को भी शांत करती है (भाव. 79)। कुष्ठ *वात* और *कफ* विकारों को शांत करती है, पाचन को बढ़ाती है, आमाशय विकारों को ठीक करती है विशेषकर अतिसार (दस्त) और आलस्य को दूर करती है (485)। *वच वात* और *कफ* विकारों को शांत करती है, बढ़े हुए *पित्त* को कम करती है और आमाशय को फूलने और तीक्ष्ण पेट दर्द को ठीक करता है। यह बवासीर को ठीक करती है और कीड़ों को मारती है (21)। *करंज* के गुणधर्म यहां संबद्ध (प्रासंगिक) होते हैं। यह मजबूत शोधक होता है, कीड़ों को मारता है, यकृत कार्यों को उत्तेजित करता है, *अपन, समन* और *उडन* प्रकारों के *वात* कार्यों को ठीक करता है और ट्यूमर को ठीक करता है (120)। *पंचलवण* स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करता है, पाचन को बढ़ाता है और इसमें आर्द्रता गुणधर्मों को बढ़ाता है (755–57)। *यवनी* और *अजमोद* क्षुधावर्धक को उत्तेजित करते है। पाचन को बढ़ाता है, *अपन* वात के कार्यों को ठीक करता है, दर्द को दूर करता है और कीड़ों को मारता है (396,398)। *सप्तपर्णी* सभी तीन दोषों के विकारों को ठीक करता है, तीक्ष्ण दर्द को दूर करता है, ट्यूमर को ठीक करता है। पेचिश (आमातिसार/रक्तातिसार) को ठीक करता है और बुखार के कारण आयी कमजोरी (दुर्बलता) को दूर करता है (535)। *निम्ब कफ* और *वात* विकारों को शांत करता है, स्वाद

कलिकाओं को उत्तेजित करता है, मजबूती प्रदान करता है और दस्त (अतिसार) को ठीक करता है (122)। *हींगु* दर्द को कम करता है, अत्यधिक *वात* को कम करता है। जीवन शक्ति को पुनः स्थापित करता है और *अपन वायु* के कार्यों को ठीक करता है (28)। *अतिविष* तीनों दोषों के कारण होने वाले विभिन्न विकारों को ठीक करता है, पाचन में मदद करता है और वमन को नियंत्रित करता है (293)। *चिचिंडा* वात विकार को शांत करता है, स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करता है, पाचन को बढ़ाता है, कीड़ों को मारता है और शोधक का कार्य करता है (534)। *कृष्ण शसर्प कफ* और *वात* को शांत करती है, पाचन शक्ति को बढ़ाती है और कीड़ों को मारता है (124)। *जिरक* अशुद्धियों को बाहर निकालती है, स्वाद कलिकाओं को उत्तेजित करती है, पाचन को बढ़ाती है, वात के कार्यों को ठीक करती है, तीक्ष्ण दर्द को कम करता है और मजबूती को बढ़ाता है (301)। *शुंथी* भूख और पाचन को बढ़ाती है (263)। *वि(बि) भीतकी,* वमन, दस्त (अतिसार), पेचिश (आमातिसार/रक्तातिसार) अत्यधिक प्यास, और आमाशय को फूलाता है (197)। *आमलकी* भूख को बढ़ाती है, पाचन शक्ति को बढ़ाती है, वात विकार को शांत करती है और जीवन के लिए अमृत की तरह कार्य करता है (591)। *जांबू* पाचन तंत्र और यकृत कार्यों को उत्तेजित करता है (510)। हरीतकी भूख और पाचन को सुधारता है, मजबूती बढ़ाता है, मस्तिष्क टॉनिक की तरह कार्य करता है और पेचिश को नियंत्रित करता है (587)। *लताकरंज* पाचन तंत्र में विकारों को सही करता है और बुखार की वजह से होने वाली दुर्बलता (कमजोरी) को ठीक करता है (539)। *सरजीक्षार* भूख और पाचन को बढ़ाती है और कीड़ों को मारती है।

जिन रोगों का ऊपर वर्णन किया गया है वो ज्यादातर पाचन विकारों से सम्बन्धित है कि यहां अनुशंसा की गयी है।

सर्पदंश का उपचार (सर्पदंश चिकित्सा) (अध्याय 10)

प्राथमिक विधियां

श्लोक 12:

1. पीड़ित व्यक्ति की आंखों पर कर्णमल (कर्णगूथ) को लगायें।

   आयुर्वेद मूल–पाठों में कर्णमल के उपयोग को प्रमाणित किया गया है, फिर भी इसको सर्पदंश के काटने के स्थान पर लगाते हैं ना कि आंखों पर[15]।
2. विष के प्रसार को फैलने से रोकने के लिए पट्टी बांधते हैं।

   इसकी आयुर्वेद में भी अनुशंसा की गयी है।[16]

   आयुर्वेद में इस प्राथमिक विधि की पूर्ण प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दिया गया है (एएच.यू. तंत्र अध्याय 36)।

श्लोक 13:

उस स्थान को गर्म छड़ से जलायें।

इसकी आयुर्वेद में बहुत अधिक अनुशंसा की गयी है (आईबिड़ 45, 46)।

दवाईयां

श्लोक 15:

सर्वश्रेष्ठ औषधि को देना...

नमक को छोड़कर, यहां पर स्पष्टत : किसी भी विषाक्त विरोधी दवाईयों की अनुशंसा नहीं की गयी है। नमक की बहुत अधिक, जो कि उल्टी (वमन) लाता है और इसका स्पष्टतः सर्पदंश से प्रत्यक्ष संबद्ध नहीं है।

श्लोक 16 :

इन्द्रवरूणी, पटलगरूड़ कीटमारी और *अपराजिता* के रसों के मिश्रण को *कटुतुम्बी* के रस में मिलाकर दें।

इन्द्रवरूणी विषाक्त विरोधी है और इसके बीजों के तेल की विशेष रूप से विष के विरोध करने के लिए अनुशंसा की गयी है (347)। *पटलगरूड़* विषाक्त विरोधी है, जो कि सभी त्रिदोषों के असंतुलन को ठीक करती है और मजबूती प्रदान करता है। सर्पदंश पीड़ित व्यक्ति को इसकी जड़ों के रस को जबानी देते हैं (605)। *कीटमारी* जीवाणुओं और कीड़ों को मारती है और विष (ज़हर) को खींच निकालता है (412)। अपराजिता जड़ों की छाल और निर्गुण्डी की पीसी हुयी लेई को रोगी को जबानी दें (च. ची. 30, भा. 342)। *कटुतुम्बी* भी ज़हर (विष) के लिए विषनाशक (विषहर) है। यह वमन लाती है (313)।

श्लोक 17 :

यह सर्पदंश पहलू के निवारण का वर्णन है।

बहुत से पदार्थों को जिनको यहां पर विष विरोधी बताया गया है लेकिन उनका उपयोग निवारण के लिए किया जा सकता है, ये सर्पदंश के विरूद्ध प्रतिरक्षा प्रदान करते हैं, इनको आयुर्वेद के मूल–पाठों में प्रमाणित नहीं किया गया है। शायद (संभवतः) लेखक ने समुदाय आदत (अभ्यास) के आधार पर इसको सम्मिलित किया है।

मंत्र और निवारक विधियां

श्लोक 18–20:

इन श्लोकों में निवारक औषधियों का वर्णन दिया गया है उनमें से ज्यादातर विषाक्त विरोधी है लेकिन विधि और देने का समय आदि ज्योतिष शास्त्र और अंधविश्वास पर आधारित है।

विशेष रूप से चैन वाईपर विष का उपचार

श्लोक 21 – उपचार 1:

घी को *मयूरशिखा, करंज* के फूल और बीज, *मधु,* एक प्रकार की *महानिम्ब, सर्शप* आदि से दवायुक्त बनाते हैं।

घी सर्वश्रेष्ठ या उत्तम विषाक्तविरोधी है[17] (च.सु. 27–231)। *मयूरशिखा* के प्रासंगिक (संबद्ध) गुणधर्मों का पता नहीं चल सका। *करंज* के बीजों का उपयोग मछली–विष को दूर करने के लिए किया जाता है (120)। *मधु* के प्रासंगिक गुणधर्मों का पता नहीं चल सका। संभवतः इसे *योगवाही* (जिसके साथ इसको मिलाया जाता है उस दूसरी औषधियों के गुणधर्मों को बढ़ा देती है) माना गया है (710) । *महानिम्ब* की चूहे –विष के लिए अनुशंसा की गयी है (432)। *सर्शप* के प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध गुणधर्मों का पता नहीं चल सका (107)।

श्लोक 21 – उपचार 2 :

घी को *वचा* और *करवेल्ला* के साथ दवायुक्त बनाते हैं।

पूर्व में कथित, घी सर्वश्रेष्ठ या उत्तम विषाक्त विरोधी है। *वचा* बेहोशी से बचाती है और हृदय गति (धड़कन) को बढ़ाती है (21)। *करवेल्ला* विषाक्त विरोधी है (531)।

कोबरा दंश के लिए विशेष उपचार

श्लोक 22 – उपचार 1:

वनहरिद्रा कन्दों को गोबर रस में पीसकर, इस लेई को दें।

वनहरिद्रा रोगाणुरोधक की तरह कार्य करती है (135)। गोबर बेहोशी से बचाता है और विषाक्त विरोधी होता है।

श्लोक 22 – उपचार 2:

गोधृत और तिल तेल को जबानी दें।

गोधृत के गुणधर्मों की पूर्व में व्याख्या की गयी है। तिल का उपयोग *योगवाही* (घी के गुणधर्मों को बढ़ाती है) की तरह किया जाता है।

विभिन्न सर्पों के विष का उपचार

श्लोक 23 :

मरिच, पिप्पली, पटल की जड़ों, *कारवीर* की जड़ों और *अर्क* की फूल और जड़ों आदि को दलिये में मिलाकर जबानी दें।

दलिया थकान और सुस्ती (निष्क्रियता) को दूर करता है (एएच. सू. 5–79)। *मरिच अर्क* के साथ मिलकर विष के लिए विषहर होता है। *पिप्पली, पटल* और *कारवीर* आदि में प्रत्यक्ष रूप से सर्पदंश से संबद्ध के गुणधर्म नहीं पाये जाते हैं (222, 186, 537)। *अर्क* अपने आप में ही एक प्रकार का जहर है। इसको तकनीकी रूप से विष के विरूद्ध का ज़हर कहते हैं। आयुर्वेद में एक अवधारणा है कि जहर और विष परस्पर विषहर (विषनाशक) होते हैं। *अर्क* जड़ों का जहरीला रस सर्प विष के लिए एक प्रकार का विषहर (विषनाशक) है जब इसका *मरिच* के साथ संमिश्रण बनाते है। अनुवर्ती (*मरिच*) *योगवाही* (बढ़ावा देना) की तरह कार्य करता है या रक्त नलिकाओं को खोलने में मदद करता है जो कि *अर्क* रस द्वारा विष का अवतरण (निष्कर्षक) करने को सुगम (सरल) करता है।

निर्णायक टिप्पणियां :

विभिन्न कारणों की वजह से पशु चिकित्सा विज्ञान के भारतीय रिवाज के सिद्धान्त और रीति बाद में निरन्तर नहीं चल सके। इस मामले में प्रत्येक दूसरी शाखा को सीखना, पारंपरिक शिक्षा में निरन्तर विदेशी घुसपैठों से व्यवधान आया था। नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों को जिन्हें पूरे विश्व में पढ़ाई के उच्च दर्जे के लिए जाना जाता था उसको जला दिया, लूट लिया और नष्ट कर दिया गया था। परंपरागत शिक्षा को प्राप्त करने के लिए सुयोग्य (अच्छे) छात्र, कुछ समय के लिए विभिन्न पुटिकाओं में प्रयत्न कर रहे थे। बाद में लार्ड मैकुली (सन् 1800–1860) ने शिक्षा तंत्र को स्थापित किया जिसका उद्देश्य मैट्रिक पास और स्नातक शिक्षा के छात्रों को उत्पादित करना था, उनको अंग्रेजी का ज्ञान हो जाये जिससे ब्रिटिश शासन को चलाने मे मदद मिल सके। उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए बुद्धिजीवी वर्ग को अलग कर

दिया गया, प्रमुखता से ब्राह्मणों को पारंपरिक संस्कृत शिक्षा से और उनको अंग्रेजी और पश्चिमी ज्ञान के लिए आकर्षित किया जाने लगा। जब परंपरागत शिक्षा को लेने वाला कोई नहीं था तो प्राकृतिक वृद्धि और विज्ञान का विकास अवरूद्ध हो गया। आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने–अपने विषयों पर पश्चिमी विद्वानों और उनके द्वारा लिखित पुस्तकों से सीखा और विषयों में परंपरागत बुद्धिमानी (समझदारी) को काट (विच्छेद) कर रखा था जो कि प्राचीन भारतीय विद्वानों ने उनको क्रमबद्ध रूप में दिया था।

उस समय उनकी प्राचीन संस्कृत मूल–पाठों को अस्वीकार करने की प्रवृति थी और दूसरे विषयों और प्रत्येक क्षेत्र में पश्चिम ज्ञान को बढ़ावा दिया। पूरे देश में इस ज्ञान को ब्रिटिशियों के शिक्षा तंत्र द्वारा सुव्यवस्थित ढंग से विकसित किया गया। इस स्थिति में पशु चिकित्सा विज्ञान के रोगों का ज्ञान आगे नहीं बढ़ सका जिसके पीछे कई सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियां थी। फिर भी यहां पर लोगों का एक बहुत बड़ा समूह, जो कि संस्कृत के ज्ञान से बिल्कुल अलग था। अब तक की इन बाहरी परिस्थितियों को छोड़कर, पश्चिमी दबाव और जन्तुओं के रोगों का परंपरागत ज्ञान के आधार पर निदान का पता लगाकर चिकित्सा की जाती है जिसको की उनके द्वारा अगली पीढ़ी तक आगे बढ़ाया गया था। इसलिए भारत में इस शाखा में ज्ञान के तीन विभिन्न प्रचलित अस्तित्व है।

1. यह कि ये प्रत्यक्ष रूप से आयुर्वेद पर आधारित है जिसका कि प्राचीन संस्कृत कार्यों जैसे कि पलकप्य शैली होत्र से परिरक्षण किया गया है और पुराणों और वेदों के कार्यों से।
2. यह कि आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के आधार पर लेकिन मध्यकालीन समय में मनसोल्लास, लोकोपकार आदि के द्वारा स्थानीय रिवाजों के अनुसार उन कार्यों को संशोधित किया गया।
3. यह कि शास्त्र के साथ बहुत दूरवर्ती सम्बन्ध था और जो कि आज दिन तक भी स्थानीय प्रथाओं के रूप में निरन्तर अस्तित्व में है ये प्रथाएं देश में दूरवर्ती क्षेत्रों में विभिन्न मानव जातीय समूहों के मध्य प्रचलित है।

बाद में आधुनिक वैज्ञानिकों और विद्वानों द्वारा मानव जाति–पशु चिकित्सा प्रथाओं पर आंकड़े इकट्ठा करने के लिए विभिन्न अध्ययन किये गये। जिसका अनुसरण आदिवासी जनजातियों, ग्रामीणों, किसानों, औरतों और अन्यों द्वारा किया गया। जिनका कि भारत के विभिन्न भीतरी–क्षेत्रों पर आधिपत्य था।

उनमें से ज्यादातर को एशियन एग्री–हिस्ट्री जर्नल (दैनिकी) के विभिन्न अंको में लेखों के रूप में सम्मिलित किया गया। आयुर्वेद को ध्यान में रखकर एक समान अध्ययन की आवश्यकता है। निष्पक्ष मानव जाति–पशु चिकित्सा प्रथाओं के लिए क्रमबद्ध और समेकित अध्ययन बहुत संभावनीय है जो कि आधुनिक शिक्षा में हस्तक्षेप द्वारा अप्रभावित है इससे यह मालूम चलता है कि यह बहुत अधिक आयुर्वेदिक आधार से सम्बन्धित है। सामान्यतया कोई परम्परा नहीं, लोकसाहित्य (लोकवार्ता) और सामाजिक या धार्मिक प्रथा का प्रचलन भारतीय सभ्यता में जिनका कोई सम्बन्ध और सहारा शास्त्रों से नहीं था जो हमको विरासत में प्राप्त हुयी। उस समय के पाठ्यक्रम (विषय) का सम्बन्ध बिल्कुल अस्पष्ट था। कुछ मामलों में स्थानीय तत्व

परंपरागत विरासत को अधिक्रमण कर रहे थे। शिक्षा की कमी के कारण विज्ञान और आम आदमी के बीच विषमता (मतभेद) बढ़ रहे थे। लेकिन दोनों के बीच फिर भी संयोजन पाया गया।

संदर्भिका

Anonymous. 1948. Mahabharata (Shantiparva). Gita Press, Gorakhpur, India.

Chunekar, K.C. (Comm.) 1986. Bhavaprakashnighantu by Bhavamishra (Pande, G.S., Ed.). Choukhamba, Benaras, India.

Gogate, V.M. 2000. Ayurvedic Pharmacology and Therapeutic Uses of Medicinal Plants. Bharatiya Vidya Bhavan's SPARC, Mumbai, India.

Paradkar, Shastry Hari Sadashiv. (Ed.) 1997. Ashtangahridaya, Vagbhata. Choukhamba Surabharati Prakashan, Varanasi 221 001, India.

Sadhale, Nalini. (Tr.) 1996. Surapala's Vrikshayurveda (The Science of Plant Life by Surapala). Agri-History Bulletin No. 1. Asian Agri-History Foundation, Secunderabad 500 009, India. 96 pp.

Sharma, Priyavrat. 1956. Dravyagunavijnyana. Choukhamba Vidya Bhavan, Benaras, India.

Shastry, Ambikadatta. 2003. Susruta Samhita (Comm.). Choukhamba Sanskrit Sansthan, Varanasi 221 001, India.

Tiwari, M.K. and **Dubey, V.K.** 2000. Animal domestication and health care in ancient India. In: Ancient and Medieval History of Indian Agriculture and its Relevance to Sustainable Agriculture in the 21st Century: Proceedings of the Summer School held from 28 May to 17 June 1999, Rajasthan College of Agriculture, Udaipur, India (Choudhary, S.L., Sharma, G.S., and Nene, Y.L., eds.). Rajasthan College of Agriculture, Udaipur, Rajasthan, India. pp. 236–244.

Tripathi, Brahmananda. 2004. Charaka Samhita (Comm.). Choukhamba Surabharati Prakashan, Varanasi 221 001, India.

अंत सूचना

1. A: Wild boar knew the medicinal herb. Mongoose knew it. Snakes and Gandharvas knew it too. The same I invoke for healing our ailment.
   वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम्। सर्पा गन्धर्वा यां विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे। ।23। ।
   B: Birds and swans knew about it. All birds have its knowledge. Even the wild animals know it. I invite that herb to save us.
   ... वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः। मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे। ।24। ।
   C: May all those medicinal herbs which the healthy cows invariably eat when unwell and which the goats and sheep too, eat, save you acting as nectar and give you relief.
   यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यघ्न्या यावतीनामजावयः। तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वमृताः। ।25

2. Rgveda I-118-8.
3. Ibid I-116-15.
4. Mahabharata, Virata. 3-7; 12-8.
5. Tiwari/Dubey, 2000.
6. Ibid.
7. Charaka Chi. 30.
8. एवमेव क्षीरसर्पिर्जीवनीयोपसाधितम्। गर्भदं पित्तलानां--। । Charaka Chi. 4-69, 70.
9. पाके लघ्वाविकं सर्पिर्न च पित्तप्रकोपणम्। कफेऽनिले योनिदोषे शोषे कम्पे च तद्धितम्। । Sushruta Su. 45-101.
10. Veerana.
11. पित्तलानां तु योनीनां सेकाभ्यङ्गपिचुक्रियाः। शीताः पित्तहराः कार्याः स्नेहनार्थं घृतानि च। । Charaka Chi. 4-63.
12. वयोऽहरात्रिभुक्तानां तेऽन्त्यमध्यादिगाः क्रमात्।
13. ज्वरादौ लङ्घनं प्रोक्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्। ज्वरान्ते भेषजं दद्यात् ज्वरमुक्तेर्विरेचनम्। ।
14. लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा। घृतेन वातजान् रोगान् सर्वरोगान् गुडान्विता। । (Bhava. p. 6, v 33).
15. निष्ठीवेन समालिम्पेद्दंशं कर्णमलेन वा। AH. U. Tantra 36-41.
16. दंशस्योपरि बध्नीयादरिष्टां चतुरङ्गुले।
क्षौमादिभिर्वेणिक्रियासिद्धैर्मन्त्रैश्च मन्त्रवित्। । Ibid. 42.
17. सर्वेषु सर्वावस्थेषु विषेषु न घृतोपमम्।
विद्यते भेषजं किञ्चिद्विशेषात्प्रबलेऽनिले। । AH. U. 35- 69/70.

टिप्पणी

उमाशशि भालेराव[1]

मैंने लोकोपकार के मूल–पाठ के अंग्रेजी अनुवाद को बहुत ही रूचि के साथ पढ़ा, जो कि प्रख्यात कवि चावुन्द्राय द्वारा 1025 ईसवी सन् में पुरानी कन्नड़ भाषा में लिखा गया था और इसका परिचय श्री वाल्मीकि श्रीनिवास अयंगर द्वारा लिखा गया था।

मूलपाठ में विभिन्न विषयों पर बारह अध्याय थे जो कि आम आदमी के उपयोग से सम्बन्धित थे। लेख नए या मूल नहीं थे, लेकिन मूल–पाठ पुरानी संस्कृत पर आधारित थे। चावुन्द्राय ने ऐसी जानकारियों को एकत्रित किया, जिसको कि वे सोचते थे कि वो आम आदमी के लिए उपयोगी होगी। फिर उसका बोलचाल की पुरानी कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया गया। उनका यह प्रयास वास्तव में काफी सराहनीय था, वे चाहते थे, कि ये महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारियां आम आदमी तक पहुंचे, जो कि संस्कृत को नहीं समझते थे। मूल–पाठों के नामों का बहुत महत्व है। लोकोपकार से तात्पर्य है "मानव जाति के कल्याण के लिए"। उनके द्वारा एक पूरा अध्याय (57 श्लोकों) *सूप–शास्त्र* पर सम्मिलित किया गया, *सूप शास्त्र* से तात्पर्य है कला और पकाने का विज्ञान ।

जबकि मैं स्वयं एक कन्नड़ जानने वाली हूं। मैं दक्षिण भारत के कर्नाटक की भोजन संस्कृति से परिचित हूं, इसलिये इस अध्याय जो कि कला और पकाने के विज्ञान पर है, से बहुत ज्यादा प्रभावित हुयी। प्रथम बात जिसने मुझे प्रभावित किया वो ये है, कि मूल–पाठों में मांसाहारी व्यंजनों का कहीं भी वर्णन नहीं किया गया है। कन्नड़वासी मूल रूप से शाकाहारी होते हैं और चावुन्द्राय एक जैन कवि थे।

इस अध्याय के पहले वाक्य में ही, चावुन्द्राय ने इस बात पर जोर दिया है, कि हमारे पूर्वजों ने कहा है कि "भोजन ही जीवन" है। अतः भोजन मानव जीवन का बहुत ही आवश्यक अंग है। इसलिये उन्होनें मानव के कल्याण के लिए पाक–विधि की कला और विज्ञान के बारे में लिखा। शुरू में उन्होनें बहुत ही साधारण बातों के बारे में बताया है, कि चावल को ठीक प्रकार से कैसे पकाया जाता है। अपरिष्कृत चावल को साफ करके, स्वच्छ पानी से तीन बार धोयें और उसके पश्चात् उबलते हुए पानी में पकाते हैं। यह ध्यान रखने की बात है, कि इसमें स्वच्छता का भी बहुत ज्यादा महत्व होता है। जब चावल को पकाया जाता है तो अत्यधिक पानी को निकाल दिया जाता है। प्रेशर कुकर के आविष्कार से पहले, मैंने यह देखा है कि चावल को चावुन्द्राय द्वारा बतायी गयी विधि से पकाया जाता था। हर मामले में भारत में ज्यादा लोग संयुक्त परिवार में जीवन निर्वाह करते हैं और बहुत अधिक मात्रा में चावल को उसी पुरानी परंपरागत विधि से पकाया जाता है। यहां पर यह पढ़कर बहुत दिलचस्पी हुयी कि पके हुए चावल को लम्बे समय के लिए कैसे संरक्षित किया जाता है, इसके लिए तुलसी की पत्तियों के क्वाथ का उपयोग किया

[1]Shatrunjay Apartments, 33, Sanewadi, Anudh Pune 411 007, Maharashtra , India.

जाता था (इस पुस्तक की पादप सूची में देखें)। आज भी जब हम भगवान को भोजन भेंट करते हैं, तो पके हुए चावलों पर हमेशा तुलसी की कुछ पत्तियों को उस पर रखते हैं। यह प्राचीन समय से प्रयोग में ली जाने वाली एक धार्मिक प्रथा है जिसके पीछे भोजन को संरक्षित करने का वैज्ञानिक कारण है।

10 वीं शताब्दी ईसवी सन् में कर्नाटक में चावल मुख्य भोजन होता था। यह उल्लिखित था कि चावल को दही, *हुली, सांभर, कुटु* या सब्जियों के साथ सेवन किया जाता है। इस एक अध्याय में, चावुन्द्राय ने 31 सब्जियों और 12 मसालों को सब्जियों और दालों को विभिन्न खुशबू के लिए उल्लिखित किया गया है। हल्दी और नींबू रस का भी साधारणतः उपयोग किया जाता था।

सांभर, हुली या कुटु को बनाने के लिए, इलायची, जीरा, सरसों, काली मिर्च, दाल चीनी और धनिया बीज को पानी के साथ पीसकर और इस दलिए और पकी हुयी दाल में नमक और इमली के साथ मिश्रित करने को उल्लिखित किया गया था। आज भी कर्नाटक में *मसाला* बनाने की बहुत प्रचलित विधि है यद्यपि इसमें कुछ विभिन्नता है। *पल्य* (पत्तेदार सब्जियां) को बनाने के विभिन्न तरीकों को मूल–पाठ में उल्लिखित किया है। *पल्य* को अलग तरीके से बनाने के लिए प्रचलित सब्जियों के प्रभेद, पत्तियो, जड़ों, अंकुरित और नये अंकुरो का उपयोग किया जाता था। यह भी उल्लिखित था कि निश्चित पत्तियों, जड़ों, अंकुरित और नये अंकुरों, (पीपल के नये अंकुर, इमली के नये अंकुर और एरण्ड (अण्डी के नये अंकुरो) को नींबू रस या छाछ में भिगों दिया जाता था। पकाने से पूर्व, जिससे उनका असहनीय कड़वा स्वाद दूर हो जाये। यह जानकर आश्चर्य होगा कि हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूर्वज यह जानते थे कि निश्चित बीजों और जड़ों को पकाने से पूर्व इनकी विषाक्तता को कैसे दूर किया जाता था, साथ ही वे निश्चित सब्जियों की कड़वाहट को दूर करने की विधियां भी जानते थे। इस अध्याय में विभिन्न सब्जियों की कड़वाहट को हर्बल (जड़ी–बूटियों) द्वारा कैसे दूर किया जाता है, का विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। आज भी हम करेलों की कड़वाहट को दूर करने के लिए उसी विधि जिसमें नमक, हल्दी पाउडर और नींबू रस का उपयोग करते हैं। कुछ सब्जियों से होने वाली खुजली को दूर करने के लिए, उन्हें चावल लेई में कुछ समय के लिए भिगोते हैं और फिर इमली के पानी में उबालते हैं। हम सब्जी की खुजलाहट को दूर करने के लिए इमली का भी उपयोग करते हैं। यह जानना रूचिकर होगा कि ये जानकारियां एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक कैसे पहुंची जो कि आज भी उपयोगी और प्रयोग में ली जाती है।

कुछ निश्चित नुस्खों में चावुन्द्राय ने *ओग्गेरेन* को उल्लिखित किया था। *ओग्गेरेन* (हिन्दी में *तड़का* या *बघार* और मराठी में *फोदनी*) सभी प्रकार की सब्जियों और दालों के निर्माण का एक आवश्यक और अनिवार्य भाग है। उबलते हुए तेल या घी में सरसों बीज, जीरा बीज, हींग पाउडर और हल्दी पाउडर को मिलाते हैं। कुछ में दूसरे मसाले जैसे–मिर्च, कढ़ी (सालन) पत्ते, उड़द आदि को मिलाते है। इस *ओग्गेरेन* में सब्जियों को तलते और पकाते हैं। जब *हुली* और *सांभर* को तैयार करना होता है तो इस *ओग्गेरेन* को पकी हुयी दाल में मिलाते हैं। आज भी

कर्नाटक में कोई भी स्वादिष्ट भोजन वस्तु बिना *ओग्गेरेन* के पूर्ण नहीं होती है।

दूसरा बिंदु यहां जो ध्यान आकर्षित करता है वो यह है कि किसी भी नुस्खे में प्याज और लहसुन के उपयोग का उल्लेख नहीं किया गया है। पुराने जमाने में, शुद्ध शाकाहारियों विशेषकर ब्राह्मणों द्वारा प्याज या लहसुन को कभी भी बहुत नहीं खाते थे। मेरी मां (जन्म, बड़ा होना और उनकी शादी, एक बहुत ही रूढ़ीवादी ब्राह्मण परिवार मे हुयी) ने बताया कि उनकों 30 वर्ष की आयु तक प्याज का स्वाद कैसा होता है को वो नहीं जानती थी।

यह प्रतीत होता है, कि उन दिनों *इड़ली* को तैयार करने में उड़द के टुकड़ों को पीसकर उसमें दही की सतह के साफ पानी, हींग, जीरा, धनिया और काली मिर्च आदि को मिलाकर बनाया जाता था और बाद में उसको आकार दिया जाता था। आधुनिक *इड़ली* के नुस्खे में जिन अन्य तीन तत्वों को सम्मिलित किया जाता है वो इसमें अनुपस्थित थे। यहां पर उड़द में चावल कणों को मिलाने का (दो भाग चावल को एक भाग उड़द के अनुपात में मिलाना), इस मिश्रण को किण्वित होने के लिए पूरी रात रखना और *इड़ली* को भाप द्वारा पकाने को उल्लिखित नहीं किया गया है। इन तीनों तत्वों को बाद की शताब्दियों में सम्मिलित किया गया है।

सूखे और भुने हुए जौ पाउडर से *लड्डू* बनाने का नुस्खा और उसमें घी, शर्करा चाशनी, इलायची पाउडर और केसर को मिश्रित करना, रवा *लड्डूओं* के समान ही था (कन्नड़ में *रवे उन्डे*)। लड्डू के लिए शर्करा चाशनी (*पका*) बनाने की विधि बिल्कुल सही दी गई थी।

दूध पिण्डों को जमे हुए दूध से तैयार करते थे, उसमें उबलते हुए दूध में अतिबल या बल के जड़ो के पाउडर को मिश्रित करते थे, उसके बाद दूध में घी, इलायची और दालचीनी को मिलाते हैं। चावुन्द्राय ने कहा था कि इन दूध पिण्डों का स्वाद अमृत के समान होता है। वो ये भी जानते थे कि भैंस के दूध में चौलाई पादप की जड़ों और *कोकिलक्षा* की पत्तियों को दूध में मिलाकर कैसे मृदु पनीर बनाया जाता है।

इस अध्याय में दिये गये भोज्य पदार्थों के नाम आज भी वो ही है। उदाहरण के लिए *सेविज, मेंडिज* और *सेंडिज* आदि ।

सेविज सेवई के जैसी होती है । इन दिनों हम मशीन द्वारा निर्मित सेवई या *सेविज* को खरीद सकते हैं। लेकिन पुराने जमाने में मेरी माता और चाची *सेविज* को घर पर बनाते थे। यह एक सुपरिष्कृत (विस्तृत) और लम्बी विधि थी। गेहूं और चावल के आटे में घी और दूध मिलाकर इसकी लोई बना लेते थे। इस लोई से लम्बी और पतली *सेविज* बनाते थे। चावुन्द्राय ने ये उल्लिखित किया था कि पिण्डों और *लड्डूओं* का निर्माण *सेविज* पर शर्करा चाशनी और दूध आसंजक का उपयोग कर निर्मित किया जाता था। मैंने इस तरह के *लड्डूओं* को कभी नहीं देखा। हम ज्यादातर *सेविज* का ज्यादातर उपयोग पयसम (*खीर*) को तैयार करने में करते है।

आज भी कर्नाटक में एक बहुत बड़े पतले पराठे को *मेंडिज* कहते हैं। इस पराठें को पीसी हुयी परिष्कृत शर्करा जिसमें इलायची पाउडर भी होता है से भरते है और इसको मिट्टी के

उल्टे बर्तन पर पकाते है। चावुन्द्राय ने *मेंडिज* बनाने का कोई नुस्खा नहीं दिया। लेकिन उन्होंने यह लिखा था कि *मेंडिज* को गर्म दूध और घी के मिश्रण में भिगोना चाहिए। उसके बाद केसर, दालचीनी, इलायची और मुलायम नारियल के पानी को इसमें मिलाना चाहिए। इस मिश्रण को मोहरबंद बर्तन में रखते है और इस मोहरबंद बर्तन (बर्तन को गेहूं की लोई से मोहरबंद करते है जिसको कन्नड़ में *कनिक* कहते है।) को आग के बीच में रख देते है। बाद में इस पके हुए मीठे मिश्रण को बर्तन से निकालकर परोसते है। संभवतः उन दिनों *मेंडिज* का मतलब पका हुआ गेहूं या चावल का पका हुआ आटा होता था।

कर्नाटक में *सेंडिंज* एक घरेलू उपक्रम है। इसको धान्यों, दाल आटा और पेठा आदि से तैयार किया जाता है। मिर्च–मसाले जैसे तिल, हींग पाउडर, नमक और मिर्च पाउडर को इसमें मिलाकर और इस मिश्रण के छोटे पिण्ड बनाकर सूर्य की गर्मी में सुखाते हैं। इनको परोसने से पहले तेल में तला जाता है। *सेंडिज* को गर्मी मे तैयार किया जाता है और बाद में उपयोग के लिए संग्रहित कर लेते हैं। चावुन्द्राय ने कुछ अलग तरह का नुस्खा दिया था। कासमर्द की पत्तियों को चावल की लेई में तीन दिनों तक भिगोते हैं। उसका साफ पानी लेकर उसमें जौ, तिल और उड़द को पीसते हैं। उसके बाद इसमें हींग पाउडर और हल्दी को मिलाते हैं और *सेंडिज* तैयार करते हैं और सूर्य की गर्मी में सुखाते हैं। बाद में उनको तेल में तलते हैं। यद्यपि थोड़ा बहुत अन्तर है लेकिन *सेंडिज* का आधारभूत विचार लगभग एक जैसा है।

अच्छा (उत्तम) दही (योर्गट) बनाने की कई विधियों का वर्णन किया गया है। *अपामार्ग* का पाउडर और *महाबल* की जड़ें या शुद्ध तिल तेल या *कर्निका* के फूलों को गर्म दूध में मिलाकर दही तैयार करें। इस दही से निकाले गये मक्खन से अच्छा घी प्राप्त होगा। यह भी उल्लिखित है कि कपिटाह के गूदे को 21 बार हाथ से गाढ़े दही में निचोड़ते हैं। इसके बाद इस गूदे को छाया मे विकृत और सुखाना चाहिए। इस पाउडर को दही पाउडर की तरह दैनिक उपयोग के लिए संग्रहित किया जा सकता है। यह संवर्धन का एक अद्‌भुत तरीका है जिसमें दही टीका लगाने के पदार्थ को संरक्षित करने के लिए प्रेरित करता था। आज हमें दैनिक दही के निर्माण की इतनी विस्तृत विधियों की आवश्यकता नहीं है। लेकिन यहां यह ध्यान देने की बात है, कि हमारे पूर्वजों ने उत्तम (श्रेष्ठ) दही निर्माण के लिए कई विभिन्न वैज्ञानिक विधियां विकसित की थी। वो ये भी जानते थे कि सुगंधित दही कैसे तैयार करते हैं। मूल–पाठ में एक नुस्खा यह बताता है कि साफ बर्तन कि भीतरी सतह को आम के रस से लीप दें। इस बर्तन में गर्म दूध मिला दें। दूध दही में परिवर्तित हो जाता है जिसमें कि आम की खुशबू आयेगी। इसी प्रकार से विभिन्न फलों के गूदों को दही में विभिन्न खुशबू के लिए उपयोग किया जा सकता है।

चावुन्द्राय ने विभिन्न फलों से रस को निकालने के लिए उसमें गुड़ (गन्ने से प्राप्त) को मिलाकर, रस निकालने की कई विस्तृत दिशाएं बतायी थी और उसके बाद सूर्य की रोशनी में रखते हैं। उन्होनें बताया कि आम की गोलियां और अपरिष्कृत फलों को घी में संरक्षित किया जा सकता है। पके हुए आम के फलों के रंग और स्वाद को कुछ दिनों तक संरक्षित रखने के लिए उसे द्रवीय गुड़ और शहद में संरक्षित करते हैं। यहां पर बाबर और मुग़ल को याद करना उपयुक्त होगा कि वे भारत में घुसने के लिए शुभ शगुन का इन्तजार कर रहे थे। उन्होनें सन्

1526 में अन्तिम निर्णय लिया था। उस दिन उनको दौलत खान लौधी से शहद में सरंक्षित आमों का उपहार प्राप्त हुआ था। आज हम फलों को संरक्षित करने के लिए गुड़ के स्थान पर शर्करा चाशनी का उपयोग करते हैं। पके हुए फलों को अच्छी तरह से घोटकर *सीकरने* बनाते हैं। जब मैं बच्चा था तब मैं केले का *सीकरने* और आम का *सीकरने* खाता था। *सिखरनी* गुड़ और जायफल के पाउडर आदि को दही में मिलाकर भी बनाया जाता था।

भोज्य वस्तुओं के बहुत से नाम जो मूल–पाठ में हजारों वर्ष पूर्व लिखे गये थे आज भी आधुनिक कन्नड़ भाषा में उन्हीं शब्दों का उपयोग किया जाता है। हम *अन्न, हुली, पल्य, ओग्गरेन, सीकरने, उन्डे, सेविज, मेंडिज और सेंडिज* आदि का प्रतिदिन उपयोग करते है। इन नुस्खों को बनाने की विधियां आज के समय से थोड़ी भिन्न जरूर है लेकिन आधार वो ही है। चावुन्द्राय द्वारा लिखित यह मूल–पाठ विभिन्न जड़ी–बूटियों, मिर्च–मसालों और दूसरे अवयवों के निरन्तर प्रयोगों की पूरी जानकारी प्रदान करता है, जिनके द्वारा हमारे पूर्वज विभिन्न भोज्य वस्तुओ को लम्बे समय तक संरक्षित रखने के लिए विभिन्न विधियों को अपनाते थे।

मैं डॉ. वाई. एल. नेने, अध्यक्ष, एशियन एग्री–हिस्ट्री फाउन्डेशन को धन्यवाद देती हूं कि जिन्होनें मुझे *सूप–शास्त्र*, अध्याय के अध्ययन का मौका दिया और मेरी समीक्षा (टीका टिप्पणी) को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया ।

पादप सारणी

पादप नामों की सारणी-प्रथम

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Abrus precatorius L.	Jecquirity seeds	*Gunja*	**6**/45; **8**/25, 31; **9**/4, 13
Abutilon indicum (L.) Sweet	Indian abutilon	*Atibala*	**8**/10
Acacia catechu (L.f.) Willd.	Catechu	*Khadira*	**7**/4, 9-10, 62; **9**/47
Acacia pennata (L.) Willd.	*Biswal* (Hindi)	*Khadiravallari*	**8**/27
Achyranthes aspera L.	Prickly chaff flower plant	*Apamarga*	**8**/43; **9**/6, 28
Aconitum heterophyllum Wall. ex Royale	*Atis* (Hindi)	*Ativisha*	**6**/11; **9**/41, 44, 57
Acorus calamus L.	Sweet Flag	*Vacha*	**6**/11, 45; **7**/3; **9**/8, 16, 40, 57; **10**/21; **11**/29
Adhatoda vasica Nees	Malabar nut	*Vasaka*	**9**/32, 37, 38, 45, 50
Adiantum capillus-veneris L.	Maidenhair fern	*Hansapadi*	**7**/52
Aegle marmelos (L.) Corr.	Bael, Bengal Quince	*Bilva*	**5**/19, 27; **6**/38, 44; **7**/ 11, 25, 26, 36, 41, 50, 52, 58, 63, 70; **8**/20; **9**/ 15, 37, 45, 50
Alangium Salviifolium (L.f.) Wang.	Sage-leaved alangium	*Ankola, ankota*	**5**/27; **6**/19, 25, 30, 54, 57
Albizia lebbeck (L.) Benth.	Lebbeck-tree, siris	*Sirisah, bhandi*	**5**/27, 29; **7**/3; 8/27; **9**/37
Albizia odoratissima (L.f.) Benth.	Black siris	*Sirisah, bhandi*	**10**/19
Alhagi pseudalhaghi (Bieb.) Desv.	Camel thorn	*Durlabha*	**9**/41, 50
Allium cepa L.	Onion	*Palandu*	**8**/27
Allium sativum L.	Garlic	*Rasonah, lasuhna*	**7**/68, 70; **8**/27; **9**/16; **11**/29
Aloe barbadensis Mill.	Barbados aloe	*Kumari*	**8**/27; **9**/54
Alpinia galanga (L.) Sw.	Greater galangal	*Rasna*	**9**/25, 34, 50, 57
Alstonia scholaris (L.) R. Br.	Dita bark tree	*Saptaparnah*	**9**/37, 47, 57
Alternanthera sessilis (L.) R.Br. ex DC.	*Gudari saag* (Hindi)	*Matsyakshi*	**8**/19
Amaranthus blitum L. var. *oleracea* Duthie	Amaranth (for vegetable)	*Marisha*	**5**/12; **8**/22; **9**/15
Amaranthus cruentus L.	Amaranth (grain)	*Rajagiri*	**8**/9
Amorphophallus campanulatus (Roxb.) Blume ex Dcne.	Elephant-foot yam	*Surana*	**8**/27, 28; **9**/52
Andrographis paniculata (Burm.f.) Wall. ex Nees	King of bitters	*Bhunimbah*	**9**/47
Anethum sowa Kurz	Indian dill	*Shatapushpa*	**6**/14; **7**/41; **8**/40; **9**/50
Anthocephalus cadamba (Roxb.) Miq.	Kadam	*Kadamba*	**5**/33; **7**/2
Apium graveolens L. var. *dulce* (Mill.) DC.	Celery	*Ajmoda*	**9**/57
Aquilaria malaccensis Lamk.	Agar, calambac, eagle wood	*Aguru*	**6**/34, 49; **7**/9-10, 18, 26, 30, 35 -37, 42, 49, 52, 54, 55, 58, 60, 64; **8**/57
Areca catechu L.	Arecanut	*Kramukah, pugah*	**6**/45; **7**/3; 19, 23, 32; **9**/8, 28
Aristolochia bracteolata Lamk.	Bracteated birthwort	*Kitamari*	**8**/29; **10**/16

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Artemisia nilagirica (Clarke) Pamp.	Indian wormwood fleabane	*Nagadamani*	7/28
Artocarpus heterophyllus Lamk.	Jack fruit	*Panasah*	6/21, 26, 31; 7/56; 8/35
Artocarpus lakoocha Roxb.	Monkey jack fruit	*Lakucha*	7/50
Asparagus racemosus Wild.	*Satmuli, satawar* (Hindi)	*Shatavari*	8/27
Azadirachta indica A. Juss	Neem tree, margosa	*Nimba*	5/30; 6/38, 45; 7/68; 8/25; 9/17, 21, 29, 32, 38, 47, 48, 57
Baliospermum montanum (Willd.) Muell.-Arg.	*Dantt* (Hindi)	*Danti*	7/18
Bambusa arundinacea (Retz.) Willd.	Bamboo	*Vanshlochan*	8/50; 9/13
Barleria cristata L.	*Tadrelu* (Hindi)	*Kurabaka, kuranta*	6/50
Basella alba L.	Indian spinach	*Potaki*	9/15
Bauhinia variegata L.	Mountain ebony	*Kanchanara, kovidara*	5/35
Berberis aristata DC.	Indian barberry	*Daruharidra*	7/56; 9/34, 52, 55
Betula alnoides Buch.-Ham.	Indian birch	*Bhurjah*	7/67
Bignonia crispa Buch.-Ham.	Trumpet flower	*Syonakah*	7/2, 18
Bombax ceiba L.	Red silk-cotton	*Mocha, salmali*	9/14
Borassus flabelifer L.	Palmyra palm	*Tala*	5/24, 26
Boswellia serrata Roxb. ex Colebr.	Indian olibanum	*Sallaki*	7/13, 29, 31, 32, 44, 58
Brassica alba (L.) Rabenh.	White mustard	*Sarshapa, siddhartha*	6/45
Brassica nigra (L.) Koch	Black mustard	*Rajika*	4/47; 6/10-12; 8/16, 55; 9/8, 10 , 19, 30, 52, 57; 10/21
Breynia retusa (Dennst.) Alston	*Bahupushpa* (Hindi)	*Kamboji*	8/18
Butea monosperma (Lamk.) Taubert	Flame of the forest	*Palasha*	5/19, 34, 37, 38; 8/21
Cadaba fruticosa (L.) Druce	*Kodhab* (Hindi)	*Balaya (?)*	9/8
Caesalpinia crista L.	Bonduc nut, molucca bean	*Latakaranjah*	7/15, 27, 30, 32, 33, 35, 64; 9/26, 57
Callicarpa macrophylla Vahl	*Daya* (Hindi)	*Priyangu*	6/42
Calophyllum inophyllum L.	Indian laurel	*Punnagah*	7/46
Calotropis gigantea Ait.	Madar	*Arkah*	5/40; 8/27; 9/10, 13, 25, 26, 28, 30, 32, 52; 10/23
Calotropis procera (Willd.) Dryand ex W. Ait.	Akund	*Mandara, arka*	9/9
Capparis sepieria L.	Indian caper	*Kanthari*	9/24
Capparis zeylanica L.	*Gitoran, ardanda* (Hindi)	*Vyaghranakhi*	8/30
Carthamus tinctorius L.	Safflower	*Kusumbah*	7/62
Cassia occidentalis L.	Coffee senna	*Kasamardah*	8/17, 22
Cedrus deodara (Roxb. ex Lamb.) G. Don	Deodar, Himalayan cedar	*Devadaru*	6/45; 7/19, 26, 33, 51, 58; 9/36, 47

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Ceiba pentandra (L.) Gaertn.	Silk cotton	*Kutasalmali*	**9**/28
Celosia cristata L.	Cock's comb	*Mayurashikha*	**10**/21
Centella asiatica (L.) Urban	Asiatic pennywort	*Brahmi*	**9**/32, 42
Cicer arietinum L.	Chickpea	*Chanaka*	**6**/52; **8**/15, 16, 45
Cinnamomum zeylanicum Blume	Cinnamon	*Tvaka*	**7**/2-4, 16, 18, 19, 27, 28, 32, 44, 45, 51, 64; **8**/5, 7, 10, 14, 53-55, 57
Cissampelos pareira L.	False pareira root	*Patha*	**7**/47
Citrullus colocynthis (L.) Kuntze	Bitter apple, colocynth	*Indravaruni*	**9**/26, 32; **10**/16
Citrus limon (L.) Burm.f.	Lemon	*Jambira*	**6**/44
Citrus medica L.	Citron	*Matulunga*	**6**/21, 34; **7**/8, 11, 53, 55; **8**/3, 34, 53, 56
Citrus sinensis (L.) Osbeck	Sweet orange	*Nagaranga*	**6**/33
Clerodendrum indicum (L.) Kuntze	Tube flower, Turk's turban	*Bharangi*	**5**/17; **7**/26; **9**/38
Clerodendrum phlomidis L.f.	*Arani* (Hindi)	*Agnimantha*	**9**/50
Clitoria ternatea L.	*Gokarni* (Hindi)	*Aparajita, girikarnika*	**9**/24, 32; **10**/16, 17
Coccinea grandis (L.) Voigt	Ivy gourd	*Bimbi*	**8**/30; **9**/14
Cocculus hirsutus (L.) Diels	*Jamti ki bel* (Hindi)	*Patalagarudi, patalagaruda*	**9**/14, 24; **10**/16
Cocos nucifera L.	Coconut	*Narikela*	**5**/26; **6**/32; **8**/7, 8, 46
Commiphora wightii (Arnott) Bhandari com. nov.	Indian bdellium tree	*Guggulu*	**6**/12; **7**/3, 7, 11, 13, 27, 32, 42, 46, 55, 57, 58, 60; **9**/28
Cordia dichotoma var. wallichi (Cl.) Maheshwari	Indian cherry, sebesten	*Slesmataka*	**8**/27
Coriandrum sativum L.	Coriander	*Dhanyaka*	**7**/4, 44; **8**/11, 41, 55; **9**/41
Corypha umbraculifera L.	Fan palm, talipot palm	*Alpayushi*	**8**/34
Crataeva nurvala Buch.-Ham.	*Barna* (Hindi)	*Varunah*	**7**/56
Crocus sativus L.	Saffron	*Kumkuma, keshara*	**7**/24; **8**/5, 7, 14, 52
Croton oblongifolius Roxb.	*Chuka* (Hindi)	*Hastidanti*	**7**/11
Croton tiglium L.	Croton	*Dravanti, jayapala*	**9**/47
Cucumis pseudo-colocynthis Royale	*Indrayan* (Hindi)	*Vishala*	**6**/11
Cucurbita maxima Duch.	Red gourd, red pumpkin	*Gudayogaphala*	**6**/55
Cuminum cyminum L.	Cumin	*Jiraka*	**8**/11, 53, 55; **9**/7, 57
Curcuma angustifolia Roxb.	East Indian arrowroot	*Tavakshir*	**7**/9-10
Curcuma aromatica Salisb.	Wild turmeric, zedoary	*Vanaharidra*	**7**/23, 28; **8**/54; **9**/16, 26, 32; **10**/22
Curcuma domestica Val.	Turmeric	*Haridra*	**6**/12, 45; **7**/14; **8**/17, 22, 26; **9**/16, 25, 28, 34, 52 , 54, 55

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Curcuma zedoaria (Berg.) Rose.	Wild turmeric, zedoary	*Karchura*	**7**/23, 28; **8**/54; **9**/16, 26, 32; **10**/22
Cymbopogon martinii (Roxb.) Wats.	Palma rosa	*Rohisa*	**5**/28
Cynodon dactylon (L.) Pers.	Bermuda grass, sacred grass	*Durva*	**5**/34; **8**/36; **9**/4
Cyperus rotundus L.	Nut grass	*Musta*	**6**/27, 46; **7**/4, 5, 32, 35, 38, 43; **8**/57; **9**/7, 36, 47, 50
Datura metel L.	*Kaladhatura* (Hindi)	*Dhattura, unmatta*	**9**/15
Datura stramonium L.	Thorn apple	*Dhattura*	**7**/14; **8**/31, 38; **9**/25
Desmostachya bipinnata (L.) Stapf	*Dab, darbha, durva* (Hindi)	*Kusa*	**5**/28, 34
Diospyros peregrina (Gaertn.) Gurke	Indian persimmon	*Tinduka*	**5**/37; **7**/46; **9**/41
Diploknema butyracea (Roxb.) H.J. Lam.	Indian butter-tree	*Phulwara* (Hindi)	**7**/38
Dolichos uniflorus Lam.	Horsegram	*Kulattha*	**9**/17, 33
Echinops echinatus Roxb.	*Utakanta* (Hindi)	*Tikshanagra*	**9**/27
Eclipta prostrata (L.) L.	*Bhangra, mochkand* (Hindi)	*Bhringaraj, markava*	**9**/28; **10**/17
Elettaria cardamomum Maton	Cardamom	*Ela*	**7**/2, 4, 5, 19, 21, 23, 27, 28, 43, 51; **8**/5, 7, 10, 55, 57
Embelia ribes Burm. f.	*Baberang* (Hindi)	*Vidanga*	**6**/6, 11-13, 18, 32; **7**/39; **9**/32, 36, 50, 57
Emblica fischeri Gamble	Myrobalan emblic	*Amalaki*	**9**/57
Emblica officinalis Gaertn.	Emblic myrobalan, Indian gooseberry	*Dhatri, amalaki*	**5**/17, 27; **6**/34, 39; **7**/24, 27, 28; **8**/20, 49, 56
Erythrina indica Lamk. var. *parcellii* Hort.	Indian coral tree	*Paribhadrah*	**9**/43
Erythrina stricta Roxb.	*Mura* (Hindi)	*Mura*	**7**/26
Euphorbia tirucalli L.	Indian tree spurge, milk-bush	*Vajradruma*	**8**/27; **9**/53
Fagus sylvatica L.	Indian beech		**8**/23; **9**/57; **10**/21
Ferula assafoetida L.	Asafetida	*Hingu*	**6**/11; **7**/15, 68, 69; **8**/11, 17, 53; **9**/16, 32, 41, 57
Ficus benghalenis L.	Banyan	*Nyagrodha, vata*	**5**/31; **6**/26; **7**/56; **9**/15
Ficus carica L.	Fig	*Anjira*	**6**/26; **7**/57
Ficus glomerata Roxb.	Cluster fig	*Udumbara*	**5**/20
Ficus hispida L.f.	Wild fig	*Kakodumbara*	**5**/21
Ficus lucescens Blume	*Pilkhan* (Hindi)	*Plaksha*	**6**/26; **7**/56
Ficus religiosa L.	Pipal	*Asvattha*	**6**/26; **7**/56; **8**/20
Flacourtia jangomas (Lour.) Raeusch.	Puneala plum	*Talisha*	**10**/17
Glycyrrhiza glabra L.	Licorice	*Yashtimadhu*	**6**/37, 40; **7**/14; **9**/34, 44
Gmelina arborea L.	Malay bush-beech	*Gambhari, kashmari*	**9**/37
Gossypium arboreum L.	Tree cotton	*Karpasa*	**8**/26; **9**/23

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Gymnema sylvestre (Retz.) Schult.	*Merasingi* (Hindi)	*Ajashringi, meshashringi*	**8**/23
Heliotropium indicum L.	*Hatisura* (Hindi)	*Srihastini*	**7**/18, 28, 34, 35, 37, 55
Hibiscus rosa-sinensis L.	Shoe-flower	*Japa*	**6**/50; **8**/18
Hiptage benghalensis (L.) Kurz	*Madhavilata* (Hindi)	*Madhavi*	**6**/21
Holarrhena antidysenterica (L.) Wall. ex DC.	Easter tree, ivory tree	*Kutaja, kalinga*	**9**/44
Holoptelea integrifolia (Roxb.) Planch.	*Papri, kanju* (Hindi)	*Chirabilva*	**5**/27
Hordeum vulgare L. emend Bow.	Barley	*Yava*	**4**/56; **6**/15, 36, 60; **8**/ 5, 6, 17
Hygrophila auriculata (Schum.) Heine	*Tal-makhana* (Hindi)	*Kokilaksha*	**8**/9, 30; **9**/52
Indigofera tinctoria L.	Indigo	*Nili*	**10**/17
Indigofera uniflora Buch.-Ham.	Wild indigo	*Nili*	**10**/12, 54
Jasminum angustifolium Vahl	Wild jasmine	*Asphota*	**6**/21
Jasminum grandiflorum L.	Common jasmine	*Jati, Malati*	**6**/49; **8**/38
Jasminum humile L.	Yellow jasmine	*Hemapushpika, pitika*	**6**/49
Jasminum officinale L.	Jasmine	*Bahugandha*	**6**/48; **9**/52
Jasminum rottlerianum Wall.	*Vanamallika* (Hindi)	*Vanamalliga*	**9**/17
Jasminum sambac (L.) Ait.	Arabian jasmine, jasmine	*Mallika*	**6**/48; **7**/21
Jatropha curcas L.	Physic nut	*Dravanti*	**6**/54
Jatropha glandulifera Roxb.	*Jangliarandi* (Hindi)	*Nikumba, dravanti*	**9**/50, 52
Lablab purpureus (L.) Sweet	Lablab bean, field bean	*Nispavah, simbi*	**8**/22, 27; **9**/2, 3, 43
Lagenaria siceraria (Molina) Standley	Bottle gourd	*Katutumbi, alavu*	**7**/70; **9**/3, 24, 30
Lannea coromandelica (Houtt.) Merr.	*Jhingan* (Hindi)	*Jhingini*	**9**/26
Lawsonia inermis L.	Henna	*Nakha, Nakharanjani*	**7**/15, 29, 32, 35, 36, 54, 60
Leonotis nepetaefolia (L.) W. Ait.	*Granthiparni* (Kannada)	*Granthiparni*	**7**/49
Leucas aspera (Willd.) Spreng	*Chhota halkusa* (Hindi)	*Dronapushpi*	**9**/30
Limonia acidissima L.	Wood-apple	*Kapitthah*	**6**/44; **7**/56; **8**/42, 47, 49, 51
Luffa acutangula (L.) Roxb.	Ribbed gourd, ridged gourd	*Koshataki*	**10**/17
Madhuca indica J.F. Gmel.	Butter tree, mahua tree	*Madhuka*	**5**/29; **6**/40
Majorana hortensis Moench	Sweet marjoram	*Marubaka*	**7**/27-29, 35, 44, 60
Mallotus philippensis (Lamk.) Muell.-Arg.	Kamala tree	*Kampillakah*	**7**/7, 9-10, 24, 49, 55
Mammea longifolia Planch. & Triana	Alexandrian laurel	*Pandunaga*	**7**/58
Mangifera indica L.	Mango	*Amra*	**6**/25, 26, 42, 44; **7**/11; **8**/20, 32, 33, 48, 52

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Melia composita Willd.	*Mahaneem* (Hindi)	*Arangaka, mahanimba*	**10**/21
Mesua ferrea L.	Ironwood	*Nagakesara*	**6**/42, 44; **7**/5, 40, 55; **8**/24, 53, 54, 57
Meyna laxiflora Robyns	*Pundrika* (Hindi)	*Pindituka*	**9**/40
Michelia champaca L.	Champac	*Champaka*	**6**/45; **7**/2, 17, 42; **8**/48; **11**/29
Mimosa pudica L.	Sensitive-plant	*Lajjalu, samanga*	**9**/28
Mimusops elengi L.	Spanish-cherry	*Bakulah*	**6**/42, 44; **7**/2, 41; **8**/25
Momordica charantia L.	Bitter gourd	*Karavella*	**6**/54; **8**/21, 24; **10**/16, 21
Moringa oleifera Lamk.	Drumstick tree	*Sigruh*	**7**/43, 48, 51; **7**/25; **9**/52, 57
Mucuna pruriens (L.) DC.	Cowhage, horse-eye bean	*Atmagupta, kapikacchu*	**7**/19, 21, 35
Musa paradisiaca L.	Banana	*Kadali, rambha*	**8**/19, 36
Musa superba Roxb.	Plantain	*Vanakadali, kadali*	**6**/10, 21, 28-30
Myristica fragrans Houtt.	Nutmeg	*Jatiphalah*	**7**/9-10, 64; **8**/54, 57
Nardostachys jatamansi (D. Don) DC	Nardus root, spikenard	*Jatamansi*	**7**/5, 19, 21, 23, 27, 29, 31, 35, 43, 60
Nelumbo nucifera Gaertn.	Indian lotus	*Padma*	**4**/56; **6**/23, 49, 52; **7**/2, 14, 50, 56; **8**/29, 31, 52; **9**/15; **11**/ 29, 30
Nerium indicum Mill.	Indian oleander	*Karavira*	**8**/31; **10**/23
Nymphaea nouchali Burm.f.	Indian red waterlily	*Kumuda, utpala*	**4**/56; **6**/23; **7**/2
Nymphaea stellata Wild.	Indian blue waterlily	*Nilotpala*	**8**/39
Ocimum sanctum L.	Sacred basil	*Tulasi*	**8**/3, 25, 27; **9**/52
Ormocarpum cochinchinense (Lour.) Merrill	*Kanashigra* (Hindi)	*Kananashekhara*	**7**/13, 65
Oroxylum indicum (L.) Vent.	*Urru, sonapatha* (Hindi)	*Syonakah*	**5**/28
Oryza sativa L.	Rice, paddy	*Sali, tandula, vrihi*	**6**/10, 31, 36; **7**/28, 55, 65, 66, 70; **8**/2-4, 12, 13, 15, 17, 27, 28; **9**/12, 19, 24, 27, 48; **10**/19
Pandanus odoratissimus L.f.	Screw-pine	*Ketaki*	**6**/47; **7**/2, 5, 16, 19, 21, 23, 32, 34, 35, 37, 42, 43, 48, 54, 58, 60, 61, 65, 66; **9**/25
Phoenix sylvestris (L.) Roxb.	Wild date	*Kharjura*	**8**/8
Phyllanthus fraternus Webster	*Jaramla* (Hindi)	*Bhumyamalaki, tamalaki*	**9**/14
Picrorhiza kurroa Royle ex Benth.	*Katki, kuru* (Hindi)	*Katuka, katurohini*	**9**/32, 47, 57
Pimenta racemosa (Mill.) J.W.Moore	Bay tree		**7**/7, 11
Piper betle L.	Betel pepper	*Nagavalli, tambula*	**8**/27; **9**/30
Piper chaba Hunter	Java long pepper	*Chavika*	**9**/57
Piper longum L.	Long pepper	*Pippali*	**6**/45; **7**/4; **8**/46; **9**/11, 23, 34, 39 -41, 47, 48, 55, 57; **10**/15, 23

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Piper nigrum L.	Black pepper	*Maricha*	**6**/11; **7**/2, 4; **8**/11, 33, 36, 53 -55, 57; **9**/11, 16, 19, 23, 26, 55-57; **10**/15, 23
Piper wallichii Hand.-Mazz.	*Shambhalu ka beej* (Hindi)	*Renuka*	**7**/9-10, 14, 19
Plumbago zeylanica L.	*Chita* (Hindi)	*Chitraka*	**8**/36, 48; **9**/32, 41, 47, 57
Pogostemon cablin (Blanco) Benth.	Patchouli	*Pachi*	**7**/2, 18, 27
Pongamia pinnata (L.) Pierre	Pongam	*Karanja, naktamala*	**5**/6, 22, 30; **7**/30
Portulaca quadrifida L.	*Nonisaag* (Hindi)	*Laghulonika*	**8**/27
Premna tomentosa Wild.	Bastard teak	*Agnimantha, arani*	**7**/2; **9**/9
Prosopis cineraria (L.) Druce	*Sami, jand* (Hindi)	*Sami*	**5**/11
Prunus cerasoides D. Don	Wild Himalayam cherry	*Padmakah*	**9**/50
Psoralea corylifolia L.	Babchi	*Bakuchi*	**9**/2, 3
Pterocarpus santalinus L.f.	Red sandalwood	*Raktachadana*	**7**/15
Pterospermum acerifolium Wild.	*Kanakchampa* (Hindi)	*Karnikara*	**8**/44; **9**/55
Punica granatum L.	Pomegranate	*Dadima*	**6**/21, 30, 35; **8**/56
Rhododendron arboreum Sm.	Indian rosebay, rose -tree	*Pullasa*	**7**/42, 45; **9**/52
Ricinus communis L.	Castor	*Eranda*	**7**/69; **8**/21, 30; **9**/37, 50
Rubia cordifolia L. sensu Hook. f.	Indian madder	*Manjishtha*	**7**/15
Ruta graveolens L.	Garden rue	*Sadapaha, somalata*	**9**/28
Saccharum officinarum L.	Sugarcane	*Ikshu*	**8**/37, 47, 54
Salvadora persica L.	Mustard tree	*Pilu*	**5**/ 32
Santalum album L.	White sandalwood	*Chandanam*	**6**/ 47; **7**/2, 5 -7, 9 -10, 24, 30-32, 34 -36, 39, 41-43, 49, 52, 54, 55, 60, 61; **9**/29
Saraca asoca (Roxb.) de Wilde	Asoka tree	*Ashoka*	**5**/28; **6**/21, 42, 43
Saussurea lappa C.B. Clarke	Costus	*Kushtha*	**6**/4, 40; **7**/2, 7, 16, 18, 19, 21, 30, 34, 37, 50; **9**/57
Scindapsus officinalis (Roxb.) Schott.	*Gajpipal* (Hindi)	*Gajapippali*	**9**/16
Selinum wallichianum (DC.) Raizada & Saxena	*Mura* (Hindi)	*Mura*	**7**/33
Semecarpus anacardium L.f.	Marking-nut	*Bhallataka*	**5**/27; **6**/11
Sesamum indicum L.	Gingelly, sesame	*Tila*	**4**/57, 72; **6**/18, 32, 36, 37, 39, 43, 60; **7**/12, 14, 16, 18, 20-24, 31; **8**/17, 27, 35, 42, 44; **9**/2, 3, 10, 26, 28, 30, 36, 40, 42, 43, 55, 56; **10**/22
Sesbania grandiflora (L.) Poir.	Agati sesbania	*Agasthya*	**6**/32; **9**/2, 3, 5, 12
Setaria italica (L.) Beauv.	Foxtail millet	*Kangu*	**6**/56
Shorea robusta Gaertn.f.	Sal dammar	*Sala*	**7**/33, 58, 60
Sida cordifolia L.	Country-mallow	*Bala*	**8**/ 10

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Sida rhombifolia L.	Broomjute sida	*Atibala, bala, mahabala*	8/43
Solanum indicum L.	Indian nightshade	*Brahati*	6/6; 9/38
Solanum melongena L.	Brinjal, eggplant	*Bhantaki, vartaku*	6/55
Solanum nigrum L.	Black nightshade	*Kakamachi*	9/6
Solanum sarmentosum Nees	*Kantakari* (Hindi)	*Kantakari*	9/38
Solanum stramonifolium Jacq.	*Rambegun* (Hindi)	*Garbhada*	9/9
Solanum surattense Burm.f.	Yellow-berried nightshade	*Kantakari, nidigdhika*	5/17; 9/3, 9, 50
Sorghum durra (Forsk.) Stapf	Sorghum	*Yavanala*	6/56
Spondias pinnata (L.f.) Kurz	Hog-plum	*Amrataka*	5/27
Stereospermum personatum (Hassk.) Chatt.	Yellow snake tree	*Patala*	5/28; 6/21; 9/37; 10/23
Symplocos racemosa Roxb.	Lodh tree	*Lodhra*	7/24
Syzygium aromaticum (L.) Merr. & Perry	Clove	*Lavanga*	7/5, 7, 21; 8/53
Syzygium cerasoides (Roxb.) Chatt. & Kanjilal	*Nayinerale* (Kannada)		7/11; 8/35
Syzygium cumini (L.) Skeels	Black plum, java plum	*Jambu*	5/14, 28; 6/21, 26, 44, 46; 7/41; 8/23, 36, 37, 47, 57; 9/47, 57
Syzygium jambos (L.) Alston	Rose apple	*Jambu*	7/19, 21; 8/36, 37
Syzygium samarangense (Bl.) Merr. & Perry	Samarang rose apple	*Jamrula*	8/37
Tabernaemontana divaricata (L.) R.Br. ex Roem & Schult.	Crape-jasmine	*Tagara*	7/18-21, 28
Tacca integrifolia Ker. Gawl.	Patchouli	*Varahikanda (Kannada)*	9/17
Tacca lentopetaloides (L.) O. Kuntze	Indian arrowroot	*Surana*	7/13
Tamarindus indica L.	Tamarind	*Tintili, amlika*	6/35; 8/13, 21, 28, 36, 56; 9/20, 26
Terminalia arjuna (Roxb.) Wight & Arn.	Arjun	*Arjuna*	5/19; 6/12; 7/39, 50, 61
Terminalia bellirica (Gaertn.) Roxb.	Belleric myrobalan	*Vibhitaka*	7/3, 24, 38; 9/57
Terminalia catappa L.	Indian almond	*Vatama*	9/26, 32
Terminalia chebula Retz.	Chebulic myrobalan	*Abhya, haritaki, pathya*	5/28, 38; 7/3, 24, 38, 40, 41, 43, 45, 58, 60; 8/54; 9/28, 41, 49, 57
Tinospora cordifolia (Willd.) Miers ex Hook.f. & Thomas	*Gulancha* (Hindi)	*Amrita, guduchi*	8/27; 9/47
Trachyspermum ammi (L.) Sprague ex Turill	Ammi, carum, lovage	*Yavani*	9/16, 41, 57
Trachyspermum roxburghianum (DC.) Craib	Ajmud	*Ajamoda*	9/57
Tribulus terrestris L.	Land-caltrops	*Gokshura*	9/50

वैज्ञानिक नाम	अंग्रेजी	संस्कृत	अध्याय / श्लोक
Trichodesma indicum (L.) R.Br.	*Surasa* (Kannada)	*Adhapushpi*	9/25
Trichosanthes anguina L.	Snake gourd	*Chichinda*	9/37
Trichosanthes cucumerina L.	Bitter pointed gourd	*Patola*	8/30; 9/32, 48, 57
Triticum dicoccum Schubl.	Wheat-emmer	*Godhuma*	8/15; 9/37
Vateria indica L.	Malabar tallow tree	*Sarja*	9/53
Vernonia cinerea (L.) Less.	Purple fleabane	*Sahadevi*	7/21, 55
Vetiveria zizanioides (L.) Nash	Vetiver	*Sevya, ushira*	6/18, 27, 46; 7/19; 9/1
Vigna mungo (L.) Hepper	Blackgram	*Masha*	6/15, 36; 7/70; 8/11, 16, 17
Vigna radiata (L.) Wilczek	Greengram	*Mudga*	6/15; 8/4; 9/3, 48
Vitex negundo L.	Chinese chest tree	*Nirgundi*	6/16; 8/26; 9/15, 17, 30, 32, 38
Vitis vinifera L.	wine grape	*Draksha*	6/53; 8/14
Wendlandia exserta (Roxb.) DC.		*Tilaka*	5/27
Withania somnifera (L.) Dunal	Vegetable rennet	*Ashvagandha*	9/47
Woodfordia fruticosa (L.) Kurz	Fire-flame bush, shiranjitea	*Dhataki*	6/57
Zingiber officinale Rosc.	Ginger	*Ardraka, sunthi*	7/4, 44, 69, 70; 8/45, 53, 54; 9/11, 16, 19, 23, 26, 29, 34, 38, 40, 41, 44, 50, 52, 55, 57, 10/15
Ziziphus mauritiana Lamk.	Jujube tree	*Badari, kola*	5/19, 23, 39; 6/37; 8/13, 14, 27, 56; 9/45

पादप नामों की सारणी-द्वितीय

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Agar	अगुरु (संस्कृत)	*Aquilaria malaccensis* Lamk.	6/34, 49; 7/9-10, 18, 26, 30, 35 -37, 42, 49, 52, 54, 55, 58, 60, 64; 8/57
Agati sesbania	अगस्त, हथिया, अगथिया, अगस्तिया	*Sesbania grandiflora* (L.) Poir.	6/32; 9/2, 3, 5, 12
Ajmud	अजमोद (संस्कृत)	*Trachyspermum roxburghianum* (DC.) Craib	9/57
Akund	रक्तार्क, मदार, आक, अर्क	*Calotropis procera* (Willd.) Dryand ex W.Ait.	9/9
Alexandrian laurel	केतकी, केतक	*Mammea longifolia* Planch. & Triana	7/58
Aloe			(see Barbados aloe)
Amaranth (for vegetable)	मरसा	*Amaranthus blitum* L. var. oleracea Duthie	5/12; 8/22; 9/15
Amaranth (Grain)	राजगिरी (संस्कृत)	*Amaranthus cruentus* L.	8/9
Ammi	अजवायन, अजवाइन, अजमायन, जवाइन, अजवां	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague ex Turill	9/16, 41, 57
Arabian jasmine	मोगरा, मोतिया बेला,	*Jasminum sambac* (L.) Ait	6/48; 7/21
Arani (Hindi)	उरिन, अरनी(णी)	*Clerodendrum phlomidis* L.f.	9/50
Arecanut	सुपारी, सोपारी, सुपाडी, कसेली, पुग	*Areca catechu* L.	6/45; 7/3, 19, 23, 32; 9/8, 28
Arjun	अर्जुन, कहू, कोह	*Terminalia arjuna* (Roxb.) Wight & Arn.	9/19; 6/12; 7/39, 50, 61
Asafetida	हींग	*Ferula assafoetida* L.	6/11; 7/15, 68, 69; 8/11, 17, 53; 9/16, 32, 41, 57
Asiatic pennywort	ब्रह्ममाण्डुकी, ब्राह्मीभेद	*Centella asiatica* (L.) Urban	9/32, 42
Asoka tree	अशोक	*Saraca asoca* (Roxb.) de Wilde	5/28; 6/21, 42, 43
Atis (Hindi)	अतीस	*Aconitum heterophyllum* Wall. ex Royale	6/11; 9/41, 44, 57
Babchi	बकुची, बकुची, बाबची, सोमराजी	*Psoralea corylifolia* L.	9/2, 3
Baberang (Hindi)	बायविडंग, बाबिरंग, भाभिरंग	*Embelia ribes* Burm. f.	6/6, 11, 12, 13, 18, 32; 7/39; 9/32, 36, 50, 57
Bael	बेल	*Aegle marmelos* (L.) Corr.	5/19, 27; 6/38, 44; 7/ 11, 25, 26, 36, 41, 50, 52, 58, 63, 70; 8/20; 9/ 15, 37, 45, 50
Bahupushpa (Hindi)	बहुपुष्प	*Breynia retusa* (Dennst.) Alston	8/18
Bamboo	बांस	*Bambusa arundinacea* (Retz.) Willd.	8/50; 9/13
Banana	केला, कदली	*Musa paradisiaca* L.	8/19, 36
Banyan	बड़, बरगद	*Ficus benghalensis* L.	5/31; 6/26; 7/56; 9/15
Barados aloe	ग्वारपाठा, घीकुआंर, घीग्वार	*Aloe barbadensis* Mill.	8/27; 9/54
Barley	जव, जो, जौ	*Hordeum vulgare* L. emend Bow.	4/56; 6/15, 36, 60; 8/5, 6, 17
Barna (Hindi)	बरना, बरुन	*Crataeva nurvala* Buch-Ham.	7/56
Bastard teak	अग्निमंथा, अरनी (संस्कृत)	*Premna tomentosa* Willd.	7/2; 9/9
Bay tree	–	*Pimenta racemosa* (Mill.) J.W. Moore	7/7, 11
Belleric myrobalan	बिभीतक, बिभितकी	*Terminalia bellirica* (Gaertn.) Roxb.	7/3, 24, 38; 9/57
Bengal quince	बिल्व (संस्कृत)	*Aegle marmelos* (L.) Corr.	5/19, 27; 6/38, 44; 7/ 11, 25, 26, 36, 41, 50, 52, 58, 63, 70; 8/20; 9/ 15, 37, 45, 50

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Bermuda grass	हरी दूब, नीली दूब, रामघास	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.	**5**/34; **8**/36; **9**/4
Betel pepper	पान	*Piper betle* L.	**8**/27; **9**/30
Bhangra , mochkand (Hindi)	भृंगारक	*Eclipta prostrata* (L.) L.	**9**/28; **10**/17
Biswal (Hindi)	बिस्वाल	*Acacia pennata* (L.) Willd.	**8**/27
Bitter apple	इंद्रायण, इंद्रायन	*Citrullus colocynthis* (L.) Kuntze	**9**/26, 32; **10**/16
Bitter gourd	कारवेल्ला (संस्कृत)	*Momordica charantia* L.	**6**/54; **8**/21, 24; **10**/16, 21
Bitter pointed gourd	पटोलभेद, कौआरोटी	*Trichosanthes cucumerina* L.	**8**/30; **9**/32, 48, 57
Black mustard	बनारसी राई	*Brassica nigra* (L.) Koch	**4**/47; **6**/10-12; **8**/16, 55; **9**/8, 10, 19, 30, 52, 57; **10**/21
Black nightshade	मकोय, छोटी मकोय	*Solanum nigrum* L.	**9**/6
Black pepper	कृष्णा	*Piper nigrum* L.	**6**/11; **7**/2, 4; **8**/11, 33, 36, 53-55, 57; **9**/11, 16, 19, 23, 26, 55-57; **10**/15, 23
Black plum	जंबु	*Syzygium cumini* (L.) Skeels	**5**/14, 28; **6**/21, 26, 44, 46; **7**/41; **8**/23, 36, 37, 47, 57; **9**/47, 57
Black siris	काला सिरस या सिरिस	*Albizia odoratissima* (L.f.) Benth	**10**/19
Blackgram	माष	*Vigna mungo* (L.) Hepper	**6**/15, 36; **7**/70; **8**/11, 16, 17
Bonduc nut	करंज, लताकरंज, करंजु	*Caesalpinia crista* L.	**7**/15, 27, 30, 32, 33, 35, 64; **9**/26, 57
Bottle gourd	फलिनी	*Lagenaria siceraria* (Molina) Standley	**7**/70; **9**/3, 24, 30
Bracteated birthwort	कीटमारी (संस्कृत)	*Aristolochia bracteolata* Lamk.	**8**/29; **10**/16
Brahmi	ब्राह्मी	*Centella asiatica* (L.) Urban	**9**/32, 42
Brinjal, eggplant	बैंगुन, बैंगन	*Solanum melongena* L.	**6**/55
Broomjute sida	बला, महाबला	*Sida rhombifolia* L.	**8**/43
Butter tree	मधुक, मधु	*Madhuca indica* J.F. Gmel.	**5**/29; **6**/40
Calambac	अगुरु	*Aquilaria malaccensis* Lamk.	**6**/34, 49; **7**/9-10, 18, 26, 30, 35-37, 42, 49, 52, 54, 55, 58, 60, 64; **8**/57
Camel thorn	मरुद्भव, मरुत्संभव	*Alhagi pseudalhagi* (Bieb.) Desv.	**9**/41, 50
Cardamom	एला	*Elettaria cardamomum* Maton	**7**/2, 4, 5, 19, 21, 23, 27, 28, 43, 51; **8**/5, 7, 10, 55, 57
Carum	अजवायन, अजवाइन, अजमायन, जवाइन, अजवां	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague ex Turill	**9**/16, 41, 57
Castor	एरंड	*Ricinus communis* L.	**7**/69; **8**/21, 30; **9**/37, 50
Catechu	खदिर	*Acacia catechu* (L.f.) Willd.	**7**/ 4, 9-10, 62; **9**/47
Celery	अजमोद (संस्कृत)	*Apium graveolens* L. var. *dulce* (Mill.) DC.	**9**/57
Champac	चंपा	*Michelia champaca* L.	**6**/45; **7**/2, 17, 42; **8**/48; **9**/29
Chebulic myrobalan	हरीतकी, हर, हरड	*Terminalia chebula* Retz.	**5**/28, 38; **7**/3, 24, 38, 40, 41, 43, 45, 58, 60; **8**/54; **9**/28, 41, 49, 57
Chhota halkusa (Hindi)	छोटा हल्कुस (संस्कृत)	*Leucas aspera* (Willd.) Spreng	**9**/30

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Chickpea	चना	*Cicer arietinum* L.	**6**/52; **8**/15, 16, 45
Chinese chest tree	निर्गुण्डी	*Vitex negundo* L.	**6**/16; **8**/26; **9**/15, 17, 30, 32, 38
Chita (Hindi)	चीता, चित्रक	*Plumbago zeylanica* L.	**8**/36, 48; **9**/32, 41, 47, 57
Chuka (Hindi)	चुक, पुथरी, पुतेर	*Croton oblongifolius* Roxb.	**7**/11
Cinnamon	दालचीनी, दारचीनी	*Cinnamomum zeylanicum* Blume	**7**/2-4, 16, 18, 19, 27, 28, 32, 44, 45, 51, 64; **8**/5, 7, 10, 14, 53-55, 57
Citron	बिजोरा नींबु	*Citrus medica* L.	**6**/21, 34; **7**/8, 11, 53, 55; **8**/3, 34, 53, 56
Clove	लौंग	*Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & Perry	**7**/5, 7, 21; **8**/53
Cluster fig	गूलर, गुल्लर	*Ficus glomerata* Roxb.	**5**/20
Cock's comb	मयूरशिखा, मोरशिखा	*Celosia cristata* L.	**10**/21
Coconut	नारियल, गिरी	*Cocos nucifera* L.	**5**/26; **6**/32; **8**/7, 8, 46
Coffee senna	कासमर्द (संस्कृत)	*Cassia occidentalis* L.	**8**/17, 22
Colocynth	इंद्रायण, इंद्रायन	*Citrullus colocynthis* (L.) Kuntze	**9**/26, 32; **10**/16
Common jasmine	चमेली, चम्बेली	*Jasminum grandiflorum* L.	**6**/49; **8**/38
Coriander	धनियां	*Coriandrum sativum* L.	**7**/4, 44; **8**/11, 41, 55; **9**/41
Costus	कूठ, कूट, कुष्ठ, कुष्ट	*Saussurea lappa* C.B. Clarke	**6**/40; **7**/2, 7, 16, 18, 19, 21, 30, 34, 37, 50; **9**/57
Cotton	कपास, रुई	*Gossypium arboreum* L.	**8**/26; **9**/23
Country-mallow	बरियार, बरियारा, खरेठी, खरैटी, खरैंटी	*Sida cordifolia* L.	**8**/10
Cowhage	कपिकच्छू (केवांच)	*Mucuna pruriens* (L.) DC.	**7**/19, 21, 35
Crape-jasmine	तगर	*Tabernaemontana divaricata* (L.) R.Br. ex Roem & Schult.	**7**/18-21, 28
Croton	जमालगोटा	*Croton tiglium* L.	**9**/47
Cumin	जीरा	*Cuminum cyminum* L.	**8**/11, 53, 55; **9**/7, 57
Dab, darbha, durva (Hindi)	कुशा, दरभा, डाब, दुर्वा, कुस घास	*Desmostachya bipinnata* (L.) Stapf	**5**/28, 34
Dantt (Hindi)	छोटीदंती, दंती, ताम्बा	*Baliospermum montanum* (Willd.) Muell.-Arg.	**7**/18
Date			(See wild date)
Daya (Hindi)	प्रियंगु	*Callicarpa macrophylla* Vahl	**6**/42
Deodar	देवदारु, देवदार	*Cedrus deodara* (Roxb. ex Lamb.) G. Don	**6**/45; **7**/19, 26, 33, 51, 58; **9**/36, 47
Dita bark tree	सप्तपर्ण	*Alstonia scholaris* (L.) R.Br.	**9**/37, 47, 57
Drumstick tree	शिग्रुक	*Moringa oleifera* Lamk.	**7**/43, 48, 51; **8**/25; **9**/52, 57
Eagle wood	अगुरु	*Aquilaria malaccensis* Lamk.	**6**/34, 49; **7**/9-10, 18, 26, 30, 35 -37, 42, 49, 52, 54, 55, 58, 60, 64; **8**/57
East Indian arrowroot	तीखुर, तक्षीर	*Curcuma angustifolia* Roxb.	**7**/9-10
Easter tree	कूड़ा, कोरयां, कुरय्यां	*Holarrhena antidysenterica* (L.) Wall.ex DC.	**9**/44
Elephant-foot yam	कंद	*Amorphophallus campanulatus* (Roxb.) Blume ex Dcne.	**8**/27, 28; **9**/52

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Emblic myrobalan	आमलकी, धात्री, आंवला	*Emblica officinalis* Gaertn.	5/17, 27; 6/34, 39; 7/24, 27, 28; 8/20, 49, 56
False pareira root	पाठा, पाठी, पाढ	*Cissampelos pareira* L.	7/47
Fan palm	अल्पायुशी	*Corypha umbraculifera* L.	8/34
Field bean	सेम	*Lablab purpureus* (L.) Sweet	8/22, 27; 9/2, 3
Fig	अंजीर	*Ficus carica* L.	6/26; 7/56
Fire-flame bush	धातकी, धवई, धाय	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz	6/57
Flame of the forest	पलाश	*Butea monosperma* (Lamk.) Taubert	5/19, 34, 37, 38; 8/21
Foxtail millet	कंगुनी, कगनी, टंगुनी	*Setaria italica* (L.) Beauv.	4/56
Gajpipal (Hindi)	गजपीपल	*Scidapsus officinalis* (Roxb.) Schott.	9/16
Garden rue	सुद्दाब, सिताब	*Ruta graveolens* L.	9/28
Garlic	लहसुन, लशुन	*Allium sativum* L.	7/68, 70; 8/27; 9/16; 11/29
Gingelly	तिल, तील, तिली	*Sesamum indicum* L.	4/57, 72; 6/18, 32, 36, 37, 39, 43, 60; 7/12, 14, 16, 18, 20 -24, 31; 8/17, 27, 35, 42, 44; 9/2, 3, 10, 26, 28, 30, 36, 40, 42, 43, 55, 56; 10/22
Ginger	सोंठ, सूंठ, सौंठ	*Zingiber officinale* Rose.	7/4, 44, 69, 70; 8/45, 53, 54; 9/11, 16, 19, 23, 26, 29, 34, 38, 40, 41, 44, 50, 52, 55, 57, 10/15
Gitoran, ardanda (Hindi)	गितोरन, एरण्ड	*Capparis zeylanica* L.	8/30
Gokarni (Hindi)	गोकरनी	*Clitoria ternatea* L.	9/24, 32; 10/16, 17
Granthiparni (Kannada)	ग्रंथिपर्णी (कन्नड़)	*Leonotis nepetaefolia* (L.) W. Ait.	7/49
Grape	अंगुर		(See wine grape)
Greater galangal	कुलंजन, कुलिंजन	*Alpinia galanga* (L.) Sw.	9/25, 34, 50, 57
Greengram	मुद्ग	*Vigna radiata* (L.) Wilczek	6/15; 8/14; 9/3, 48
Gudari saag (Hindi)	गुडरी साग (मत्स्याक्षी)	*Alternanthera sessilis* (L.) R.Br. ex DC.	8/19
Gulancha (Hindi)	गुडुची, जीवंतिका	*Tinospora cordifolia* (Willd.) Miers ex Hook. f. & Thomas	8/27; 9/47
Hatisura (Hindi)	हतिसुर	*Heliotropium indicum* L.	7/18, 28, 34, 35, 37, 55
Henna	मेंहदी	*Lawsonia inermis* L.	7/15, 29, 32, 35, 36, 54, 60
Himalayan cedar	देवदार, देवदारु	*Cedrus deodara* (Roxb. ex Lamb.) G. Don	6/45; 7/19, 26, 33, 51, 58; 9/36, 47
Hog-plum	आम्रतक (संस्कृत)	*Spondias pinnata* (L.f.) Kurz	5/27
Horse-eye bean	कपिकच्छू, केवांच, कौंच	*Mucuna pruriens* (L.) DC.	7/19, 21, 35
Horsegram	कुलथी, कुरथी	*Dolichos uniflorus* Lam.	9/17, 33
Indian abutilon	अतिबला	*Abutilon indicum* (L.) Sweet	8/10
Indian almond	देशी बादाम (जंगली बादाम)	*Terminalia catappa* L.	9/26, 32
Indian arrowroot	सुरण (संस्कृत)	*Tacca Ientopetaloides* (L.) O. Kuntze	7/13

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Indian barberry	दारु हलदी, दारुहरदी, दारहलद	*Berberis aristata* DC.	7/56; 9/34, 52, 55
Indian bdellium tree	गुग्गुल, कनकफल	*Commiphora wightii* (Arnott) Bhandari com. nov.	6/12; 7/3, 7, 11, 13, 27, 32, 42, 46, 55, 57, 58, 60; 9/28
Indian beech	–	*Fagus sylvatica* L.	8/23; 9/57; 10/21
Indian birch	भोजपत्र, भूजपत्र, भोजपत्तर	*Betula alnoides* Buch.-Ham.	7/67
Indian blue waterlily	कुमुद, कमोदनी	*Nymphaea stellata* Willd.	8/39
Indian butter-tree	फुलवार	*Diploknema butyracea* (Roxb.) H.J. Lam.	7/38
Indian caper	कांटारी	*Capparis sepieria* L.	9/24
Indian cherry	भोकर, बोरला, लसुरा	*Cordia dichotoma var. wallichi* (Cl.) Maheshwari	8/27
Indian coral tree	पंगार	*Erythrina indica Lamk.* var. parcellii Hort.	9/43
Indian dill	शिफा, शोफ (क)	*Anethum sowa* Kurz	6/14; 7/41; 8/40; 9/50
Indian frankincense	शल्लकी	*Boswellia serrata* Roxb. ex Colebr.	7/13, 29, 31, 32, 44, 58
Indian gooseberry	आंवला	*Emblica officinalis* Gaertn.	5/17, 27; 6/34, 39; 7/24, 27, 28; 8/20, 49, 56
Indian laurel	पुन्नाग	*Calophyllum inophyllum* L.	7/46
Indian lotus	कमल, पद्म, पंकज	*Nelumbo nucifera* Gaertn.	4/56; 6/23, 49, 52; 7/2, 14, 50, 56; 8/29, 31, 52; 9/15; 11/ 29, 30
Indian madder	मंजिष्ठ, मंजिष्ठिका	*Rubia cordifolia* L. sensu Hook. f.	7/15
Indian nightshade	बृहती	*Solanum indicum* L.	6/6; 9/38
Indian oleander	कनेर	*Nerium indicum* Mill.	8/31; 10/23
Indian olibanum	सलई गूगल, गूगल, लबान	*Boswellia serrata* Roxb. ex Colebr.	7/13, 29, 31, 32, 44, 58
Indian persimmon	टिंदुक (संस्कृत)	*Diospyros peregrina* (Gaertn.) Gurke	5/37; 7/46; 9/41
Indian red waterlily	कुमुद	*Nymphaea nouchali* Burm. f.	4/56; 6/23; 7/2
Indian rosebay	पुल्लास (संस्कृत)	*Rhododendron arboreum* Sm.	7/42, 45; 9/52
Indian spinach	पोटकी (संस्कृत)	*Basella alba* L.	9/15
Indian tree spurge	अंगुलियाथूहर, छिमिया सेहुण्ड	*Euphorbia tirucalli* L.	8/27; 9/53
Indian wormwood fleabane	नागदमनी (संस्कृत)	*Artemisia nilagirica* (Clarke) Pamp.	7/28
Indigo	नीली, नीलीवृक्ष, लील	*Indigofera tinctoria* L.	10/17
Indrayan (Hindi)	इन्द्रायण	*Cucumis pseudo-colocynthis* Royale	6/11
Ironwood	नगकेसर, नागेसर, नागचम्पा, पीला नागकेशर	*Mesua ferrea* L.	6/42, 44; 7/5, 40, 55; 8/24, 53, 54, 57
Ivory tree	कूड़ा, कोरयां, कुड़ा	*Holarhena antidysenterica* (L.) Wall. ex DC.	9/44
Ivy Gourd	बिंब	*Coccinea grandis* (L.) Voigt	8/30; 9/14
Jack fruit	चंपा, पनस, पनश	*Artocarpus heterophyllus* Lamk.	6/21, 26, 31; 7/56; 8/35
Jamti ki bel (Hindi)	जमती की बेल	*Cocculus hirsutus* (L.) Diels	9/14, 24; 10/16
Jangliarandi (Hindi)	जंगली अरण्डी	*Jatropha glandulifera* Roxb.	9/50, 52

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Jaramla (Hindi)	जरम्ला	*Phyllanthus fraternus* Webster	9/14
Jasmine	शिखंडी या वासंतिका	*Jasminum officinale* L.	6/48; 9/52
Jsamine	मोगरा, मोतिया बेला	*Jasminum sambac* (L.) Ait.	6/48; 7/21
Java long pepper	चव्य, चाब, चाभ	*Piper chaba* Hunter	9/57
Java plum	बड़ी जामुन	*Syzygium cumini* (L.) Skeels	5/14, 28; 6/21, 26, 44, 46; 7/41; 8/23, 36, 37, 47, 57; 9/47, 57
Jecquirity seeds	गुंजा	*Abrus precatorius* L.	6/45; 8/25, 31; 9/4, 13
Jhingan (Hindi)	झिंगन	*Lannea coromandelica* (Houtt.) Merr.	9/26
Jujube tree	बदरी, बदर	*Ziziphus mauritiana* Lamk.	5/19, 23, 39; 6/37; 8/13, 14, 27, 56; 9/45
Kadam	कदंब	*Anthocephalus cadamba* (Roxb.) Miq.	5/33; 7/2
Kaladhatura (Hindi)	कालाधतूरा, धर्तुर	*Datura metal* L.	9/15
Kamala tree	रजनी (का), कांपिल्ल	*Mallotus philippensis* (Lamk.) Muell.-Arg.	7/7, 9-10, 24, 49, 55
Kanakchampa (Hindi)	कनकचम्पा, कर्णिकार	*Pterospermum acerifolium* Willd.	8/44; 9/55
Kanashigra (Hindi)	कनशिग्रा	*Ormocarpum cochinchinense* (Lour.) Merrill	7/13, 65
Kantakari (Hindi)	कंटकारी	*Solanum sarmentosum* Nees	9/38
Katki, kuru (Hindi)	केतकी, कुरु	*Picrorhiza kurroa* Royle ex Benth.	9/32, 47, 57
King of bitters	कालमेघ	*Andrographis paniculata* (Burm.f.) Wall. ex Nees	9/47
Kodhab (Hindi)	कोधब	*Cadaba fruticosa* (L.) Druce	9/8
Lablab bean	निस्पवाह, सिम्बी (संस्कृत)	*Lablab purpureus* (L.) Sweet	8/22, 27; 9/2, 3, 43
Land-caltrops	गोखरु, छोटा गोखरु	*Tribulus terrestris* L.	9/50
Lebbeck-tree	सिरस, सिरिस	*Albizia lebbeck* (L.) Benth.	5/27, 29; 7/3; 8/27; 9/37
Lemon	जंबीर, जंगीर, निंबक	*Citrus limon* (L.) Burm.f.	6/44
Licorice	यश्टी (यश्टीमधु)	*Glycyrrhiza glabra* L.	6/37, 40; 7/14; 9/34, 44
Lodh tree	रोध्रा	*Symplocos racemosa* Roxb.	7/24
Long pepper	पिप्पली, कणा	*Piper longum* L.	6/45; 7/4; 8/46; 9/11, 23, 34, 39 -41, 47, 48, 55, 57; 10/15, 23
Lovage	अजवायन, अजवाइन, अजमायन, जवाइन, अजवां	*Trachyspermum ammi* (L.) Sprague ex Turill	9/16, 41, 57
Madar	अर्क	*Calotropis gigantea* Ait.	5/40; 8/27; 9/10, 13, 25, 26, 28, 30, 32, 52; 10/23
Madhavilata (Hindi)	मधविलटा	*Hiptage benghalensis* (L.) Kurz	6/21
Mahaneem (Hindi)	महानीम	*Melia composita* Willd.	10/21
Mahua tree	मधुक (संस्कृत)	*Madhuca indica* J.F. Gmel.	5/29; 6/40
Maidenhair fern	हंसपदी (संस्कृत)	*Adiantum capillus-veneris* L.	7/52
Malabar nut	अडूसा, अडुस	*Adhatoda vasica* Nees	9/32, 37, 38, 45, 50
Malabar tallow tree	बड़ा साल, सर्जक	*Vateria indica* L.	9/53

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Malay bush-beech	गम्भारी, कासमर	*Gmelina arborea* L.	9/37
Mango	आम्र (आम), रसाल	*Mangifera indica* L.	6/25, 26, 42, 44; 7/11; 8/20, 32, 33, 48, 52
Margosa	नीम	*Azadirachta indica* A. Juss	5/30; 6/38, 45; 7/68; 8/25; 9/17, 21, 29, 32, 38, 47, 48, 57
Marking-nut	भल्लात (क) या भिल्लाट या भिल्लोट	*Semecarpus anacardium* L.f.	5/27; 6/11
Merasingi (Hindi)	मेढ़ासिंगी, गुडमार	*Gymnema sylvestre* (Retz.) Schult.	8/23
Milk-bush	अंगुलियां, थूहर, छिमिया सेहुण्ड	*Euphorbia tirucalli* L.	8/27; 9/53
Molucca bean	करंज (कट करंज)	*Caesalpinia crista* L.	7/15, 27, 30, 32, 33, 35, 64; 9/26, 57
Monkey jack fruit	बड़हल, लकुच	*Artocarpus lakoocha* Roxb.	7/50
Mountain ebony	अश्मन्तक या कांचनार	*Bauhinia Variegata* L.	5/35
Mura (Hindi)	मुरा	*Selinum wallichianum* (DC.) Raizada & Saxena	7/33
Mura (Hindi)	मुरा	*Erythrina stricta* Roxb.	7/26
Mustard	बनारसी राई	*Brassica nigra* (L.) Koch	4/47; 6/10-12; 8/16, 55; 9/8, 10, 19, 30, 52, 57; 10/21
Mustard tree	पीलु, खरजाल	*Salvadora persica* L.	5/32
Myrobalan emblic	आमलकी (संस्कृत)	*Emblica fischeri* Gamble	9/57
Nardus root	जटिल	*Nardostachys jatamansi* (D.Don) DC.	7/5, 19, 21, 23, 27, 29, 31, 35, 43, 60
Nayinerale (Kannada)	नयीनरेल (कन्नड़)	*Syzygium cerasoides* (Roxb.) Chatt. & Kanjilal	7/11; 8/35
Neem tree	नीम	*Azadirachta indica* A. Juss	5/30; 6/38, 45; 7/68; 8/25; 9/17, 21, 29, 32, 38, 47, 48, 57
Nonisaag (Hindi)	नोनीसाग, लोनिया, छोटीलोणा	*Portulaca quadrifida* L.	8/27
Nut grass	मोथा	*Cyperus rotundus* L.	6/27, 46; 7/4, 5, 32, 35, 38, 43; 8/57; 9/7, 36, 47, 50
Nutmeg	जायफल, जायफर	*Myristica fragrans* Houtt.	7/9-10, 64; 8/54, 57
Onion	प्याज	*Allium cepa* L.	8/27
Paddy	चावल, धान	*Oryza sativa* L.	6/10, 31, 36; 7/28, 55, 65, 66, 70; 8/2-4, 12, 13, 15, 17, 27, 28; 9/12, 19, 24, 27, 48; 10/19
Palma rosa	रोहिसा (संस्कृत)	*Cymbopogon martinii* (Roxb.) Wats.	5/28
Palmyra palm	ताड़, ताल, तार	*Borassus flabellifer* L.	5/24, 26
Papri, kanju (Hindi)	पापड़ी, कांजू	*Holoptelea integrifolia* (Roxb.) Planch.	5/27
Patalagaruda (Sanskrit)	पातालगरुड़ी, छिरेटी, चिरहिटा, छिरहटा, जलजमनी	*Cocculus hirsutus* (L.) Diels	9/14, 24; 10/16
Patchouli	पाची (संस्कृत)	*Pogostemon cablin* (Blanco) Benth.	7/2, 18, 27
Physic nut	जंगली एरंड	*Jatropha curcas* L.	6/54
Pilkhan (Hindi)	पिलखान	*Ficus lucescens* Blume	6/26; 7/56

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Pipal	पीपल	*Ficus religiosa* L.	6/26; 7/56; 8/20
Plantain	वनकदली, कदली	*Musa superba* Roxb.	6/10, 21, 28-30
Pomegranate	अनार, दाड़िम	*Punica granatum* L.	6/21, 30, 35; 8/56
Pongam	करंज (क)	*Pongamia pinnata* (L.) Pierre	5/6, 22, 30; 7/30
Prickly chaff flower plant	लटजीरा, चिरचिरा	*Achyranthes aspera* L.	8/43; 9/6, 28
Pundrika (Hindi)	पुंद्रिका	*Meyna laxiflora* Robyns	9/40
Puneala plum	तलिश (संस्कृत)	*Flacourtia jangomas* (Lour.) Raeusch.	10/17
Purple fleabane	सहदेवी, सहदेई, सहदैया	*Vernonia cinerea* (L.) Less.	7/21, 55
Rambegun	रामबेगुन	*Solanum stramonifolium* Jacq.	9/9
Red gourd	तुम्बी, लौआ, लौकी, मीठी तोम्बी	*Cucurbita maxima* Duch.	6/55
Red pumpkin	कद्दू, लम्बाकद्दू	*Cucurbita maxima* Duch.	6/55
Red sandalwood	लल चंदन, रक्तचंदन	*Pterocarpus santalinus* L.f.	7/15
Red silk-cotton	मोचा, सलमली (संस्कृत)	*Bombax ceiba* L.	9/4
Ribbed gourd	तोरई, तरोई, तुरई	*Luffa acutangula* (L.) Roxb.	10/17
Rice	चावल, धान	*Oryza sativa* L.	6/10, 31, 36; 7/28, 55, 65, 66, 70; 8/2-4, 12, 13, 15, 17, 27, 28; 9/12, 19, 24, 27, 48; 10/19
Ridged gourd	तोरई, तरोई, तुरई	*Luffa acutangula* (L.) Roxb.	10/17
Rose apple	जांबू (संस्कृत)	*Syzygium jambos* (L.) Alston	7/19, 21; 8/36, 37
Rose-tree	पुल्लास (संस्कृत)	*Rhododendron arboreum* Sm.	7/42, 45; 9/52
Sacred basil	तुलसी	*Ocimum sanctum* L.	8/3, 25, 27; 9/52
Sacred grass	हरी दूब, नीली दूब	*Cynodon dactylon* (L.) Pers.	5/34; 8/36; 9/4
Safflower	कुसुम	*Carthamus tinctorius* L.	7/62
Saffron	केशर	*Crocus sativus* L.	7/24; 8/5, 7, 14, 52
Sage-leaved alangium	अंकोल	*Alangium salviifolium* (L.f.) Wang.	5/27; 6/19, 25, 30, 54, 57
Sal dammar	शाल, साल	*Shorea robusta* Gaertn. f.	7/33, 58, 60
Samarang rose apple	जमरुल (संस्कृत)	*Syzygium samarangense* (Bl.) Merr. & Perry	8/37
Sami, jand (Hindi)	शमी	*Prosopis cineraria* (L.) Druce	5/11
Sandalwood	चंदन		(See white sandalwood)
Satmuli, satawar (Hindi)	सतावर, सतावरि, शतावर	*Asparagus racemosus* Willd.	8/27
Screw-pine	केवड़ा	*Pandanus odoratissimus* L.f.	6/47; 7/2, 5, 16, 19, 21, 23, 32, 34, 35, 37, 42, 43, 48, 54, 58, 60, 61, 65, 66; 9/25
Sebesten	लिसोड़ा, लिसोरा	*Cordia dichotoma* var. *wallichi* (Cl.) Maheshwari	8/27
Sensitive-plant	लज्जावंती, छुई–मुई, लाजवती	*Mimosa pudica* L.	9/28
Sesame	तिल, तील, तिली	*Sesamum indicum* L.	4/57, 72; 6/18, 32, 36, 37, 39, 43, 60; 7/12, 14, 16, 18, 20 -24, 31; 8/17, 27, 35, 42, 44; 9/2, 3, 10, 26, 28, 30, 36, 40, 42, 43, 55, 56; 10/22

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Shambhalu ka beej (Hindi)	शम्भलू का बीज	*Piper wallichi* Hand.-Mazz.	7/9-10, 14, 19
Shiranjitea	धावा, धाय, धातकी, धवई, धाई	*Woodfordia fruticosa* (L.) Kurz	6/57
Shoe-flower	गुड़हल, जवाकुसुम	*Hibiscus rosa-sinensis* L.	6/50; 8/18
Silk cotton	सफेद सेमल, हतिआन, कटन	*Ceiba pentandra* (L.) Gaertn.	9/28
Siris	सिरस, सिरिस	*Albizia lebbeck* (L.) Benth.	5/27, 29; 7/3; 8/27; 9/37
Snake gourd	चिचिंडा, चचेंडा	*Trichosanthes anguina* L.	9/37
Sorghum	चारा, चरी	*Sorghum durra* (Forsk.) Stapf	4/56
Spanish-cherry	मौलसरी, बकुल	*Mimusops elengi* L.	6/42, 44; 7/2, 41; 8/25
Spikenard	जटामांसी, बालछड़	*Nardostachys jatamansi* (D. Don) DC.	7/5, 19, 21, 23, 27, 29, 31, 35, 43, 60
Sugarcane	ईख, गन्ना	*Saccharum officinarum* L.	8/37, 47, 54
Surasa (Kannada)	अन्धाहुली, अधःपुष्पी	*Trichodesma indicum* (L.) R.Br.	9/25
Swamp pea	अगस्त, हथिया, अगथिया, अगस्तिया	*Sesbania grandiflora* (L.) Poir.	6/32; 9/2, 3, 5, 12
Sweet flag	वच, घोरवच, घोड़वच	*Acorus calamus* L.	6/11, 45; 7/3; 9/8, 16, 40, 57; 10/21; 11/29
Sweet marjoram	मारुबक (संस्कृत)	*Majorana hortensis* Moench	7/27-29, 35, 44, 60
Sweet orange	मोसंबी	*Citrus sinensis* (L.) Osbeck	6/33
Tadrelu (Hindi)	कटसरैया, पियाबांसा	*Barleria cristata* L.	6/50
Talipot palm	अल्पायुशी (संस्कृत)	*Corypha umbraculifera* L.	8/34
Tal-makhana (Hindi)	ताल–मखाना	*Hygrophila auriculata* (Schum.) Heine	8/9, 30; 9/52
Tamarind	इमली	*Tamarindus indica* L.	6/35; 8/13, 21, 28, 36, 56; 9/20, 26
Thorn apple	धतूरा, धतूर, धातूरा	*Datura stramonium* L.	7/14; 8/31, 38; 9/25
Tree cotton	कपास, रुई	*Gossypium arboreum* L.	8/26; 9/23
Trumpet flower	श्योनक (संस्कृत)	*Bignonia crispa* Buch.-Ham.	7/ 2, 18
Tube flower	भारंगी	*Clerodendrum indicum* (L.) Kuntze	5/17; 7/26; 9/38
Turk's turban	भारंगी	*Clerodendrum indicum* (L.) Kuntze	5/17; 7/26; 9/38
Turmeric	हलदी, हरिद्रा	*Curcuma domestica* Val.	6/12, 45; 7/14; 8/17, 22, 26; 9/16, 25, 28, 34, 52, 54, 55
Urru, sonapatha (Hindi)	सोनापाठा, शोनाक, सोनपत्ता	*Oroxylum indicum* (L.) Vent.	5/28
Utakanta (Hindi)	ऊटकटेरा	*Echinops echinatus* Roxb.	9/27
Vanamallika (Hindi)	वनमल्लिका	*Jasminum rottlerianum* Wall.	9/17
Varahikanda (Kannada)	वरहिकंद	*Tacca integrifolia* Ker. Gawl.	9/17
Vasaka (Sanskrit)	अडूसा, अडुस	*Adhatoda vasica* Nees	9/32, 37, 38, 45, 50
Vegaetable rennet	अश्वगंधा	*Withania somnifera* (L.) Dunal	9/47
Vetiver	खस, वीरनमूल	*Vetiveria zizanioides* (L.) Nash	6/18, 27, 46; 7/19; 9/1
Vidanga (Sanskrit)	वायविडंग, भाभिरंग, बाबिरंग	*Embelia ribes* Burm. f.	6/6, 11-13, 18, 32; 7/39; 9/32, 36, 50, 57

अंग्रेजी	देवनागरी (हिन्दी)	वैज्ञानिक नाम	अध्याय / श्लोक
Wax jambu	जमरुल (संस्कृत)	*Syzygium samarangense* (Bl). Merr. & Perry	8/37
Wheat-emmer	गोधुम (संस्कृत)	*Triticum dicoccum* Schubl.	8/15; 9/37
White damar	सर्ज (संस्कृत)	*Vateria indica* L.	9/53
White mustard	सिध्दार्थ (क)	*Brassica alba* (L.) Rabenh.	6/45
White sandalwood	सफेद चंदन	Santalum album L.	6/ 47; 7/2, 5-7, 9-10, 24, 30 -32, 34-36, 39, 41-43, 49, 52, 54, 55, 60, 61; 9/29
Wild date	खजूर, देशी खजूर, खिजूर	*Phoenix sylvestris* (L.) Roxb.	8/8, 14
Wild fig	कठूमर, कठगूलर	*Ficus hispida* L.f.	5/21
Wild Himalayan cherry	पद्मक	*Prunus cerasoides* D. Don	9/50
Wild indigo	नीलि (संस्कृत)	*Indigofera uniflora* Buch.-Ham.	9/12, 54
Wild jasmine	अश्फोट (संस्कृत)	*Jasminum angustifolium* Vahl	6/21
Wild turmeric	जंगली हलदी, बनहरदी, बनहलदी	*Curcuma aromatica* Salisb., C. *zedoaria* (Berg.) Rose	7/23, 28; 8/54; 9/16, 26, 32; 10/22
Wine grape	द्राक्ष	*Vitis vinifera* L.	6/53; 8/14
Wood-apple	कपित्थ	*Limonia acidissima* L.	6/44; 7/56; 8/42, 47, 49, 51
Yellow jasmine	चमेली, चंबेली	*Jasminum humile* L.	6/49
Yellow snake tree	पाटल	*Stereospermum personatum* (Hassk.) Chatt.	5/28; 6/21; 9/37; 10/23
Yellow-berried nightshade	कंटकारी	*Solanum surattense* Burm.f.	5/17; 9/3, 9, 50
Zedoary	कचूर	*Curcuma zedoaria* (Berg.)	7/23, 28; 8/54; 9/16, 26, 32; 10/22

परिशिष्ट

॥ ಶ್ರೀಃ ॥

ಲೋಕೋಪಕಾರಂ

(ಚಾವುಂಡರಾಯ ವಿರಚಿತಂ)

ಪ್ರಥಮಾಧಿಕಾರಂ

೧...ಪಂಚಾಂಗಫಲವರ್ಣನಂ

ಪೀಠಿಕೆ

ಕಂ॥[1]ಶ್ರೀಪತಿಯುಂ ಸಕಲವಚ।
ಶ್ರೀಪತಿಯುವುಮುಮಾಪತಿಯುಮೆನುಗಮಾದರದಿಂ ॥
ಶ್ರೀಪದಮುಂ ಸಕಳವಚ।
ಶ್ರೀಪದಮುಂ ಪರಮಪದಮು[2]ನೀಗಭಿವಂದ್ಯರ್ ॥ ೧ ॥

*ನತಭುವನತ್ರಯನೀಶ್ವರ।
ಸುತನವಿರಳದಾನನಧಿಕಸಿದ್ಧಿನಿಧಾನಂ ॥
ಧೃತಪರಶು ಗಣಪನಸ್ಮ।.
[3]ತ್ಕೃತಿಯಂ ಕೆಯ್ಕೊಂಡು ಮಾಟ್ಕೆ ನಿರ್ವಿಘ್ನತೆಯಂ ॥ ೨ ॥

ಸುಕವಿಸ್ತುತೆ ಲೌಕಿಕನೈ।
ದಿಕ ವಿವಿಧಾನೇಕಶಾಸ್ತ್ರಸನ್ಮೂರ್ತಿ ಜಗ ॥
ತ್ಪ್ರಕಟಿತಸತ್ಕೀರ್ತಿ ಗುಣಾ।
ಧಿಕೆ [4]ವಾಗ್ವಧು ನೆಲಸುಗೆಮ್ಮ ಮುಖಸರಸಿಜದೊಳ್ ॥ ೩ ॥

ಅನುಪಮಗುಣಿಗಳ್ [5]ವಿದ್ವ।
ಜ್ಜನರ್ ಶ್ರುತಿಪುರಾಣಶಾಸ್ತ್ರವಿದೋರೆನಿಪ ಪುರಾ ॥
ತನ ಕವಿಗಳ ಕಾವ್ಯನಿಬಂ।
ಧನದೋಜೆ [ಯ ನಿಖಿಳ] ಸಾರಮೆಸೆದಿರೆ ಧರೆಯೊಳ್ ॥ ೪ ॥

---

1 ಶ್ರೀಪತಿಯು ಮುಮಾಪತಿ ವಾ। ಜೇಪತಿಯರ್ (ರು) ಮೂವರೊಲಿದು ನಮಗಾದರದಿಂ ॥
ಚಾಪಳಮೆನಿಸುವ (ನು) ಮತಿಗಳ। ಶ್ರೀಪದಮಂ ಪರಮಪದಮನೀಗಭಿವಂದ್ಯರ್ ॥ ೧ ॥ (ಪಾಠಾಂ)
—ಈ ಕಂದವು ಇಪ್ಪು ಮಾರ್ಪಟ್ಟಿರುವುದಕ್ಕೆ ಕಾರಣವು ತಿಳಿಯುವುದಿಲ್ಲ. ಈ ಪಾಠದಲ್ಲಿ ಹೊಸಗನ್ನಡ ಪ್ರಯೋಗಗಳೂ, ಅನನ್ವಿತತ್ವವೂ ಉಂಟು. ಪ್ರಾಯಶಃ ಈ ಪದ್ಯವು ಓಲೆಯ ಪ್ರತಿಗಳಲ್ಲಿ ತ್ರುಟಿತವಾಗಿದ್ದು ಲೇಖಕರಿಂದ ವಿರಚಿತವಾಗಿ ಸೇರಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರಬಹುದು. 2 ನೆಮಗಭಿವಂದ್ಯಂ. 3 ನ್ಮ. 4 ವಾಗ್ವಂದಂ. 5 ಜ್ಞನಪೌರಾ. 6 ನೆನಿಪ ಪುರಾತನ ನೂತನ ...ದೋಜೆ ಸಾರ.

* ೨ನೆಯ ಪದ್ಯವು ಒಂದು ಪ್ರತಿಯಲ್ಲಿಲ್ಲ.

प्रकाशक:

एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउण्डेशन राजस्थान चेप्टर

105, विद्यानगर, हिरण मगरी, सेक्टर -4
उदयपुर (राजस्थान) 313 002

मूल्य:

संस्थायें व पुस्तकालय

व्यक्तिगत ₹ 150/-

विद्यार्थी एवं कृषक

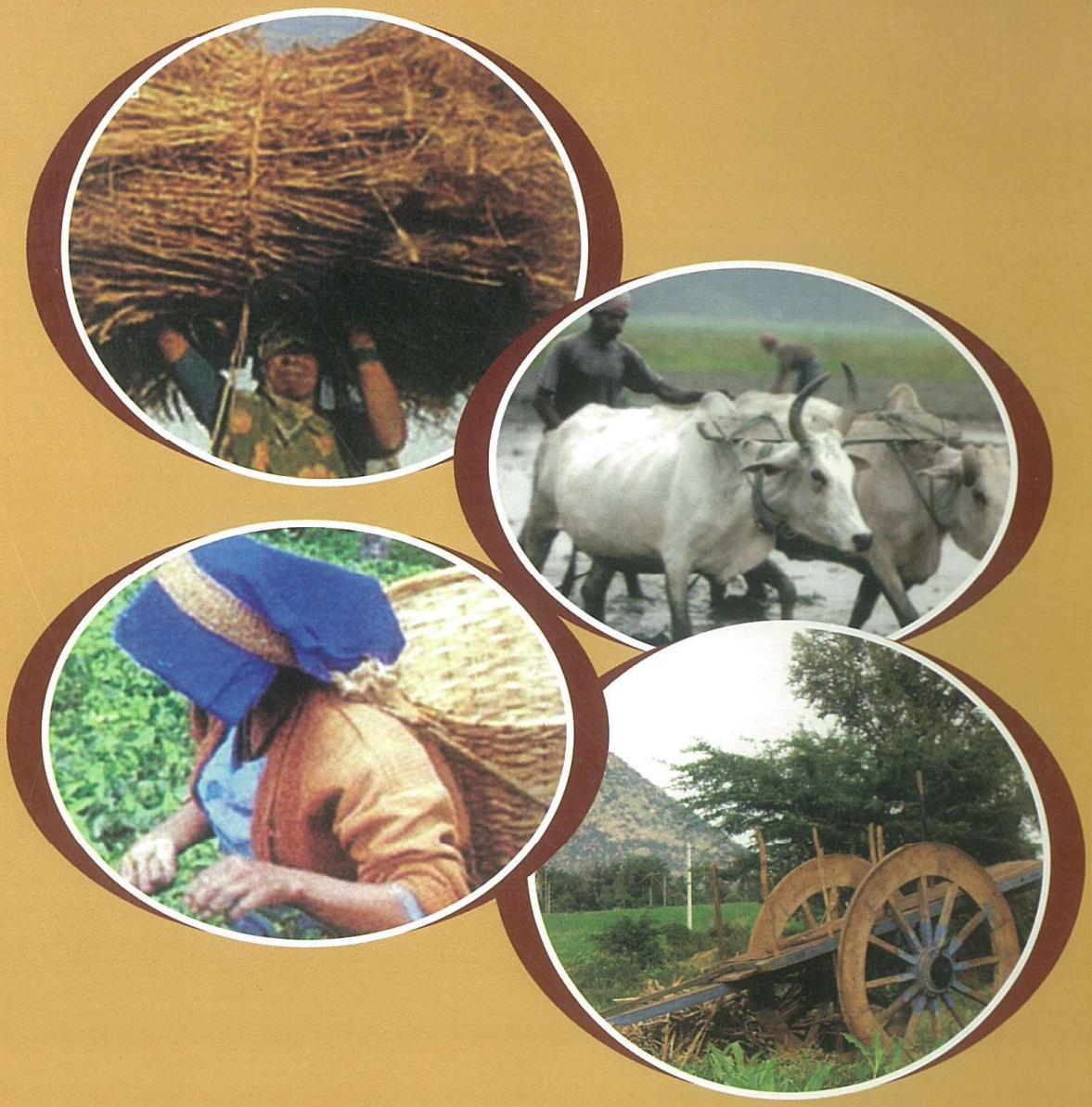

ASIAN AGRI-HISTORY FOUNDATION
1994
कृषिमित् कृषस्व

एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउण्डेशन राजस्थान चेप्टर

105, विद्यानगर, हिरण मगरी, सेक्टर -4
उदयपुर (राजस्थान) 313 002

www.choudharyoffset.com/7972

लोकोपकार (मानव जाति के कल्याण के लिए)

हिन्दी अनुवादक: डॉ. सुनील कुमार खण्डेलवाल एवं डॉ. शिवचरण लाल चौधरी